भूमिका

सब है एक तन्दुरुस्ती हज़ार नेमत। आदमी बीमार होकर या तो काम ही नहीं कर सकता या काम करना उस के लिये निहायत मुश्किल हो जाता है, और जिन बातों से पहले उसे खुशी होती थी वही बातें बीमारी में उसको बुरी मालूम होती हैं। बीमारी इंसान की जिन्दगी को सिर्फ कडवी ही नहीं कर देती बल्कि अक्सर आदमी को बेसामान और मुफ्लिस भी बना देती है, क्योंकि जब बीमारी के सबब से वह अपने मामूली काम नहीं कर सकता तो उसको और उस के बाल बच्चों को वह सब आराम के सामान नसीब नहीं हो सकते जो तन्दुरुस्ती की हालत में होते थे, और मुमकिन है कि अच्छे ...ने के बाद भी उस के बाल बच्चे बहुत दिनों तक इस तकलीफ में फंसे रहें, और ऐसा भी हो सकता है कि बीमारी को ... पा आवने और वह जिस की कमाई से सारा कुनबा ...लता था भरी जवानी में मर जाय। यह मिसाल शहर और ...हात के कुल लोगों पर ठीक उतर सकती है। लेकिन गोकि ...न्दुरुस्ती हर आदमी के लिये बडी नेमत और जमाअत के ...लये एक बडा खजाना है फिर भी अक्सर लोग इस की तरफ गाफिल रहते हैं और बीमारी से पहले तो बहुत ही कम

ऐसे होंगे जो इस नेमत की कद्र करते हों। जब कोई आद
बीमार होता है तो डाक्टर या हकीम की सलाह लेता
और अच्छे होने के लिये उसे बहुत सा वक्त और रुपया ख
करना पडता है। लेकिन सोचो कि अगर बीमारी से पहले
वह मरज के सबब को रोकने की कोशिश करता तो बीमा
से बिल्कुल बच जाता, तकलीफ न पाता, डाक्टरों की फीस
देनी पडती, और उन रुपयों का नुक्सान भी न उठाता
बीमारी के जमाने में काम न कर सकने से उठाना पडता है
अलबत्ता मरज के सबब के दूर करने में खर्च पडता है लेकि
यह खर्च उन नुकसानों का पासग भी नहीं है जिनका जिक
ऊपर किया गया है खास कर जब कि सबब हलका हो।
यह हो सकता है कि आदमी की अदना कोशिश से अक्स
बीमारियां रुक जाय, क्योंकि यह बीमारियां जिन से लोग दु
भोगते हैं और मरते भी है उन्ही की गफलत और बेपरवा
से पैदा होती हैं।

सानिटेशन यानी तन्दुरुस्ती की हिफाजत उस इल्म
नाम है जो आदमी को मरज के रोकने की तदबीरें बतला
है। कुछ बरस पहले इस तरफ लोगोंका बहुत कम ध्यान
जो या मरज के पैदा होकरने में मदद देता था, ऐसे थोडे
उसके रोकने में कोशिश करते हों। इसमें शक नहीं कि इसके रो
मे हर आदमी कुछ न कुछ मदद कर सकता है लेकिन इस
के समझने के वास्ते कि मरज के रोकने के लिये आदमी को
करना चाहिये उन बातों का जानना जरूर है जिन से तन्
रुस्ती कायम रहती है। यह मुमकिन नहीं कि इस छोटी
किताब में वह सारी बातें समाजाय जो तन्दुरुस्ती के

रखती हैं बल्कि उन मे से एक का भी पूरा पूरा बयान नहीं किया जा सकता, हां इस मे से कुछ ऐसी बातों का जिक्र सहल जबान में हो सकता है जो हर तरह ध्यान देने के लाइक हैं और जिन्हे लडके भी समझ सकते है, मसलन् वह इन बातों को सहल मे सीख सकते हैं कि तन्दुरुस्ती के खास काइदे क्या है, हिन्दुस्तान के हर शहर और गाव मे लाग उन काइदो पर क्यों ध्यान नही देते या उन के खिलाफ क्यों करते है, और कौन सी तद्बीर है जिस से इस बतवज्जुही और बरखिलाफी का रोक हो और शहर और देहात मे आज कल की बनिस्बत जियादा तन्दुरुस्ती फैल जाय ॥

॥ पहला अध्याय ॥

हवा

साफ हवा की ज़रूरत

आदमी को जिन्दगी के वास्ते तीन चीजों का होना ज़रूर है, एक तो हवा, दूसरे पानी, तीसरे खाना। पानी या खाने के बगैर तो आदमी कुछ दिन जी भी सकता है लेकिन हवा बिन चन्द ही मिनट के अन्दर मर जाता है। इसलिये जिन्दगी की कुल ज़रूरी चीजों में से हवा निहायत ज़रूरी है। गोकि हवा को न तो तुम देख सकते हो न मालूम कर सकते हो सिवाय उस हालत के जब वह सामने से आकर टक्कर खाती है और उस वक्त उसको झोका कहते हैं, लेकिन तुम हमेशा एक बडे वायुमण्डल में रहते सहते हो और उसके नीचे वाली तह में उसी तरह चलते फिरते हो जैसे मछलियां पानी में तैरती है। पस अगर जिन्दगी के वास्ते हवा एक ज़रूरी चीज है तो तन्दुरुस्ती के वास्ते साफ हवा का होना भी वैसी ही ज़रूरी बात है। अगर किसी जानवर को घुटी हुई हवा में बन्द कर दो मसलन् एक चूहे को किसी शीशे के सन्दूकचे में रखदो तो पहले वह तकलीफ से हांपने लगेगा और फिर मर जायगा। ऐसा कम इत्तिफाक होता है कि हवा इतनी गन्दी हो जाय कि जिन्दगी काइम रखने के काबिल न रहे लेकिन इस कदर गन्दी तो कितनी ही बार हो जाती है कि जो लोग उस में रहते है उन का रंग पीला पडजाता है, तन्दुरुस्ती में फर्क आजाता है, और तरह तरह के मरज़ोंमे गिरफ्तार होजाते है॥

असल सबब जिन से हवा गन्दी हो जाती है

दुनया में हमेशा ऐसे बड़े बड़े काम कुदरती तौर पर होते रहते हैं कि जिनसे हवा गन्दी होजाती है। इनमें से पहली बात श्वासक्रिया यानी सांस लेना है। जान्दारों के हर सांस के लेने से कुछ न कुछ हवा गन्दी हो जाती है। हवा का एक बड़ा ज़रूरी हिस्सा आक्सिजन है जिसके बिना ज़िन्दगी काइम नहीं रह सकती। उसका कुछ हिस्सा फेफड़ों में जाता है और उसकी जगह वह नाकिस मुरक्कब हवा सांस से निकल कर मिल जाती है जिसे कार्बोनिक आसिडगास कहते हैं। उसी के साथ बहुत सी पानी की भाफ और तरह तरह की नाकिस मुरक्कब हवाएं जो बदन में पैदा होती हैं वह भी उसी में मिल जाती हैं। जो चूहा बन्द सन्दूकचे में मरगया था उसका सबब कुछ तो वह नाकिस मुरक्कब हवाएं थीं और कुछ यह था कि उस सन्दूकचे में हवा का आक्सिजन खर्च होगया था क्योंकि ज़िन्दगी के काइम रखने के वास्ते सिवाय आक्सिजन के न तो कार्बोनिक आसिड और न पानी की भाफ काम की है। चीज़ों के जलने से भी जिसे ज्वलन क्रिया कहते हैं हवा गन्दी हो जाती है क्योंकि हर एक चीज़के जलने के लिये आक्सिजन की ज़रूरत होती है, बे उस के हुए वह जल नहीं सकती, और उस के जलने से जो चीज़ पैदा होती है उसका बहुतसा हिस्सा वही नाकिस कार्बोनिक आसिडगास होता है जो सांस के साथ निकलता है। अगर चूहे की जगह तुम एक बन्द बरतन में किसी जलती हुई चीज़ को रख दो तो वह भी बात की बात में बुझ

जायगी क्योंकि आक्सिजन जरद खर्च हो जाता है और बगैर आक्सिजन के कोई चीज जल नहीं सकती।

चीजों के सड जाने से भी हवा गन्दी हो जाती है और यह आम काइदा है कि कुल जानें जीव या वनस्पति मरने के थोडी देर बाद सडने लगती है। गर्म मुल्कों में तो इधर वह मरी नहीं कि उधर सडना शुरू होजाता है और तब उन से तरह तरह की हवाए बहुतायत के साथ पैदा होती हैं जिन में से बाजी निहायत जहरीली भी होती हैं। आदमी या हैवानों के मुर्दे और कुल मरे हुये पेड या उनके कुछ कुछ हिस्से सडते और गलते हैं और फिर उन से नाकिस हवाए पैदा होती है। इन्हीं में जान्दारों के मैले भी शामिल हैं मसलन् पसीना जो जिल्द से निकलता है, दस्त और पेशाब और बेकार मवाद जो तमाम जान्दारों के बदन से निकलते हैं और इन में से बाजे ऐसे हैं कि कभी कभी बदन से जुदा होने के पहले ही सडने लगते हैं। सिवाय इसके जमीन से जो तरह २ की भाफ निकलती है उस से भी हवा गन्दी हो जाती है क्योंकि जमीन जैसी कि हम को मालूम होती है कोई ठोस मिट्टी या रेत का तूदा नहीं है जिस के अन्दर कोई चीज गुजर न सके बल्कि जमीन की सतह और उस पानी की सतह के दर्मियान जो इस के नीचे होता है हवा की आमदरफ्त थोडी बहुत जारी रहती है और यह हवा बाहर के वायु मण्डल में आ मिलती है। पस अगर जमीन में कोई चीज ऐसी हो जिससे उसकी हवा गन्दी हो सकती है तो वह गन्दगी जमीन के सूराखों के रस्ते हवा के जरीए से ऊपर निकल आयगी और बाहर की हवा को भी गन्दी कर देगी जो हमारे साथ

लेने के काम मे आती है। लोग यह नहीं जानते कि कुल माद्दे जो इन्सान या हैवानों के बदन से निकलते हैं उनका असर बुरा होता है और इस ख्याल से उन्हे अक्सर जमीन ही पर पड़ा रहने देते हैं। इस के सिवाय घास फूस पत्ते और और वनस्पतिया जब कि वह गलने लगती है तो इन सब का खराब असर होता है। इन असरों की बुराई उस वक्त जियादा बढ़ जाती है जब कि जमीन खोदी जाती है क्योंकि जमीन के खोलने से वह चीजें जल्द सड़ने लगती हैं और उस सील यानी पानी की भाफ को हवा उड़ा ले जाती है जिस से तन्दुरुस्ती को नुकसान पहुंचाने वाली सर्दी पैदा होती है। दलदलों की हवा जो इस कदर नाकिस होती है उसकी वजह यही सील और वनस्पतियों का गलना है। गो कि वह दलदल किसी कदर दूरी पर हों फिर भी हवा के झोंके उसकी गन्दगी को शहरों और देहातों में उड़ा ले जाते हैं। घर के रोजमर्रा के ऐसे काम जैसे नहाने धोने रसोई बनाने वगैरह मे जो जो गन्दगियां पैदा होती हैं अगर वह बखूबी दूर न की जाय तो उन से भी हवा के खराब होने मे मदद मिलती है। कितने पेशे भी ऐसे हैं कि जिन से हवा गन्दी होजाती है जैसे चमार, कसाई, छीपी, और वह लोग जो मुर्दा हैवानो या सड़ी गली वनस्पतियों से बनी हुई चीजो का कारबार करते हैं हवा को कम या जियादा गन्दा करदेते हैं, और बाजे पेशे वाले ऐसे हैं कि जिनकी दस्तकारी से बारीक किरकिरे या और चीजोंके बहुत छोटे छोटे कण उड़ कर हवा मे मिल जाते हैं, मसलन् धातों के पीसनेवाले या कारखानों में काम करने वाले गाज कि जब इस जिस्म के कन सास लेने में हवा के साथ अन्दर जाते हैं तो बीमारी पैदा करते हैं।

हवा के साफ करने के कुदरती तरीके

तुम ने देख लिया कि हवा को गन्दा करदेने के बहुत से सबब हैं जो हमेशा जारी रहते हैं पस अगर कुदरती तौर पर उन के दूर होने की तदबीरें न होती रहती तो जीना गैर-मुमकिन हो जाता। इस खराबी की रोक अकसर उमी उमदा कायदे से होजाती है जिस में कि तरह तरह की हवायें फैलती हैं और उन्हीं से नापाक हवायें भी आप से आप फैल कर आम हवा में मिल जाती हैं। इस के सिवा हवा के चलने से एक जगह की हवा बहुत जल्द दूसरी जगह जा रहती है और उनका आपस में बदल बदल हो जाता है और हरे दरख्त हवा में से उस कारबोनिक आसिडगास को जुदा करके ले लेते हैं जो जानदारों से और खुद उन दरख्तों से भी बहुतायत के साथ पैदा होता है और इस तर्कीब से जो आक्-सिजन जुदा होता है उस को हवा में पहुचाते हैं।

पस यह तीन तर्कीबें हवा की सफाई की हैं यानी एक तो नापाक हवाओं का फैलना, दूसरे हवा का चलना, तीसरे हरे दरख्तों के जरिये से कारबोनिक आसिड का नाश होजाना। यह कुदरती तरीके जो हरदमेशा जारी रहते हैं उन गन्दगियों के एक बड़े हिस्से को साफ कर देते हैं जो ऊपर लिखेहुई सूरतों से पैदा होती हैं लेकिन अफसोस यह है कि लोग अकसर सफाई के इन तरीकों को चलने नहीं देते और हवा में गन्दगियां पैदा करने के सिवाय ऐसे बन्द मकानों में रहना इख्तियार करते हैं जहां यह कुदरती तरीके गन्दगियों के साफ करने में अपना बहुत कम बल्कि कुछ भी असर नहीं दिखा सकते, और शहरों में मकानों को ऐसा पास पास बनाते हैं कि अकसर लोग

निहायत तंग जगह में रहते हैं और इसलिये गन्दी हवामें सास लेने से जो नुकसान होता है वह बहुत बढ जाता है।

हिन्दुस्तान के शहरों और देहातों मे हवा गन्दी होने के सबब

जिन खराबियो का जिक्र ऊपर हुआ वह हिन्दुस्तान के हर शहर और गाव मे पाई जाती हैं लेकिन हा किसी मे कम किसी में जियादा, और इन मे दो किस्म के मकानात होते हैं एक तो वह जिनमे सहन होता है, दूसरे झोपडे। महन्दार मकानो के सहन चारदीवारी से घिरे होते हैं जिन मे रोशनी और हवा की आमदरफ्त के लिये न दरवाजे होते हैं न खिडकिया, और झोपडों का हाल यह है कि जिस वक्त उन का दर्वाजा बन्द कर दीजिये तो हवा और रोशनी किसी तरह जाही नही सकती। रहनेवालो की यह कैफियत है कि बहुत से आदमी मिलकर ऐसी तग कोठरियो मे सोते हैं कि न तो उन मे से वह हवा जो सास लेने से गन्दी होगई है अच्छी तरह बाहर निकल सकती है और न बाहर की साफ हवा आसानी से आसकती है जिस से उस गन्दी हवा की जगह खाली करनी पडे। इस तरह पर जो हवा एक बार सास लेने मे काम मे आचुकी थी उसी का कुछ हिस्सा बार बार सास लेने में सर्फ होता है। इस पर तुर्रा यह है कि इन लोगो का एक आम कायदा है कि अपने सर और मुह को लिहाफ या कम्बल मे खूब लपेट कर सोते हैं जिस से वह खराबी और भी बढ जाती है। इस के सिवाय जो आग खाना तैयार करने में जलती है और छोटे छोटे तेल के चराग जो रात को रोशन होते हैं वह हवा से सिर्फ आक्सिजन ही को नहीं खींचते

बल्कि उस में जहरीली हवाएं और दूसरी चीजें भी मिला देते है। इन से हवा और भी गन्दी हो जाती है।

घरो के पास अक्सर मुर्दे भी गाडते है या थोडे ही फासले पर अधूरा जला देते है। जानवर जहा मरे वही पडे सडा करतेहैजब तक कि उन को परिन्दे या दरिन्देखा न जायँ। निकम्मी घास पात अक्सर दर्वाजो के ऐन सामने उगती है और वहीं गिरती सडती है कोई उठाकर फेंकता तक नही। बदन की सफाई पर जैसा चाहिये ध्यान नही दिया जाता, नहाने के बाद भी लोग मैले ही कपडे पहन लेते है, और जिन लिहाफों को ओढ कर सोते है वह पसीने और बदन की मैल वगैरह से भरे हुए होते है। गलीज के फेंकने का वन्दोवस्त अच्छा नहीं करते, रास्ते के आस पास बल्कि सडक पर भी पडा रहता है यह लोग अक्सर ऐसा भी करते है कि बहुत सबेरे उठ कर उन जगहो मे फरागत होने जाते हैं जहा ऊचे खेत खडे होते है या जहा कहीं आड की जगह पास मिल जाती है वहीं बैठ जाते है। बाज वक्त वह घरों की छतो ही पर पाखाना फिरते है और वहा वह पडा पडा सूखकर चूर चूर हो जाता है और गर्द की शकल मे हवा मे उडता फिरता है या मेंह में बह कर नीचे फैलता है। जहा टट्टिया हैं वह अक्सर गन्दगी से भरी रहती हैं, उनका मैला थोडा बहुत या तो घास की जमीन में या चलते हुये रस्ते मे या घर के आगन मे या जिधर को राह पाता है बहजाता है, और अगर-किसी तरफ निकास नही होता तो नीचे किसी कोने मे या गहरे गढे में या सडास मे जा गिरता है। पेशाब तो जिस कोने में चाहा कर देते है। गोबर का यह हाल है कि या तो बेपरवाही

और चमार, छीपी, और और पेशे वाले सड़क पर काम करते हैं जिस से इर्द गिर्द के लोगों को नुक्सान पहुंचता है ॥

हवा को गन्दगी से बचाने की क्या तदबीर है

अब देखना चाहिये कि जो गन्दगियां इस तौर पर पैदा होती हैं उन के असर को बाज़ रखना या उन्हें बिल्कुल रोक देना किसी तरह मुम्किन है या नहीं। इन में से बाज़ी तो ऐसी हैं कि उन की रोक टोक नहीं सकती मसलन् सांस का चलना और आग का जलना क्योंकर बन्द हो, और जहां यह होंगी वहां हवा का ज़रूरी हिस्सा आक्सिजन ज्यादह ज्यादह खर्च होगा और उसकी जगह वह हवा भी ज़रूर ही पैदा होगी जो ज़िन्दगी को ज़हर है। लेकिन जब तक कुदरती काम जारी है तब तक उनसे कोई खराबी भी नहीं पैदा होती। सांस ली हुई हवा के फिर सांस के साथ भीतर जाने से जो नुक्सान पैदा होते हैं उन्हें रोकने के लिये चाहिये कि मकान हवादार हो यानी उस में बाहर की हवा बखूबी आती जाती रहे। यह कुछ ज़रूर नहीं है कि घर में सन्नाटे की हवा चलती रहे क्योंकि उस हालत में भी जब कि किसी घर या कमरे में हवा का चलना मालूम नहीं होता हवा बराबर बदलती बदलती रहती है। हां इसलिये कि हवा के बन्द होने की हालत में भी ताज़ी हवा बराबर पहुंच सके इतना ज़रूर है कि एक ही मकान या एक ही कोठरी में एक साथ बहुत से आदमी न रहें, नहीं तो वह लोग उस मकान की हवा को इतनी गन्दी कर देंगे कि उस अर्से में बाहर की ताज़ी हवा उस कदर वहां न पहुंच सकेगी। खुलासा यह कि मकान में आदमियों की भीड़ न रहनी चाहिये

सरकारी मकानों मसलन् बारकों और जेलखानों में हर एक आदमी के रहने के लिये जितनी जगह की जरूरत है वह खूब सोच समझ कर मुकर्रर की गई है। इस में हवा की गुनाइश घनात्मक माप से यानी कोठरी की चौड़ाई को उसकी लम्बाई और ऊँचाई के साथ गुना करने से जानी जा सकती है, जैसे अगर कोई कोठरी १० फुट चौड़ी १० फुट लम्बी और १० ही फुट ऊँची हो तो उस में १० × १० × १० यानी १००० घन फुट हवा होगी। हर एक कैदी को ६४८ घन फुट दिये जाते हैं। यह बात उस मकान के फर्श या जमीन की ऊपरी सतह की माप से भी दरयाफ्त हो सकती है, मसलन् जो मकान १० फुट लम्बा १० फुट चौड़ा हो उस में १०० वर्ग फुट जगह होगी। देखो, सिपाहियों को ६१ वर्ग फुट जमीन दी जाती है और कैदियों को ३६ वर्ग फुट। सबब यह है कि कैदियों के बारकों की छतें आम देसी मकानों से बहुत ऊँची होती हैं और उन में जंगले भी होते हैं जिन से हवा की आमद रफ्त बहुत अच्छी तरह होती रहती है। मामूली कार्रवाइयों के वास्ते ऊपरी सतह की वर्गात्मक माप काफी है। अगर मुमकिन हो तो हर एक आदमी के वास्ते ४८ वर्ग फुट चाहिये यानी इस कदर जमीन जो आठ फुट लम्बी और छ फुट चौड़ी हो और कोठरी की दीवार में ऊपर की तरफ खिड़कियां होनी चाहियें ता कि साम की गन्दी हवा उन में से निकल जाया करे क्योंकि अकसर मौसिमों में सांस में से निकली हुई हवा बनिस्बत इर्द गिर्द की हवा के गर्म होती है और इसी लिये ऊपर को जाती है। यह खिड़कियां हर एक कोठरी में रहने वालों की तादाद के मुताबिक बड़ी होनी चाहियें।

याद रखो कि जब तुम बाहर से आकर किसी ऐसे मकान में दाखिल हो जिस में एक या कई आदमी रहते हों और उस में बदबू मालूम हो तो जान लेना कि उस में हवा की आमदरफ़्त का बन्दोबस्त अच्छा नहीं है।

जब फी आदमी के हिसाब से जगह की मिक़्दार मुक़र्रर करनी हो तो ख़याल रखना चाहिये कि बीमारों की बनिस्बत तन्दुरुस्त आदमियों के जियादा हवा की ज़रूरत होती है क्योंकि जब आदमी बीमार होता है तो उसकी जिल्द और फेफड़ों से तन्दुरुस्ती की हालत की बनिस्बत जियादा गन्दगी निकलती है और यह गन्दगी अक्सर निकलते ही सड़ने लगती है। पस इस गरज से कि बीमारों के इर्द गिर्द की हवा सांस लेने के काबिल हो उसका मामूली मिक़्दार से जियादा होना ज़रूर है बल्कि जो भले चंगे आदमी बीमारकी खिद्मत करते हैं उन के लिये भी यह रिआयत वाजिब है।

बच्चों को ताजी हवा की वैसीही ज़रूरत होती है जैसी जवानों को। यह बात रस्म मे दाखिल हो गई है कि बच्चों को ऐसी कोठरी मे बन्द रखते है जिस में हवा का बिल्कुल दख्ल न हो और उस पर तुर्रा कि यह पड़ोस की औरतों और नातेदारों का जमाव होता है। यह तरीका सिर्फ बच्चे ही के लिये खराब नही है बल्कि इस मे नये जनमे हुए बच्चे के लिये भी निहायत खतरा रहता है। अक्सर लड़के पैदाहोने के थोड़े ही दिन के भीतर इसी वजह से मर जाते हैं कि उन को सांस लेने के लिये साफ और सुथरी हवा काफ़ी मुयस्सर नही आती।

जिन कोठरियों में लोग रहते हैं अगर वहां रोशनदान या कोई और रस्ता गन्दी हवा और धुआं निकलने का न हो तो उन में आग न जलानी चाहिये और रोशनी के लिये जो मिट्टी के भद्दे चराग जलाते हैं उनसे जो धुआं और खराब हवायें पैदा होती हैं उनके निकास का भी कोई वैसा ही आसान बन्दोबस्त होना चाहिये ।

सड़ांद के सबब से जो बुराइयां पैदा होती हैं उन के दूर करने के लिये हम आम कायदे पर निगाह रखनी चाहिये कि कुल मुर्दे जानवरों और वनस्पतियों के जहां तक हो सके सड़ने से पहले उठवा कर अलग गड़वा या फिकवा दिया करें और मुर्दों को बस्ती से दूर किसी मुकर्रर जगह में या तो अच्छी तरह गाड़ दिया करें या जला दिया करें । मुर्दे को गाड़ने की हालत में कब्र जहां तक हो सके कम से कम चार फुट गहरी खोदें और लाश दफ्न करने के बाद उसे मिट्टी से खूब बन्द करदें । अगर जलाना हो तो लाश को पूरा पूरा जलाना चाहिये । मरे हुए जानवरों को तुर्त उठाकर दूर गड़वा दें और ऊपर दबा दबा कर मिट्टी जमा दें । गले सड़े घास फूस और और हलाव जैसे लीद गोबर वगैरह जो खाद में काम आते हैं जमा करके बस्ती से कम से कम सौ गज के फासले पर उन का ढेर लगा देना चाहिये । अगर उस ढेर पर कभी कभी थोड़ी सी मिट्टी डाल दिया करें तो उस से न तो बदबू पैदा होगी और न खेतों पर उस का असर कम होगा

जिल्द को हमेशा साफ सुथरा रखना चाहिये । सारे बदन को रोज पानी से खूब धो डालना चाहिये । जवान और

ावात्पर आदमियोकेवास्ते सर्द पानीसे नहाना निहायत मुफीद
लेकिन बूढे, कमजोर, या बीमार के लिये कुनकुना पानी
ह्तर है। गरज कि जिल्द जब तक कि साफ न रक्खी
ायगी अपने जरूरी कामो को बखूबी अनजाम न दे सकेगी।
ह न समझना कि जिल्द को कोई काम करना नही पडता
ाकि यह बदन के बाहर है लेकिन भीतरी इन्द्रियो की तरह
ह भी एक इन्द्रिय है। इस मे जो बेहिसाब छेद हैं वह बे-
ाइदा नही है, इन से हमेशा भीतर की गन्दगी भाप की
क्ल मे निकला करती है। पस अगर जिल्द को साफ न रक्खोगे
ा वह सूराख बन्द होजायँगे और बीमारी पैदा होगी। लेकिन
गर तुम्हारे पहनने के कपडे या सोने का बिछौना मैला होगा
ो जिल्द के साफ रखने से भी बहुत फाइदा न निकलेगा, इस-
लये इन सबको भी खूब साफरक्खो और अक्सर हवा देतेरहो।

यूरप के तमाम शहरो मे जो तन्दुरुस्ती के लिहाज से
श्च्छे गिने जाते हैं जमीन के नीचे नल बने हैं। शहर का
ारा मैला जैसे मल मूत, बावर्चीखाने और नहाने धोने का
ानी, इन रो से निकल जाता है। आम टट्टियो की जगह
रो मे पाखाने बने होते हैं। इन की गन्दगी और हर किस्म
ा गन्दा पानी जो हौज और चहबच्चो मे जमा होताहै नाहे
ो नलियो मे जा गिरता है, और घर घर की नलिया मिल
र बडे नलो मे जा मिलती है, और यह नल मिल कर सब
। बडे नलो मे या बडी बडी पक्की मोरियो मे जा गिरते
, यहा तक कि इन सब की गन्दगी खिचकर या तो समुद्र
ं जा पडती है या उस से बिहतर काम मे आती है यानी
कसी खास जमीन के टुकडे की पैदावार को बढाती है।

जब ऐसी सफाई के सामान एक बार बन गए तो फ़िर उन की मरम्मत में बहुत लागत नहीं आती। ख़याल करो कि इस बन्दोबस्त में उस मिहनत और ख़र्च की बनिस्बत कितनी बचत है जो मैले को आदमियों से ढुलवा कर फेंकने में पड़ता है क्योंकि इस तर्कीब से गन्दगी अपने ही बोझ से ढाल की तरफ बह जाती है। बाजी दफा जहां गन्दगी के बहने के लिये काफी ढाल नहीं होता वहां उस को पहिले किसी नीची जगह में जमा करते हैं और फिर पम्प से ऊंची जगह पर चढ़ाते हैं, मगर उस में ख़र्च जियादा बैठ जाता है। अफ़सोस कि हिन्दुस्तान में यह दिक़्क़त अक्सर पैदा होती है क्योंकि यह मुल्क चौरस है, मसलन् कलकत्ते में यही मुश्किल पेश आई थी और एक पम्प की कल की जरूरत पड़ी जिससे गन्दगी इतनी ऊंची चढ़ जाय कि फिर आप ढलक कर खारी झीलों में जा पड़े कलकत्ते में जो तरीका सफाई का जारी है यह कुल शहर में एक सा नहीं और शहर के जिन हिस्सों में नल बन गए हैं वहां भी ऐसा पूरा इन्तिज़ाम नहीं है जिस से घरों के पाखाने एक दूसरे से मिला दिये जायं। ख़ास ख़ास जगहों में जिन में मैं कितनी भंगियों के निज की हैं और कितनी सर्कार ने इसी काम के लिये बनवा दी हैं पहले मैला जमा करते हैं और फिर उठा कर नलों में डाल देते हैं।

हिन्दुस्तान के शहरों की सफाई के लिये नलों का एक सिलसिला क़ायम करने में कई मुश्किलें हैं। पहिले यह कि ग़ालिब पम्प न बनाना पड़े फिर भी इस के जारी करने में पहले पहल बहुत लागत आती है, दूसरे पानी जितना चाहिये

मुयस्सर नहीं आसकता, तीसरे मजदूरी सस्ती होने के सबब से नलों की वनिस्वत आदमियों से मैला उठवाने में कम खर्च पडता है। लेकिन इन में से चन्द मुश्किलें दूर भी हो सकती हैं, जैसे अगर बहुत बडे बडे नल न हों तो पतली नलियों से भी बडी आबादी की गन्दगी साफ हो सकती है। हा यह जुरूर है कि उन में सिर्फ मैला ही बहाया जाय क्योंकि यह नलियां सिर्फ मैले ही के ले जाने के लिये हैं, सतह के पानी वगैरह के निकास के लिये अलग बन्दोबस्त करना चाहिये इस का जिक्र आगे आवेगा। अगर यह नल मजबूत मिट्टी के बने जैसा कि यकीन है कि धीरे धीरे हिन्दुस्तान में बन जायँगे तो लोहे के नलो या पक्की मोरियों से बहुत कम लागत बैठेगी।

पीने के पानी का सामान भी हर जगह काफी और उम्दा होना चाहिये, इस वक्त उसकी अक्सर जगहो मे बहुत कमी है लेकिन अगर पानी इतना जियादह पहुच सके जिस से रोजमर्रे के काम अच्छी तरह चल जायँ तो वही पानी नलियों के रस्ते मैला वहा देने को भी काफी हो सकता है। आदमियों से मैला उठवाने में यह बडी दिक्कत है कि हमेशा उन की गर्दन पर सवार रहना चाहिये और फिर भी वैसी अच्छी तरह सफाई नही हो सकती है जैसी नलो से होती है।

लेकिन यहां नलो की बाबत जियादह बहसकी जरूरत नही है क्योंकि हिन्दुस्तान मे यह सिलसिला शायदही कहीं जारी है और बडे शहरों मे भी इस के जारी करने को एक अर्सा चाहिये। छोटे शहरों और देहातो मे मैला फेकने का

काम आदमियों ही से हो सकता है और जितने बरसों तक यही जारी रहेगा, लेकिन ख़याल रखना चाहिये कि मैला जमीन पर न गिरने पाए। इसलिये उस का गमलों में गिरना और दान से कम दिन में दो बार दूर फेंक दिया जाना जुरूर है। तरह तरह के पाखाने बन गए हैं लेकिन उनके बनाने में चाहे जो मर्जी हो चाहे जिस के इस बात का ख़याल जुरूर है कि मैला जमीन पर न गिरने पाए क्योंकि उस से जमीन गन्दी हो जाती है, और हर दस्त के बाद अगर थोड़ी सी सूखी मिट्टी डाल दी जाय तो हवा भी साफ रह सकती है। बदबू दूर करने वाले मसालों की कुछ जरूरत नहीं, इन पर रुपया मुफ्त ख़राब होता है, और अक्सर सफाई की गफ़लत को छिपा लेते हैं। मैला उठवा कर गढ़ों में डलवा दिया करें। यह गढ़े फुट भर चौड़े और फुट भर गहरे होने चाहियें जिन में छ इंच मैला हो और बाकी छ इंच मट्टी भरदें। फिर उस जमीन पर खेती करें, क्योंकि जब तक खेती न होगी तब तक यह तर्कीब भी पूरी कारगर न होगी। सबब यह है कि खेती से गन्दगी के हिस्से अलग अलग हो जाते हैं और फिर उन्हें फ़स्ल अपनी परवरिश के लिये खींच लेती है जिस से उनका नाम निशान तक नहीं रहता।

अगर हो सके तो नाली और मोरी बनाने के मकान के पानी को भी इसी तर्कीब से उठवा कर खेतों की जमीन पर फिकवा दिया करें कि फ़स्ल उसको खींच ले। अगर योंही बाहर घाटा फेंक देंगे तो वही जमा हो कर सड़ेगा और जो ख़ानदार चीज़ों और जानवरों के हिस्से उन में होते हैं उन से वैसा गन्दी हो जायगी जैसा कि ऊपर जिक्र हो चुका है।

सील के रोकने के वास्ते पानी का निकास ज़रूर है जिस में बरसात का पानी किसी पास की नदी में जा गिरे, नहीं तो इतना तो ज़रूर हो कि मकानों के पास पानी खड़ा न रहने पाये। जहां तक हो सके नलिया पक्की बनानी चाहियें जिसमें मैला पानी जमीन में न सोखे और बह कर निकल जाय। गढ़ों और सूराखों को भी जहां तक मुमकिन हो भर देना चाहिये।

मकान को सील से बचाने के लिये मुनासिब है कि उसकी कुर्सी ऊंची रखी जाय क्योंकि अगर जमीन की सतह से नीची कुर्सी होगी या बराबर भी होगी तो घर सीला रहेगा। ऐसे घर में रहना बीमारी का मोल लेना है। जमीन पर सोने से चारपाई पर सोना बिहतर है और जहां की आब हवा नम हो या जहां बुखार का ज़ोर हो वहां बहुत ऊंचे पर मसलन् बरामदे या बालाखाने में सोना बड़े फाइदे की बात है। लेकिन यह न करे कि आप तो ऊपर सोए और नीचे गाय बैल बांधे क्योंकि इन के सबब से हवा ख़राब और उन के मूत गोबर से जमीन गन्दी हो जाती है। बार बार के लीपने से भी घर गीला रहता है, हां अगर कभी कभी पानी और मिट्टी से मकान को लीप दिया करे तो सफाई हो जावेगी लेकिन लीपने की मिट्टी के साथ गोबर हर्गिज़ न मिलाना चाहिये क्योंकि गोबर के सड़ने से बदबू फैलकर बीमारी पैदा होती है।

दल्दलों के पानी का निकास बड़े ख़र्च का काम है जिसका बंदोबस्त अक्सर शहर और देहात के लोगों की ताक़त से बाहर है। ज़हरीली भाप और उस से जो तप पैदा होती है इन दोनों के पूरे तौर पर रोकने की हिक्मत यही है कि पानी

के निकास का कामिल बदोबस्त हो जाय और उस ज़मीन पर खेती हो जाय। अगर यह न हो सके तो दलदल और शहर या गांव के दर्मियान खूब घने दरख्त लगाए क्योंकि दरख्तों से इस ज़हर का ज़ोर कम हो जाता है, लेकिन असल इलाज यही है कि पानी के निकास का अच्छा बंदोबस्त किया जाय और वहां की ज़मीन बो दी जाय।

मैले और पानी के निकास के सिवा मकानों और सड़कों के कूड़े करकट को भी रोज़ अच्छी तरह झाड़ू देकर जमा करके या तो जला देना या ज़मीन में गाड़ देना चाहिये नहीं तो खाद के ढेर में दूर डाल दें क्योंकि इस में भी जानदार और वनस्पतियों के हिस्से बहुत होते हैं और अगर न उठवाए जायँ तो उन के सड़ जाने से हवा गन्दी हो जायगी।

ऐसे पेशों का भी इन्तज़ाम करना चाहिये जिन से बदबू पैदा होती है, जैसे जानवरों के हलाल करने की जगहों और कुबड़ों की दूकानों की सफाई जितनी ताकीद से हो सके करानी ज़रूर है, और गोश्त पर मक्खियों को न बैठने देना चाहिये। जानवरों की लीद और दूसरे आखोर को जल्द ही साथ उठवा कर गड़वा देना चाहिये। छीपियों, चमारों और इस किस्म के दूसरे पेशे वालों को इस बात के लिये मजबूर करना चाहिये कि या तो वह शहर और गांव के बाहर रहें और अगर भीतर रहें तो ऐसी जगह बसें जहां लोग कम आते जाते हैं।

अगर इन तमाम बातों पर ध्यान दिया जाय तो हवा बहुत साफ बनी रहे।

सु० स०

दूसरा अध्याय

पानी

साफ पानी की जरूरत

तन्दुरुस्ती के लिये दूसरी बडी जुरूरी चीज साफ पानी है। बाज आदमी इस को साफ हवा से भी बढ कर जुरूरी समझते हैं। जो जो तर्कीबें हवा के साफ रखने के लिये ऊपर बताई गई हैं उन्हीं तर्कीबों से पानी भी साफ रह सकता है क्योंकि इस मे अक्सर गन्दगियां हवाही से आती हैं इसके सिवा अगर मैले के उठवाने का अच्छा बदोबस्त किया जाय तो हवा और पानी दोनों साफ रह सकते हैं। फिर भी कई खास बातें हैं जिन से पानी गन्दा हो जाता है। वह कौन सी बातें हैं और उनका क्योंकर रोक होसकता है इस का हाल सुनो ॥

पानी मिलने के जरीए

सब से बडा जरीआ पानी मिलने का मेह है। जब मेंह बरसता है तो उस का कुछ हिस्सा जमीन के ऊपर बह कर नदी नालों और तालाबों में चला जाता है और बाकी जमीन में समा कर झरनों और कुओं के सोतों को जारीरखता है। नदी और नालों के पानी का भी बहुत हिस्सा जमीन ही से रिस रिस कर आता है। पहाडो मे पानी बर्फ होकर बरसता है और गर्मी में जब बर्फ पिघलती है तो उसका पानी पहाडी नदियों में बह कर जाता है। इसीलिये पहाडो

नदियां गर्मी के मौसिम में उमड आती हैं। यह बात सब जानते हैं कि जिस साल सूखा पड़ता है नदी और नालों का पाट कम हो जाता है और कुओं और सोतों में भी या तो पानी घट जाता है या बिल्कुलही सूख जाता है, लेकिन बरसात में जब बहुत मेंह बरसता है तो उन सब में पानी चढ आता है। मेंह का पानी असल मे साफ होता है लेकिन जब वह हवा में से हो कर गिरता है खासकर शहरों की हवा में से तो उस में हवा की कुछ चीजे मिल जाती हैं और जब वह जमीन में समाता है तब उस में कभी कभी चूना और मग नीसिया और दूसरे नमक जो कि चट्टानों में होते हैं मिल-जाते हैं। लेकिन यह चीजें ऐसी नहीं हैं जिन से पानी बिल्कुल खराब हो जाय; हां जब आदमी उसे गन्दाकर देताहै या दलदलों या ऐसी जगहों से पानी लिया जाता है जहां बहुत से घास पात गले हुए हों तब वह पानी काम का नहीं रहता।

हिन्दुस्तान के शहरों और देहातों में पानी में अक्सर क्योंकर गन्दगी आजाती है और वह खराबी क्योंकर रुक सकती है

हिन्दुस्तान के लोग पानी नदी, नालों, तालाबों या कुओं से लेते हैं। अब देखना चाहिये कि यह क्योंकर खराब हो जाते हैं और कौनसी तदबीरें हैं जिन से यह खराब न हों।

तुम अभी सुन चुके हो कि नदियों और नालों में दो तरह से पानी आता है, एक तो यह जो जमीन पर से बहकर आता है, दूसरा यह जो जमीन पीजाती है और फिर रिस रिस कर उन में पहुंचता है। इस यह बात बखूबी समझ में आसकती है कि जो जो गन्दगियां जमीन के ऊपर या कुछ

जमीन ही में होती है वह सारी उस में मिल जाती है और उस को गन्दा कर देती है। मेंह बरसने के बाद यह गन्दगियां बहुत जियादा हो जाती हैं और उस में मिट्टी भी मिल जाती है जिस से पानी गदला हो जाता है। इस के सिवा नदियों में मैला और कूड़ा भी डाल देते हैं और मुर्दे बहा देते हैं, और जो मुर्दे उन के कनारे जलाए जाते हैं उन की राख उस में फेंक देते हैं। लोग नदी के कनारे पाखाना भी फिरते हैं, और यह पाखाना मेंह के पानी में बहकर नदी में जा पड़ता है। जिस घाट पर लोग नहाते धोते हैं उसी से पीने का पानी भी भरते हैं। अब सोचने की बात है कि बड़ी नदी जिस में पानी का बहाव हो वह भी इन गन्दगियों से खराब हो सकती है तो छोटे छोटे नदी नाले जिन में पानी कम और धीमा चलता है वह किस क़दर जियादा खराब हो जायँगे, और इन्हीं से लोग अकसर पीने का पानी भरते हैं। इस का इलाज सिर्फ यही है कि जमीन को खूब साफ रक्खें उस पर मैला और गन्दा पानी न फेंकें क्योंकि उस से सिर्फ जमीन के ऊपर ही का सुख खराब नहीं होता बल्कि जब वह गन्दे पानी को पीती है तो अन्दर भी गन्दी होती चली जाती है॥ यह भी खयाल रहे कि जिस घाट से पीने का पानी भरते हैं वहां नहाना धोना बन्द रक्खें। नहाने और कपड़ा धोने का काम पनघट से कुछ नीचे उतर कर धारा के पास होना चाहिये। नदी के कनारे रेतीमें अगर चन्द फुट गहरा एक गढ़ा खोद लें तो वह छन्ने का काम दे सकता है क्योंकि जब उस में पानी धीरे धीरे निथर जायगा तो गाद न रहेगी और उन गदगियों से भी कुछ न कुछ साफ होगा जो नदी में हुआ करती हैं।

जो जो खराबियां नदी और नालों के पानी में होती हैं उन में से अकसर तालाब के पानी मे भी हो सकती हैं, लेकिन तालाब का पानी चूंकि बँधा रहता है इस सबब से उस मे यह बुराइया बहुत जियादा नुकसान पहुंचाती हैं। तालाब में मैला और पेशाब और ऐसी ही दूसरी चीजे या तो जमीन पर से बहकर जाती हैं या जमीन जो गन्दगी से भीगी हुई होती है उस से आहिस्ता आहिस्ता रिस कर उस मे जा पहुंचती हैं। जिस तालाब का पानी पीते हैं उसी मे या उस के कनारे लोग नहाते धोते भी हैं, और हिन्दुस्तान के वाजे हिस्सों (मसलन बंगाले) में औरतों का आम कायदा है कि तालाब में नहाते वक्त पानी के अन्दर पेशाब भी कर देती हैं। तालाबों के कनारे पर अकसर पाखाने भी होते हैं और खास कर सवेरे यह अक्सर देखने में आता है कि उसी तालाब के गन्दे पानी से कोई तो नहाता और कुल्ली करता जाता है, कोई दतुअन करता और उसी में थूकता जाता है, कोई रसोई बनाने के बरतनों को मांजता है, कोई मैले कपडे या अनाज धोता है, और कोई बगल की टट्टी में से निकल कर उस में आबदस्त लेता है, और एक तरह से टट्टी का तमाम गन्दा पानी वहकर उसी तालाब मे चला आता है। गाय बैल को भी अक्सर उसी में नहलाते और पानी पिलाते हैं, और कभी रस्सी बटने के लिये सन और पटुआ या दूसरा रेशेदार चीजों की डन्ठियों को उस में भिगा रखते हैं और वह वहीं सड़ता रहता है। इन सब बातों का इलाज भी वही है कि गन्दगी जमीन के ऊपर न रहने पावे और न उस के अंदर असर करने पावे और यह सब बातें रोकी जायें जिन से तालाब गंदा-हो

जाता है। जितनी जमीन का पानी तालाव में पहुंचता हो उस को अच्छी तरह साफ रखना चाहिये और उस के आस पास पडाव और परनाले न होने चाहिये। विहतर है कि दो एक तालाव को खूब साफ और सुथरा रक्खे और लोग इन्हीं मे से पीने का पानी भरा करें, नहाने धोने के लिये और तालाब मुकर्रर करे। अगर तालावों के कनारे के पास छोटे छोटे कुए हो तो बीच की जमीन मे से साफ पानी छन कर आएगा और फिर लोगों को पीने का पानी इन्ही कुओं से भरना विहतर होगा। पानी मे हरे पौदों का होना बुरा नहीं वल्कि अच्छा है लेकिन जो मुरझा जायँ उनको तुर्त निकाल कर फेंक देना चाहिये। ऐसे तालावों मे जो शहर या गाव के आस पास हों सन या इसी किस्म की और चीजों को न भिग-ाया करें क्योंकि इससे सिर्फ पानी ही गन्दा नहीं होता बल्कि हवा भी खराब होजाती है। पीने का पानी निहायत साफ होना चाहिये लेकिन लोगों का यह खयाल कि खराब पानी से नहाने धोने में कुछ बुराई नहीं बिल्कुल गलत है, मैले पानी से नहाना धोना बीमारी का मोल लेना है।

कुओं मे जमीन के सोतों से पानी आना चाहिये। हिन्दुस्तान में अक्सर कुओं पर मुडेर नहीं होती इसलिये बरसात वगैरह का मैला पानी बहकर उन मे जा पडता है, और अक्सर कुए ऐसी जमीन में खोद लेते है जहा एक मुद्दत से गन्दगी जमा होती रही है। पस उन में जो पानी ऐसी जमीन के अन्दर से हो कर जाता है वह भी गन्दा होता है। इसी-लिये वहुतेरे पुराने शहरों के कुओ के पानी में इस कदर जानदार चीजो और बनसपतियो के हिस्से होते हैं कि उनका

पानी पीने के लाइक नहीं होता। इस लिहाज से कुए के पास
सण्डास का होना निहायत ही बुरा है क्योंकि जो पानी ज़मीन
के सोतों से कुए मे रिसता रहता है वह भी गन्दा हो मिलता
है, पस अगर कोई सण्डास कुए के पास हो तो उसे अच्छी
तरह साफ करवा कर बन्द कर देना चाहिये। हिन्दुस्तान के
कुओं में एक और बुराई यह है कि उन के गिर्द अकसर गढ़ा
होता है जिस मे भरते वक्त थोडा बहुत पानी हमेशा गिरता
रहता है। यह पानी जो आदमी और जानवरों की लातों
में रहता है और जिस मे जानवरों का गोबर और दूसरी मैली
चीजें भी मिल जाती हैं फिर रिस रिस कर कुए में जाता है
और सारे पानी को गन्दा कर देता है। बाज़े कुओं के गिर्द
जानवरों के पानी पीने के लिये पक्के हौज बने होते हैं लेकिन
यह अक्सर गन्दे रहते हैं और उन मे दरारें पडी होती हैं
जिन की राह से मैला पानी निकल कर कुए मे जाता है।

आदमी कुए पर अकसर नहाते या मैले कपडे धोते हैं
इसकी गन्दगी भी कुए में जाती है। अकसर कुओं के मुंह खुले
रहते हैं इस लिये दरख्तों के पत्ते वगैरह या तो उन्हीं
गिरते हैं या हवा उडा लाती है। इस के सिवा पानी अगर
मैले डोल या मैली रस्सी से भरा जाय तो भी खराब हो जाता
है, और जिस वक्त पानी खींचते हैं तो उसका छींटा खींचने
वाले के मैले पांव पर पडता है और यह धोवन का पानी
कुए में फिर आकर गिरता है। पस कुओं के साफ रखने के
लिये इन बातों को याद रखना ज़रूर है-गन्दी ज़मीन में कुए न
बनाएँ। किसी निकास का पानी कुए में न जाने पाये और
इस के इर्द गिर्द का पानी दीवार से रिसने पाए। इस अ

का भी इन्तिजाम किया जाय कि पत्ते और दूसरी चीजें कुए के अन्दर न गिरें और न उडकर सडने पावें । पानी ऐसे साफ डोल रस्सी से खीचा जाय कि कुआ गन्दा न होने पावे । कुए के पास लोग नहाने और कपडा धोने न पावें। हर एक कुए के गिर्द मुडेर और उसके चारो तरफ कई फुट चौडी पक्की जगत होनी चाहिये । कुए के पास कोई गढे या सूराख ऐसे न रहने चाहिये जिनमे निकास या किसी और क़िस्म का पानी जमा हो सके । कुए के मुह पर लोहे या लकडी की एक जाली रक्खे जिस से हवा की भी न रोक हो और पत्ते भी अन्दर न जा सकें, और अगर मुमकिन हो तो उस मे पानी खीचने का एक पम्प भी लगाये, लेकिन इस मे लागत बहुत आती है और जल्द बिगड भी सकता है, पर डोल और रस्सी का साफ रखना तो कुछ मुश्किल नही है ।

पानी के साफ करने की बहुतेरी तर्कीबे निकाली गई हैं लेकिन पानी जब थोडी देर ठहरा रहता है तो गाद आप से आप नीचे बैठ जाती है । बाजे फिटकरी वगैर' से भी साफ करते है । इस के खूब साफ करने के लिये तरह तरह के छन्ने तैयार किये गए है लेकिन अगर पानी साफ जगह मे भरा जाय तो उस के छानने की कुछ जरूरत नही है । बडी बात यह है कि साफ पानी भरना चाहिये और साफ ही रखना चाहिये । लेकिन चूकि इस कदर साफ पानी जिस से घर का कुल काम चल सके मिलना भी मुश्किल बल्कि बाज दफे गैर मुमकिन है इस वास्ते अक्सर शहरो में ऐसा बन्दोबस्त किया गया है कि नदी या किसी बडे तालाब से जिस में बरसात का बहुत सा पानी जमा हो या किसी गहरे कुए से

पानी लेकर नलों के जरीये से शहर में लाते हैं और बाजारों और घरों में बांट देते हैं। इस तर्कीब के फाइदेमन्द होने में तो कुछ शुबहा नहीं लेकिन यहां भी फिर वही लागत का झगड़ा पड़ता है, खास कर उत्तरी हिन्दुस्तान में तो ऐसे शहर बहुत कम हैं जो इस काम के वास्ते रुपया खर्च कर सकते हों, हां लोगों का जब तन्दुरुस्ती की तरफ जियादा खयाल होगा तब अलबत्ता ऐसी बातों में जुरूर हौसला करेंगे लेकिन अब भी अगर चाहें तो बहुत ही कम खर्च में हाल की बुराइयों को दूर करने का बहुत कुछ बन्दोबस्त कर सकते हैं।

यह बात याद रहे कि जैसे इन्सान की तन्दुरुस्ती के वास्ते साफ पानी की जरूरत है वैसे हो हैवान के वास्ते भी है लेकिन अफसोस कि किसी को इन बेजबानों की परवा नहीं। इन बेचारों को जैसा पानी किसी पास के गढ़े में भरा हुआ मिला पिला देते हैं गोकि उस में तमाम आस पास की मोरी का मैला और अनाबन्ना क्यों न गिरती हो, क्योंकि लोगों के नजदीक हैवानों के पीने के लिये हर एक पानी से काम निकल सकता है। फिर जानवर दुबले क्यों न हों और उन की हड्डियां क्यों न नजर आयें और उन्हें कीड़ों की बीमारी और दूसरे मर्ज क्यों न सतायें।

ऊपर लिखी हुई बातों पर म्यूनिसिपल कमिटियों और देहात के नम्बरदारों की तवज्जुह जुरूर है

जो जो तदबीरें ऊपर लिखी गई हैं उन पर हर शख्स को और खास कर घर के मालिक को तवज्जुह जुरूर चाहिये, लेकिन जब तक शहर या गांव के सब लोग मिल कर कोई बन्दोबस्त उनके चलाने का न करेंगे तब तक उन पर अच्छी

अमन न होगा। मसलन् बगैर किसी कानून के न तालाब और कुए साफ रह सक्ते हैं न सर्कारी पाखाने, और न सड़कों की सफाई का कुछ बन्दोबस्त हो सक्ता है। शहरों में इन बातों का इख्तियार म्यूनिसिपल कमिटी को दिया गया है जो शहर के तमाम लोगों की काइममुकाम समझी जाती है, और उन का सब से बड़ा फर्ज यह है कि वहां के रहनेवालों की तन्दुरुस्ती का बन्दोबस्त और हमेशा उस की निगरानी करते रहें। देहातों में जहां म्यूनिसिपल कमिटियां नहीं हैं वहां नम्बरदार बहुत कुछ कर सक्ते हैं यानी लोगों को तदबीरें समझा सक्ते हैं और खुद उन पर अमल करने से दूसरों को भी उसी के मुताबिक चलने के लिये राह दिखा सक्ते हैं।

तीसरा अध्याय

और बातें जो तन्दुरुस्ती के लिये ज़रूरी हैं

सिवाय साफ हवा और साफ पानी के कितनी बातें और भी हैं जो आदमी की तन्दुरुस्ती के लिये ज़रूरी हैं। यह हर एक के इख्तियार में हैं जैसे खाना खाना, कपड़े पहनना, नींद भर सोना, कसरत करना, और अपनी तबीअत को बहाल रखना। अगर इन का पूरा पूरा बयान करें तो हर एक के लिये एक अध्याय जुदा चाहिये और इतनी गुञ्जाइश इस छोटी सी किताब में नहीं है, और अगर बयान भी करें तो उन के लिये ऐसे ठीक काइदे नहीं बांध सक्ते जो साफ हवा और साफ पानी के लिये बता चुके हैं क्योंकि आदमी को हमेशा उस की ख्वाहिश के मुताबिक खाने की चीज नहीं मिल सक्ती। शायद वह चीज मिलती ही न हो, और अगर मिल भी सक्ती हो तो उस के पास उतना दाम न हो, और

ऐसा तो अक्सर होता है कि मुफ़्लिसी के सबब से कितने आदमियों को पेट भर खाना नहीं मिलता । पस खाने की बाबत इसी क़दर कहना काफ़ी है कि इतना कभी न खा कि पेट अफरने लगे, दो दफ़े थोड़ा थोड़ा खाना एक दफ़े बहुत खाने से बिहतर है, खाना खूब पका हो उस में कहीं से कच्चापन न रहे, और जहां तक मक़दूर हो हर रोज़ अदल बदल कर एक एक तरह का खाना खाते रहो, और साथ में कुछ ताज़ी तरकारियां भी ज़ुरूर हों पीने के लिये पानी सब से उम्दा चीज़ है, शराब की कुछ ज़रूरत नहीं, यह अक्सर बहुत नुक़्सान पहुंचाती है ।

पोशाक में भी वही मुश्किलें हैं जो ख़ुराक में हैं । आदमी अपने और अपने बाल बच्चों के लिये अपनी हैसियत से ज़ियादा कर कहां से कपड़े ला सक्ता है, तो भी इसकी बाबत इस क़दर याद रखना चाहिये कि तन्दुरुस्ती के लिये मुनासिब पोशाक पहननी निहायत ही ज़ुरूरी बात है और गहने वग़ैरः बनाने से अच्छी पोशाक में रुपया ख़र्च करना बिहतर है ख़ास कर जिस जगह की आब हवा नम है वहां ज़ियादः कपड़ों की बड़ी ज़रूरत है, क्योंकि सर्दी खाने से बीमारी हो जाती है । उत्तरी हिन्दुस्तान में इस बात का लिहाज़ जाड़े के महीनों में जहां तक हो सके ज़रूर चाहिये और उस मौसिम में ख़ास कर सोने की हालत में सर्दी से बचना चाहिये ।

पहले अध्याय में इस बात का ज़िक्र आ चुका है कि ज़मीन पर सोने से चारपाई पर सोना बिहतर है और कम्मल में सर मुंह लपेट कर सोना अच्छा नहीं । गोकि यह बात

बहुत दुरुस्त है लेकिन जब किसी के पास इतने कपडे न हों जिस से गर्म रह सके तो जमीन पर सोना और सोते वक्त सर को ढाक लेना ही बिहतर है ताकि सर्दी न खाय।

कसरत करना और सोना इन दोनों बातों का हर आदमी अपनी खाहिश के मुताबिक़ कायदा नहीं बांध सकता क्योंकि अकसर औरत और मर्द सुबह से लेकर शाम तक मजदूरी करते हैं, लेकिन जिन लोगों को फ़ुर्सत मिल सकती हो वह याद रक्खें कि थोडी सी कसरत करने से तन्दुरुस्ती को बहुत कुछ फाइदा पहुचता है और नींद भरपूर आती है। जिस तरह बाजे आदमियों को औरों से जियादा खाने की जरूरत होती है उसी तरह बाजे दूसरों से जियादा देर तक सोने के भी मुहताज होते हैं। नौजवानों को तो जरूर पूरी नींद लेनी चाहिये और दूसरी उम्र के लोगों को अपनी आदत के मुताबिक़ सोना काफी है। इंसान को किसी न किसी तरह की थोडी बहुत मिहनत जरूर करनी पडती है और अगर वह मिहनत अच्छी बातों के लिये हो तो सिवाय तन के मन भी हरा भरा रहता है, और चूंकि तन और मन का एक दूसरे के साथ बडा पक्का लगाव है इसलिये किसी किस्म की जियादती से इन दोनों का नुकसान होता है।

जिन बातों से औलाद को नुक़सान पहुंचे चाहे उसका नुक़सान शुरू ही मे जाहिर हो या आखिर में उसका नतीजा खराब निकले उन पर तवज्जुह जरूर चाहिये, क्योंकि इन्हीं बातों पर दूसरी पीढी की ताक़त मौकूफ है। पस लडकियों का ब्याह भी कम उम्र में न करना चाहिये क्योंकि इस से वह उठान से पहलेही बच्चों की मा बन जाती हैं और उनकी

औलाद दुबली और कमज़ोर होती है। बच्चों को साफ़ ह
और साफ पानी और अच्छे खाने की जरूरत जवानों से ज़
कर होती है। गरज कि इन सब पर और बच्चों के रखने के
खबरगीरी करने के तरीके पर उन की तन्दुरुस्ती मौकूफ है
अगर तवज्जुह की जायगी तो बच्चा ताक़तवर और तन्दुरु
रहेगा नहीं तो दुबला और किसी न किसी बीमारी में हमे
गिरिफ्तार रहेगा ॥

चौथा अध्याय

चेचक और हैजा

हिन्दुस्तान में जिन बीमारियों का जोर है और जिन
बहुत से लोग शिकार भी होते हैं तीन हैं, यानी बुखार, चेच
(जिसे यहां वाले अकसर सीतला कहते हैं) और हैजा। जब
बार हुआ तो उसी के साथ कोई भीतरी बीमारी भी हो जा
है जैसे खांय, मयहनी और तापतिल्ली।

गोकि तन्दुरुस्ती के क़ायम रखने के लिये जो जो क़ा
बताए गए हैं उन पर चलने से कुल बीमारियों से लड़ी
सकती है लेकिन चेचक और हैजे के लिये कुछ खासख़ा
बताने ज़रूर हैं। तुम लोग चेचक या सीतला की बीमारी से
वाक़िफ़ हो। हर साल तुम्हारे पड़ोस में किसी न किसी को चेच
निकलती है, अलबत्ता किसी बरस बहुत जोर होता है कि
बरस कम, लेकिन हर साल बहुत लोग इस से मरते हैं
जो बच रहते हैं उनका चिहरा इस के दागों से उन भर
लिये बिगड़ जाता है, बाजों की आंखें जाती रहती हैं, बा

को कोई और भारी सद्मा पहुंचता है। इन खराबियों को कम करने की गरज से हिन्दुस्तान मे बहुत जगह टीका लगाने का दस्तूर जारी है। वह दस्तूर यह है कि खास चेचक के दाने मे से जरा सा चेप लेकर नश्तर की नोक से तन्दुरुस्त आदमी के बाजू की जिल्द के अन्दर किसी जगह पहुंचा देते हैं। यह चेप या तो चेचक के दाने से लेते हैं या जब दाना मुर्झा जाता है तो छिलको को उतार कर उस मे जरा सा पानी मिला कर पीस लेते हैं, जब वह लेई सा हो जाता है तो नश्तर की नोक से काम में लाते हैं। इस का फल यह होता है कि जिस आदमी के टीका लगाते हैं उस के बदन पर चेचक के दाने निकल आते है लेकिन बहुत कम। तो भी यह तरीका खतरे से खाली नहीं है। बाजी दफे बड़े जोर से चेचक निकल आती है और बीमार की जान पर आ बनती है। इस के सिवा इस किस्म के टीका लगाने मे एक बड़ा ऐब यह भी है कि इस कमबख्त बीमारी की दुनया से जड नहीं खुदने पाती।

करीब अस्सी बरस का अरसा हुआ कि एक अंगरेजी हकीम ने जिनका नाम डाक्टर जेनर था यह दर्याफ्त किया कि गाय के थनों पर जो दाने निकलते हैं अगर उनका चेप लेकर किसी तन्दुरुस्त आदमी की जिल्द के अन्दर इसी तरह पहुंचावे तो आदमी खास चेचक की बीमारी से बच रहता है। गाय की इज्जत देने के लिये उन्हों ने इस अमल का नाम वेक्सिनेशन रक्खा क्योंकि लाटिन जबान में वेका के मानी गाय के हैं। पहले पहल लोग बहुत बिगडे और डाक्टर साहिब के पीछे पड गए। सब से बढ कर इन्हीं के

पेशेवालों ने उन की हँसी उडाई लेकिन उन्हों ने एक की भ सुनी और अपनी कोशिश में लगे रहे, और अब बरसों की आजमाइश से यह बात साबित होगई है कि जो कुछ उन्हों ने, कहा था सो सच था और उन्हों ने एक ऐसी उमदा तद्‌बीर निकाली जिससे दुन्या को बेहद फायदा पहुंचा । यह कुछ ज़ुरूर नहीं कि वह चेप जिसका अंगरेजी नाम लिम्फ है हमेशा गाय के थनों ही से लें क्योंकि यह दर्याफ्त हुआ है कि जिस किसी को अच्छा टीका लगा हो अगर उस के बाजू के चेप से किसी दूसरे को टीका लगे तो वह भी पूरा उतरेगा । कुल शाइस्ता मुल्कों में यह अमल अब जारी हो गया है और बहुतों में तो इस बात के लिये सर्कारी कानून होगया है कि जब बच्चा एक खास उम्र पर पहुंचे उस के मा बाप उसे ज़ुरूर टीका दिलवा दें । हिन्दुस्तान में बम्बई के सिवा और शहरों में कोई सर्कारी कानून इस बाब में नहीं जारी हुआ है, लेकिन हर एक सूबे में सर्कार की तरफ से टीका लगाने के लिये कुछ लोग मुकर्रर रहते हैं जिन को हुक्म है कि जब कोई दर्खास्त करे वह मुफ्त टीका लगाये । कितनी जगह तो यह काम खूब जारी होगया है लेकिन बाज जगह लोग अपनी कम्‌ समझ के बाइस इसे नाजाइज़ समझते हैं और ऐसी भारी नेमत से फाइदा नहीं उठाते। उनको यक़ीन यह है कि चेचक एक देवी है और इसी लिये इस मरज़ को सीतला कहते हैं । यह समझते हैं कि अगर हम उस के कामों में दखल देंगे तो बड़ी मुसीबत में फसेंगे । ऐसे लोग अपनी औलाद को इस बीमारी से उम्र भर के लिये लंगड़ा लूला बनाना बल्कि उन का मर जाना भी कुबूल करते हैं लेकिन,

टीका दिलवाना नहीं चाहते जिस से उन के बच्चे इन बलाओं से बच जाय। यह तो वही बात ठहरी जैसे कोई कहे कि कोई बीमारी ईश्वर की मरजी बगैर नहीं होती इसलिये दवा करना पाप की बात है और ईश्वर के रूठ जाने का डर है। अगर इस ख्याल पर चले तो बुखार आने की हालत में कभी कुनैन न खाना चाहिये और न किसी बीमारी में कोई दवा करनी चाहिये। वह यह नहीं जानते कि अक्सर हालतों में बीमारी इस वजह से पैदा होती है कि लोग ईश्वर के हुक्म के खिलाफ करते हैं और जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है उस साफ हवा और साफ पानी को जो ईश्वर ने हम को दिया है गन्दा कर देते हैं। यह बात निहायत ज़रूरी है कि वेक्सिनेशन (टीका) का रिवाज दिया जाय जिस में हिन्दुस्तान का हर एक आदमी इस बला से बच जाय। गोकि कभी कभी कामयाबी के साथ टीका लगने के बाद भी किसी किसी को चेचक निकल आती है लेकिन उसका ज़ोर बहुत ही कम होता है और उस की शक्ल ही दूसरी होती है, और ऐसी तो शायद ही कोई मिसाल सुनने में आई होगी जिस में अच्छा टीका लगने के बाद भी कोई आदमी चेचक की बीमारी में मरा हो। हां इस से छुटकारा पाने के लिये यह ज़रूर है कि टीका कामयाबी के साथ हुआ हो। नाकामयाब टीके से कुछ फायदा नहीं होता। टीका अच्छा उतरने के लिये इतनी शर्तों का पूरा होना ज़रूर है—

पहले तो दाने खूब उभरने चाहिये और इस मतलब के हासिल होने के लिये ज़रूर है कि कई रोज़ तक बाज़ू को रगड़ या ठेस न लगने पावे।

दूसरे यक ही दाने का उभरना काफी नहीं है बल्कि कम से कम वैसे तीन चार दाने होने चाहिये।

तीसरे टीका बचपन में लगाना चाहिये, ऐसा न हो कि टीका लगाने से पहले ही चेचक अपना असर कर जाय।

चौथे जवान होने पर मर्द या औरत को फिर टीका लगाना अच्छा है।

अगर यह शर्तें हमेशा पूरी हुआ करें तो मुमकिन है कि इस बीमारी का नाम निशान तक दुनिया में न बाकी रहे।

हैजे का सबब आज तक कोई नहीं बता सका है, लेकिन तन्दुरुस्ती की हिफाज़त के लिये जिन कायदों का जिक्र ऊपर हुआ अगर उनकी पाबन्दी रहे तो यह मरज़ बहुत कम हो जाय। इस मरज़ के बाब में यक अजीब बात साफ तौर पर देखने में आई है और इस को ज़रूर याद रखना चाहिये यानी यह बीमारी खास खास जगहों में ऐसी चिमट जाती है कि फिर वहां से टलना नहीं चाहती। इसी वास्ते जब हैजा किसी पलटन या जेलखाने में फैलता है तो सरकारी अफ़सर सिपाहियों और कैदियों को किसी और जगह ले जाते हैं। आप लोगों को भी इसी कायदे पर अमल करना चाहिये, मसलन जिस घर में कोई हैजा करे उस घर को नहीं तो उस खास कोठरी ही को दस दिन तक छोड़ दें। इस से यह न समझना कि इस मरज़ की छूत दूसरे को लग जाती है क्योंकि तजरिबे से मालूम हुआ है कि जिस तरह किसी मामूली बुखार के मरीज़ की खिदमत करने वाले को बुखार नहीं लग जाता उसी तरह किसी हैजे वाले के पास रहने से भी वह मरज़ नहीं हो जाता, अलबत्ता उस जगह में रहना जहां

यह मरज पैदा हुआ खौफ की बात है क्योंकि यहा ऐसे सबब मौजूद हैं जिन से उसको यह मरज होगया और क्या तअज्जुब है कि औरों को भी वहां जाने से हो जाय। पस उस जगह से दूर रहना चाहिये। हैजे के दिनों में मेले में या किसी और जगह जिसके करीब वह मरज फैला हो न जाना चाहिये, इतनी मिहनत भी न करनी चाहिये जिस से थक जाय, और न शादियों और भीड भाड की जगहों मे जाना मुनासिब है। यह तमाम बातें तन्दुरुस्ती से इलाक़ा रखती हैं, पस खास कर हैजे के दिनों में इन के बखिलाफ़ करना खुद अपना नुकसान करना है।

पांचवा अध्याय

मौत की तादाद का हिसाब रजिस्टर में

अब कोई शख्स सवाल कर सकता है कि जो सीधी सीधी तदबीरें आप ने बताई वह तो अक्ल मे आती है लेकिन इस बात की क्या सनद है कि अगर हम उन के मुताबिक चलेंगे तो बीमारी सच मुच कम होगी और अपने बुजुर्गों की बनिस्बत हम मरजों से कम तकलीफ उठाएंगे। इस के जवाब में हम बहुत पक्का सुबूत पेश कर सकते हैं। देखो जब इगलिस्तान के लोग तन्दुरुस्ती की हिफाजत के काइदों की तरफ ध्यान न देते थे तो सिपाहियों की औसत सालाना मौत फी हजार १०६ थी लेकिन जब से इन काइदों पर चलने लगे वह घट कर फी हजार ८.५६ होगई यानी पहले हर साल फी हजार १८ आदमी के करीब मरते थे लेकिन जब से यह काइदे जारी हुए तब से हजार मे ८ आदमी से कुछ ऊपर

लखनऊ का शाही बरात।

लखनऊ की नवाबी।

सचित्र
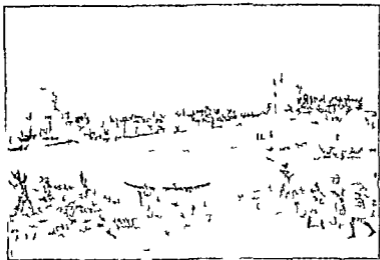
सच्चा ऐतिहासिक वृत्तान्त

प्रथम खण्ड।

ठाकुरप्रसाद खत्री,

पदार्थ विज्ञानकोश, रासायनिककोश, भूगर्भ विद्या, ज्योतिषप्रबन्ध,

हमारी प्राचीन ज्योतिष, इत्यादि के

ग्रन्थकर्ता।

प्रथम बार १०००] [मूल्य प्रथम खंड ॥)

Printed at the L. P. Kashi—1906

नसीरुद्दीन हैदर बादशाह, उनके कृपापात्र अनुचर और उनकी
मोरछल करने वालियां।

श्री
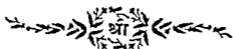
लखनऊ की नवाबी।

अनुमान बीस वर्ष से कुछ अधिक हुए होगे कि मैं किसी अपने निज कार्य के लिए लखनऊ गया था और उस समय वहा की राजगद्दी पर बादशाह गाजीउद्दीन का बेटा नसीरुद्दीन विराजमान था।

इसके पूर्व जब मै कलकत्ते मे था तब मैं लखनऊ की निराली बातें, नव्वाब साहब के अनूठे रग ढग, उनका उन फिरगियो पर जो कम्पनी* के नौकर न थे, अधिक चाव तथा उन का आदर और उनकी बड़ी भारी पशुशाला (जानवर खाने) का बहुत कुछ वर्णन सुन चुका था। यह भी मुझे विदित हो चुका था कि लखनऊ के रहने वाले बडे बाके और लड़ाके होते हैं तथा वहा के लोग गली कूचो मे ढाल, तलवार, बरछी, पिस्तौल, बन्दूक इत्यादि बाधे खुले बन्दो घूमा करते हैं। और भी बहुत बातें मैं सुन चुका था, परन्तु इनमे से प्राय अनेक बातो के ठीक२ होने मे मुझे सदेह होता था; अत कुछ बातो को मैंने गप्प ही समझ लिया था, परन्तु मेरा यह अनुमान सर्वथा

* यह वर्णन सन् १८३१ ई० के लगभग का है जब कि हिन्दुस्थानमें अँगरेजी राज्य का उदय हो चुका था और यह कम्पनी बहादुर का राज्य कहलाता था।

मिथ्या ठहरा। क्योंकि जब मैंने यहां आकर अपनी आंखों से देखा तो जोकुछ पहिले सुना तथा अनुमान किया हुआ था, उससे उसको कहीं बढ़ा चढ़ा पाया।

सब से पहिले तो मुझे उस राजमन्दिर को ही देखकर एक अचम्भा सा हो आया, जो बादशाही महल (शाहमहल) कहलाता है। यह राजमन्दिर केवल एकही भवन मात्र न था, किंतु एकही में अनेक भवनों की श्रेणी, की श्रेणी गोमती के तीर तीर कुछ दूर तक चली गई थी। अवध के बादशाही महलों की यह बनावट, कुस्तुन्तुनिया के हरम, तेहरान के शा के महल तथा पेकिन के राजभमन्दिरों के समान थी। क्योंकि एशिया के देशों में शाही महल केवल बादशाहों के रहने केही लिये नहीं होते, किन्तु उनमें ऐसे स्थान भी बने रहते हैं कि जिनमें राज्य सम्बन्धी सम्पूर्ण काम्य हो सकें। बादशाह की बेगमों के रहने के अन्तःपुर, गिर्दी, गुलामों के रहने के स्थान, सभाभवन (दरबारी इमारतें) तथा और अनेक भांति के राजगृह इत्यादि उन्हीं के अंतर्गत होते हैं। इसी के भीतर राज्यकर्मचारियों के गृह, निवासस्थान आदि तथा पुष्प वाटिकाएं, सरोवर, फौवारे और आंगन भी बने रहते हैं। ठीक ऐसीही व्यवस्था उस समय लखनऊ के शाही महलों की भी थी। गोमती नदी (जो सदा शहर की साधारण सड़क से अधिक चौड़ी नहीं है) के एक तट पर शाही महल और दूसरे तट पर एक रमना था; जिसमें बादशाही पशुशाला बनी हुई थी। इसमें इतनी तरह के पशु, पक्षी और दरन्द जन्तु एकत्रित किये गए थे कि जिनकी गिनती का अनुमान करना भी कठिन है। इस पूर्वोक्त शाला में

सैंकडो हाथी, शेर, चीते, गैंडे, तेंदुवे, चीतल, हिरन, पाढे, बन-विलाव, ईरानी बिल्लियां, चीनी कुत्ते, इत्यादि इत्यादि, कुछ खुले घूमते और कुछ पिंजरो में वन्द थे और कुछ पशु रमने की हरी हरी घास चरते फिरते थे, मानो लन्दन के खेतो मे गाय तथा भेडो के झुण्ड चर रहे हो।

यद्यपि उक्त महलो का नाम 'फरहत बख्श' था, तथापि उन महलो के बाहरी ओर से कोई भी बात उनके महत्व और चमत्कारिता की नहीं देख पडती थी। इन भवनो की कारीगरी इत्यादि से, मुझे उनकी प्रशस्तता देखकर, अधिकतर आश्चर्य हुआ, क्योंकि मै उस समय तक यही समझा हुआ था कि इन महलो में बडी अनूठी कारीगरियो के काम बने होगे, परन्तु ये भवन इतने प्रशस्त तथा इतने बडे बडे हैं, इसका तो मुझे गुमान भी न था।

लखनऊ की गलियो को देखकर भी मेरी कल्पना भङ्ग नहीं हुई। बिशप वेवर साहब ने उन महलो के चारो ओर की गलियो की 'ड्रेसडन' की गलियो से उपमा दी है, किसी किसी विदेशी ने लखनऊ को "मासको" शहर के सदृश भी बताया है। यद्यपि मैंने इन दोनो नगरो को नहीं देखा है, तथापि मैं अनुमान कर सकता हू कि ये दोनो नगर इसकी सादृश्यता न प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् इनकी उपमा इस शहर के लिये कदापि उपयुक्त न होगी। हा, 'कैरो' एक बडा नगर है, जो ईजिप्ट की राजधानी है, उसे मैंने ऐसाही देखा है कि जिसकी सकरी गलि-या, बाजार और उनमे लदेफदे ऊटो का आना जाना, लखनऊ के निचले बाजार केही सदृश है। इस नगर की उपमा चाहे

आपलोग ह्वेसहन, मास्को, कैरो आदि से दें, परन्तु वस्तुत लखनऊ कीसी अनूठी रचना कदाचित और किसी नगर में न पाई जायगी।

प्रथम तो यह कि लखनऊ के से हथियारबन्द मनुष्य, उन नगरों में कहीं देख भी न पड़ेंगे। हां, मास्को के निवासी छुरी बांधते हैं और काहरा (Cairo) नगर के लोग भी कभी २ हथियारबन्द दिखाई पड़ जाते हैं, परन्तु लखनऊ में तो प्रत्येक व्यक्ति हथियार बांधेही रहता है। येलोग तोड़ेदार बन्दूक, पिस्तौल, कराबीन, ढाल, तलवार बांधे फिरा करते हैं, यहां तक कि कामकाज करनेवाले, दुकानदार, आदि भी तलवार अवश्य ही पास रखते हैं। सिवाय इसके अनुद्यमी तथा दरिद्र लोग भी, चाहे उनके तन पर वस्त्र भी न हो, पर कम से कम कराबीन या ढाल तलवार इत्यादि कोई न कोई एक हथियार अवश्य ही रखते हैं। भैंसे की खाल से बनी हुई ढाल, जिसमें पीतल के फूल लगे होते हैं, उनके बाएँ कंधे पर अवश्य लटकी रहती है। बड़ी बड़ी मोछोंवाले कनौजिये राजपूत और पठान लोग तथा काली दाढ़ी वाले मुसल्मान ढाल तलवार से सुसज्जित, ऐंठते पैंठते, घूमते फिरते देख पड़ते हैं, स्पष्ट ज्ञात होता है कि लखनऊ के निवासी अत्यन्त बाँके तिरछे, घमण्डी और लड़ाके हैं। परन्तु यहां के लोग क्यों ऐसे रहते हैं, इसपर आश्चर्य न करना चाहिये, क्योंकि इसी अवध प्रान्त के लोग कम्पनी बहादुर की पलटनों में प्राय भरती होते हैं। फिर बङ्गाल की कम्पनी में तो विशेषत अवध केही लोग नियुक्त हैं।

इस लखनऊ के निवासियों को बचपन सेही शस्त्रों के

प्रयोग का उत्साह दिलाया जाता तथा उनका अभ्यास कराया जाता है। तीर, कमान और बर्छी तो यहा के बालको के खेल की वस्तुए हैं। काठ की बनी छोटी २ तलवारें और कडाबीनें यहा के लडको को खेलने के लिये वैसेही दीजाती हैं जैसे अग्रेजी दाइया प्राय बच्चो के हाथ मे झुंझुने खेलने को पकडा दिया करती हैं।

मेरी दृष्टी में इस नगर के गली कूचो की सैर एक निराले ही ढङ्ग की थी, मुझे जान पडता था कि मैं घूमता फिरता एक अनोखे देश में आनिकला हू कि जहा के साधारण मनुष्य भी सब शूर वीरही हैं। इन मनुष्यो की चालढाल सेही बाँकापन और वीरता टपकी पडती है कि जिसका वर्णन मैंने किस्से और कहानियो की पुस्तको में बचपन मे पढा था।

कैरो वा मास्को में बोझ से लदे हुए हाथी कदापि न देख पडेंगे, क्योकि सकरी और पतली गलियो मे ऐसे भारी भरकम पशुओ के चलने फिरने से अधिक उपहासयुक्त और वेढङ्गी बात कौनसी होसकती है? कैरो नगर में जैसे लदेफदे ऊटो के बोझ दोनो ओर से गली को छेंक लेते हैं, वैसेही यहा की गलियो को हाथियो के डीलडौल मात्रही रोक लेते हैं। लखनऊ में हाथी तथा ऊट दोनोही की बहुतायत है। यहा के बाजार बडे गन्दे हैं। इनमे घोडे तो कभी २ दिखाई देजाते हैं, परन्तु हाथी और ऊट बहुधा देखे जाते हैं। इन छोटी और तङ्ग गलियो में हाथी और लदेफदे ऊटो को देखकर तो चिरकाल तक मै अपनी हँसी को रोकने में असमर्थ था और यही जी चाहता था कि पेटभर हँसूं, यद्यपि वहा मुझे अपने इस कर्म

से शरीर रक्षा की भी चिन्ता होजाती थी।

यहां के हिन्दू और मुसल्मान यद्यपि हथियार तो एकही से बांधते हैं, तथापि वे अन्यान्य व्यवहारों में एक दूसरे से भिन्न हैं। लखनऊ की बस्ती ३००००० तीन लाख मनुष्यों की है, इनमें से दो तिहाई हिन्दू हैं, जिनमें अधिकतर नीच जाति के हैं और शेष एक तिहाई मुसल्मान हैं, जो यहां के नवाब और उमराव कहे जाते हैं, क्योंकि यहां की राजगद्दी मुसल्मानों की है। जिस देश की राजधानी यह लखनऊ है, उसके विषय में। कदाचित कुछ लोग अनभिज्ञ हों अतः उसके विषय में यत्किंचित कुछ वर्णन करना उचित और आवश्यक जान पड़ता है। हम (अंगरेज) लोग इसे 'शाह अवध की पटनी' तथा 'मोगलीदौलो बादशाहत' कहा करते हैं और इसी का वर्णन चार्ल्स ओमोरली ने बड़े धूमधाम के साथ किया है।

लार्ड वेलस्ली जब बड़े लाट होकर हिन्दुस्थान में आये थे, उस समय अवध का राज विस्तार में इंग्लैण्ड से भी बड़ा था। प्रथम यह मुगल वंशी राज्य का एक सूबा था और जो इसका प्रबन्धकर्ता होता था, वह "नवाब वजीर" कहलाता था। वारन्हेस्टिंग्स् ने जो यहां के नवाब वंश की दो बेगमों को लुटवा दिया था और उनके खाजासराओं को धोखा देकर उनका धन अत्याचार से हरण कर लिया था, इस हेतु से अवध के नवाब का वृत्तान्त इंगलैण्डवासियों को मिल चुका था क्योंकि बर्क साहब ने हेस्टिंग्स के ऊपर जो "अभियोग" बड़ी धूमधाम की थी और इंग्लैण्डवासियों का अनुमान था कि अवध के नवाब पर बड़ा ही अन्याय हुआ है तथा उनको अत्यन्त

पीड़ा दीगई है। परन्तु वस्तुत बात यह थी कि उक्त नव्वाब को अपने पूर्वजो की विधवा बेगम के, जिसका नाम 'बहूबेगम' इत्यादि था, लुट जाने से अत्यन्त प्रसन्नता हुई थी, नव्वाब साहब को कुछ भी दु ख नहीं उठाना पडा था, क्योंकि वह पहिले नव्वाब के पालट बेटा थे।

जैसा कि पूर्व में लिखा जा चुका है कि जब लार्ड वेलस्ली हिन्दुस्थान में आये थे, उस समय अवध का सूबा इंगलिस्तान से बड़ा था और वहा के नव्वाब अङ्गरेजो के मित्र तथा सच्चे सार्थी थे। लाट साहब ने इस सहृदयता का पुरस्कार यह दिया कि अवध के सूबे का आधाभाग, जो बहुतही उपजाऊ था, लेकर बङ्गाल के सूबे मे मिला लिया। लाट साहब के मतानुसार ऐसे सच्चे मित्र के साथ ऐसा बर्ताव करने तथा उसके आधे सूबे को अपने राज्य में मिला लेने से बढ कर दूसरा कोई उत्तम बर्ताव नहीं जान पडा था*।

मार्क्विस आफ हेस्टिंग्ज ने नव्वाब गाजीउद्दीन हैदर से दो करोड़ रुपये कर्ज लिये और उसके बदले में नव्वाब साहब को वह ऊसर भूमि दी, जो हिमालय पर्वत के नीचे है और तराई कहाती है, यह नेपाल राज्य से छीन लीगई थी। सिवाय इसके,

* यह जो वृत्तान्त लिखा जाता है यह सब ऐतिहासिक घटना है। एक इतिहास लेखक अवध के सूबे को सरकारी राज्य में मिलाने का वर्णन करतो समय यो लिखत हैं "इसमें सन्देह नहीं है कि वारन्-हेस्टिंग्ज्, लार्ड टेनमाउथ, लार्ड वेलेस्ली, लार्ड हेस्टिंग्ज् और लार्ड आ-कलेण्ड अपनी गुप्त जीवनी में कदापि ऐसा अन्याय न करते, जैसा जैसा कि उन्होंने लाट पदाधिकारी होकर किया।" देखो कलकत्ता रिव्यू, भाग ६, पृष्ठ ३७६।

अधिक बसी हुई है। इस सूबे का फैलाव, डेन्मार्क, स्विट्जर-लैण्ड, वैक्सनी, वटनवर्ग, हालैण्ड, और वेल्जियम से अधिक-तर है। यदि यह सूबा योरोप मे होता, तो उन सब सूबो का मुकुटमणि गिना जाता और ववेरिया तथा नेपल देश से टक्कर मारता। परन्तु एशिया महाद्वीप में यह एक अत्यन्तही छोटा सूबा गिना जाता है, जिसके विषय मे यहा (इंग्लिस्तान में) इतनी चर्चा होती रहती है।

मैं पूर्वही कह चुका हू कि मैं अपने निज कार्य्यवश लखनऊ गया था। मैं वहा व्यापार करने गया था, न केवल भ्रमण के हेतु, जिसे कि प्रतिष्ठित कम्पनी उस समय घृणा दृष्टि से देखती थी। केवल यह देखने के अभिप्राय से कि हिन्दुस्थान के बादशाह कैसे होते हैं, मैंने अपने एक मित्र से, जो वहा के दरबारियो में थे इस विषय को प्रार्थना की थी और उन्ही के द्वारा मुझे दरवार मे जाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था। जब से दिल्ली की बादशाहत का ठाठ और वैभव नष्ट हो, छिन्नभिन्न और पजर मात्र रहगया, तब से अवध की टक्कर का कोई भी हिन्दु-स्थानी राज्य शेष न रहगया था। मैंने रेजिडेण्ट के द्वारा दरबार में प्रवेश नहीं किया था, इस हेतु बादशाह ने मुझसे अत्यन्त हितपूर्वक बर्ताव किया था। अवध में अगरेजी राज्य की ओर से जो एक अगरेज कर्मचारी रहता है, वह रेजिडेण्ट कहलाता है। मुझे इस बात की सुनगुन लग चुकी थी कि बादशाह के निज कर्मचारियो मे से एक का स्थान खाली है और यदि मैं बादशाह की सेवा मे उपस्थित होकर नजर दू, तो उसके स्वीकृत होजाने पर, मैं उस पद पर उनकी सेवा मे नियुक्त होजाऊगा।

२

परन्तु रेजिडेंट साहब की आज्ञा प्राप्त किए विना, कोई योरोप निवासी बादशाह की नौकरी नहीं करने पाता था। अत मेरी दूसरी चेष्टा उनकी आज्ञा प्राप्त करने की हुई और बड़े साहब से मेरी मुलाकात कराई गई। लण्डन में तो ये 'बड़े साहब' एक सामान्य व्यक्ति गिने जाते हैं, परन्तु यहां तो इनको अवध के राज्य और उसकी ५००००० प्रजा पर, इंगलैण्ड के बादशाह से भी बढ़कर, अधिकार प्राप्त है। साराश यह कि मैं उक्त "बड़े साहब" से मिला, तथा मेरे और उनके बीच में कुछ पत्र व्यवहार भी हुए, अन्त में उनकी सम्मति इन नियमों पर ठहरी कि मैं कभी और किसी प्रकार भी अवध के राज्यकाज विषय में हस्तक्षेप न करूं, न मैं कभी कुमन्त्रणा दूं और जो कुछ बातें, दो राज्य कर्मचारियों अथवा दो जमींदारों में खींचतान की हों, उसमें मैं सम्मलित न होऊं, और न मैं किसी राज्यकीय व्यवहार में बोलूं। इन नियमों के स्वीकार करने पर, मुझे यहां के ... में नौकरी ... आज्ञा दी गई।

...ब यह सब बातें निश्चित ... मुझे
रीति के अनुसार, बाद... है।
तशिवाई बादशाही ... गई
सकता, क्योंकि न कोई ...
यद्यपि उनके बदले में
बढ़कर पुरस्कार था ...
बादशाह की सेवा में ...
था और उन्हें बादशाह ...

सिंहासन पर विराजमान देखा था। मैं समझता था कि वे एक सिंहासन पर पलथी मारे बैठे होंगे, परन्तु ध्यान पूर्वक जब मैंने देखा तो वे एक सुनहरी और जगमगी जड़ाऊ कुरसी पर बड़ी भारी हिन्दुस्थानी पोशाक पहिने विराजमान थे और उनके रत्न जटित मुकुट पर, जो वे मस्तक पर धारण किये हुए थे, हुमा पक्षी के परों का तुर्रा लगा था। मेरे अनुमान के विरुद्ध, उनका पहिनावा तथा इस राज्यगृह की सजावट अधिकतर अंगरेजी रीति की थी। इस अवसर पर तो मैं इन सभों की देखभाल भली भांति न कर सका, बादशाह के स्वरूप को भी यथार्थ रीति से अवलोकन न कर सका था, परन्तु दूसरी बेर जब मैं अपनी निज भेंट करने गया, तब मैंने देखा कि बादशाह सलामत अपने निज अंगरेज सेवकों के सहित, एक वाटिका में टहल रहे हैं।

मैं एक किनारे खड़ा होगया और पांच मोहरें उनकी भेंट कीं जोकि एक रेश्मी रूमाल पर धरी थीं और वह रूमाल दाहिने हाथ पर था और उस हाथ के नीचे बायां हाथ था। इस प्रकार मैं बादशाह की अपेक्षा में खड़ा रहा और यही मेरा राज्य सम्बन्धी शिष्टाचार सीखने का प्रथम अवसर था। जब मैं अपने इस प्रकार खड़े रहने पर विचार करता था, तब मैं अपने तईं एक भकुआ सा प्रतीत होता था। मेरी टोपी समीपही एक कुरसी पर रक्खी थी और मैं नंगे सिर खड़ा था। उस दिन धूप और गरमी भी अधिक थी। जब तक बादशाह सलामत आवें, तब तक मैं पसीने से नहा गया। अन्त को बादशाह सलामत अपने निज गण समेत धीरे २ मेरे पास आगए। इस समय, वे

कारो रङ्ग की अगरेजी पैाशाक पहिने हुए थे और सिर पर भी अगरेजीही टोपी शोभायमान थी। इनका मुखारविन्द सीप के समान गैार वर्ण और अत्यन्त हँसमुख था। इनकी भ्रमरसी काली २ अलकावली, तथा मूछ और गलमुच्छे, उन गोरे २ गुलाबी कपोलो पर अतीव शोभा दे रहे थे। इनकी आखें छोटी, चम कीरी और काली थीं, शरीर फरहरा और कद न बहुत नाटा और न लम्बा था। जब वे मेरे निकट पहुचे, उस समय वे अगरेजी भाषा में अपने मुसाहबो से बात चीत कर रहे थे। यद्यपि मैंने उस समय उनकी सब बातें सुनी थीं, परन्तु अब उनका कुछ भी स्मरण नहीं आता, कारण यह कि उस समय मैं अपनेही सोचो मे मग्न था, अत उनकी बातो पर मेरा ध्यान स्थिर न रह सका।

बादशाह सलामत जब मेरे समीप आये, तो मुझे देखकर मुसकराये और अपना बायां हाथ मेरे हाथो के नीचे रखकर, दाहिने हाथ की अगुलियो से मेरी भेंट की मोहरो को छुआ और बोले "तुमने मेरी नैाकरी करने का निश्चय तो कर लिया न?"

मैंने उत्तर दिया 'जी श्रीमान्।'

इसपर वे फिर बोले "मैं अगरेजो से अत्यन्त स्नेह रखता हू। अब हम दोनो में गाढी पटेगी"

इतना कहकर अपने मुसाहबो से बातचीत करते हुए, बादशाह सलामत आगे बढे और मैं भी उनके पीछे पीछे हो लिया।

मेरे एक मित्र ने मुझसे कान में कहा, "मोहरें जेब में रख लो, नहीं तो कोइ हिन्दुस्थानी सेवक लेलेगा।" यह सुनतेही

मैंने चट मोहरें जेब मे डाल लीं और अपनी टोपी उठा कर उनके साथ महल में चला गया।

महल के कमरे बडे प्रशस्य थे और उन में उत्तमोत्तम कन्दीलें, झाड, फानूस, हाडिया तथा चित्रविचित्र, भडकदार चौखटो में जडे हुए अनेक चित्र चारो ओर लग रहे थे। सच तो यो है कि प्रत्येक कमरे में नाना भाति की वस्तुए इतनी बहुतायत से सुसज्जित थी कि जिन्हे देखकर दर्शक की दृष्टि कदापि तृप्त नही होती थी और मैं तो उन्हे देखकर घबरा उठा था। जगमगाते झाड और कन्दीलें, दुर्लभ काष्ठ और हाथी-दात आदि की बनी, मनोहर और अपूर्व अलमारिया और मेज, अनूठे हथियार जिनमे रत्नखचित मुट्ठे लगे थे, जडाऊ और मीनाकारी की हुई ढालें, भाति भाति के अमूल्य कबल इत्यादि, इस बहुतायत से सजे थे कि जिन्हे देखकर आखे चौधियाई जाती थी। महल के इन कमरो में से वेही कमरे कुछ सादे और साधारण सजे हुए थे जिनमे बादशाह सलामत एकात में वा अपने सखागणो के सहित भोजन करते थे। इन कमरो में घनी सजावट न थी, किन्तु ये अगरेजी रीति के अनुसार साधारण रूप से सुसज्जित थे।

प्रतिमास एक बेर दरबार की ओर से अङ्गरेजी सेना-नायको की जेवनार होती थी, जिसमें वे लोग अपनी २ सेनाओ से, जो गोमती के उस पार ५ मील पर रहती थी, आया करते थे और कभी कभी पबलिक डिनर अर्थात् सब लोगो की जेवनार भी होती थी, जिसमे रेजिडेण्ट और उनके दल के लोग भी सम्मिलित हुआ करते थे। परन्तु इसमें बादशाह

सलामत को कष्ट उठाना पडता था, क्योंकि इन जेवनारो से छुटकारा पाने पर,मैंने उन्हें यह कहते सुना है कि "हे भगवन्, तेरी कृपा से यह झंझट भी समाप्त हुई और वे लोग प्रसन्नता पूर्वक विदा हुए। अब लाओ एक पात्र मद का दो। बापरे बाप। इसमें भी कितना सिर खप्पन करना पडता है।" ऐसा कहते हुए वह अङ्गडाई लेते वा खड़े होजाते थे और अपना रत्न जटित मुकुट उतार कर कमरे के एक कोने में गल्हडपन से फेंक देते थे।

जिस दिन मैं पहिले पहिल महल में गया था, उसी दिन बादशाह की ओर से हमलोगो की जेवनार थी। इसमें बादशाह के ५ फिरङ्गी मुसाहिब रहते थे। इन्हीं में बादशाह का अङ्गरेजी पढाने वाला मास्टर भी था। बादशाह ने कई वेर इस बात की प्रतिज्ञा की थी कि प्रति दिन एक घंटा अवश्य अङ्गरेजी पढा करेंगे, क्योंकि वेग से अङ्गरेजी बोलने की उन्हें अत्यन्तही उत्कण्ठा थी। अतएव अङ्गरेजी बोलते समय प्राय उन्हें हिन्दुस्थानी शब्दों का प्रयोग करके काम निकालना पडता था। मैंने कई बेर उक्त मास्टर साहब के सम्मुख मेज पर अङ्गरेजी पुस्तकें रक्खी तथा बादशाह को बैठे हुए देखा है। वे अपने पढाने वाले को 'मास्टर साहब' कहकर पुकारते थे।

'आइये मास्टर साहब, आइये, हम सब अपना पाठ पढ़ें,' यह प्रायः योंही कहा करते थे।

पहिले मास्टर साहब 'स्पेक्टेटर' वा किसी उपन्यास की कुछ पंक्तियां पढ जाते और बादशाह उन्हे दोहरा जाते थे, फिर मास्टर साहब आगे पढने लगते, और जब उनके दोहराने

की पारी आती, तब बादशाह सलामत यो कहने लगते "अरे बापरे बाप! यह तो बड़ी शुष्क और अरोचक भाषा है। अच्छा मास्टर। आओ एक प्याला शराब तो उड़ जाय फिर देखा जायगा।"

इस प्रकार मद्य पान कर वे बातो मे लग जाते, पुस्तकें हटा दी जातीं और पाठ समाप्त होजाता था। इस पढाई में दस मिनट से अधिक समय कभी नहीं लगता, जिसके लिये मास्टर साहब १५०० पाउण्ड (२२५०० रुपये) वेतन पाते थे।

बादशाह के एक तो मास्टरही साहब मित्र थे और दूसरे उनके गण एक लाईब्रेरियन साहब (पुस्तकालयाध्यक्ष), तीसरे मुसाहिब एक जर्मनी देश के चित्रकार और गायनाचार्य्य, चौथे सङ्गी उनके बाडीगार्डो (शरीर रक्षको) के अधि-पति और पाचवा सखा उनका अङ्गरेज नापित था। इन्हीं पाचो मे एक मैं भी था*। इनमें से राजनापित का सब से अधिक मान्य था, यह बादशाह सलामत का इतना मुह लगा और सिर चढा था कि मन्त्री वा किसी नवाब का भी इतना प्रभुत्व न था। उसे लोग बादशाह का विशेष स्नेहपात्र जानते थे, इसलिये सब लोग उसकी दरबारदारी तथा सत्कार करते रहते थे। यदि इस व्यक्ति का जीवनचरित लिखा जाय, तो मनुष्य जीवन और उस की अवस्थान्तरो के परिवर्तन का एक नवीन उदाहरण और अद्भुत दृश्य प्रगट होगा। इसकी जीवनी के विषय में जहा तक मै जान सका हू, वह यह है—

यह व्यक्ति एक धूमयान (स्टीमर जहाज) का खलासी

---

* जान पड़ता है कि पुस्तकाध्यक्ष (लाइब्रेरियन) आपही थे।

होकर कलकत्ते में आया था। लडकपन से इसने नापित का ही काम सीखा था, अत कलकत्ते पहुचते ही, इसने जहाज की नौकरी तो छोड दी और अपना पूर्वाभ्यस्त कर्म पुन स्वीकार कर लिया। इस क्षौरकर्म (हज्जाम के काम) से इसने बहुत कुछ द्रव्य उपार्जन किया और अपने कार्य्य कौशल से विख्यात होगया। अन्त में योरोपियन (विलायती) व्यापारियों के साथ,उसने नाव पर माल लाद कर व्यापारार्थ लखनऊ यात्रा की ठान ली और नापित से व्यापारी बन बैठा। लखनऊ पहुच कर यहा के रेजिडेंट साहब से मिला। उस समय यह एक दूसरेही साहब थे,जो अब हैं वे न थे। उनकी चेष्टा थी कि वह अपने बाल घुघराले बनवावें और पुन रङ्गीले छबीले बन जावें, यह व्यापारी साहब तो नापित थे ही,भला फिर इन्हे क्षौरकर्म के करने में क्या भागा पीछा था। उसने उनके बाल ऐसे ढङ्ग से सुधारे कि रेजिडेंट साहब की तो काया पलटसी होगई। बडे साहब ने प्रसन्न होकर उसकी प्रशसा बादशाह स [illegible] से की। यह साहब अब इगलिस्तान में हैं और इनके नाम के साथ एम० पी० (मेम्बर आफ पार्लयामेंट) लिखा जाता है।

बादशाह सलामत के बाल भी सीधे सादे थे, घुघराले तो क्या, उनमें लहर तक न पडती थी। उक्त नापित ने अनेक यत्न बादशाह के बालों मे भी उत्पन्न करदी, जिसे [illegible] ही वे अत्यन्त प्रसन्न हुए और इसे राजनापित नियुक्त [illegible] दिया। पुरस्कार और सम्मान की तो उसपर मानो [illegible] लगी। अब इसके भाग्य का तो पूछनाही क्या था। [illegible] ही इसे "सरफराजखां" का पद प्रदान हुआ और सपूर्ण [illegible]

वासियो के सिर इसके आगे झुकने लगे। यही व्यक्ति जो किसी समय एक जहाज का खलासी था, आज एक बडा अधिकारी और माननीय पुरुष होगया। लक्ष्मीजी की तो अब इसपर ऐसी कृपा हुई कि चारो ओर से धन की वर्षा इसपर होने लगी। देसी रजवाडो के प्रियपात्र को धनी होते क्या देर लगती है? घूस लेने के अतिरिक्त भी इसकी आमदनी के अनेकानेक मार्ग खुल गए। बादशाह,की मेज पर जितनी शराब उठती थी, वह सब इसी के द्वारा खरीदी जाती थी। विलायती वस्तुयें भी जितनी आतीं, सब इसी के द्वारा मँगाई जाती, साराश यह कि जो कुछ क्रय विक्रय होता,सब इसी के हाथो होता था,इस प्रकार सहस्त्रो रुपयो का लाभ इसे हुआ करता था। वह कहावत ठीक है कि "जिसे पिया चाहे वही सुहागिन"। यह कहावत जैसी कि यहूदी जाति की रानी "इस्थर" के समय मे उपयुक्त थी वैसी ही अब देसी राज्यो मे भी ज्यो की त्यो घटती है।

नसीरुद्दीन हैदर, इस राजनापित पर, सब प्रकार से कृपा दृष्टि रखते,उसका सत्कार किया करतेथे और पुरस्कारो की तो उन्होने उसपर भरमार कर रक्खी थी। उसपर उनका पूर्ण विश्वास होगया था। धीरे२ वह शाही निमन्त्रित व्यक्तियो में सम्मिलित हो जेवनारो में भी आनेजाने लगा और अन्त को बादशाह के संग एकही मेज पर खाने का भी सैाभाग्य उसे प्राप्त होगया। जब तक यह राजनापित अपने हाथ से शराब की बोतल न खोलता, तब तक बादशाह सलामत दूसरो के हाथ की खोली बोतलो की शराब कदापि पान न करते थे। बादशाह को अपने कुटुम्बियो से यह भय था कि कहीं वे भोजन मे विष देकर उनका

प्राण न लेलें, अत प्रत्येक शराब की बोतल आते ही प्रथम राज नापित की मुद्रांकित होजाती थी, तब बादशाह के पानार्थ लाई जाती थी। बोतल खोलने के पूर्वही, वह अपनी मोहर को भली भांति देख भाल कर जांच लेता था, तब बोतल खोलता था और प्रथम उसमें से आप थोडासा मद्यपान कर तद्रूपश्चात् बादशाह सलामत को दिया करता।

उक्त राजनापित पर शाही विश्वास और अनुग्रह की चर्चा, समस्त भारतवर्ष और विशेषत बङ्गाल प्रान्त में फैल गई थी। 'कलकत्ता रिव्यू' (Calcutta Review) नामक पत्र में इसका नाम "नीचदास" रक्खा गयाथा और इसके विषय में बडे २ उपहास्य तथा भडौवा के लेख और अनेक व्यंग काव्य, परिहासोक्तियां लिखी जाने लगीं, परंतु इस नीच व्यक्ति को सिवाय अपने कमाने और धन लूटने के इन बातों पर कुछ भी लज्जा न आती थी। इधर लोग ठठोल और व्यंगोक्तियों की धूम मचा रहे थे, उधर वह अपने धन संचित करने के फेर में मस्त हो रहा था। इन पत्रों में से "आगरा अखबार" सब से अधिक दोषारोपण के तीर गिराता था (यह पत्र कुछ दिनों के पश्चात् बन्द होगया)। तदनन्तर लखनऊ से मेरे चले आने के कुछ ही काल पूर्व इस राजनापित ने एक लेखक (क्लर्क) १००) मासिक के वेतन पर रख लिया था, जो उक्त पत्रों के प्रत्युत्तर लिखा करता था। यद्यपि इस राजनापित के पास लन्दन के दरजियों की नाई कोई उसका निज का कवि तो न था, तथापि 'टाइम्स' पत्र की नाई उसका एक निज लेखक तो होगया था।

पाठक गण! आप लोग समझ सकते हैं कि अब मैं पहिले

पहिल खाने की मेज पर सम्मिलित हुआ था, तब बादशाह सलामत तथा उक्त राजनापित के देखने की मुझे कैसी कुछ उत्कण्ठा रही होगी?

इधर उधर की तो मैंने अनेक बातें बघार डाली। पर अब मुझे शाही भोजन का वृत्तान्त लिखना इष्ट है, सो मैं दूसरे अध्याय मे वर्णन करता हू॥

दूसरा अध्याय।

बादशाही विलास और क्रीडा।

हमलोग एक पीछे के कमरे में बैठे थे और खाने का समय ९ बजे का था। ९ बजे से कुछ ही पहिले बादशाह सलामत अपने प्रेमपात्र राजनापित के कन्धे का सहारा लिये हुए आन पधारे। इन दोनो में बादशाह कुछ लबे थे और उनका साथी हट्टा कट्टा गठीला मनुष्य था। बादशाह सलामत की लम्बाई और उसकी मोटाई का अच्छा जोड मिला था, फिर यह स्नेह पात्र क्यो न होता? बादशाह सलामत वैसेही अङ्गरेजी सादे वस्त्र धारण किये हुए थे, जैसा कि वाटिका में विहार के समय मैंने उन्हे देखा था, केवल इतना ही अन्तर था कि पहिली बेर फ्राक कोट पहिने हुए थे और इस समय ड्रेस कोट। इनके गले में काले रग की रेशमी नेकटाई और पैरो में उत्तम वारनिश के बूट शोभायमान् थे। उनके मुखारविन्द पर राजश्री का तेज तथा भद्रता विद्यमान हो रही थी। इनकी चाल ढाल उनके सहचर

से सर्वथा भिन्न थी,अर्थात् उसकी आकृति से कमीनापन बर सता था। यद्यपि दोनो के कपड़े एकही से थे, तथापि बाह्य समता होने पर भी उनकी प्राकृतिक विभिन्नता स्पष्ट रूप से प्रकाशित हो रही थी।

जब हमलोग खाने के कमरे मे जाकर बैठे, तो वहा एक अद्भुत समा देखने में आया। पश्चिम देश के भोज्य पदार्थ पूर्वी ढग से सजे हुए, एक अनूठा और अद्भुत ही दृश्य दिखा रहे थे। मेज के सिरे पर बादशाह सलामत एक सुनहरी कुरसी पर,जो भूमि से कई इच ऊचे चौतरे पर रक्खी हुई थी, जा विराजे। मेज के दाहिने और बाए पार्श्व मे हमलोग थे और उनके सामने का सिरा खाली था, इस हेतु से कि उसपर रकाबिया और तश तरिया इत्यादि उठाने धरने में भृत्यवर्गो को सुवीता रहे तथा विशेषत इस कारण से भी कि जो खेल तमाशे उनके सन्मुख हो,उनके देखने में उन्हें किसी प्रकार की बाधा न हो।

हमलोग आकर बैठेही थे कि अन्त पुर से जहा एक गाढ़े का परदा पड़ा हुआ था, अनुमान छ सात अति सुन्दरी युव तिया बहुमूल्य सुनहरी साड़िया पहिरे बाहर निकल आईं। मुझे पहलेही सूचना दीजाचुकी थी कि मैं उनपर कदापि अपनी दृष्टिपात न करू,क्योकि यह दासिया भी अन्त पुर की स्त्रियों के समान परदे वाली समझी जाती थीं। यद्यपि मुझे इसकी सूचना थी, तथापि मैंने कनखियो से उन्हें देख लिया, परन्तु यह प्रगट न होने देता था कि मेरा चित भी उधर ध्यान है।

इन लोगो के गोरे, गुलाबी और चम्पई रग के मुखार विन्द पर, सुनहरी गुथी हुई नागिनसी काली २ चोटियो को

लहराना और माथे पर मोतियो की बेना बेंदिया और सिर पर रत्नजटित सीसफूल अनुपम छटा देखा रहे थे।

ये सहेलिया नव युवती और अत्यन्त रूपवती थी। इनकी महीन आबरवा की ओढनियो मे जरी का काम था, जिनके आँचल उनके सिर पर पडे हुए, कधो तक लटक रहे थे। वस्त्र महीन होने के कारण, उनके बाहुमृणाल की अद्भुत छटा दर्शको के कलेजे को मसले डालती थीं। जब ये सब मोरछल करती हुई, आगे बढती और पीछे हटतीं, तो उनके छातियो के उभार, हाव भावादि अति मनोहर और चित्ताकर्षक होते थे। इनका कटि से नीचे का अङ्ग पायजामे से ढँपा और उसपर से अतलस तथा साटन के विचित्र २ लहँगे, कटि भाग पर सकुचित और नीचे से ढीले ढाले घेरदार थे। उन्हे पैरो मे उलझने के भय से उठा कर वे कटि में खोसे हुए थी। इन लहँगो के ऊपर से जर-दोजी के काम की पेटिया कसी हुई थीं और उसी के समीप कुर्तियो की सुहावनी गोटें महीन दुपट्टो के भीतर से जगमगा रही थीं।

ये सब रमणिया बादशाह सलामत के पीछे चुपचाप खडी थीं। न तो बादशाह ने ही उनकी ओर देखा, न और ही कोई उनकी ओर ताका। नित्य प्रति यही विधान खाने के समय हुआ करता था। इन युवतियो के बाहुदड कधे तक नँगे रहते थे और जब ये दो दो करके इधर उधर से मोरपख की पखिया वा मोरछल हिलाती हुई आगे को बढतीं तो उनकी कलाइयो के जोड तोड की शोभा मन को मुरेरे डालती थीं। हिन्दुस्थान की स्त्रियो के मुख का लावण्य और अङ्गो का सौदर्य

यदि अन्यान्य जाति की स्त्रीयो से किसी बात में अधिक है तो वह यही है कि इनके अङ्ग माने सांचे में ढले हुए अत्यन्त सुडौल होते हैं। वीनस् (सौंदर्य की देवी) की मूर्ति बनाने के समय यदि शिल्पकारो ने अपने सन्मुख कोई मोडेल (नमूना) रक्खा होगा, तो नि सन्देह वह इन्हीं की आकृति का होगा। ये स्त्रियां चुपचाप खड़ी क्रमश मोरछल करती रहती, अथवा समयानुसार बादशाह के हुक्का पिलाने वा खिलाने, पान देने की सेवा में तत्पर होती थीं और जब बादशाह सलामत महल में पधारते, तब ये सब कभी बादशाह के पीछे २ चली जातीं और कभी बादशाह के सहारा दिए उनके साथ चली जातीं।

भोजन की सामग्री प्राय अंगरेजी ढङ्ग की होती थी और कलकत्ते की किसी अंगरेजी उत्तम जेवनार से किसी प्रकार भी न्यून न थी। हिन्दुस्थानी सेवक मर्यादा के साथ चुपचाप आते जाते और अपनी २ सेवा में प्रवृत्त होते, तथा हमलोग भली भांति हिल मिल कर बादशाह सलामत के साथ बातचीत किया करते थे। भोजन की सपूर्ण सामग्री क्रमानुसार मेज पर लाई जाती थी। भोज्य पदार्थ सभी अति स्वादिष्ट बने होते थे, क्योंकि पाकशाला का मुखिया (रसोइया) फ्रांसीसी था, जो पहले कलकत्ते में बङ्गाल क्लबघर का बावरची रह चुका था। इस फ्रांसीसी रसोइये और अंगरेज कोचवान को बादशाह के साथ बैठने उठने का सैाभाग्य प्राप्त न था, परन्तु अंगरेज़ नापित का तो डंका बज रहा था। भाग्य और अधिकार सब कुछ कर सकते हैं।

मर्थीफट्टीम यद्यपि मुसलमान थे, तो भी मद्यपान से इन्हें

किंचित भी हिचक न थी और न प्राय अवध के अन्य उमराओ में ही इसका आचार विचार था। मैंने प्राय बादशाह को यह कहते सुना है कि "कुरआन में मद्यपान निषेध नहीं है, जैसा कि साधारण लोग समझते हैं, हा, उसके आधिक्य का निषेध है"। मेरी समझ में बादशाह का अभिप्राय,यह था कि साधारण मनुष्य को जब मद्यपान की आज्ञा है, तो बादशाहो को अधिकपान का भी अधिकार प्राप्त है, क्योंकि वे सदा ही भोजन के पश्चात् उन्मत्त होकर उठा करते थे। हमलोगो के लिए जो मद्य आता था, वह अत्यन्त ही उत्तम होता था,यथा उत्तम प्रकार की क्लारेट, मदीरा,शाम्पेन इत्यादि, और ग्रीष्म ऋतु मे ये बरफ से शीतल कर लीजाती थी,जिससे वे पीने में सुखद और और सुपेय हो जाती।

हमलोग भोजन करते जाते, और मद्यपान भी करते जाते थे,यहा तक कि हम सब बादशाह के सहित उन्मत्त हो स्वेच्छाचारी हो जाते थे।

बादशाह सलामत प्राय कहा करते थे, "मैं योरोप वासियो से बडा ही प्रेम रखता हू, अतएव मुझसे लोग बुरा मानते है। मेरे वंशजो का यदि कुछ वश चले तो अवश्य वे मुझे विष दे दें, परन्तु मुझसे सब भयभीत रहते हैं? वल्लाह! मैंने भी उन्हे खूबही डरा रक्खा है।"

राजनायित। बेशक जहापनाह! हुजूर ने उन सभो को खूबही डर से दबा रक्खा है।

बादशाह। "हा, निस्सन्देह मैंने ऐसा ही किया है।"

कभी कभी बादशाह हमलोगो की ओर देखकर पूछने

सारङ्गी और तम्बूरे लिये हुए, उनके पीछे खड़े बजा रहे थे और उनके गाने और स्वर का साथ देते हुए उन्हीं के साथ २ आगे बढ़ते और उलटे पैरों लौट पड़ते थे। सुर के साथ वाद्य ऐसे मिले हुए थे कि दोनों एक हो रहे थे*।

---

* हैदराबाद का इतिहास उसके प्रपौत्र प्रिंस गुलाम मुहम्मद, ने सन् १८५१ ई० में, लिख कर छपवाया था (यद्यपि इस इतिहास का बहुत कुछ भाग हैदर अली के जीवित समय में ही लिखा गया था) उसमें से यह संक्षिप्त वृत्तान्त नीचे लिखा जाता है, जिसमें हिन्दुस्तानी दरबार के जलसों का वर्णन किया गया है।

"बहुधा करके रात को ८ बजे से ११ बजे तक नित्य ही नाच गाना हुआ करता था। इस समय (अर्थात् सन् १७८० के लगभग) हैदर अली का दरबार हिन्दुस्तान में सब से बढ़ कर था और वहां की नाच गाने वालियां भी सब से बड़ी तड़कभड़क वाली और धनवान थीं, क्योंकि 'बयदार गंधरपिनों' को वह अधिक पसन्द करता था। मेगापुर का वह यादगार था, इसलिए इस जाति की रूपवान और सुन्दर स्त्रियों का एकत्रित करना, उसे कठिन न था।

ये नायिकाएं प्रायः स्त्रियां होती हैं। इन सबकी एक चौधराइन होती है, जो ४ या ५ वर्ष की सुन्दर लड़कियों को मोल लेकर उन्हें २ गान और नृत्य विद्या सिखाती हैं। इनको हाव भाव, कटाक्ष सभी सिखाए जाते हैं, जिससे राजा, महाराजा मोहित होकर आनन्द लूटा करते हैं। जब ये लड़कियां १० या ११ वर्ष की होजाती हैं, तब महफिलों में भेजे जाने लगती हैं। इनके रूप सुन्दर, अङ्ग कोमल, आंखें विशाल, होठ पतले और दांत मोती से होते हैं। इनके गालों पर गोदना और काले २ लम्बे बालों की चोटियां पीठ पर जमीन तक लटकती हैं। इनका रूप गोरा या गेहुआं और इनकी सिंगार में बनावटी नज़ाकतपन होता है। इनके कपड़े महीन नाजेब और करेब के होते हैं, जिनपर ज़रदोज़ी के नक्श बने रहते हैं और ये रत्नजटित गहने पहने रहती हैं। नाचने और [illegible] इनमें से की बच्चियें जब १७ वर्ष से अधिक उमरवाली होती हैं [illegible] सुगमता से [illegible] हो जाती हैं और फिर वे नगर नगर घूमती हैं या किसी [illegible] तो ये लोग अति [illegible] होजाती हैं। योरोप में लड़कियां जिस वयस में [illegible] लगती हैं, उस अवस्था में ये लोग दरबार में [illegible] ठट्ठे की बातें करते

इनके हावभाव कटाक्ष की ओर न तो बादशाह का ही ध्यान था और न उनके अनुचरो का। नाच बराबर हो रहा था और रण्डिया गाना गा रही थीं। परन्तु मेरे सेवाय, इस नाच गाने में और किसीको उसके देखने की चाह न थी। बादशाह सलामत और उनके साथ साथ अन्य अनुचर लोग भी कठपुतलियो के नाच देखते और मुग्ध होते थे।

एक वेर बादशाह ने राजनापित के कान मे धीरे से कुछ कहा और वह बाहर चला गया। जब थोड़ी देर में वह वापस आया, तो न मालूम क्या चीज लेता आया और उसे छिपा कर बादशाह के हाथ में देदी। बादशाह ने अपनी कुरसी खसकाई और वह उठकर जहा कठपुतलियो का नाच हो रहा था आये और झुक कर देखने लगे। इस समय तमाशा करने वाले मारे हर्ष के फूले नही समाते थे कि अब उन्हें खूब पारितोषिक मिलेगा, इसलिये वे खूब जी लगा कर तमाशा करने लगे। बादशाह खूब ध्यान से तमाशा देख रहे थे कि इतने में जलदी से उन्होने हाथ आगे बढा कर हटा लिया उसी दम एक बिचारी पुतली खट से नीचे गिर पड़ी। यह प्रगट हुआ कि बादशाह के हाथ में कैंची थी, जिससे पुतली की तार उन्होने चट हाथ बढा कर काटदी। तमाशा करने वाले भी निसन्देह हमलोग के सिवाय अवश्य जान गए होगे कि यह क्या मामला था, पर कर रही दे लिये वे लोग बड़े विस्मित और चकित हो रहे थे। के मङ्गो की छे को आश्चर्य्य प्रगट करते और चकित होते देर थे। इनके नृत्य बादशाह सलामत मुसकराते हुए हमलोगो की अनुचित न होगा कि तो उन्होने बड़ा अद्भुत काम किया था।

उनके चेहरे से मालूम होता था कि वह इस बात की प्रशंसा कराना चाहते हैं कि देखो कैसे फुरती से उन्होंने यह काम किया है।

बादशाह ने इतनेही पर सन्तोष न किया, किन्तु घड़ी २ हाथ बढ़ाते और टटा लेते थे, यहा तक कि सब पुतलिया एक एक करके फट फट कर गिरती गई और प्रत्येक बेर हँसी की ध्वनि होने लगती और तमाशे वाले भी चकित होकर घबड़ाने लगते थे। जब सब पुतलिया इसी प्रकार गिर चुकीं तब उन्होंने दीपक लेकर तमाशे में आग लगादी, जो बड़ी कठिनता से बुझाई गई।

तदुपरान्त उस रात्रि को देर तक नाचने वालियो के विषय में बहुत कुछ खुल्लमखुल्ला हँसी ठट्ठे की बात हम लोगो में होती रही और मदिरापान का चक्र चलता रहा। बादशाह भी अत्यन्तही मत्त होकर विवेकरहित होगए थे।

यह न समझ लीजियेगा कि इस बीच में मेरी दृष्टि उस ओर न गई होगी, जिधर नाच का परदा पड़ा हुआ था। मुझे पूर्व मेंही सूचना देदी गई थी कि उस परदे के पीछे बादशाह के अन्त पुर (हरम) की बेगमात बैठकर तमाशे देखा करती हैं, इसलिये उधर देखना शिष्टता और व्यवहार विरुद्ध है, तौ भी मुझे कई बेर ऐसे अवकाश मिले कि मैंने भलीभांति उधर देख लिया। परदे इतने मोटे थे कि अन्दर वाली स्पष्ट नहीं दिखाई देते थे, फिर भी इतना देखाई दे कुछ लोग अन्दर चल फिर र[illegible] हैं। उनमें गद्दी तकिये लगाये बैठी थीं, [illegible] पटर[illegible]

जब इनपर दीपप्रकाश पडता तबही उनके हाथो के आभूषण चमचमा उठते थे। जिस समय कठपुतलिया काट कर गिरा दीगई थी, उस समय अन्दर से प्यारी २ धीमी हँसी सुनाई दी थी। हमलोग तो दूर होने के कारण परदे के अन्दर की चीज स्पष्ट नहीं देख सकते थे, पर भीतर वालिया बाहर की सब चींजो को भलीभाति देख सकती थी।

उधर एक ओार आलापचारी हो रही थी, इधर आमोद प्रमोद और क्रीडा की पेंग बढ रही थी, धीरे २ बादशाह मद पीकर मातल होगए। जब उनको कुछ सुधबुध न रही, तब एक ओार से दो सहेलियें और दूसरी ओार से दो बलवान खोजे,उन्हे सहारा देकर अन्त पुर के भीतर लेगए। यह बात बडे आश्चर्य्य की है कि इतने बडे बादशाह सामान्य व्यक्ति के समान मतवाले होजाय।

दूसरे दिन मैंने शाही रङ्गमहल का वह भाग भी देखा, जो अब तक मैंने नही देखा था। यहा की भी वही शोभा,वही सजावट थी, जैसी अन्य महलो मे थी। इनमे भी बडे २ दर्पण सुनहरी चैाकठो में चारो ओार लगे हुए थे,जहा देखो भडकीली शोभा तो बहुत थी, पर कहीं सुन्दरता और सुथरापन न था। एक स्थान की शोभा बहुत ही मनोहर थी। यह एक कृत्रिम सरो-वर था, जो लगभग सारे बाग में फैला हुआ था। इसके बीच २ में एक सुन्दर बारहदरी बनी हुई थी, जिसमें मनोहर और रगीन फुलवारी के काम बडे नफासत और सुघडता के साथ बने हुए थे ओार उसपर छोटी २ गुमजिया और नोकीले कलस शोभा दे रहे थे। सरोवर का जल बडाही स्वच्छ और निर्मल

था और इसमें सुनहरी, रुपहली, लाल, पीली और रंग बरंग की मछलियां तैर रही थीं। ये मछलियां ऐसी छोटी २ न थीं, जैसी कि इङ्गलिस्तान में कांच के बरतन या छोटे जलाशय में पाली जाती हैं। ये मछलियां बहुत बड़ी २ और चटकीले रंग वाली और कोई कोई १ फुट या ३/२ फुट तक की लम्बी थीं।

इस बारहदरी में जाने के लिए, सरोवर में एक छोटा सा बजरा किनारे पर बँधा रहता था। मेरे साथी और मित्र (जो मेरी तरह बादशाह के अनुचर थे और उनका बड़ा मान्य दरबार में था) इस बजरे में बैठ गए और मुझे भी उसपर बुला लिया। मल्लाह भी उसी समय आगए और बजरे को लेकर उक्त स्वर्गीय भवन में लेगए।

लखनऊ में यह स्थान सब से उत्तम और मनोरञ्जक है। इसमें दो कमरे हैं, जो खूब सजे हुए हैं और जिनमें झाड़ फानूस और मशहरियां दीवारों से लगी शोभा दे रही हैं। बड़े कमरे के बीच में टेबुल पर महल का पूरा नमूना रक्खा है, जिसमें बड़ी कारीगरी और निपुणता के साथ महल के एक एक भाग का प्रतिरूप बना हुआ था और उसपर रंग ऐसा दिया हुआ था, जो राजगृह के रङ्गों के सदृश था। इसमें इस बारहदरी को भी बनाया था, जिसका आकार एक साम मक्खी से बड़ा न था, तो भी इसमें बारहदरी के प्रत्येक भाग बने हुए थे और बारहदरी की कारीगरियों को बड़ी ही सूक्ष्मता और दीदारेजी के साथ काटा था, यहां तक कि अन्दर के दोनों कमरे तक अलग अलग दिखाई देते थे।

बारहदरी में खड़े होकर स्वच्छ जल को देखने से, यह प्रती

होता था कि मानो हमलोग इन्द्रलोक में आगए है। रङ्ग-यरङ्गी मछलियो का तैरना, बजरे की सजावट, सरोवर के किनारो पर नाना प्रकार के फूलो का दृश्य, घनी झाड़ियो और लताओ की बहार और इनके बीच २ में से कहीं २ फूलों का खिलाव बड़ाही रमणीक और सोहावना मालूम देता था। यह स्थान मेरे ऐसा मन भागया था कि यदि मैं बादशाह होता, तो अन्य महलो को छोड़ कर यहीं आ रहता। बादशाह सलामत इस बारहदरी में अब कभी कदास ही आजाते थे। इसलिये इसके सुधार का ध्यान भी लोगो ने कम कर दिया था। बादशाह के खवास लोग कहते थे कि पहिले जब बादशाह यहा आते थे, तब बेगमातो का झुरमुट उनके साथ बजरे पर सवार होता था और खोजे लोग उस बजरे को खेते थे। वह समा भी इन्द्र के अखाड़े से कम न होगा। अब थोड़े दिनोसे वे इधर आना भूल गए हैं, इसलिए यह इमारत बेमरम्मत सी हो रही है।

थोड़ेही दिनो पश्चात,एक बेर भोजन के समय इन रङ्गीन मछलियो के विषय मे बातचीत छिड़ी,कहीं किसीने कहदिया कि यह मछलिया खाने में न मालूम कैसी हैं, यह खाई भी जाती हैं वा नहीं? इसपर बादशाह ने कहा कि हा वे खाई जाती हैं और उसीदम हुक्म भी देदिया कि कुछ रङ्गीन मछलिया पकाई जाय। दूसरे दिन ये मछलिया पका कर भोजन में लाई गई,हमलोगो ने उन्हे खाया, पर ये कुछ सुस्वादिष्ट न थीं, यदि होती भी, तो इनमें इतने कांटे थे कि उनका खाना कठिन था। इनसे तो हिलसा मछली, जो हिन्दुस्तान में कांटो के कारण विख्यात है, सहस्र गुण अच्छी होती है।

मुझे दरबार के शिष्टाचार नित्यही कुछ न कुछ नए सीखने पड़ते थे और मैं उनसे उकता गया था। एक बेर बादशाह सलामत की ओर से रेजिडण्ट साहब और उनके एडीकाम (प्रधान सरतक) और अन्य २ फिरङ्गी अफसरो को भोज का निमन्त्रण दिया गया था। भोजन के पश्चात बादशाह ने एक सरजन से कहा, जो सरकार कम्पनी की ओर का एक अफसर था और जिसे हम जोन साहब के नाम से लिखते हैं।

बादशाह०। जोन साहब, क्यों, आप मेरे साथ ड्राफ्ट की एक बाजी खेलेंगे?

(विदित रहे कि बादशाह जोन से जी में बुरा मानते थे, क्योंकि जब वह पहिले उनका सरतक था, तब वह बादशाह को हराने का उद्योग किया करता था)

जोन०। बड़े हर्ष पूर्वक मैं प्रस्तुत हूं, क्योंकि पृथ्वीनाथ के साथ खेलने में मैं अपना सौभाग्य समझता हूं।

बादशाह। अच्छा सौ मोहर की बाजी रही।

जोन। जहांपनाह! मैं गरीब आदमी भला १०० मोहर बदने को कहां से लाऊं।

बादशाह। (मास्टर की ओर घूम कर) मास्टरजी, भला आप मुझसे १०० मोहर की बाजी लगायेंगे?

मास्टर। जैसी श्रीमान की आज्ञा, मैं हजूर के साथ खेलने में अपना अहोभाग्य समझता हूं।

मास्टरजी बादशाह के मन की विलक्षण लहर बहर को जानते थे। इतने में बोर्ड आया और गोटियां बिछीं। मैं भी पासही बैठा हुआ प्रत्येक चालों को ध्यान पूर्वक देख रहा था

मैंने मास्टरजी के साथ कई बेर शतरज खेली है, इसलिये मुझे विश्वास है कि वह ड्राफ्ट भी अच्छी प्रकार खेल सकते होगे, परन्तु मैं क्या देखता हू कि बादशाह की चालें ऐसी उत्तम न थीं, तौ भी मास्टरजी जान कर चालें खराब चलते थे। इससे भी मैने दरवार का एक शिष्टाचार सीखा, क्योंकि दरवार के रीति के अनुसार बादशाह सलामत को जहा तक हो सके हराना उचित नहीं है। मास्टर की चालें यद्यपि अच्छी न थीं, तिसपर भी बादशाह सलामत को जीतना कठिन होता था। पर मास्टर यही प्रगट करते जाते थे कि वह बडे ध्यान और उद्योग से खेल रहे हैं। मैंने यह भी सुना है कि प्राय शाही अनुचर लोग बादशाह के साथ खेलनेवाले को बातो में ऐसा लगाये रहते थे कि बादशाह आख बचा कर मोहरे तक बदल लेते थे।

उक्त खेल समाप्त हुआ और मास्टरजी हार गए।

बादशाह। (हर्ष पूर्वक) मास्टरजी, अब १०० मोहर आप के जिम्मे मेरी हुई।

मास्टर। निसन्देह, आजही साझ को १०० मोहर लेकर सेवा में उपस्थित होऊगा।

बादशाह ने अन्तःपुर जाती समय फिर कहा कि "मास्टर, देखो भूलना नहीं, मेरे जीत की मोहरे लेते आना"।

सन्ध्या समय जब फिर बादशाह सलामत और हम पाचो अनुचर भोजन पर बैठे, तब बादशाह सलामत ने आतेही मास्टर से पूछा, "क्यो जी, मेरे जीत की मोहरें लाये?"

मास्टर। "जी हजूर, अशरफिया लेता आया हू, नीचे पालकी मे रक्खी हैं, अभी जाकर लेआता हू"।

बादशाह। नहीं नहीं, मास्टर, रहनेदो, मुझे तुम्हारी अशर्फियां न चाहियें। उन्हें अपने घर भेजवादो। जोन यही जानता होगा कि मैं उसकी अशर्फियां लेलूंगा। तुम लोग देखते थे न, कि वह मुजर खाने पर कैसा टूटा पड़ता था। वल्लाह, मुझे उससे घृणा उत्पन्न होगई है।

कदाचित आप पूछेंगे कि क्या जोन को बादशाह का स्वभाव मालूम न था? मालूम तो था, पर यदि कोई उसे बादशाह के साथ बाजी बदलेने को प्रस्तुत करा देता, तो वह मानो उसकी १०० अशरफियां गवाने की प्रेरणा करता। यह बात प्रत्येक लोग जानते थे कि यदि किसी की अशरफियां जीत कर ले भी ली जातीं, तो उसकी द्विगुण खिलअत उसे मिल जाती, अथवा अन्य प्रकार से बादशाह का मन्त्री उसे पारितोषिक देदेता, परन्तु बात यह थी कि जिस व्यक्ति से बादशाह बुरा मानते थे, उनके लिये यह नियम न था।

सच तो यह है कि किसी बादशाह के साथ शतरञ्ज इत्यादि खेलना बड़ी बेढब बात है, क्योंकि चाहे जो हो किसी न किसी प्रकार से उन्हें जिताना ही पड़ता है। हमारे बादशाह शतरञ्ज और चौपट दोनो खेल खेलते थे। उनकी चाल खराब होती थी, तो भी वह सदा जीता ही करते थे। दर्बार की यही रीति है कि बादशाह हारने न पावें। मेरे साथ भी कई बेर बादशाह ने खेल खेला है, पर मैंने सदा उस शिक्षा को स्मरण रक्खा, जो मास्टर और बादशाह के खेल को देखकर मैंने सीखा था।

बादशाह के साथ बिलियर्ड (गेंदा) खेलना भी कुछ सहज काम नहीं है। इसमें भी उन्हींको जिताना पड़ता था। इसके

लिये आवश्यक था कि कोई अनुचर आख बचा कर गेंद को इस प्रकार उछालदे कि जिसमें बादशाह कीही जीत हो, अथवा उसपर ऐसे तुले हुए हाथ से आघात मारे कि बादशाह का गेंद थैली में चला जाय और दूसरे का न जाने पावे। ये सब हथ-फेरियां प्रगट रूप से नहीं की जाती थी, इसके करने में बडी चातुर्यता और निपुणता करनी पडती थी। जबतक कि खेल ऐसी गुप्त रीति और चातुर्यता के साथ खेला जाता कि बाद-शाह की ही पौबारह पडती और किसी प्रकार की कुरीति प्रगट न होती, तभी तक वे प्रसन्न रहते और यदि उक्त हथफेर मालूम हो जाता, तो वे बडे अप्रसन्न होते थे। तब हमलोग उसे हँसी मे उडा देते और बादशाह सलामत भी उसे हँसी समझ कर हँसने लगते और फिर प्रसन्न होजाते।

यह मै मानता हू कि यह सब बातें लडकपन और छिछोरे-पन की हैं, विशेष कर एक बादशाह के लिये, पर यदि पाठक-गण यह समझें कि यह ढग लखनऊ ही में प्रचलित होगा, अर्थात् अन्य राजधानियो में, अथवा अवध को छोड कर अन्य सभ्य देशो में इस कुरीति का प्रचार न होगा, तो उनका यह सोचना भ्रममूलक है। जैसे कि रूस के जार (बादशाह) को शतरज, ड्राफ्ट वा अण्टा मे हराने का साहस उनके किसी अनु-चर को नहीं है। जार कोई मूर्ख वा बच्चे नहीं हैं, तथापि किसी न किसी प्रकार उन्हे जितानाही पडता है। यह एक अनुमा-निक बात कही जा सकती है, अब एक ऐसा उदाहरण दिया जाता है, जिसमें यह स्पष्ट रूप से दिखाया जाता है कि ऐसी कुरितियो का प्रचार सभ्य देशो मे भी है। इसे पढ कर?"

वज़ीर। "यह दास तो श्रीमान से बढ़कर किसीको नहीं कह सकता।"

बादशाह। "नवाब, सुनो और जनरैल तुम भी सुनो। इङ्गलिस्तान का बादशाह हमारा स्वामी है और जब ये लोग उनके सामने जूता पहिने जाया करते हैं,तो मेरे सामने जूता पहिने रहने में इनका क्या दोष है। अच्छा नवाब, इस बात का जवाब दो कि क्या येलोग कभी टोपी पहिने भी मेरे सामने आते हैं?"

वज़ीर। नहीं।

बादशाह। बस, उनके यहा के शिष्टाचार की यही रीति है। जैसे तुमलोग जूता उतार देते हो,वैसेही येलोग टोपी उतार डालते हैं,अच्छा आगे से यह शर्त रही कि मैं इन्हें जूता उतार कर आने की आज्ञा देदेता हूं, पर तुम लोग को भी आगे से पगड़ी उतार कर दरबार में आना पड़ेगा।

यह सुनकर नवाब चुप ही होगया और फिर कभी इस विषय को न छेड़ा, क्योंकि मुसल्मानों में पगड़ी उतारना बड़ा अपमान और असगुन समझा जाता है। ये लोग ऐसी अवस्था में, जब कि ये लोग किसी बात के करने का प्रण करते हैं, तो ऐसी शपथ खाते हैं, "यदि हम ऐसा न करें तो हमारे बाप की पगड़ी उतर जाय"।

उक्त बात चीत सुनकर हमलोग चकित होगए और बाद-शाह ने अपने लेखक को आज्ञा दी कि इस बात की याददाश्त यह लिखले,क्योंकि इस प्रकार की दरबारी बातें लिख ली जाती थीं, जिससे लोगों को मालूम होजाय कि बादशाह मूढ़ नहीं

है। हा, जब वह नशे में चूर होजाते थे, तब कभी २ कुछ छिछोरापन कर बैठते थे।

मैंने बादशाह का चित्र कई भावो से भली भाति खींच कर दिखा दिया और अभी यथाक्रम आगे चलकर उनकी भली बुरी बातों का और भी वर्णन करूगा। इस अध्याय को समाप्त करने के पहले,मैं बादशाह के दो खेलो का दृश्य दिखाता हू–अर्थात् मेढक कुदान और पुष्पक्रीडा।

एक वेर हमलोग चान्दगज के बाग में थे,जिसके चारो ओर कनाती दीवार खिची हुई थी और इसके बाहर जानवरों की लडाई प्राय कराई जाती थी। यह बाग तीन वा चार एकड जमीन के घेरे का था। बादशाह सलामत के साथ जब हमलोग रहते, तब कोई हिन्दुस्तानी आदमी अन्दर नही जाने पाता था। हम में से किसी ने कभी बादशाह सलामत से मेढक कुदान का वर्णन किया हो, अथवा उन्होने कही उसका चित्र देखा हो, इसलिए इस खेल देखने की उन्हें बडी लालसा थी। हिन्दुस्तानी अनुचर इत्यादि बाग के बाहर ही थे, बाग का फाटक बन्द कर दिया गया और बादशाह ने हमलोग को मेढक कुदान खेलने की आज्ञा दी। बाडीगार्ड के कप्तान ने मास्टर जी को 'पीठ' दी और लाइब्रेरियन ने चित्रकार को। पहिले तो हमलोग स्कूल के लडको की तरह नीची पीठ पर से छलाग मारने लगे,क्योंकि हममें से कोई भी इस खेल का अच्छा खिलाडी न था, परन्तु धीरे२ पीठ ऊची करते गए। मास्टर, नापित,कप्तान, लाइब्रेरियन, चित्रकार पारी २ से स्कूलब्वायेज की तरह लगे कूद फाद करने। निस्सन्देह यह बडी फुरती और

मेहनत का खेल है।

बादशाह थोड़ी देर तो खड़े देखा किए, फिर उनसे न रहा गया और आप भी साहस कर बैठे। बादशाह दुबले पतले थे, और बलिष्ट न थे। उस समय मैं ही उनके निकट था, वह मेरी ओर पुकारते हुए दौड़े, मैंने अपनी झट 'पीठ' दी और वह छलांग मार कर पार होगए, क्योंकि वह हलके, फुरतीले और उत्तम घोड़सवार तो थे ही, झट उछल कर कूद गए। अब मेरी बारी आई। मैंने बहुत कुछ क्षमा प्रार्थना मांगी, पर उन्होंने एक न सुनी। अधिक जिद्द करने या आज्ञापालन न करने से वह रुष्ट होजाते, अतएव मैं दौड़ कर आया, उन्होंने पीठ झुकाई। मैंने जो छलांग मारी, तो मैं उलझ कर गिरा। मेरे साथ साथ बादशाह सलामत भी लुढ़क मुढ़क होकर लुढ़कते हुए क्यारी में जापड़े।

बादशाह सलामत मुंह बनाए झाड़ पोछ कर उठे और बोले 'बाप रे बाप, तुम तो हाथी से भी भारी हो'। मैं तो डर गया कि कहीं वे रुष्ट न होगए हों, पर कुशल हुई कि वे रुष्ट नहीं हुए। राजभक्ति से झटपट अपनी पीठ झुकादी और बादशाह फुरती से कूद गए, हम में से जो सब से हलका था उसने बादशाह को फिर पीठ दी और वह फलांग मार कर पार होगया। इसमेंही से बादशाह सलामत प्रसन्न होगए। इसी प्रकार हम लोग कूद फांद करते रहे। अन्त को बादशाह सलामत जब थक गए, तब यह खेल बन्द हुआ। उन्होंने बरफ का ठंढा जल पीया और हुक्का पिलाये। यह खेल बहुत देर खेला गया था।

अब कुछ और वृत्तान्त सुनिए। जाड़े के दिनों में जि

हिन्दुस्तान में साहबो का बड़ा दिन कहते हैं। हमलोग बाद्-गज के बाग में थे, जहा पर कि उक्त मेढक-कुदान का खेल खेला गया था। इङ्गलिस्तान में अधिक बर्फ गिरने की कहीं बात छिड़गई और बातो बातो में हिम-क्रीड़ा (Snow-balling) का भी वर्णन आया। जिस किसी ने हिम पड़ते नहीं देखा है, उसको बर्फ के गिरने और उसके गेंद बना कर एक दूसरे पर फेंकने के खेल का समझाना कठिन है।

अस्तु बाग में इस समय गेंदे के पुष्प लगे थे। बादशाह ने हिम-क्रीड़ा का वृत्तात सुनकर दो चार गेंदे के फूल तोड़े और लाइब्रेरियन पर फेंके, जो हमलोग से कुछ दूर पर खड़ा था। फिर क्या था, अब जिसे देखो फूल तोड़ २ कर एक दूसरे को मारने लगा—आगे पीछे, दाए बाए फूलो की बौछार होने लगी। यही गेंद के फूल मानो हमारे लिए हिम के गेंद थे। बाद्-शाह सलामत पर यदि कोई एक फूल फेंकता, तो वे उसपर तीन चार फूल फेंकते। इस खेल से वे बड़े मग्न हो रहे थे (इसी का नाम पुष्प क्रीड़ा है)। खेल बन्द होने तक हमलोग के कपड़े पीले होगए थे और उसपर गेंदे की पत्तिया इतनी चिपक गई थीं मानो हम सब बड़े गेंदे के फूल बन गए थे। पेड़ो में फूल एक भी न रहे। हमारे चले जाने पर माली लोग क्या कहेंगे वा सोचेंगे, इसका किसी ने भी ध्यान न किया। फूल रहे वा न रहें, इसकी किसको परवाह थी, यहा तो बादशाह को खुश करना था। इस खेल को वह बहुत पसन्द करते थे और कई बेर यह खेल खेला गया था॥

तीसरा बयान।

शिकार का वर्णन।

एक दिन भोजन के समय शिकार की बातचीत होइ का किसीने कहा कि लखनऊ से कुछ मील पर एक झील में शिकार बहुत हैं, इस समय बादशाह सलामत प्रसन्नचित्त थे, कहने लगे, "हां, हां, हमने भी उस झील के विषय में सुना है, अच्छा कल वहां चलकर शिकार खेलें, देखें हमारे दरबार में शिकारी कौन कौन हैं"।

उसी दम हुक्म जारी होगए और यह निश्चय होगया कि कल हमलोग उस राजबाड़ी में चलें, जो उक्त झील के पास है। इस राजबाड़ी का नाम "दिलकुशा" है और यह लखनऊ से थोड़ेही दूर पर बनी हुई है। हमलोगों को आशा थी कि वहां से हमलोग सांझ तक लौट आवेंगे, इस कारण से हम सबने रात के लिये बिस्तर इत्यादि का कोई प्रबन्ध नहीं किया। हमलोगों से पहुंचने के पहिलेही, बादशाह सलामत अपने साथ लश्कर समेत दिलकुशा में पधार चुके थे। हमलोग बैठे सोचतेही रहे कि अब बुलाहट होगी, पर हमें किसीने भी न पूछा। शिकार का समय बीता जाता था। दिन ढलने लगा और ढलते २ सांझ होगई। हमलोग ताश खेल २ कर अपना जी बहला रहे थे।

रात के नौ बजे भोजन के समय हमलोग की बुलाहट हुई देखा कि बादशाह सलामत भोजन के लिये बैठे हैं। किसीने भी साहस न पड़ा कि पूछें तो आज शिकार क्यों नहीं खेला गया। बादशाह ने भी इस विषय में कुछ न कहा, वही रात

पीने, नाच रङ्ग और हँसी ठट्ठे मे रात बीतती गई। आधी रात के लगभग, बादशाह सलामत खूब शराब पीकर मत्त हुए और हमलोग आशा में थे कि अब लोग इन्हे अन्त पुर लेजाना चाहते हैं कि इतने में वे बडे जोर से खिलखिला कर हँसे। हमलोग चकित से होगए कि क्या बात हुई,क्योंकि प्रत्यक्ष मे तो हँसी का कोई कारण न था, और हमलोगो के चुप रह जाने पर वे स्वय बोल उठे।

बादशाह। (हँसी रोक कर) "भाई यह ठीक नहीं है कि तुम लोग हमें यहा अकेला छोड कर चलदो। यह बडा बीहड स्थान है (राजनापित और एक साहब से) तुमलोगो की बीबीया हैं, तुम लोग अपने २ घर चले जाओ। तुम्हें रात भर अपनी स्त्रियो से विलग रखना मैं नहीं चाहता। बाकी सब लोग यही रहें।"

लखनऊ से बाहर बादशाह सलामत के साथ जब हमलोग जाते, तो बिस्तरे,नौकर, चाकर, कपडे लत्ते भी साथ रहते थे, क्योंकि प्रति दिन हमें अपने कपडे बदलने पडते थे, इस कारण से एकही गठरी या बेग लेकर बादशाह के साथ लखनऊ से दूर कोई नहीं जाता था। बादशाह की ऐसीही आज्ञा थी। हमें आज्ञा पालन करनी आवश्यक थी।

जाती समय बादशाह ने यह भी कहा, "अच्छा, अब कल हमलोग चल कर शिकार खेलेंगे," इतना कहकर वह तो हरम को सिधारे। उनके उठ जातेही वे लोग (जिन्हे आज्ञा मिल चुकी थी) अपने २ घर को चल दिए, इन्हींमें से एक साहब चलती समय मुझसे कहते गए कि वह जाकर मेरी पालकीभेज-

बादेंगे, जिसमें मैं सुख पूर्वक सो सकूं (सफर में पचासो बेर मुझे इसी पर सोकर रात बितानी पड़ी थी) और मेरे नौकर और कपड़े भी भेजवादेंगे कि जिसमें दूसरे दिन मैं कपड़े बदल सकूं।

बादशाह सलामत जब हँसते हुए अन्त पुर सिधारे, तब हमलोग भी हँसी में उनका साथ देते रहे, क्योंकि यही हमारा कर्तव्य था। अन्त पुर में जाती समय बादशाह ने कह दिया था कि जबतक हमलोग चाहें, नाच गाना कराते रहें, और वे रण्डियों से भी कहते गए कि तुम लोग गा कर साहबों का जी बहलाती रहो।

यह भी एक अनुपम समय था। हमारे मित्र तो घर चलेगए और जगमगाते कमरे में, जहां नाना प्रकार की कन्दीलों, झाड़ फानूस और हांडियों में मोमबत्तियां जल रही थीं, सन्नाटा सा होगया। बादशाह सलामत के साथ उनके मोरछल करनेवाली सहेलियां भी चलदीं, परन्तु गाना अबतक होही रहा था। जब हमें मालूम हुआ कि बादशाह अंतःपुर में पहुंच गए, जहां हमारी पहुँच ना सकती थी, तब हमलोगों ने नाच बन्द करा दिया। शराब के नशे में चूर तो थेही, थककर हमलोगों ने लेटने पोटने की ठहराई। हमलोगों को किसी बात का कष्ट तो था ही नहीं—शाही मेज भांति भांति के फल और मेवों से लदे थे, परन्तु फिर भी यकायक कमरे में चहचहे और कहकहे के बन्द होजाने से उदासी छागई थी। अब हमलोग बात भी करते तो धीरे धीरे। अब रहा मदिरापान, उसका यह हाल था कि उस दिन हमलोगों ने कहीं अधिक पी लिया था, दूसरे दिन जो कुछ शिरःपीड़ा इत्यादि से हमलोगों ने दुःख भोगा, उसे हम

लोग अब तक भूले न थे, भला फिर कैसे अधिक पी लेने का साहस करते।

अन्ततत्वा हमलोग टेबुल से उठकर कोठी के चारो ओर घूमने लगे। यह कोठी हमलोगो के टहलने के लिये खुली हुई थी। हा, बादशाह के सोने की कोठी में हम नहीं जा सकते थे, जिसके आगे हिन्दुस्तानी लौंडिया, सिपाहियो के सदृश वरदी पहिने और बन्दूक कन्धो पर रक्खे हुए, धीरे २ घूमती और पहरा दे रही थीं। उस समय सब ओर सन्नाटा छा रहा था, जरा भी खडका नहीं होता था। इधर उधर हिन्दुस्तानी नौकर चाकर अपनी २ चादरो मे लपटे, गोलालाठी बने ऐसे वेसुध पडे सो रहे थे कि हमारी आहट से भी उनकी नीद नही उचटी।

रात के दो बज गए थे और अबतक हमारे नौकरो का कहीं पता न था। विवश हो कुरसी और कोचो पर हम जा लेटे और अपने को मच्छरो और फतिङ्गो की कृपा पर छोड दिया और सोगए। इस समय मेज पर एक बडी मोमबत्ती बल रही थी और सिवाए घुर्राटो और पहरे वालो की चाप के और कोई शब्द नही सुनाई देता था। खाने के कमरे में फर्राश लोग कन्दीलें बुझा रहे थे। मुझे नीद आही चली थी कि इतने मे मेरी पालकी आ पहुची और कमरे के बगल मे रखदीगई। मेरे साथियो के लिए भी यही व्यवस्था हुई। हमारे नौकरो ने हमारे सोने का प्रबन्ध करदिया और हमलोग चहल पहल को भूल कर मीठी नींद की लहरें लेने लगे।

दूसरा दिन भी इसी प्रकार व्यतीत हुआ। बादशाह के

एक नकीब ने हमलोगो से कहा कि जहांपनाह आप लोगो को कई वेर याद करचुके हैं । इसका तात्पर्य्य केवल इतनाही था कि कहीं हमलोग उकता कर चल न दें । बारह बजे राजनायित बाल सँवारने को बुलाया गया । हमलोग कोठी मे बैठे अपना जी बहला रहे थे, कभी मुह मे सिगार दबाए टहलने लगते, कभी अटा खेलने लगते और कभी हिन्दुस्तानी कारीगरी के उन नमूनो को देखते जो कोठी में सजे हुए थे। यह तो स्पष्टही था कि बादशाह यही चाहते थे कि हमलोग वहीं रहें । शिकार के विषय मे अभी तक कोई आज्ञा नही हुई थी और न वहा (झील पर) चलने की कोई तय्यारी ही देखने में आती थी, जहा हजारो पक्षियो के झुण्ड कलोल कर रहे थे।

आज भी रात को भोजन से निपट कर जब हमलोग उठे, तब बादशाह ने यही कहा कि ऐसे निर्जन स्थान पर उनको छोड कर हमलोगो का चले जाना उचित नहीं है, कल शिकार खेलने चलेगें। इस रात को भी हमलोग अपनी २ पालकियो ही में सोए और नौकरों को दूसरे दिन के लिए कपड़े लाने को शहर भेज दिया । यह सोच कर कि कहीं बादशाह सलामत अभी कुछ दिन यहा और डेरा जमावें, हमलोगो ने अपने नौकरों को सफर का सब सामान, ओढना, बिछौना, कपड़े, सन्दूक इत्यादि लाने को कहदिया, जिसमें फिर हमलोगो को किसीबात का कष्ट न उठाना पड़े । दूसरे दिन सबासो से जो पूछ गीछ की तो मालूम हुआ कि बादशाह सलामत अपनी एक नई बेगम साहिबा के साथ विलास में मग्न हो रहे हैं । यह बेगम अभी तरुण और अत्यन्त सुन्दरी थीं और जिन्हे दिलकुशा आने से दो तीन दिन

पहिले हमलोगो ने देखा था। 'यह मानो नया फूल खिला था, जो बहुत जल्द कुम्हला जाने वाला था, यह वैसाही नया खिलैाना था, जिसे बच्चे पहले बडे चाव से खेलते हैं और फिर उसे फेंक कर दूसरे खिलैाने से जी वहलाते हैं।'

एक सप्ताह का सामान मैंने जुटा लिया था। एक सप्ताह योही व्यतीत होगया और अब हमलोग झील की ओर चले। बादशाह ने विशेष रूप से आज्ञा देदी थी कि हमलोग साथही झील पर चलें, कोई वहा पहले न जाय। झील को और उसके चारो ओर शिकार के सामान को देख कर हमलोग चकित और प्रसन्न हुए। जिधर से हमलोग झील पर गए थे, उधर से भूमि कुछ ढालुवी और नीची थी, अर्थात् जब तक हमलोग झील के किनारे के टीलो पर नही चढे, हमें झील का पानी दिखाई नही दिया।

अब हमारे सामने झील में पानी लहरा रहा था और डूबते हुए सूर्य की किरणो से स्वर्णमय होरहा था, यह झील दो मील लम्बी और १ मील चैाडी होगी और इसके चारो ओर घना जङ्गल था। जिधर से हमलोग गए थे उधर का किनारा कुछ अधिक ऊचा था और झील का एक बाहु इधर को निकल आया था। इसी टीले पर दूर तक रावटिया और खेमे गडे थे, जिनके बीच में बादशाह सलामत के खेमे थे और इनके चारो ओर कनातें घिरी हुई थीं। बादशाह का जो खेमा था, वह सुनहली तार और बादले का था, जिनमें ल छ धारिया अनुपम छटा दिखा रही थी, और उनपर रग बिरगे झण्डे फहरा रहे थे। कनात के पीछे बादशाह की बेगमात, उनकी लैाडियो, पहरेदा-

पर ढेर बादशा के आगे लगादेते। किन्तु जितने पक्षी वस्तुतः घायल होते, उनसे दुगुने पक्षियो का ढेर होजाता। पाठको से आश्चर्य्य होता होगा कि वेलोग घायल पक्षियो का दुगुना ढेर कैसे कर देते थे? परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि सचमुच पक्षियो का द्विगुण ढेर लग जाता था। बात यह थी कि वेलोग पहिलेही से पक्षियो को इधर उधर से घायल करके झीलो में ला रखते थे और छिपाकर उनको भी जल में से या न लगता, तौ भी चोटीले सलामत का निशाना ठीक लगता निकाल लाते थे। बादशाह जानवरो का ढेर उनके सामने लगा दिया जाता था,क्योंकि बादशाह को प्रसन्न रखनाही सभी का इष्ट था। कौन माई का लाल था जो यह मुह से निकाल सकता कि ये पक्षी बादशाह के मारे नहीं हैं। सच तो यो है कि मैं कभी ऐसा न कहता कि ये जहापनाह के मारे नही हैं, क्योंकि मुझे जो हजार रुपये महीने मिलते थे, वह किस दिन के लिये मिलते थे, इसी लिये कि मैं बादशाह सलामत को प्रसन्न रक्खू। फिर मैं इसके विपरीत क्यो करने लगा था।

तीन चार दिन इसी प्रकार आखेट होता रहा। इसके अनन्तर रेजिडण्ट अपने स्टाफ (गणो) के साथ वहा आये, तब बादशाह सलामत ने सब को शिकार खेलने की आज्ञा दे दी और रेजिडण्ट और उनके साथियो ने और हम सभी ने शि... खेला। हमलोगो के लिये डोंगिया लाकर झील... जिनपर चढ चारो ओर घूम... और जी भर... शिकार खेला। इसके बा... शिकारी ... इनका शिकार मैंने पहि...

रीति साधारण बाजो के शिकार से भिन्न प्रकार की थी और उनमें भी सिखाये हुए बाजो की चतुरता और शिकार खेलने का ढङ्ग बहुतही उत्तम और देखने योग्य था। शिकार के लिये ये बाज विशेष रीति से सिखाये जाते थे। पहिले तो दाने की लालच पर हजारो जानवर झील के किनारे इकट्ठे कराए जाते, तब चार पाच बाज छोडे जाते, फिर हमलोग बन्दूक लेकर, कुछ मैदानो में, कुछ नावो पर, कुछ झाडियो मे खडे होजाते, तदुपरान्त पक्षियें उडा दीजाती। बाज ऊपर आकाश मे उन्हें घेरलेते और इनके चारो ओर, ऊपर नीचे, चक्कर काटने लगते, ये बिचारे जानवर घबडाये हुए न तो आगे जा सकते और न पीछे,उस समय हमलोग हजारो जानवरो का शिकार बन्दूको से कर लेते।

यह दृश्य भी कैसा मनोरम होता है। पाठक गण! आप आख बन्द करके इस दृश्य का ध्यान करे कि हजारो जानवर सहमे और डरे हुए बीच आकाश मे उडते हुए भागने का यत्न करते हैं, पर उन्हे बाज घेरे हुए किसी ओर भी नही जाने देते। ये घिरे हुए पक्षी न ऊपर जा सकते और न नीचे उतर सकते हैं, एकही घेरे मे कावे काटते हैं,बैाखलाये हुए एक दूसरे से टकरा भी जाते और इधर से उधर फडफडाते हैं, इसपर भी शिकारियो की भीड नीचे बन्दूकें छतियाए खडी है और नावें झील में घूम रही हैं। चिडियो के भागने का कोई रास्ताही नहीं है।

इस समय की दैाड धूप, चहलपहल अकथनीय है। हमारे पडाव में नित्यही नये ढङ्ग के शिकार खेले जाते थे, तैा भी बादशाह सलामत का चित्त कभी २ उदास रहता था, क्योंकि

वे उत्तम लक्षवेधी न थे, इसलिये उन्हें इस शिकार में अधिक आ-
नन्द नहीं आता था। उनकी असन्तुष्टता से हमलोगों का, जो सदा
उनके साथ रहते थे, नाकों में दम था। यह देखकर हमलोगों
ने बादशाह को बड़े शिकार खेलने को उभाड़ा। मुझे तो इस
रमणीक स्थान के छोड़ने का बड़ा दुःख हुआ। इस झील के
चारों किनारों पर हरे २ घने पेड़ और लतायें शोभायमान थीं।
इस झील में नावों पर बैठकर शिकार खेलना, कभी खेते हुए
हरित वन की शोभा निरखना, कभी बादशाही डेरों का आ-
डम्बर और वैभव का दूर से लखाई देना और उनके बीच में
घोड़ों, हाथियों, के झुंड का दिखाई देजाना और कभी फिर पेड़ों
की आड़ में होजाने से उनका छिप जाना, मन को हरे लेता
था। नाव पर बैठे २ कभी किसी सारस वा हँस का सामने आ-
जाना और हमें देखते ही भड़क कर उड़ जाना, वा उड़तेही उड़ते
किसी शिकारी के लक्ष से बिंध कर उसका जल में गिरना, फि
उसका डुबकी मार मार कर भागना और हमारा पीछा करना,
दिल बहलाने के लिये क्या कम था। कभी छोटे पक्षियों का
भड़क कर और धाव धाव करके टीडीदल के समान उड़ कर
फाये काटते हुए जङ्गल में चले जाना, कभी सूर्य्य की किरणों से
स्वर्णमय सीतलपाटी के समान झील के निर्मल जल का दृश्य,
बड़ाही मनोरजक होता था। फिर सध्या समय मुसल्मानों का,
झील के किनारों पर नमाज पढ़ते हुए, देखाई देना, कभी
उनका सिजदा करते हुए सिर टेकना, कभी खड़े होजाना,
(ये लोग प्राय शाही तिलंगे लाल वरदी पहिने हुए रहते थे)
और उनके प्रतिबिम्बों का जल में प्रतिबिम्बित होना, कुछ कम

मनोहारी न था। कभी २ जङ्गलो से, मोरो की किलकार, बन्दरो और लगूंरो की चीत्कार, पपिहा के पी पी की पुकार सुनाई देनी, बड़ीही अच्छी मालूम देती थी। किनारो पर हाथियो का चुपचाप कतार बाधे खड़े रहना, कहीं ऊटो की बेडौल गर्दन का घुमाना वा जुगाली करना, घोड़ो का अपने थानो पर खड़े दाने खाना और हिनहिनाना और छोटी २ चिड़ियो का चाव २ करके रथमथाना, क्याही भला मालूम देता था। ठीक यही अवस्था मनुष्य के जीवन की है। काव काव करने वाले मनुष्य जगत में किसी काम के नहीं होते।

अपनेही राज्य सीमा में शिकार खेलने के लिये बादशाह का प्रस्तुत होजाना कोई कठिन बात न थी। रेजिडण्ट के आने के पहिले वह जी भर कर चिड़ियो का शिकार खेल चुके थे, जिस में उनको इतना आनन्द आया था कि उन्होंने स्वयही बड़े और भयकर पशुओ के शिकार खेलने की इच्छा प्रगट की। एक दिन उन्होने कहा—

बादशाह। "लखनऊ लौट चलने के पहिले, हम बनैले सूअर, हरिन और शेरो का भी शिकार खेलेंगे।

इतनी आज्ञा होतेही, डेरे उखाड़े जाने लगे और उत्तर की ओर कूच बोल दिया गया, क्योंकि इसी प्रात मे बनैले सूअर, शेर इत्यादि अधिक थे। बादशाह के साथ इतना आडम्बर और इतनो भीड़भाड़ थी कि जल्दी कूच करना सम्भव न था। इस शिकार मे सिखाये और सधाये बारहसिंघे, बाज, और कठरो मे शिकारी चीते भी गाड़ियो पर लदे हुए, साथ में थे। बादशाह की बेगमात, ढेमनिया, रखिइया, डौडिया, बांदिया, पहरेदार-

निया इत्यादि बन्द गाड़ियो में फौज की फौज जा रही थीं। बाडीगार्ड का रिसाला नीली वरदी पहिने हुए साथ था। हाथीयो पर बारबरदारी के सामान लदे थे और ऊटो पर भी खेमे इत्यादि ढोये जाते थे और बहुत से साड़नी-सवार झुड की झुड जा रहे थे और घोड़ो की तो रेलपेल थी। इसके पीछे हमलोगो के साथ हैादे दार हाथियो की झुड, ऊट, घोड़े, पालकी,नालकी इत्यादि की भीड़ की भीड़ जा रही थी। अब खयाल करना चाहिये कि इतने बड़े लावलश्कर का कूच करना, मानो पलटनो का धावा था न कि शिकार का कूच, वास्तव में ऐसा जान पड़ता था कि कोई हिन्दुस्तानी राजा सेना के साथ धावा करता हुआ जा रहा है।

जिन२ गावो से होता हुआ हमारा लश्कर जाता,वहा के किसानो पर आफत आ जाती, वे लोग मारे भय के काप उठते थे, क्योंकि उस प्रान्त में बादशाह और उनके अनुचर वर्ग इससे पहिले गएही न थे। हिन्दुस्तान में बादशाही लश्कर का दौरा प्रजा के लिए कष्टदायक होता है,क्योंकि लश्करी लोग समझते हैं कि उनको प्रजा पर अत्याचार करने का अधिकार है—प्रजा से बिगार कराना, उनसे लूट खसोट करना, मानो उनका धर्म ही है। इसी प्रकार बहुत कुछ उन बिचारो को दुख भोगना पड़ता। इसके अतिरिक्त रास्ते में यदि कोई काम पड़ता, या जहा२ सड़क न होती वहा यदि बादशाही लश्कर के लिए सड़क बनानी पड़ती, तो वे लोग स्त्री, पुरुष, लड़के, बूढ़े बेगार में पकड़े जाते और उनसे काम लिया जाता और जो कहीं कुछ भी देर हुई या काम बिगड़ा,बस उनपर लात घूसे पड़ने लगते।

इङ्गलिस्तानवासी इसे झूठ समझेंगे, पर हिन्दुस्तान के देसी रियास्तो का जिन्हे कुछ भी अनुभव है, वे लोग इसकी एक एक बात ठीक समझेंगे।

अस्तु, हमलोग उस झील पर पहुचे, जो लखनऊ की पास वाली झील से ४० या ५० मील पर थी। यह झील पहली झील से दूनी बडी थी और यहा का जङ्गल बहुतही घना था। ज्यो २ हम उत्तर की ओर बढते जाते थे, हिमालय की बरफीली चोटिया सामने दिखाई पडती थी।

यहा की भूमि भी पहाडी थी, जङ्गल बहुत बडा था, बीच २ में कहीं २ खेती होती थी। इधर के प्रात मे मीलो तक सडक न थी, परन्तु बादशाही लश्कर के लिए नवाब-वजीर की आज्ञा से सडकें जल्दी २ बन कर तैय्यार थीं— ये सडकें हरे भरे धान के खेतो के बीच में से, गुजान जङ्गलो और उत्तम २ खेतो में होती हुई, बनवाई गई थी। बादशाह के आराम का ध्यान अधिक रक्खा जाता था और बिचारी गरीब प्रजा की पूछही न थी।

झील से कुछ दूर पर तम्बू, कनात ठीक उसी प्रकार गाडे गए थे, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है। भेद केवल इतना था कि रेजिडेण्ड साहब का खेमा यहा नहीं लगा था क्योंकि वह नहीं आए थे। यहा भी बादशाह ने उसी प्रकार से शिकार खेला, जैसे पहिले झील पर खेला था, पर इस झील मे दलदल अधिकथी, इसलिए उन्हे यहा जैसा चाहिए वैसा आनन्द प्राप्त न हुआ। इस झील मे बगुले बहुत थे। अब बाज द्वारा शिकार की पारी आई और कई दिन तक हमलोग इसी से जी बहलाते रहे। बादशाह को छोड कर हम मे से किसी ने बाज का ऐसा

उत्तम शिकार कभी नहीं देखा था। ज्योंही बाज छोड़ा जाता, वह तीर सा हवा में ऊपर को उड़ जाता, फिर शिकार को देखकर उसके चारों ओर धीरे २ चक्कर लगाता और फिर एकदम उसपर तीर सा टूट पड़ता। हमलोग नीचे खड़े तमाशा देखते रहते। ज्योंही बाज बिजली की तरह द्रुत गति से अपने शिकार पर आक्रमण करता, त्योंही उसे अपने पंजों से दबोच कर घायल कर देता। दोनों गड्डमड्ड होकर नीचे गिर पड़ते। यह दृश्य देखनेही योग्य होता था, एक बेर देखकर मनुष्य आजन्म नहीं भूल सकता। जिस समय हमलोग देखते कि बाज ने शिकार को दबोच लिया है, यह देखने को उसी दम हमलोग घोड़े फेंकते उसी ओर दौड़ पड़ते, कि देखें वह शिकार लिए कहां गिरता है। बड़े २ बुड्ढे लोग भी यह तमाशा देखने को बेसुध होकर दौड़ पड़ते, रास्ते की ठोकरों और ऊंची नीची भूमि का उन को तनिक भी ध्यान न रहता और न गिरने पड़ने का भय रहता, बस उनकी यह धुन रहती कि हमी पहले पहुंच कर देखें। हरएक की यही इच्छा होती कि पहले पहुंच कर अन्तिम युद्ध का तमाशा हमी देखें। बाज और शिकार दोनों घायल और एक दूसरे से गुथे हुए गिरते थे, बाज पालनेवाले झट पहुंच कर बाज को उठा लेते और उसके पंजों से शिकार को छुड़ाते। ये लोग बड़ी चतुराई से तुरत जान लेते थे कि बाज को कहां चोट आई है, चोट खा जाने पर भी बाज का उत्साह और अपने शिकार के भाग के चखने की लालसा देखने योग्य होती थी। बादशाह सलामत बहुत ही अच्छे शहसवार थे, इसलिये उन्हें यह शिकार बड़ाही प्रिय था और इसमें उन्हें बड़ाही

आनन्द आता था।

शिकार खेलने के पश्चात्, बादशाह के बड़े शामियाने मे हमलोग भोजन करने बैठते, भोजन के वेही सब पदार्थ यहा भी होते, जो लखनऊ में रहते थे, हा मदिरा पान में यहा परिमिताचार न रहता। वैसेही सुस्वादु भोजन, वैसाही बड़ा मेज और भाति २ के पदार्थ, जगमगाती कन्दीलें, चमचमाती तश्तरिया, नाच गाना, सुन्दर २ स्त्रियो का मोरपख की पखड़ियो से मोरछल करना इत्यादि, सभी बाते वैसीही यहा ४० वा ५० मील पर थीं, जैसी लखनऊ के महल में। सारांश यह कि जङ्गल मे मङ्गल हो रहा था।

इस स्थान मे जङ्गली सूअर या शेर न थे। इसलिए बनैले सूअर और शेर के शिकार के लिए, हमें और उत्तर की ओर जाने की आवश्यकता थी, परन्तु इस स्थान में हरिन बहुत थे, अतएव यह विचार किया गया कि इनका शिकार तीन प्रकार से खेला जाय--अर्थात पहले सधाए बारहसिंहो द्वारा, फिर चीतो से और अन्त मे पैदल वा घोड़ो पर चढ कर। इस सप्ताह के लिए यही दिनचर्या निश्चित हुई। अब बादशाह सलामत भी रोज रोज के बाज के शिकार से उकता गए थे।

अवध में पालतू बारहसिंहों द्वारा जैसा शिकार खेला जाता है, उसको तो हमलोगो ने जानना क्या सुना तक न था, इसलिए उसका वर्णन सविस्तर लिखा जाता है। बाज द्वारा चिड़ियो का शिकार खेलना तो सभी देश में होता है और लगभग एकही प्रकार का होता है, पर पलुए बारहसिंघो द्वारा शिकार खेलना हमलोगो के लिए एक अनोखी बात थी।

सवार होकर हमलोग झील के पासही एक ऐसे मैदान में पहुचे, जो एक जङ्गल से मिला हुआ था। यह हमारे काम के लिए बडीही सुन्दर जगह थी। इस स्थान पर छोटे और छ हिंसक जानवर बहुत थे और हरिनो से तो यह जङ्गल भर पडा था। बडे २ चतुर हँकुए इस जङ्गल में घुसे, जो बिना डरा और भडकाए हुए हरिनो के झुण्डो को हाक कर उक्त मैदान में ले आये, जहा पर हमलोग छिपे हुए बैठे थे। जब हरिनो के झुण्ड जिनमें बडे २ बलिष्ट नर हरिन भी होते जङ्गल के किनारे पर आजाते, तब लोग सधाए बारहसिघो को छोड देते।

ये पालतू नर-बारहसिंघे दस वा बारह होते थे। ये पा खूब जानते थे कि वे यहा क्यो लाए गए हैं, इसलिए वे जङ्ग की ओर धीरे २ झकडते हुए जाने लगते। जङ्गली झुण्ड के न और बलवान हरिन जब इन्हें अपनी ओर आते देखते, त उनमें भी जो कट्टर हरिन होते थे इनकी ओर आते। उस समय यह नही कहा जा सकता था कि ये मेल मिलाप करने वा युद्ध करने आते हैं। बस थोडीही देर में दोनो गुथ जाते। सिर से सिर, सींघ से सींघ को टक्कर देकर बडी शूरता के साथ जङ्गली हरिन और पालतू बारहसिंघे आपुस में भिड जाते और खूबही जोर लगाते, बडेही वीरता से लडते और एक दूसरे की जान लेने या जान देने को तुले रहते। जब उनमें मुठभेड होजाती, हमलोग भी पैदल वा घोडो पर सवार, झाड में से निकल कर, सामने आ जाते। हरिनो की वह झुण्ड जो जङ्गल के किनारे खडी युद्ध देखती रहती, हमलोगो को देख कर हवा हो जाती, पर ये लडनेवाले मैदान में बराबर डटे रहते।

थोड़ी देर तक इन सभों में खूबही जुधमजुधा होती, इतने में कुछ हिन्दुस्तानी शिकारी मैदान मे आते। उस समय हमलोग यह नहीं जानते थे कि वे लोग क्यों आए हैं, यदि जानलेते तो हम उन्हे उधर कदापि न जाने देते। धीरे २ ये लोग जङ्गली हरिनों के भागने का रास्ता रोक लेते, और कुछ लोग चुपके २ जङ्गली हरिन के पास पीछे से पहुच जाते, जो बेसुध अपने युद्ध में लगे आपुष में धक्कमधुक्का करते रहते थे। इतने मे इधर से उन शिकारियों ने उन्हे घायल कर दिया। हाय, जब वे घायल होजाते, तब वे बिचारे थरथराते हुए लुढकने लगते और उधर से बारहसिघों की लगातार ठेलम ठेल से भूमि पर गिर पड़ते। जहां ये एक बेर गिरे फिर ये उठ नही सकते थे।

जब जङ्गली हरिन गिर चुकते, तब पालतू बारहसिघे बुला लिए जाते। अपना काम तो वे करही चुके थे, अपने रखवालों की आवाज सुनते ही कुत्तो के सदृश वे चुपचुपाते चले आते। किसी किसी के छातियों मे जो घाव लगे थे, उनसे प्रगट होता था कि उनका छुटकारा भी सहज में नहीं हुआ है। घोड़ों पर से हमने देखा कि ये लोग खुशी २ ऐंडते मैंडते, इधर उधर सींघें झटकारते, कभी २ हरी घास पर एक आध मुह मारते और अपने विजय प्राप्ति पर अठलाते, चले जाते थे। इतने लड़ने पर भी अभी उनका जी नही भरा था, कभी २ तो वे आपुस मे ही मुठ भेड़ करने पर उतारू हो जाते, मानो अभी लड़ने का दम खम उनमें बाकी है। अब गिरे हुए हरिनों की अवस्था देखिए, जो बड़ीही करुणाजनक होती। अब इनमें वह शक्ति, वह कूद फाद, वह सींघो का झटकारना, वह छलाग मारना, वह फुर्ती

इत्यादि नाम मात्र को भी शेष न रह गई थी। विचारे घायल चौकड़ी भूले भूमि पर पड़े अपनी विशाल काली आंखो से हमें देख रहे थे, उनमे हिलने की भी शक्ति न थी और उनकी पत्थराई आंखो से प्रगट होता था कि अब उनका अन्तिम समय है, तब उनका तेज क्षीण होता जाता है। ऐसा मालूम देता था कि मानो वे लोग हमारी निर्दयता और कायरता पर शोक प्रगट करते है। यह धर्म युद्ध न था, यथार्थ रीति से वे पराए नहीं किए गए, किन्तु अन्याय और कुटिल नीति से घायल किए गए थे।

इङ्गलिस्तान में जब कुत्तो की झुण्ड और मनुष्यो की भी किसी अभागे खरहे के पीछे दौड़ती है और ये कुत्ते जब बड़ी निर्दयता के साथ उस विचारे छोटे पशु के चिथड़े २ कर डालते हैं, तब इसे देख कर किस निर्दयी को दया नहीं आती। वहां मुझे कभी भी इतनी करुणा नहीं उपजी थी जितनी कि इन साहसी, विशालाक्षी और वाक्यहीन पशुओ की दशा को देख कर, मेरा रोमाच हो आया था। अवध के प्रचलित शिकार की विधि देखकर मेरा जी काप उठता था। बादशाह सलामत का मन्तव्य पाकर इन सिसिकते पशुओ के सिर काट दिए गए, क्योकि इन घायल पशुओ को उसी अवस्था में रहने देना और भी कठोरता थी। यही उचित था कि उनको दु ख और सिसिकने से शीघ्रही मुक्त कर दिया था।

इन पालतू बारहसिंघो का तमाशा मैंने तो इतना ही देखा था, पर ना है कि ये लोग जीसे मृगो को पकड़वा भी देते हैं। यह इस प्रकार से कि जब दोनो युद्ध करते रहते हैं, तब दो

बलवान मनुष्य रस्सियों के फन्दे लिए हुए जङ्गली मृग के पीछे चुपके २ जाते और चतुरता के साथ फन्दे उनके सींघों पर फेंक कर खींच लेते हैं, जरा से झटके में फन्दे कस जाते और मृग गिर पड़ते हैं। यदि वे नहीं गिरते, तो उन मनुष्यों पर झपनी जान ऐसी अवस्था में एक आध आदमी के जान पर भय वह कुछ नहीं इनके फँसाने में एक कठिनता और भी होत उछलता, कूदता, फन्दे डालती समय यह सम्हालना पड़ता है ता है। इधर चीते रह सिंघे न फँस जाय। इस लिए जब तक वे ल जाता और यह सींघ से सींघ, भिड़ाए लड़ते रहते हैं, तब तक सका स्वाभाविक जाते, हां, बीच २ में जरा दम लेने को जब वे । रोक टोक, उस समय यह काम किया जाता है। ता है, का

दूसरे दिन शिकार में सधाए चीते छोड़े गए। इङ्गलिस्तान के अजायबालय में चीते हैं, अतएव उनके विवर्ण देने की कुछ आवश्यकता नहीं जान पड़ती है। चीते और तेन्दुओं में उनके सिर बनावट का भेद है। तेन्दुए का सिर छोटा और मोहरा ता है और इनके खाल पर हलके काले रङ्ग के चकत्ते पड़े रहते हैं। तेन्दुए से चीता कुछ बड़ा और बलिष्ट होता है। मैं ने सुना है कि सिलोन के चीते जब भूके होते हैं, तब वे जङ्गल से निकल कर बस्ती में भी घुस जाते हैं और बूढ़े, मर्द, स्त्री वा बालक को उठा ले जाते हैं। यह सच है कि सिलोन के चीतो के विवरण जो शिकारियों ने लिखे हैं, उन्हें पढ़ कर लोगों को विश्वास नहीं होता, पर उनके डीलडौल और बल को देख कर सन्देह नहीं रह जाता। हिन्दुस्तान के उत्तर प्रांत में वैसी घटनाएं कम सुनने में आती हैं, यदि होती भी हैं, तो शेर द्वारा

होती हैं, क्योंकि यहा आदमियो को प्राय शेर ही ले जाते हैं।

कठरे से शिकार के पास तक चीते को ले जाना सहज काम नहीं है। चीतो के पालने वाले इनके गरदन में लोहे के पत्थराई हुए कुत्तों के समान ले चलते हैं, थोड़ी देर तक तो है, तब उनका तेज ते हैं, पर जहा उनका ध्यान दूसरी ओर गया कि मानो वे लोग ई शब्द उनके कान में पहुचा, या भूमि में है प्रगट करते हैं। यहान्ध उनके मस्तिष्क में समाई कि तहा नहीं किए गए, फिर २ कर चलने लगते और सिर उठा २ कर किए गए थे। र उधर देखने लगते हैं, यदि तनिक भी देर हो, इङ्गलिस्तान आपे से बाहर हो जाते हैं, फिर सम्हालना कठिन होता है। परन्तु उसके सरक्षक चतुर रहते हैं। जहा उन्हो ने किसी चीते को चौकन्ना होते देखा, तहा नारियल जिसमें नोन छिड़का रहता है और जिसे रखवाले बाए हाथ में एक दस्ते से बधा हुआ लिए रहते हैं, झटपट उसके नाक पर लगा देते हैं, जिसे वह चाटने लगता है और नमक के प्रभाव से जो गन्ध उसके मस्तिष्क में समाई रहती है, दूर हो जाती है फिर वह सिधाई से चलने लगता है। जब जब आवश्यकता पड़ती है, वे ऐसाही बराबर करते रहते हैं जिससे वह रस्ते पर आ जाता है और दुम * दबाए सीधा चलने लगता है।

---

* हैदरअली बादशाह के बारे "मिर्ज़ा गुलाम मोहम्मद" ने जो 'हैदरशाह का इतिहास' सन १८७५ में छपाया है, उसमें लिखा है कि— "जब हैदरअली को अवकाश मिलता, तब वे अपने महल की खिड़की में आ खड़े होते और हाथियो के झुण्ड जो नीचे खड़े रहते उन्हें (सूड़ उठा कर) सलाम करते। बादशाह के सामने आने पर पीलवान चिल्ला कर कहता—"श्रीमान! महाराज को हाथी मुजरा करते हैं"

चीता पालनेवाला चीते को लेकर छिपता हुआ और शिकार के दृष्टि से बचता हुआ, जब हरिनों के कुछ पास पहुच जाता, तब वह चीते को शिकार दिखा कर छोड देता। उस समय उनकी दौड देखने योग्य होती है। हरिन अपनी जान लेकर चौकडी भरता हुआ भागता है—उस समय वह कुछ नहीं देखता, नीचा ऊचा, खाई खदक लाघता, उछलता, कूदता, चौकडी भरता, जी तोड कर दौडता चला जाता है। इधर चीते का खून शिकार को भागते देखकर खौलने लग जाता और यह भी उसके पीछे झपट पडता, क्योंकि हरिन इसका स्वाभाविक भक्ष है। यह भी फलांगें मारता बिना किसी रोक टोक का खयाल किए हुए हरिन के पीछे २ दौडा जाता है, कभी बिल्ली की तरह झाडियो को फादता, नालो मे घुसता, जल में पैरता, दौडता चला जाता है। यह तमाशा एकबेर देखकर मनुष्य फिर कभी भूल नहीं सकता। इस समय घोडा दौडाना भी सहज नहीं है। यद्यपि बादशाह के आराम के लिए हर तरह से भूमि सुधार दी गई थी, तौ भी बीच २ में गड्ढे, ऊचे नीचे टीले, जङ्गलो झाडझङ्खार पर से घोडो का दौडाना, कोई साधारण बात नही होती। ऐसे अवसर पर आसन जमाए घोडो पर बैठे

और उसी दम हाथियो के झुण्ड, जो गोलार्द्ध कतार से खडे रहते, सब के सब तीन बेर झुक कर सलाम करते। शिकारी चीते भी उनको स-लाम कराने के लिए लाए जाते थे। इन चीतो पर जारचोबी की झूलें भूमि तक लटकती रहतीं और उनके सिर पर से कमखाब की टोपी पहना कर आखें बन्द कर दीजातीं, जिसमें ये कहीं हिचकता न करें। हैदरअली अपने हाथ से इनको मिठाइ खिलाते थे, ये इतने हिले हुले थे कि ये बडी निपुणता के साथ पजो से लेकर मिठाई खाते।

रहना हँसी ठट्ठा नहीं है । हमलोगो की सवारी में बड़े जान दार और उत्तम २ घोड़े थे, जो हमलोग के समान शिकार प दृष्टि जमाए उधर ही बड़ी बेग से जा रहे थे, तौभी दलद और रेतीली भूमि और झाड़ियो के कारण उनका दौड़ना औ मृग और चीते को दृष्टि से ओझल न होने देना, कठिन ह० जाता—सच है, शिकार खेलना साधारण काम नहीं है । सा राश यह कि बड़ी कठिनता से सम्हलते सम्हालते शिकार के साथ २ हमलोग भी घोड़े फेंके चले जा रहे थे, कही सूखा और बेहगम नाला फाद्‌ना पड़ता, कही घास और झाड़ियो में घुस मना पड़ता था, जिनपर घोड़ो के भी कदम भलिभाति नहीं जम सकते थे, तिसपर भी हमलोग दौड़े ही चले जाते थे। इतनी कठिनाइयो पर भी चीता हवा में उड़ा चला जाता था। झाड़ियो को पैर से छूते ही वह ऐसा उड़ता था, मानो भूमि पर उसका पैरही नही पड़ता था। जाते २ हमलोग एक खुले मैदान में पहुचे, जहा दो तीन फीट ऊची छोटी २ झाड़ियो का जङ्गल था। इन झाड़ियो में भी कभी दाए, कभी बाए, गझिन झाड़ियो को बचाते हमलोग घोड़े दौड़ाए चले जा रहे थे ।

अन्त में हरिन दौड़ता २ थक गया था और जङ्गल के निकट भी आगया था—जो कहीं हरिन जङ्गल तक पहुच जाता तो उस गुञान जङ्गल मे वह हमारे हाथ कभी नही लगता क्योकि उस गझिन बन में घोड़े नहीं जा सकते थे । परन्तु वहा तक हरिन पहुचने ही न पाया । इतनी दूर तक के पीछा करने से थकथका कर वह चौकड़ी भरना भूल गया और मारे भय घबड़ा कर एक झाड़ी में घुस पड़ा, कदाचित उसने इसी

चीते द्वारा हरिण का शिकार।

उस बन का एक भाग जाना हो। वह बिचारा चौकड़ी भर कर उसमे घुसाही था कि उसकी सींग एक लता में फँस गई और वह छुड़ा कर भागाही चाहता था कि इतने में चीते ने उसे चाप लिया। अब क्या था।

इस समय बादशाह सलामत बड़ेही प्रसन्न थे, क्योंकि वे उसके ठीक छाप बैठने के समय निकट पहुंच गए थे। हमलोगों से लोमड़ी के शिकार में सब से पहले शिकार के पास पहुंचने की उत्कण्ठा और उसकी पोंछ काट लेने का वर्णन सुन चुके थे, अतएव उन्होंने भी झट बढ़कर हरिन की पोंछ काट ली और अपने शिकारी टोपी मे खोंस ली॥

चौथा अध्याय।

गपशप

इस समय हमारे डेरे, सिधरिख नामक गांव से थोड़ी ही दूर उत्तर की ओर गोमती और उसके उपनदि कथना के बीच की भूमि पर, लगे थे। एक दिन हम धावा करते हुए डेरे से दूर निकल गए। इस समय मुझे यह तो स्मरण नहीं आता कि हमलोग चीते के साथ अथवा हरिनों की खोज में गए थे। जाते जाते हमलोग एक जलाशय के किनारे पहुंचे, जिसके तट पर महीन श्वेत रेतीली भूमि थी। देखने मे यह महीन पिसे हुए शोरे के समान श्वेत थी और उसका स्वाद तीक्षण लवणमय और झालदार था। हिन्दुस्तानी भूपरीक्षकों के कथनानुसार

इसके विषय में कई कल्पनाएं सुनने में आई। मैं भूगर्भ
विशारद नहीं हूं जो इस भूमि के विषय में कुछ लिखूं,
जो हमलोगो ने वहां ... ...
लोग मुझे विश्वास दिलाते हैं कि वह एक प्रकार का महीन बा
था, जो प्राय समुद्र के किनारो पर पाया जाता है, केवल
न्तर यह था कि उसकी रंगत अधिक श्वेत थी, पर मुझे
है कि उस समय मैंने इस बात पर विश्वास ...
यह केवल एक प्रकार की रेत ही है। इस पोखर का जल
खारा था। पहले तो हमलोग बड़े वेग से जारहे थे, पीछे
धीरे चलने लगे, और ज्यों ज्यों आगे बढते गए, त्यों २
टापों से यह रेतीली धूल हवा में उड़ कर चारों ओर छा
गई। इतना अच्छा था कि उस समय वायु का वेग न था, न
तो हमलोग अपनी आंखें खोबैठते। अब यह महीन रेत उ
कर चारों ओर कानों में भर कर झाल के समान लगने लगे
यद्यपि इसके कण बहुत ही महीन थे, तौभी आंखों में घु
लगे और नाक में घुस कर चुनचुनाने लगे। हमारे घोड़ों
भी इनका प्रभाव पड़ा-हिनहिनाते, फुंकार मारते और
सते हुए उनका नाक में दम आगया। रह रह कर वे खि
जल की ओर झुक झुक पड़ते, यद्यपि जल ऐसा खारी था
पीने योग्य न था।

इस कष्टदायक यात्रा से हमारे शिकार की समाप्ति
बीज पड़गया। यद्यपि मुझे इस बालू का वैज्ञानिक नाम
मालूम होगया है, तौ भी मैं यहां इसे शोरे की महीन ब
लिखूंगा। इसने बादशाह सलामत के भी आंख, नाक

छोत को वे जरा जल्दीही अन्त पुर में पधार गए और हमलोग लोगी अपने २ डेरो में चले गए। ऐसी अवस्था में उन बिचारी कन्‍त्रियो का रक्षक ईश्वरही है, जो कहीं जोर से छींक दे, वा ऐसी निशई बात कर बैठे, जिससे स्वतन्त्र और अलबेले राजा का क्रोध में से जाय। हिन्दुस्तानी रजवाडो मे जोर से खासने, खरारने के हमाये कठिन दण्ड दिया जाता था*। हिन्दुस्तान मे बडे घरो ऐसे जनाने में भी प्राय ऐसे दुष्टकर्म होतेही रहते हैं। इसके रोकने के ा कोई उपाय नहीं है। सरकारी मजिष्ट्रेट यह जानते हैं, तौ येो कुछ नही कर सकते। हिन्दुस्तान के जनानखाने पृथक और गोपन रहते हैं, अन्दर के वृत्तान्त लौडिया बादिया यदि बाहर आकर प्रगट करदे, तो उनको प्राण दण्ड दिया जाता है। और यह दण्ड प्राय वही स्त्रिया देती, हैं जिनके पक्ष की बात लार्गा ए प्रतक्ष कर दीगई है। यहा के उमरा और धनाढ्य लोग पलकोही क्रूरता के दण्ड दिया करते हैं, और जो कही बादशाह बडा ा पर क्रुद्ध हुए, तो बिना बिचारे ही प्राण दण्ड की आज्ञा दे है। एक हिन्दुस्तानी दुष्कर्मी राजा ने अपने एक अङ्गरेज ही ़ सालिष्टर से कहा था कि "मेरे घर में बच्चा होने वाला है क्योार यदि मेरी स्त्री के लडका न हुआ लडकी हुई, तो मैं मारे क्रोधो के उसका प्राण ही लेलूंगा"। कुछ दिन पश्चात उसके लडकी हुई, इसके दो दिन पीछे उस स्त्री की लाश जलाई गई। लहु बिचारी क्योकर मरी, इसका पता न चला। यह बात उस अवसय खुली, जब एक वसीयतनामे के मुकदमे में सालिस्टर

*अवध के शाही दर्बार मे जोर से छींकने का दण्ड नाक काट सकते था।

साहब को इस बात की आवश्यकता पड़ी कि वह उक्त राजा को पागल साबित करें।

अब तक हमारे शिकार में ऋतु अच्छा रहा। परन्तु उसी रात को जब (हमलोग धूल फांक कर) सो रहे थे, मूसलाधार पानी बरसने लगा। बादल कड़क २ कर गरजने लगे और बिजली इतनी तीव्रता के साथ चमकती थी कि ऐसा चमकना सिवाय इन गर्म देशों के और देशों में कम देखने में आता है। हम पांचो व्यक्ति एकही खेमे में सो रहे थे, हमारे सिर पर बादल गड़गड़ा रहा था और बिजली इतनी ज़ोर से चमक रही थी कि उसकी चमक खेमे के अन्दर तक आती थी। दो२ मिनट पर बिजली की दमक से दोपट्टे खेमे के प्रत्येक पदार्थ तक दिखाई देजाते थे, और फिर ऐसा अन्धेरा छा जाता कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था।

आधी रात के उपरान्त ज़रा बादलों की गरज कम हुई, तो हवा की सनसनाहट, वायू की लपटझपट दैत्यनाद के समान सुनाई देने लगी। उसके झोंके और थपेड़ों से हमारे खेमे झुक झुक पड़ते। कभी एक ओर गिरने लगते, कभी दूसरी ओर, और कभी हवा से फूल कर उड़ जाने की चेष्टा करते, डेरों की चोबें तक थर्रा रही थीं। हमलोगों को पूरा डर था कि खेमा अब गिरा अब गिरा। खेमों के कपड़ों तक में हवा भर जाती थी। हम लोग उठ बैठे और खेमों के गिरने ही की बातचीत कर रहे थे, परन्तु हमारा डर निर्मूल था, क्योंकि हमारे खलासियों ने पहिले ही से और मेखें गाड़ रस्सियें कस दी थीं और डेरों को जकड़बन्द कर दिया था। आधी बयडल और पानी से हा

लश्कर में हलचल मची हुई थी। जब जरा बादल का गरजना बन्द होता, तब घोडो की हिनहिनाहट, ऊटो की बलबलाहट, हाथियो की चिघार और आदमियो की चिल्लाहट सुनाई देती।

जब बादल की घडघडाहट कम होती, तब हमलोग आपुस में कहते, 'मालूम होता है कि कुछ जानवर छूट गए है"। अन्त मे आधी पानी कम हुआ, परन्तु लश्कर में हल्लागुल्ला कम होने के बदले अधिक होने लगा। हमलोगो ने सोचा कि "कदाचित् बहुत से जानवर छूट गए हैं। हमलोगो को यह डर था कि कही हाथी इधर आकर रस्सियो में न उलझ जाय, नहीं तो खेमो की खैरियत नही।"

हमलोग बैठे ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि कही कोई जानवर बहक कर इधर न आजाय और हमने नौकरो से भी कह दिया था कि वे देखते भालते रहें। हमलोग फिर लेट रहे। हमलोगो के खेमे बहुत ही उत्तम थे, मूसलाधार वर्षा होजाने पर भी इसमें पानी नहीं टपका। हमलोग मीठी नींद के झोके में पडे सो रहे थे, अभी अच्छी तरह सोने भी न पाये थे, बाहर हुल्लड बढताही जाता था, इसलिये मैंने अपने खिद्मतगार से कहा, "बखशू, जाकर देख तो यह क्या गोलमाल देर से हो रहा है।"

उधर बखशू गयाही था कि इतने में बाहर से एक आदमी ने हमारे नौकरो को बुलाया। हमलोगो ने सुना कि कोई कह रहा है कि 'जहापनाह का सन्देसा लेकर चोबदार आया है।'

सन्देसा यह था कि कप्तान साहब की जल्द बुलाहट है। यह सुनतेही हमलोग उठ बैठे और अपना अपना खयाल

दौड़ाने लगे कि ऐसी कौनसी विपत्ति आगई, जो इस आंधी पानी में कप्तान की बुलाहट हुई। चोबदार से जो पूछा तो उसने कहा, "मुझे मालूम नहीं कि क्या काम है। हां, इतना जानता हूं कि शाही डेरे में हुल्लड़ मच रहा है और एक डेरा हवा से गिर गया है"। बस इतनीही बात पर नाना प्रकार के सोच हमारे जी में उठने लगे, "कहीं ऐसा तो नहीं है कि नवाब वजीर पर, जिनके सपुर्द डेरों का इन्तजाम था, बादशाह सलामत खफा होगए हों और उनको पकड़ कर प्राणदण्ड की आज्ञा देदी हो। कहीं ऐसा तो नहीं है कि 'शाहीहरम' में कोई भयानक घटना हो गई है।" प्रत्येक व्यक्ति अपनी अलग खिचड़ी पका रहे थे। फिर हमने सोचा कि इस ऊभचूभ से क्या सिद्ध होगा, जो होगा थोड़ी देर में मालूम होजायगा।

कप्तान साहब के चले जाने पर मेरा खिदमतगार लौट कर आया और कहने लगा कि बादशाही डेरे में चलने की तैयारियां हो रही हैं, परन्तु यह पता नहीं लगा कि क्यों। जब उस ने एक जमादार से इसका कारण पूछा, तो उसके उत्तर में उसे एक घूसा मिला। इतनी बात सुनकर हमे सतोष न हुआ। पानी अभी तक झमाझम बरस रहा था, इसलिये हमलोग को साहस न पड़ा कि बाहर जाकर स्वयं पता लगा आवें। अन्ततः गरवा कप्तान साहब लौट कर आये और कहने लगे —

"भाईयो मैं तो जाता हूं, तुमलोग अपने जान माल की रक्षा करना"।

हमलोग सब एक साथ बोल उठे, "अरे भाई, कहां जाते हो? कौन कौन जाता है?"

कप्तान। "जापनाह की सवारी आध घण्टे में लखनऊ को कूच कर देगी और उनके साथ उनकी फौज और बेगमात इत्यादि भी चलदेंगी। बादशाह साहब बहुत खिजलाये हुए हैं और अभी लखनऊ वापस जाना चाहते हैं। कूच की आज्ञा देदी गई है। देखे, मैं फिर कहे जाता हूं कि अपने माल असबाब की खूब देखभाल रखना, नहीं तो देहाती लोग लूट लेंगे।" यह कहकर कप्तान साहब अपना बोरिया बँधना बँधवाने लगे, कभी किसी अरदली को कुछ आज्ञा देके, और कभी किसी को कुछ असबाब सपुर्द करके, जाने को वह लैस होगए।

मैंने पूछा। "क्या सचमुच गाववाले माल असबाब लूट लेवेंगे?"

कप्तान। 'यदि चौकस रहोगे तब तो वे न लेजावेंगे। ये देहाती लोग, जिन्होने बादशाही लशकर के हाथ इतना कष्ट भुगता है, जहा सुन पावेंगे कि बादशाह सलामत और उनके गारद के सिपाही चलदिये, बस वे डेरो पर छापा मारेंगे। पहिले ऐसा प्राय सुनने में आया है।"

बादशाह की सवारी के साथ उसी वक्त हमारा चल खड़े होना कठिन था, क्योंकि हमारे साथ काफी कहार न थे। फिर बादशाह का यह भी हुक्म था कि हमलोग नवाब वजीर के साथ आवें। पचास साठ मील की यात्रा अवध में इतनी सहज नहीं है, जितनी की यूरोप में उत्तम सड़को के कारण से होती है। हम में से हर एक के साथ एक एक हाथी और एक एक वा दो २ घोड़े थे, परन्तु पालकी वा छायेदार सवारी का पूरा प्रबन्ध न था, क्योंकि इसके लिये कहारो की डाक बैठानी पड़ती

थी, तब कही दिन में हम चल सकते थे। इसके अतिरिक्त जो असबाव हम साथ न लेजा सकते, वह लुट जाता। यदि गांव वाले न लूटते, तो नवाब के आदमी उन्हे कब छोड़ते।

अब सिवाय ठहर जाने के हमारा वश ही क्या था। यह विचार हुआ कि सूर्य्योदय तक हमलोग यही पड़े रहें और दिन उगने पर देखे, कि नवाब कितने आदमी हमे देते हैं और हमारे लिये वह क्या बन्दोबस्त करते हैं।

थोड़ी देर बाद बादशाह की सवारी चलपड़ी। हम खेमे में बैठे घोड़ो की हिनहिनाहट और कहारो का "दाया,बाया," "हू हा" और हाथियो के घंटो की आवाज सुन रहे थे। सवारी तेजी के साथ जा रही थी,ज्यो ज्यो वह दूर होती गई, उनकी आवाज मध्यम पड़ती गई और अन्त को फिर सन्नाटा छागया। बादशाह का हुक्म भी 'नादिरशाही हुक्म' होता था। इधर उनके मुह से बात निकले, उधर वह काम होजाना चाहिए। वह आज्ञा क्या देते थे, मानो हाथ पर सरसो जमाते थे। अब जो चराने की सूझी, बस कूच का डंका बजगया। सवारी जो बढ़ी सो बढ़ी, चब कहा रुकती है।

अब भी रिमझिम रिमझिम बूंदें पड़ रही थीं। रात अंधियारी और डरावनी थी। हमारे खेमे के बीच में एक टेबुल पर एक लम्प बल रहा था और मेघवाष्प के कारण खेमे की चीजें धुंधली दिखाई देती थी, हम चारो आदमी खेमे में इस भांति सोये हुए थे कि दो खेमे की एक ओर और दो दूसरी ओर, हमारी पालकियां खेमे के दर्वाजे पर रक्खी हुई थी। केवल मेरी पालकी अन्दर थी। कप्तान साहब की बात हम भूले न थे,

हमलोगो ने विचार किया कि हममें से एक एक आदमी पारी पारी से घण्टा २ भर जागता रहे। हमने दो पिस्तौल भर कर टेबुल पर रखली और एक२ तलवार अपने पास लेली। पहिले एक साहब, जो आस्ट्रिया की फौज मे अफसर रह चुके थे, पहरा देने बैठे और चुरट पीने लगे। खेमे के अन्दर बहुत से खिदमतगार फर्श पर पडे सो रहे थे, पर उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता था, क्योंकि इन लोगो के जी में उन देहातियो क बडा डर समाया हुआ था, जिनकी दुरगति गाली-गलोज, मारपीट सभी कुछ उन लोगो ने दिन मे की थी।

हमारे फौजी मित्र खेमे मे ऐसे स्थान पर डटे बैठे थे कि दोनो दर्वाजो की चौकसी कर सकते थे। मुझे नींद आ रही थी और उसी नींद भरी आखो से मैंने उनको, जिस सजधज से कि वे बैठे थे, देखा था, उसकी कुछ याद अबतक बनी है। वह आराम कुर्सी पर तकिया लगाये, मेज के नीचे पाव फैलाये और पतलून के जेबो में दोनो हाथ डाले हुए, अकडे बैठे थे और "मेनीला" चुरट मुह में दबाये फक फक धूए उडा रहे थे। यह देखतेही देखते मुझे नींद आने लगी। बाए ओर दरवाजे के पास ही मेरी कोच बिछी हुई थी। मेरी ही ओर उक्त पहरेदार साहब की पीठ पडती थी और मेरा नौकर, मैले चादरे में सिर पैर लपेटे हुआ, पडा गुर्राटे लेरहा था। अभी मुझे भरपूर नींद भी नही आई थी कि मुझे पासही किसीके रेंगने और घसकने की आहट मालूम दी। मैं हिला तो नहीं, पर आखें खोलदीं, क्या देखता हू कि एक काला हाथ जमीन पर से ऊपर को उठा और मेरेही पास एक टीन के बक्स पर जो कपडो की मेरी

गठरी रक्खी थी, उसे उसने उठाया। मैं जानताही था कि मेरे सब धुलेधुलाये कपड़े, जो मैं लखनऊ से साथ लाया था, उसी में बँधे थे। अब जो एकदम कूद कर उसे नही पकड़ता हू, तो कपड़ो की गठरी से हाथ धो बैठता हू। मैं उठकर उसका हाथ पकड़ाही चाहता था कि वह हाथ गठरी सहित गायब होगया। मेरी आहट पाकर हमारे गार्ड साहब ने चट मेज पर से तमचा उठा लिया और यह समझ कर कि चोर अबतक नहीं भाग सका है, उन्होने मेराही लक्ष किया, मैं घुटनो के बल कोच और खेमे के बीच में बैठा चोर को ढूंढ रहा था। यह सब एकही पल का काम था। हमारे गार्ड साहब पिस्तौल लिये हुए आगे बढ़े और मैंने चट खड़े होकर तलवार लेली। इतनेही में चोर राम सर्प के समान कोच के नीचे से निकल कर और पासही के दरवाजे से छलांग मार कर बाहर को भागें। मालूम होता है, इसी रास्ते से वह आया भी होगा।

इतने में लोग जाग पड़े, पकड़ो, धरो, जाने न पावे का हुल्लड़ मचा और चोर की ढूंढ होने लगी। मैं ऊपर लिख आया हू कि मेरी पालकी खेमे के अन्दर दरवाजे के पासही रक्खी हुई थी। उसका पट खुला हुआ था। चोर ने देखा कि पालकी का पट खुला है, उसीमें से होकर निकल जाना चाहिये, बस वह बन्दर के समान फुरती से लपक कर उसके अन्दर घुसा। हमारे गार्ड साहब ने उस काली मूर्ति को जो भागते और पालकी में घुसते देखा, बस उन्होंने उस पर पिस्तौल चलादी। मैंने भी घुसते हुए उसकी झलक मात्र देख ली थी, मैं भी तलवार लेकर उधरही लपक पड़ा। कहीं पालकी के अन्दर मेरा नौकर

पडा सो रहा था, जैसेही चोर उसपर गिरा कि वह चुहुक कर चोर के साथ ही पालकी के बाहर कूदा और दोनो बाहर कीचड़ में गड्डमड्ड होकर गिरे और लोटने लगे। दोनो समझे कि पिस्तैाल का निशाना उन्हींको लगा। चोर तो किसी प्रकार से सम्हल कर भाग खड़ा हुआ, परन्तु नैाकर राम अवतक कादे मे लत्थपत्थ पडे हैं। चोर तो जान वचा कर डोली हुआ, पर मेरे साफ सुथरे कपडो की गठरी को एक गडहे में मट्टी कीचड़ में सना छोड़ गया। मेरा एक कपड़ा भी कीचड से बेदाग न बचा।

जो लोग गर्म देश मे कभी नही आये हैं, वे इसे एक साधारण घटना समझेंगे। यदि ऐसे देशो में उनको कभी सुथरे कपडे बदलने का सुख, वा धुले कपडे न रहनें पर मैले कपडे पहिनने का दुख, उठाना पडा है, तो वे समझ सकते हैं कि इस देश में, जहा "थर्मामिटर" का पारा ८५° वा ९७° तक चढा रहता है, जहां घने जङ्गलो के कारण से हवा रुकी रहती है, जहा मारे गरमी के अङ्ग से पसीने टपकते हैं, जहा भूमि तपने लगती है, जहा पेडो तक से हवाड निकला करती है, जहां हाथी, घोडे, पशु, पंछी सभी पसीनो से शराबोर रहते हैं, मुझ पर यह कैसी मुसीबत पडी थी। जो जानते हैं वही मेरी इस अवस्था पर करुणा कर सकते है। मेरे बेयरा ने पहिले पहिल यह गठरी पाई। पहिले तो मैं उसपर बडा प्रसन्न हुआ कि उसने मेरी गठरी ढूंढ निकाली, परन्तु कपडो की दुर्दशा देखकर मुझे क्रोध आगया। जितने कपडे थे सब कीचड मट्टी में सनकर पीले और भूरे होगए थे, एक भी बेदाग नही बचा था। चिकनी और लेसदार महीन मट्टी उनके तह तह में समा गई थी। अब मैं मारे

गुस्से के एक२ कपड़े उठाता और कपड़ों की दुर्गति देखकर एक एक करके अपने गार्ड साहब के सामने फेंकता जाता और उन्हें कोसता जाता था। सारा दोष मैंने उन्हींके माथे थोपा। वह हँस कर कहने लगे,"कि चोर भी बेदाग नहीं गया है, वह भी गोली खाके गया है।" यदि यह सत्य है, तो उन्होने एक नाल में दो गोली भरी होगी, क्योंकि सवेरे ही एक गोली पालकी के ढांचे में गहरी धसी हुई मिली। मुझसे न रहा गया और मैंने यह धसी हुई गोली उक्त साहब को देखा ही दिया। इनकी ढिटाई तो देखिये, अपनी डाढ़ी पर हाथ फेरते हुए, वे कहते क्या हैं कि यह चिन्ह तो बहुत दिन हुए उन्होने देखा था, और यह गोली तबही लगी थी, जब एक रात को मैंही उस में सो रहा था। परन्तु यह सब झूठ बात थी।

इसके बाद फिर रात भर कोई न सोया। देहातियों को भी बादशाह सलामत और उनके गारद के सिपाहियों के चले जाने का हाल मालूम होगया, जब उन्होंने देखा कि बादशाह चलदिए, तब वे लोग डेरों पर टूट पड़े। इस अंधेरी घुप्प रात में शाही डेरों के पास से स्त्रियों और मर्दों की चीख पुकार, रात भर सुनाई देती रही। बेगमात की लैांडियां, जो साथ न जा सकी थीं, उनको इन दिहातियों के हाथ से नाना प्रकार के कष्ट सहने पड़े। ऐसे फाड़े और लूटे गए, इन बिचारी स्त्रियों के गहने उतारे और छीने गए, सन्दूक तोड़े गए और बेगमात के कपड़े तक लूट लिए गए। हमलोग बैठे अपनी रक्षा कर रहे थे। यह नवाब वज़ीर का काम था कि वह सारे लश्कर की रक्षा करते। हमको स्वय अपनाही डर था कि कहीं हम पर भी दिहाती

लोग कृपा न करें। हमलोग हथियारबन्द, कोई पिस्तौल लिए हुए, कोई बन्दूक लेकर, कोई तलवार ही खेंचे हुए, मारने मरने पर लैस बैठे थे। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे डेरे की ओर भी उन डाकुओं ने फेरे लगाए, पर हमें चौकस पाकर हमारी ओर आने का साहस उन्होंने न किया। इस वृत्तात को पढ़कर कदाचित कोई झुंझला के पूछे कि उन बिचारी स्त्रीयों की आपदा देख सुन कर भी हमलोग मसट्ट मारे क्यों बैठे रहे, उनकी सहायता को क्यों न गए? इसका उत्तर हम यह देते हैं, कि ये स्त्रिया प्राय नीच, डोमिनिया, रण्डिया और लौंडिया थीं। यदि हम उनको बचाने जाते, तो लखनऊ पहुंच कर हम पर बड़े २ बान्धनू बांधे जाते। येही स्त्रिया, जिन्हे हम बचाने जाते, हम पर दूषण लगाने को तैय्यार होजाती और हम पर हरम में घुस जाने का दोष लग जाता, फिर हमारा कहा पता लगता। इधर बादशाह का क्रोध, उधर रेजीडण्ट की असन्तुष्टता, हमारी किसी बिधि जान न बचती। इसके साथही आगे की भलाई और आशा तो जाती ही रहती, हमारी कमाई और बटोरी चीजें भी राजदण्ड में हर लीजाती, फिर हम कहीं के न रहजाते। दूसरी बात यह भी थी कि यदि हम जाते, तो हमारे डेरे को अकेला पाकर दिहाती कब छोड़ते, लूट न लेजाते? यह बात तो बनी बनाई है कि चाहे कोई कैसा ही शूर बीर क्यों न हो, पहले वह अपना बचाव कर लेता है, तब दूसरे की रक्षा करने जाता है। भला हम चार आदमियों से कम वहा जाही के क्या कर लेते और क्योंकर उन विपद्ग्रस्त स्त्रियों को बचा सकते थे। यदि हम जान पर खेल कर चले भी जाते, तो वे स्त्रिया ऐसी

न थीं, जो हमारे उपकार को मानतीं। यदि हम उनकी सहायता को चल देते, तो इधर हमारे कपड़े, माल असबाब, काठिया, कोच, पालकी, घोड़े इत्यादि की कौन रखवाली करता।

हमारे घोड़े हमारे खेमे के चारों ओर इस प्रकार बांध दिये गए थे, कि उन्हें कोई चुपचाप खोल कर ले ही नहीं जा सकता था, क्योंकि हमने घोड़ों की रस्सियों के दूसरे सिरे को, जिनसे घोड़े खूंटियों में बंधे थे, साईसों के हाथों में बंधवा दी थीं, जिससे घोड़ा खोलते ही उनके हाथों पर खिंचाव पड़ता और मालूम होजाता।

इस भारी भयानक और अंधेरी रात में हमलोग बैठे घुटट किया किये और चीकाधाड़, धरो पकड़ो की आवाज़ सुना किये, जब सूर्य उदय हुआ, तब हमलोग रात की घटना देखने खेमे से बाहर निकले, तो एक अद्भुत भयकर दृश्य हमारे देखने में आया, जिसका वर्णन करना, या ध्यान करना दुर्लभ है। बादशाह का एक खेमा गिरा पड़ा था। वे लखनऊ जाने के ऐसे धुन में थे कि उसको खड़ा कराने की उनको तनिक भी परवाह न हुई। हर एक आदमी जल्द चलने और असबाब लाद कर ठीक होजाने की धुन में ऐसे लगे हुए थे कि इस गिरे हुए डेरे की ओर (लुटेरों को छोड़ कर) किसीने भी ध्यान न दिया। कूच क्या थी पूरी भगदड़ थी। यद्यपि सवारों ने बहुत कुछ पहरे बैठा दिये थे, तो भी डेरे खूब लूटे गए। माल असबाब का तो सिपाहियों ने तहसनहस ही कर दिया, यहां तक कि बादशाह सलामत का कोट और पतलून को, भी, जो वे अभी सांझ को पहिने हुए थे, न छोड़ा और उठा लेगए। मैं

के चारो ओर की भूमि जगमगा रही थी, क्योंकि शाही बेगमात के चमकी और जरदोजी के कपडे और साढिया, जो हडबडी में लुटेरो से गिर कर छूट गई थीं, इधर उधर छितरी पडी थीं। बहुत से अमूल्य वस्तुए, वस्त्र, साढिया, हाथी की झूलें, परदे और चादी सोने के बरतन इत्यादि बिखरे पडे थे। ये सब वस्तुएं देशी ही न थी, इनमें हमको वे पोशाके भी देखने में आईं, जो प्राय हिन्दुस्तानी स्त्रिया कभी नही पहिनती, किन्तु यूरोपियन स्त्रिया ही पहिना करती हैं और विलायत के बडी २ दुकानो ही में देखने मे आती है, जिन्हे देखकर कुआरे युवक लोग दिल मसोस कर रहजाते हैं। हमलोगो को यह देखकर बडा आश्चर्य्य हुआ, क्योंकि हम खूब जानते थे कि बादशाह के अङ्गरेज नैाकर—बावरची, कोचवान, राजनापित इत्यादि, जिनकी नोमें भी थी, अपने बीबीयो को साथ यहा नहीं लाये हैं। इसलिये हम लोगो ने अनुमान किया कि हरम में अवश्य कोई ऐसी लेडी होगी, जो इन पोशाको को पहिनती होगी, जिसके विषय में न हमें कुछ मालूम था और न हमने कभी कुछ सुनाही था।

यह भी मालूम हुआ कि लुटेरो और नवाब वजीर के आदमियो में घमासान लडाई भी हुई थी, क्योंकि एक जगह दो आदमियों की लाशें पडी हुई थीं, जिनके अङ्गभङ्ग, और लाश के टुकडे २ होगए थे। देखने में ये दोनो लाशें बादशाही लशकर के आदमियो की नही जान पडती थीं। हमने यह भी सुना कि वजीर के भी बहुत से आदमी सख्त घायल हुए हैं।

हमलोग अपने डेरे पर इसलिये शीघ्र लैाट आये कि चलने के पहिले कुछ खापी लें। डेरे में पहुंचे तो क्या देखते हैं कि

यहा अधेर मचा हुआ है, हुल्लड हो रहा है, और आदमियो में खूब गालीगलोज जूते पैजार हो रहे हैं। बड़ी कठिनता के साथ डाट डपट कर हमने उन्हे धीमा किया। गोलमाल और भीड़ ही देखकर हमें ज्ञात होगया था कि किसी बात पर हमारे और नवाब-वजीर के आदमियो में झगडा होगया है। यहा इतना द्वन्द मचा हुआ था कि झगडे का कारण समझ ही में नहीं आता था। यहा तक नौबत पहुच गई थी कि दोनो ओर लाठी तलौवार तक होगई। यदि हम कुछ और देर करके आते,तो यहा सिरफुटौवल ही नहीं किन्तु पूरा युद्ध होजाता। पूछगीछ कीगई तो नवाब वजीर के एक आदमी ने कहा कि "देखिये साहब, ये नालायक बदमाश, नवाब की आज्ञापालन नहीं करते"।

हमारे आदमियो ने कहा, "ये हरामजादे, कहते हैं कि अपने मालिक का कामकाज छोडदो और हमारे साथ चलो।' संक्षेप यह कि दोनो दल के लोग चिल्ला २ कर अपनी २ राग गाने लगे। हिन्दुस्तानियो की बान है कि जब लड़ते हैं,तब खूब गला फाड २ कर चिल्लाते हैं और एक दूसरे को धमकाते हैं।

इस लड़ाई में हमारा बहुत कुछ सम्बन्ध और स्वार्थ था। पूछगीछ से मालूम हुआ कि नवाब वजीर ने आज्ञा दी है कि चलने के पहिले साहबलोगो के नौकरो से भी कूच के सामान कराने में सहायता लीजाय। इतनी आज्ञा पाकर नवाब के आदमी हमारे नौकरो को, जो उस वक्त कुछ काम नहीं करते थे, पकडे लिये जाते थे। हमने सोचा कि यदि हम उन्हें छोड़ देते हैं, तो फिर हमलोग न मालूम कब चल सकेंगे।

असबाब कौन बांधेगा। मेरे समस्त वस्त्र तो कीचड़ में सन कर भ्रष्ट हो ही गए थे,इसलिये मैं चाहता था कि किसी प्रकार शीघ्र ही लखनऊ पहुंच जाऊं। मैंही अकेला उतावला न था, किन्तु जितने साहबलोग थे, सभी जल्द चल देना चाहते थे। लशकर के बहुत से कहार तो बादशाह सलामत केही सवारी के साथ साथ चल दिये थे, थोड़े से रह गए थे। जो कहीं नवाब-वजीर भी हमसे पहिले चल दें, तो हमारा लखनऊ पहुंचना बहुतही कठिन होजाता। इतनाही नहीं वरन् हमें यह भी डर था कि फिर हम लखनऊ पहुंच भी न सकेंगे, क्योंकि अवधवासी हम यूरोपियनलोगों से घृणा करते थे और बुरा मानते थे।

हमने बड़ी नम्रता के साथ धीरे से उन आदमियों से कहा कि देखो, जापनाह हमारी बाट जोहते होंगे, हमारे बिना अकेले घबड़ायेंगे। वे चलती समय हमें जल्द आने की आज्ञा देगए हैं। पर ये नवाब वजीर के नौकर हमारी कब सुनते थे, वे कहने लगे, "आपलोगों के देर होने का उत्तर नवाब साहब देदेंगे।" हमने फिर कहा, "हमें उचित है कि हम शीघ्र ही चलदें,यदि हम अपने आदमियों को देदेंगे, तो हमारे असबाब कौन बांधेगा, हमें देर हो जायगी, और जापनाह की आज्ञा भङ्ग होगी।"

इसका उत्तर हमें यह मिला कि "बादशाह सलामत के पीछे नवाब वजीर ही हाकिम और श्रेष्ठाधिकारी है। उनका हुक्म आपलोगों को मानना होगा।"

तब हमने जरा कड़क कर कहा, "हमलोगों के पास कई जोड़ पिस्तौल की हैं, दो रैफल,बन्दूक और बहुतसी तलवारें

हैं, समझ रक्खो कि हम अपनी और अपने नौकरों की रक्षा भली भांति कर सकते हैं।" इसपर उन्होंने कहा, "आपके एक र आदमी के लिये नवाब साहब के पास तीन तीन आदमी हैं और हथियारों की तो कुछ गिनतीही नहीं, यदि आप हट करेंगे, तो याद रखिये आप को एक आदमी भी न मिलेगा।"

नवाब के आदमियों की बातचीत सुनकर हमें विश्वास हो चला था कि नवाब जिस बात की दृढ़ प्रतिज्ञा कर लेंगे, उसे कर दिखावेंगे। इनकी बातचीत में खुशामद की बात भी थी और दृढ़ता भी, हमारे आदमियों के लेजाने पर वे इतने दृढ़ हो रहे थे कि एक इंच भी नहीं टसकते थे।

हमलोग बड़े दुखी हुए, कुछ नहीं सूझता था कि अब क्या करें। हमारी बुरी दशा थी, हम नवाब-वजीर से बिगाड़ना भी नहीं चाहते थे। हमलोग उन्हें समझाही रहे थे कि हमें राज नाजिर का ध्यान आया। इस का इतना प्रताप दरबार में थ कि क्या बड़े क्या छोटे, सभी इससे कांपते थे। एक कहावत है "जेहिकर जापर सत्य सनेहू। तेतेहि मिले न कछु सन्देहू" अर्थात् जिसका ध्यान करो वह मिलही जाता है। हमलोग उसे याद ही कर रहे थे कि इतनेमें वह खान खिराजा। वह भी जल्द कूच करने की सोच में था और उसकी इच्छा थी कि हमलोग उसके साथ ही चलें और शीघ्र लखनऊ पहुंच जायं। हमलोगों ने सारा हाल उसे सुनाया। वह छोटे कद का आदमी मारे क्रोध के फूल का कुप्पा होगया! पहिले तो नवाब के आदमी से अङ्गरेजी में कहा कि 'तुम सब पाजी बदमाश हो। नवाब और उसके साथी भी दुष्ट और नीच हैं'। फिर टूटी फूटी हिन्दी में बोला कि 'जाओ नवाब

साहब से कहदो कि मुझे जल्द जाकर जापनाह का थाल सवारना है। मैं अभी लखनऊ जाना चाहता हू, जरा भी देर नहीं कर सकता और ये साहब लोग भी मेरेही साथ जायगे, इसलिये कोई नौकर यहा का न पकडा जाय। क्या बिगारियो की कमी है ?

इसके उत्तर में नवाब वजीर के आदमियो ने चू तक न की, झुक कर सलाम किया और अपना मुह लेकर चलते बने। सच है, 'जबरदस्त का ठेगा सिर पर'। राजनापित की शरन लेने से हमें कुछ दुख न हुआ। हमलोग का काम निकला और राजनापित भी तुष्ट होगया। यदि नवाब वजीर जी मे कुढे हो तो कुढें। यह हम नही कह सकते कि उन्होने बुरा माना था नहीं—भला वे अपनी हेटी हमपर क्यो प्रगट होने देते। इसका फल यह हुआ कि फिर हमारे नौकरो की माग नही हुई।

जब हमलोग लखनऊ पहुचे,तो मालूम हुआ कि बादशाह सलामत "दिलकुशा" बाग में, जहा से हम शिकार मे गए थे, ठहरे हुए हमारी बाट जोह रहे हैं।

दूसरे दिन सवेरे जब हमलोग उनकी सेवा में उपस्थित हुए, तब हमने देखा कि राजनापित उनका बाल सवार रहा था। हमें देखकर बादशाह सलामत बोले कि "वाह! साहबो इस सुनसान स्थान में तुमलोगो ने हमे अच्छा अकेला छोड दिया था। हममे से एक ने निवेदन किया कि "जहापनाह तो साधारण मनुष्य की अपेक्षा बडी फुरती और वेग के साथ कूच करदेते हैं।"

बादशाह। "खैर, मुझे हर्ष है कि तुम लोग कुशलक्षेमपूर्वक आ तो गए। मैंने उन हरामी के बच्चे राजद्रोही दिहातियो के

लूट मार का सम्वाद सुना है। खा ने सारा वृत्तान्त कहा है,जरा तुमलोग भी पूरा पूरा हाल फिर बयान करो।"

जोकुछ हमने देखा था रत्ती रत्ती कह सुनाया। यह सुनकर बादशाह सलामत भाग बगूला होगए और क्रोध में हिकला हिकला कर कहने लगे, "दे देखो तो इन ह हरामियो ने मेरी बे.. बेगमात की और मेरी पोशाको को कोढ़ियल हाथो से त.. तहसनहस करने का साहस किया है। अब्बा जान के सिर की कसम, मैं उनका मटियामेट करा दूंगा।"

राजनावित। हजूर, मैंने सुना है कि नवाब वजीर के आदमियो ने उनके मुखियाओ को पकड़ लिया है और दण्ड दिलाने के लिये साथ २ पीछे लिये आते हैं।

बादशाह। "सुनो खा, उनमें से एक एक को प्राणदण्ड दिया जायगा। चाहे वेलोग सौ से भी अधिक हो,सब की जान लूंगा। जगत में कौन ऐसा है जो अब उन्हें बचा सकेगा।"

उक्त लुटेरे दुर्दशा के साथ जब दरबार में लाए गए, तब हमने उन्हे देखा, वास्तव में उनके स्वरूप बड़े भयङ्कर और डरावने थे। सचमुच वे ऐसेही थे कि उनकी गरदन उड़ा दी जाय। प्रत्येक लुटेरा चारपाई पर सुलाकर ऐसा बधा पड़ा था, जैसा कि लंडन में शराबीयो को पुलिसवाले चारपाई पर बांध कर उठाले जाते हैं। सभी के अंगो पर तलवार या छुरी के घाव लगे हुए थे, इन पर मरहम पट्टी नहीं की गई थी, वे लोग बारह आदमी थे। उनको प्राणदण्ड की आज्ञा दीगई और उसी दिन उनके सिर काट डाले गए। मैं यह नहीं कह सकता कि वे लोग मुखिया थे या नहीं। नवाब-वजीर तो

इन्हीं को मुखिया बताते थे। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि नवाब के आदमियों ने अपने सिर की बला टालने के लिए कुछ निरपराधी देहातियों को पकड़ लिया हो और अपनी कार्रवाई देखाने के लिए उनको दण्ड दिलादिया हो। हिन्दुस्तानी रियास्तों में बहुधा ऐसा हुआ करता है। क्योंकि इन देशी रियास्तों में कोई ऐसी वारदात नहीं होती, जिनमें पुलिस कुछ न कुछ निरपराधियों को पकड़ कर दण्ड न दिलाती हो और उन्हें अपराधी पूरी तरह से न साबित करा देती हो।

अवध के दरबार में सरसरी तौर से मुक़द्दमे फैसला होते हैं। लखनऊ छोड़ कर कहीं जेलखाना तक नहीं है। लखनऊ से बाहर यदि कोई चोरी में पकड़ा जाता और उसपर अपराध निश्चय रूप से साबित होजाता, किंवा उसके विरुध लोग बड़ी२ शपथ उठाते, तो वह फौरन काट डाला जाता था। यूरोप देश के अदालतों के समान मुक़द्दमे की छान पछोड़ करने की फ़ुरसत ही चकलेदारों को न मिलती थी। मेरा तो यह विश्वास है कि 'कम्पनी बहादुर' के कानून किसी देश में चाहे कैसेही अनुपयोगी हों, परन्तु अवधवासियों के लिये तो चकलेदारों की अपेक्षा 'कम्पनी बहादुर' का एक मजिष्ट्रेट सहस्रगुण अच्छा न्याय करेगा, चाहे वह उनकी बोलचाल वा उनकी भाषा से कितना ही अपरिचित क्यों न हो॥

पांचवां अध्याय।

बादशाह की उदारता।

जिस देश के ऐसे बादशाह हो और जहां की प्रजा ऐसी राजभक्त और आज्ञाकारी हो, जैसी कि हिन्दुस्तान की है,तो वहां के मुंहलगे दरबारियो के अंधाधुन्ध का क्या पूछना है। अवध के दरबार में इस राजनापित का इतना प्रभावशाली और प्रतापवान होना निस्सन्देह एक विचित्र बात थी, क्योंकि न वह नापित साहब देश-भाषा ही भली भांति जानते थे और न बादशाह सलामत ही इतनी अंगरेजी जानते थे कि अपना अभिप्राय पूरी तरह से अंगरेजी में प्रगट कर सकते।

मैं ऊपर लिख ही चुका हूं कि इस नापित साहब का बड़ा मान, और सत्कार लखनऊ में था। और विलायत की सब वस्तुएं इसी के द्वारा मंगाई वा ली जाती थीं। इसके अतिरिक्त 'पुस्तकालय' का भी यही अफसर था। मेरे सामने एकही बेर वह म सिक खर्च का चिट्ठा बादशाह के दस्तखत के लिए लाया था और उसी बेर मैंने मासिक व्यय के चिट्ठे की लम्बाई देखी थी।

दोपहर के खाने के उपरान्त जब हमलोग महल में बैठे थे, उस समय बादशाह का एक प्रियपात्र हाथ में कागज का एक पुलिन्दा लिए हुए आया। हिन्दुस्तान में यह रीति है कि यहां के लोग बही खाते या मुकद्दमे की मिसिल पुस्तकाकार नहीं रखते, किन्तु एक बड़े लम्बे कागज को लपेट कर पुलिन्दा बनाकर लिखते हैं,ज्यो ज्यो वह समाप्त होता जाता है,त्यो त्यों उसी के अन्त में दूसरा कागज जोड़ते जाते हैं।

बादशाह। "अखाह खा–यह मासिक चिट्ठा है न?"

राजनापित। "जी श्रीमान,खर्च का ही चिट्ठा है।"

बादशाह। "खेलो, देखें क्या है, कितना लम्बा है।"

बादशाह सलामत उस समय बडे आमोद में थे। राजनापित भी जैसी लहर बहर देखता वैसा बनजाता। उसने चिट्ठे का एक सिरा पकड़ कर पुलिन्दे को भूमि पर लुढका दिया, जो लुढककर कमरे के दूसरी दीवार तक खुलता चला गया– महीन कलम से बराबर रक़मे और ब्योरे लिखे हुऐ थे। बादशाह ने चिट्ठे को नापने की आज्ञा दी। गज लाकर चिट्ठा नापागया, तो ४½ गज लम्बा निकला। मैंने जो उसके जोड़ पर दृष्टी डाली तो नब्बे हजार से अधिक का हिसाब था अर्थात् ७०० पाउण्ड से ज्यादा का। बादशाह सलामत ने भी बिल का टोटल देखा।

बादशाह। "खा, अब की खर्च बहुत हुआ मालूम होता है"।

नापित। "जहांपनाह। सोने चांदी के बर्तन और नए हाथी इत्यादि जो खरीदे गए हैं, उनके दाम भी इसी में लिखे हुए हैं।"

बादशाह। (बात काटकर) "ठीक ठीक, मै समझगया– अच्छा, इसे नवाब वजीर के पास लेजाओ और उनसे कहो कि, हिसाब चुकता करदें"।

बिल पर दस्तखत होगया और हिसाब मिलगया।

इसके कई महीने बाद, बादशाह के एक अनुचर ने उनसे निवेदन किया कि "खा तो श्रीमान को दोनो हाथो से लूटता है। देखिए, कितने बडे बडे चिट्ठे लिखकर लाता है"।

बादशाह (रुष्ट होकर घृणा के साथ) "यदि मैं खा को

धनवान बना देना चाहता हू, तो तुम्हारा क्यो पेट फूलता है? मैं भी जानता हूं कि उसका हिसाब बहुत लम्बा चौड़ा होता है। मेरी यही इच्छा है कि वह अवश्य धनाढ्य बने।"

बादशाह सलामत का अति स्नेहपात्र केवल एक राज नापित ही न था, बीच २ में कई एक और भी होजाते थे। दो उदाहरण मुझे इस समय याद हैं, जिसमें वेलोग इतने बड़े और उनपर बादशाह की इतनी असीम कृपादृष्टि हुई कि उसका अतिक्रम होगया। पूर्वीय बादशाहो में तो बहुव्ययी का दोष घुट्टी में ही पड़ा रहता है।

इसके एक उदाहरण में एक काश्मीरी गायिका ही थी। वह बहुत सुन्दर और रूपवती थी। इसके विशाल नेत्र और सुडौल अङ्ग ऐसे थे कि क्या उपमा दीजाय। उसपर हिन्दुस्तानी कपड़े बहुतही सजते थे। इसमें सन्देह नहीं कि अन्य देश के कपड़ो से हिन्दुस्तानी पोशाक में अङ्ग का सुडौलपन अधिक जचता है। इङ्गलिस्तान की स्त्रियां कपड़े बाजार से खरीद कर पहिनती हैं, परन्तु हिन्दुस्तान की स्त्रियां अपने अङ्ग के नापके अनुसार सी सिला कर पहिनती है। एक तो उनके सर्वाङ्ग ही का सौन्दर्य्य क्या कम होता है और फिर उसपर चुस्त हिन्दुस्तानी कपड़े होने में सुगन्ध होजाते हैं।

इस कश्मीरिन गानेवाली का नाम "नन्हीं" था। इसकी सुन्दरता और रङ्गरूप देखकर बादशाह और भी ज्यादा इस कारण प्रसन्न थे कि जो आदमी इसे लाहौर से लाया था, उसने इसकी इतनी प्रशंसा नहीं की थी, जितनी कि यह वास्तव में रूपवती थी। इसके गले में एक अद्भुत लोच था। इसके सारे

में ऐसी 'खटक' थी कि जब उसने अपने देश अर्थात् काश्मीर की उपमा का एक गीत गाया, बस सारी सभा मोहित होगई। इसकी जादू भरी आखो में कुछ लज्जा भी थी और कुछ नैराश भी था। अल्हड़पने और स्वाभाविक आनबान के कारण इसमें ऐसी लावण्यता आगई थी कि जिसका आनन्द देखने ही पर निर्भर था।

यद्यपि उस दिन यह साधारण रण्डी के समान ही दरबार मे नाचने गाने आई थी। चाहे आप इसे भाग्यवान कहिये वा अभाग्यवान। उसके लोचदार गाने और मधुर स्वरो ने दूसरे गाने वालियो का रङ्ग फीका कर दिया, इसके आगे दूसरे तमाशे जमेही नहीं, समस्त सभा का ध्यान उसी की ओर था। बादशाह सलामत भी उसका स्वरूप और हावभाव को निरखते और गाना सुनते थे, और इतने प्रसन्न हो रहे थे कि उसकी प्रशंसा तक करते जाते थे। बादशाह को प्रसन्न देखकर और उनके श्रीमुख से प्रशंसा सुनकर नन्ही खिली जाती थी, मारे खुशी के उसका कलेजा बासो उछलता हुआ दिखाई देता था, उल्लास के कारण आखो से तेज निकल रहा था और वह भी कठिनता से अपने जी को सम्हाले हुई थी। इधर बादशाह सलामत के मुह से "शाबाश, शाबाश" की ध्वनी निकलती, उधर खुशी और आत्मश्लाघा के कारण उसके गालो पर एक रङ्ग आता और एक जाता था। श्रेष्ट पाठको, कहीं बिचारी 'नन्ही' की अवस्था पर हँसियेगा नही। क्योकि बादशाह स्वयं उसकी प्रशंसा कर रहे थे और उसपर रीझ रहे थे और इन बादशाह की छ बेगमो मे से दो बेगमें ऐसी थीं, जिनकी अवस्था पहिले नन्ही से भी

पट कर थी। हिन्दुस्तान में ऐसीही कई रंडियों के पेट से जन्मे राजपुत्र यहां के राजगद्दी के मालिक हुए हैं।

'नन्ही' यदि मारे हर्ष के फूली नहीं समाती है, तो उस पर हँसना न चाहिये। थोड़ी देर तक मैं यही समझता रहा कि मनोद्वेग उसे लेही डालेगा, मुझे डर था कि इस घबरावे से कहीं उसके हाथ पैर न फूल जाय, पर नहीं उसने शीघ्रही अपने को सम्हाल लिया। मजलिस में सभी लोग उसकी ओर टकटकी बांधे देख रहे थे। ज्योंही उसने अपना चित्त स्थिर कर लिया, यह और भी जी लगा कर नाचने गाने लगी। अन्त में बाद‍शाह ने प्रसन्न होकर कहा, "आज के मुजरे का इनाम एक हजार रुपया तुम्हें मिलेगा"।

ओफ ओ! एक हजार रुपया (अर्थात एक सौ पाउण्ड) एक गरीब कश्मीरी रण्डी के लिए!! *

जब बादशाह सलामत उठ कर हरम में जाने लगे, तब नन्हीं के सिवाय और किसी का सहारा लेना उन्होंने पसन्द ही नहीं किया, इसी के कांधे पर सिर रक्खे बादशाह अन्तःपुर को सिधारे, इस समय नन्ही के मुखड़े का रङ्ग मारे हर्ष और लज्जा के जल्द २ बदल रहा था। बादशाह का एक रण्डी को अन्तःपुर में ले जाना अनुचित था, क्योंकि हिन्दुस्तान में इस बात को लोग दूषित समझते हैं। परन्तु हमारे अलबेले बाद‍शाह सलामत इन बातों को कुछ भी नहीं मानते थे, जो उनके तरङ्ग और लहरबहर में बाधक होतीं।

* भई, तुम्हारा पेट क्यों फूला? 'दासी दान करे, भण्डारी ॥ पेट फूले'।

दूसरी रात को 'नन्ही' के सिवाय दूसरे का नाच गाना हुआही नहीं। आज इसका बनाव चुनाव और शृङ्गार पठार बहुतही मनोरञ्जक था, मणिजटित आभूषण उसके हाथ और कलाई पर दमक रहे थे और मारे हर्ष के उसका गुलाबी मुखड़ा दिपदिप हो रहा था।

दूसरे दिन बादशाह ने आज्ञा दी, कि "आज इसे दो हजार रुपये इनाम दिए जाएं"। आज फिर बादशाह उसीके कांधे पर सिर रक्खे अन्तःपुर में गए। कई दिन तक उनका यही ढङ्ग रहा। बादशाह की उदारता की सीमा न रही। अब तो सारा दर्बार नन्ही जान के आगे सिर झुकाने लगा। बादशाह की बेगमात भी उससे ऐसी मिलजुल गईं कि उसके कसबी होने को भूल गईं, सच है,"जिसे पिया चाहे वही सुहागिन।" शाही खवासों ने भी, जिन्होंने पहले दिन उसे रण्डी समझ कर तुच्छ समझ रक्खा था, धीरे २ अपना व्यवहार बदल डाला। पहले वे नम्रता से मिलने लगीं, फिर आदर सत्कार करने लगीं और अन्त में सेवा शुश्रुषा करने और पङ्खही तक हिलाने लगीं।

एक दिन बादशाह सलामत नशे की तरङ्ग में नन्हीजान से कहने लगे कि "मैं तेरे लिये सोने की ईंटों का महल बनवा दूंगा, किसी न किसी दिन तुम मेरी "बादशाह बेगम" बन जावेगी। मानो नन्ही जान का भाग्य पूर्ण रूप से उदय हो रहा था।

किसी त्यौहार के कारण एक सप्ताह तक बादशाह सलामत के साथ भोजन करने का सौभाग्य हमलोगों को प्राप्त नहीं हुआ, इस सात दिन में हमने नन्ही जान की झलक तक न देखी।

जब त्योहार बीत गया, तब हमने फिर उसे दरबार में देखा, वह उसी हाव भाव और कटाक्ष के साथ नाच और गा रही थी और सभा को लुभा रही थी।

थोड़ी देर में बादशाह उसका नाच देखते२ अङ्गडाई लेकर बोले, "बाप रे बाप, अब तो इसका गाना अजीरन होगया, आज क्या और कोई तमाशा नहीं है? हां, अच्छा, आज बटेर ही की लड़ाई हो।"

यह सुन कर राजनापित बटेर लाने चला गया और बादशाह मनामत बैठे 'नन्हीं जान' को विरक्त-भाव से घूर२ कर ताकने लगे और मास्टरजी से, जो उनके निकटही बैठे थे, कहने लगे कि "यदि इसे मेम के कपड़े पहिनाए जाएं, तो यह कैसी लगे"? किसी ने इसका उत्तर कुछ न दिया, इतने में नापित साहब आगए, बादशाह ने फिर यही बात उससे कही, उसने कहा कि "जहांपनाह, यह कौन बड़ी बात है, अभी कपड़े मङ्गाये जाते हैं, हुजूर पहनवाकर देखही लें।"

नापित की मेम थी, उसने झटपट एक आदमी को कपड़े लाने के लिये घर भेज दिया और जब कपड़े आगए, तब नन्हीं जान से कहा गया कि वे जाकर उन कपड़ों को पहिन आवें।

बटेर आगए थे—मेज पर जोड़ लड़ने लगी।

बिचारी नन्ही भी नये ढङ्ग के कपड़े पहिन कर दरबार में आगई। वे कपड़े उसपर ज़रा भी फबते न थे, वे ढीलेढाले कपड़े थे। उसे लाछूरेजी कपड़े क्या पहिनाये गए कि वह पूरी सबाग बन गई थी।

वह स्वयं जानती थी कि इस हास्यास्पद और बेढंगे

जोड़े में वह कैसी कुरूपा जचती होगी। उसकी सारी शोभा जाती रही। उसके सौन्दर्य्य पर पानी फिर गया था। जब वह उदास मुह लटकाये आकर दरबार में बैठी, तो उसकी सूरत देखकर करुणा आती थी।

उसकी इस दशा को देखकर बादशाह और नापित खूब जी खोल के हँस पड़े, उस समय बिचारी नन्ही के गालो पर आंसू ढलकने लगे। खवासिनो को तनिक भी इसपर तरस न आया, किन्तु उसकी दुर्दशा पर मुह फेर कर हँसी उड़ाने लगी और दबी जबान से कहने लगी, 'ले चुड़ैल, अच्छा हुआ और ले।'

कई दिन क्या कई सप्ताह तक बिचारी 'नन्ही' इसीप्रकार आती रही और उसका उपहास होता रहा, क्योंकि दूसरे कपड़े पहिन कर आने की बादशाह सलामत आज्ञा ही नहीं देते थे। उसकी आनबान सब जाती रही थी, उसकी लावण्यता मट्टी मे मिलगई, अब तो वह बड़ी बुरी मालूम देती थी। उसने कई बेर कश्मीर लैाट जाने की आज्ञा मागी, पर न मिली। राजनापित से भी बहुत कुछ सिफारिश करवाई, पर एक भी न चली। बादशाह का हृदय क्या था मानो पत्थर था।

इन्हीं दिनो में मुहर्रम आगया। इन चालिस दिन में कभी२ सवेरे के दरबार में बादशाह सलामत के दर्शन होजाते, फिर नहीं। मुहर्रम में नाच गाना, खेल कूद, सब बन्द थे, क्योंकि बादशाह ने राजगद्दी पर बैठने के पहले यह मन्नत मानी थी कि यदि उन्हे राजगद्दी मिली, तो दस ही दिन नहीं (अर्थात् अशरा तक नहीं) किन्तु चालीसवा (अर्थात् अर्बईन) तक शोक (अज्जादारी) मनायेंगे। इस मनैाती को वह पूरी

तरह निबाहते रहे।

मुहर्रम आजाने से बिचारी 'नन्ही' का कहीं पता ही न था। इसके बाद वह फिर दरबार में दिखाई न पड़ी, ईश्वर जाने वह कहां गई, क्या हुई–राजनापित को भी उसका पता न था, किंवा वह बहाना करता हो। उसका अनुमान था कि किसी बेगम की सेवा में देदी गई होगी और अब वह अन्तःपुर ही में रहती होगी, परन्तु एक 'खोजे' से मालूम हुआ कि महल में भी वह नहीं है। एक बेर बादशाह सलामत के साम्हने बात चीत में उसका नाम भी लिया गया, परन्तु उन्हों ने उस ओर कान ही न दिया।

अब दूसरा उदाहरण भी सुन लीजिए, हमलोगों को जितनी नन्ही के विषय में सहानुभूति थी, उतनी इसमें नहीं हुई एक बेर बादशाह की सवारी रमने की सड़क से बादशाह के बा[illegible] को जारही थी जहां पशुयुद्ध कराया जाता था। बादशाह खुली गाड़ी (फिटन) पर अंगरेजी कपड़े पहिने जारहे थे, उनका आइरिश कोचवान कोचबक्स पर बैठा सुकरई रंग के सुन्दर सुन्दर अरबी घोड़ों की चौकड़ी हांक रहा था। वह दिन बड़ा सोहावना था, इसलिए बादशाह ने हुकुम दिया कि सवारी कदम् कदम् चले, जिसमें सब्जी हवा खाते और सैर देखते चलें, क्योंकि वह दिसम्बर का महीना था, मन्द और शीतल पवन चल रही थी, धूप कड़ी न थी।

गाड़ी के पीछे पीछे हमलोग घोड़ों पर सवार साथ साथ जारहे थे और बाडीगार्ड का रिसाला हमारे पीछे था। कोचवा[न] [illegible] हम में से कोई हाथ में टोपी लेकर गाड़ी के बराबर आता

और बादशाह से दो चार बातें कर लेता। हमलोगों का नियम था कि जब हम बादशाह से कुछ निवेदन करते, तब टोपी उतार लेते थे। जिस वक्त की बात को हम वर्णन करना चाहते हैं, उस समय मास्टरजी, गाडी के बराबर घोड़ा दौड़ाते बादशाह से बातचीत करते, चले जा रहे थे। इतने में सड़क के एक किनारे से एक लम्बे कद का हट्टा कट्टा आदमी सामने आके उचक २ कर नाचने और गाने लगा। बादशाह सलामत उसके जङ्गली-पन को देखने लगे। एक दो सवार आकर उसे हटाने लगे, परन्तु बादशाह ने उन्हें रोक दिया और गाडी ठहरवा कर वे उसका गाना सुनने लगे। इस समय यही तरङ्ग आगई थी, नहीं तो अन्य अवसर पर सवारों की मार धाड़ देखकर वे हँसने लगते।

इस जङ्गली आदमी का नाम 'पीरू' था, जिसपर बादशाह सलामत की इतनी कृपादृष्टि होगई। वह थिरक २ कर नाच रहा था और अपनाही बनाया गीत गा रहा था, जिसमें कुछ पद बादशाह की प्रशंसा के थे। सारा रिसाला खड़ा था। बादशाह ने ठहर कर उसका सारा गीत सुना और वे बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने चोबदार को आज्ञा दी कि ५ मोहरें उसे दीजायँ।

चलती समय कहते गए कि "तुम्हारा गाना कल महल में फिर भी सुनेंगे।" पीरू ने निवेदन किया कि जहांपनाह की कृपादृष्टि गुलाम पर वैसीही बनी रहे, जैसे कि खजूर के पेड़ पर सूर्य्य की किरणें पड़ती हैं।

'पीरू' भी अपने तरङ्ग का एक निराला कवि था। पुराने कवियों के विरुद्ध यह मुहफट और निर्लज्ज था। दूसरे दिन यह दरबार में आया और एक नया पद गाने लगा, परन्तु बादशाह

ने वही गीत गाने को कहा (जो उसने पहिले दिन गाया था)। अब तो वह रोज दरबार में हाजिर होता और वही अलाप अलापता। बादशाह भी रोज उसका गाना सुनते और प्रसन्न होते। अब तो इनाम की उसपर भरमार होने लगी और अब वह भी लखनऊ के बड़ेबड़े लोगों में गिना जाने लगा। एक महीना भी पूरा नहीं हुआ था कि बादशाह की उसपर विशेष कृपा देखकर, नवाब वजीर ने भी उसे कुछ पारितोषिक दिया, उनकी देखा देखी, कप्तानियर साहब राजा बख्तावरसिंह अफसर पुलिस ने भी दिया। अब क्या था चारों ओर से 'पीरू' पर हुन बरसने लगा। यही जान पड़ता था कि एक न एक दिन यह भी लखनऊ के उमराओं के बराबर होजायगा, इसलिये लोग कुछ कुछ डर उसको सलाम करने लगे। पाठक लोग सोचते होंगे कि इसकी यह अवस्था थोड़ेही दिन रही होगी, पर यह बात न थी। उसकी यह उत्तम दशा बहुत दिनों तक ऐसीही बनी बनी रही। पीरू के लिये महल में कमरे भी बनवा दिये गये। पहिले जिसके तन पर साबित लत्ता तक न था, अब वह बादले और तनजेब पहिनने लगा। नवाब वजीर, कप्तानियर साहब और राजा बख्तावरसिंह जो दरबार की नाक थे, उनको भी घर का सम्मान देकर मिलते और बातचीत करते थे और पीरू भी भड़कीले और उत्तम वस्त्र धारण करने लगा। भला देखिये कभी कभी ऐसा भी हुआ है, जिसका इतना सम्मान हुआ है।

कुछ दिनों तो पीरू का गाना रोज होता था, फिर आठवें आठवें दिन होने लगा, तदुपरान्त महीनवें दिन और फिर कभी कदाच वह दरबार में जाता था, तो भी बादशाह की

दृष्टि उसपर वैसीही बनी रही। उस दिन से,जबकि वह सड़क के किनारे से निकल कर जङ्गलियो के सदृश बादशाह के सामने आकर नाचा और सवार लोग उसे जानवर की तरह हटाने के लिये टूट पड़े थे, लगभग अठारह महीने तक, अर्थात् जब तक मैं लखनऊ मे रहा, पीरू उसी प्रकार लखनऊ के उमरा मे गिना जाता रहा। इस समय मुझे याद नही आता कि उसे क्या खिताब मिला था, परन्तु इतना याद आता है कि उसके नाम के आगे 'सिह' का खिताब तो अवश्य था। पीछे 'राजा' का खिताब भी मिल गया था,क्योकि पीरू जात का हिन्दू था। हिन्दुस्थानी रियासतो में 'राजा' और 'सिह' हिन्दुओ को खिताब मिलता है और 'नवाब' और 'अमीर' मुसलमानो को।

बादशाह सलामत की कृपा दृष्टि की लहर का वर्णन जो ऊपर किया गया है, उसीके साथ मै अपने एक मित्र का भी वर्णन कर देना उचित समझता हू,जो कलकत्ते से मेरे पास लखनऊ आये थे और अब वह मिडलसेक्स के शरीफ है, क्योकि उनपर बादशाह सलामत की विशेष कृपा होगई थी।

मुझे लखनऊ में आये कुछही महीने हुए थे कि मेरे उक्त मित्र ने इलाहाबाद से एक पत्र मुझेलिखा कि अब मैं इङ्गलिस्तान जाने वाला हू, इसलिये इच्छा है कि इन देशो की सैर करता जाऊ। उनका तात्पर्य्य यह था कि यदि वह लखनऊ आवें, तो क्या उन्हे जानवरो की लड़ाई, लखनऊ का राजदरबार, अथवा लखनऊ की उन चीजो के देखने का अवसर मिलेगा, जो अनूठी और देखने योग्य हैं।

यह मेरे बहुत बड़े मित्र थे, इन्होने कलकत्ते में रहकर

व्यापार में बहुत कुछ धन उपार्जन कर लिया था। मैं भी इन्हे अपनी मैत्री दिखाना चाहता था, क्योंकि जगत में सनातन से यह्म या चली आई है कि धनवान की शुश्रुषा और उनके प्रसन्न करने की लालसा सबको होती है। मैंने उनको लिखा कि आप खुशी से आवें। शाही शेर, पशुालय इत्यादि की सैर करा दूंगा, इससे अधिक का वचन नहीं देता। यह लिख कर पत्र तो मैंने उन्हें भेज दिया, अब उनको उक्त चीजें दिखाने की तजवीज सोचने लगा। एक दिन अपने उन मित्रवर्गों से जिनका दरबार से सम्बन्ध था, इसके विषय में सलाह पूछी, उन्होंने कहा कि यदि राजनापित चाहे तो जानवरों की लड़ाई या कम से कम हाथियों की लड़ाई की आज्ञा बादशाह से सहजही में ले सकता है। उद्योग करना चाहिये, इसमें कोई हानि नहीं है।

विदित रहे कि राजनापित के घर पर बादशाह सलामत ने हमलोगों के जी बहलाव के लिए एक बिलियर्ड टेबुल (अटा) रखवा दिया था, वहा हमलोग प्राय खेलने जाया करते थे। नित्य दोपहर के समय दो एक व्यक्ति वहां बैठेही रहते थे। जब मैं वहां गया, तो देखा कि फलान साहब के साथ राजनापित खाटा खेल रहा है।

मैंने उससे कहा कि "मेरे एक परम मित्र इलाहाबाद लखनऊ की सैर करने आते हैं। मैं समझता हू कि पशुाग देखने की आज्ञा तो उन्हें मिलही जायगी।"

राजनापित। "हां, हा, मैं एक चोबदार साथ कर दूं यह सब दिखला लायेगा।"

पशुागार और बाग इत्यादि का राजनापित ही मनेजर

इसलिये उसके चोबदार के साथ रहने से सब चीजें देखने में आ-जातीं। खेल बराबर हो रहा था और मैं भी खड़ा देख रहा था। बीच में छेड़ कर फिर मैंने पूछा कि "हाथियो की लड़ाई देखने का अवसर तो कदाचित न मिलेगा?"

राजनापित। (कप्तान साहब से) 'वाह जी, क्यानन और पाकेट* दोनो जीते, खूब।' (फिर मुझसे उसने कहा) "मैं तो समझता हू कि इन दिनो कोई हाथी मस्त नही है।" फिर कुछ देर सोच कर,'तुम्हारे मित्र कौन है,क्या वह व्यापारी हैं? क्या मेरे लिये वह कुछ कम्पनी के कागज (नोट) खरीद देगी?

मैं। "वह बड़े भारी व्यापारी हैं। कलकत्ते में उनकी बड़ी भारी कोठी है, तुमने आर० बी० कम्पनी के मालिक मिस्टर आर० का नाम सुना होगा। वे बड़े धनवान है। मुझे विश्वास है कि मेरे अनुरोध से वे आपका काम कर देंगे"।

नापित। 'बस ठीक है। मैं जानवरो की लड़ाई का ठीक ठाक कर दूगा। यदि कोई मस्त हाथी न होगा न सही,शेर या गैंडे तो हैं। अच्छा तुम मेरी ओर से गिनते जाना। अरे, फिर लाल गेंद को मार दिया, कप्तान साहब! बाजी तो हरगई। अच्छा ५० रूपये का मैं देनदार रहा।"

इसके बाद मैं खुशी खुशी घर चला आया। दूसरे दिन मेरे मित्र आगए। इसलिये जानवरो की लड़ाई के बारे में सुन गुन लेने मैं दरबार में गया। वहा क्या देखता हू कि नापित बैठा बादशाह का बाल सवार रहा है और कुछ बातें भी करता जाता है। इधर उधर की बातें करके नापित बोल उठा।

* बिलियर्ड के खेल में बाजी विशेष का नाम।

'बहुत दिनो से जहांपनाह ने जानवरो की लड़ाई नहीं देखी।"

बादशाह। "अजी! देखते २ जी उक्ता गया। देखने को जी ही नहीं करता। मेरी समझ में तो आजकल कोई हाथी भी मस्त न होगा"।

नापित।"गरीब परवर! आजही सवेरे मुझे खबर मिली है कि दो तीन हाथी मस्त होगए हैं"।

बादशाह। 'क्या तुम हाथियो की लड़ाई देखा चाहते हो?'

नापित। "जैसी श्रीमान की इच्छा। आजकल कलकत्ते के एक बड़े धनी महाजन और व्योपारी मि० आर० यहां आए हुए हैं,वह दिल्ली और आगरे की भी सैर करेंगे, मैं चाहता हूं कि वह लखनऊ की ऐसी महिमा देखते जाय, जो उनके चित्त में सदा जाग्रत रहे"।

बादशाह। "अवश्य अवश्य, मेरी समझ में तो कलकत्ते और इङ्गलिस्तान के बहुत से काम तुम उनसे निकाल सकते हो, क्यों खां"?

नापित। "हुजूर की भी क्या बात है–इधर तान बाजी, उधर राग बूझा"।

अब यह निश्चय होगया कि कल ९ बजे सवेरे ही बादशाह के मैदान में जानवरो की लड़ाई होगी। मैं तो अपने मित्र को यह सुसम्वाद सुनाने के लिए घर लौट गया। मैंने उनसे कहा कि 'आप राजनापित से जरा शिष्टाचार से मिलियेगा, क्योंकि उन्हो ने उद्योग करके आपके लिए यह काम किया है'। उन्होंने कहा, "भला कौन ऐसा है जो उनसे आदर पूर्वक न मिलेगा एक तो वह बादशाह सलामत के नाक के बाल है और दूस

फिर रईस हैं। फिर मैं क्यों न नम्रता पूर्वक उनसे मिलूगा" मिस्टर आर० मे स्वाभाविक ही ऐसे गुण वर्त्तमान थे, जो एक राज्यसभासद मे होने चाहिए।

ठीक समय पर चोबदार आगया और हमलोग लखनऊ के महलात को देखने के लिए चलपड़े। इनके विषय में आगे चलकर कुछ लिखा जायगा और शेरों, चीतो का तो बहुत कुछ वृत्तान्त आगे आवेगा, इसलिए इनका विषय छेड़ कर इस कथा को बीच में नही काटा चाहता। इस चोबदार के साथ रहने से कहीं भी रोक टोक न हुई, उसके हाथ में बल्लम क्या था, मानो जादू की छड़ी थी, जिसके सामने सब फाटक खुलते चले जाते थे, महल, दफ्तर, पश्वागार, तोपखाना, मेघजीन, इमामबाड़ा (जिसे बिशप पादड़ी हेवर साहब ने मुसलमानो का देवालय लिखा है), मसजिदें, मारटीन साहब की कोठी, सभी जगह हमलोग बे रोक टोक चले जाते थे।

दूसरे दिन सवेरे ही हमलोग बादशाह हाथियो की लड़ाई देखने चलदिए। यह स्थान गोमती पार लखनऊ से तीन मील दूरी पर है, वहा एक छोटी सी दो मजली कोठी बनी हुई है, जिसके चारो ओर ऊची दीवारे घिरी हुई है। वहा पहुच कर मैंने अपने मित्र को नीचेही एक दूसरे चोबदार के साथ कर दिया, जिसमें वह उसके साथ नीचेही बैठकर अच्छी तरह से तमाशा देखें। मैं उनके साथ नहीं ठहर सकता था, क्योकि मुझे ऊपर की कोठी में जाना आवश्यक था, जहा कि बादशाह सलामत बिराजमान होने वाले थे।

बादशाह की सवारी के डंके की आवाज सुनकर मैंने अपने

मित्र को नीचेही छोड़ दिया और ऊपर चलागया। (बादशाह अथवा बादशाह-बेगम के सिवाय और किसी के सवारी में डंका नहीं बजता,अवध में यही बादशाही निशान माना जाता था)।

इतने में बादशाह सलामत भी पधारे और उनके लिये जो मसनद गद्दी वहा लगी थी उसपर बैठ गए और मोरछल करने वालियां नियमानुसार कतार से पीछे खड़ी होगईं। हमलोग खड़े थे,कोई तो कटहरे के सहारे और कोई बादशाही तख्त पर हाथ धरे।

बादशाह ने पूछा, "क्या कलकत्ते वाले मिस्टर आर तुम्हारे ही यहां ठहरे हैं।"

मैं। "जी हां, जहांपनाह।"

बादशाह। "फिर वह कहां है?"

मैं। "श्रीमान! नीचे ऐसी जगह बैठे हैं,जहां से वे तमाशा अच्छी तरह देख सकते हैं।"

बादशाह। "तुम उन्हें यहां क्यों न लेआये।"

मैं। "मैं नहीं जानता था कि उन्हें यहां लाने की आज्ञा है।"

बादशाह। "वाह वाह,भली कही,जाओ जाओ,उन्हें यहीं लेआओ। यहां से भला क्या दिखाई देगा।"

यदि मैं उन्हें बिना आज्ञा यहां लेगया होता, तो वह अवश्य यहां से हटा दिए जाते। राजाज्ञा पाकर मैं शीघ्रही उन्हें लाने को चला गया और जाकर मैंने उनसे कहा, "बादशाह सलामत ने तुम्हें ऊपर बुलाया है।"

मित्र। "बादशाह के इस अनुग्रह का मैं बहुत२ धन्यवाद

देता हूं। मैं यही रहना अच्छा समझता हूं"।

मैं। "नहीं नहीं, तुम्हें अवश्य चलना होगा। नहीं तो अपमान समझा जायगा"।

मित्र। "बहुत लोग ऐसे भी भाग्यशाली होते है,जिनको सत्कार बेमांगेही मिलता है।" यह कहते हुए वह जल्दी २ सीढ़िया चढ़ने लगा।

मैं। "ठहरो २,इतना वतावलापन क्यो करते हो। बादशाह के सामने खाली हाथ नहीं जाना चाहिये। भेंट देने को कुछ मोहरे तो लेलो"।

मित्र। "मैं भेंटवेंट न दूगा। क्या! बादशाह के दर्शनमात्र ही के लिये मैं अपनी मोहर गवाऊं। क्या खूब, यह तो मुझ से न होगा"।

मैंने उन्हें समझाया कि यह केवल दरबार के नियम मात्र हैं। बादशाह सलामत केवल उस पर हाथ लगा देंगे, फिर तुम अपनी मोहरें अपने जेब में रख लेना। मैंने झट पट कहीं से अशर्फिया उधार मँगा कर उन्हे दी। तब मेरे मित्र हाथ पर सफेद रूमाल और उस पर मोहरें रक्खे हुए बादशाह के सामने आये और निकट जाकर भेंट लिये खड़े रहे। बादशाह सलामत थोड़ी देर तो उन्हें खूब निरख २ कर देखते रहे,फिर उन्होंने अपना हाथ नीचे रखकर दूसरे हाथ की उँगलियो से अशर्फियो को स्पर्श करलिया। यह तो उनके (मेरे मित्र) लिये बड़े सम्मान की बात थी और उन्हे इसपर प्रसन्न होकर गौरव करना चाहिये था, पर वह तो बौखला से गए। इसका कारण उन्होने पीछे मुझ से कहा,कि जब बादशाह ने मोहरो की ओर हाथ बढ़ाया,तब

मैं समझा कि बादशाह मोहरें ले लेना चाहते हैं। मैं इस डर से कि कहीं वे अशर्फियां ले न लें, मुठी बन्द करनेही को था,* कि इतने ही में उन्होंने अपना हाथ खींच लिया और जब मैंने अशर्फियां अपने जेब मे डाल लीं, तब जाकर चित्त सावधान हुआ, क्योंकि हिन्दुस्तानियों का क्या विश्वास'।

इशारा किया गया और हाथी एक दूसरे पर टूट पड़े। यह एक साधारण लड़ाई थी, इस लड़ाई में कोई विशेषता न थी। साराश यह कि एक हाथी ने दूसरे को हरा कर भगा दिया। मेरे मित्र बड़े अचम्भे के साथ देख रहे थे और खुश हो रहे थे। बादशाह भी उनके चमत्कृत्य होने से प्रसन्नवदन थे। लड़ाई समाप्त होने से पहिलेही बादशाह सलामत उन पर ऐसे मोहित होगए थे कि उनको अपने बगल में मसनद पर बैठने को कहा। परन्तु मिस्टर आर० हम सब लोगो को खड़ा देखकर कुछ हिचकिचाये और बैठ जाना अनुचित जान कर बोले कि "मैं आनन्द से खड़ा हूं"। भला इससे बढ़ कर उजड्डपन और क्या हो सकता है। बादशाह तो उनका सम्मान कर रहे हैं और वे आज्ञापालन नहीं करते। कोई दूसरा अवसर होता तो बादशाह को क्रोध आजाता और उसी दम उन्हें गरदनियां दिलवा कर निकलवा देते। पर कुशल यह हुई कि इस समय बादशाह आमोद में थे, उनके इस गवारपन और बेतुकेपन पर वे हँस पड़े और बैठने के लिये उन्होंने फिर कहा। बादशाह

---

* आखिर अज्ञानी और ओछापन कहां जाय। समझा देने पर भी ऐसे चार मोहरों की हानी लग रहा है, "जिसाई बुद्धि उनकी भाषा कहीं टहर सकती है"। उदारता हिन्दुस्तानियोंही के हिस्से में है।

के कुअवसर हँसने से वह समझ गए कि कोई अनुचित बात उन्होंने की है, इसलिये घबरा कर उन्होंने मेरी ओर देखा। मैंने इशारा किया कि बैठ जाओ। तब वह सिंहासन की झगर पर बैठ गए। झगर पर बैठने से उन्हें कष्ट हो रहा था। अब चँवर-वालिया बादशाह और उनके पाहुन दोनों पर मोरछल करने लगीं। दरबार का यही नियम था।

निदान लड़ाई समाप्त हुई और लोग अपने २ हाथियों के पास चले गए। मैं बादशाह के साथ उनके पीछे २ उनको गाड़ी पर सवार कराने गया। गाड़ी पर चढ़ती समय बादशाह ने मुझसे कहा कि "आज मै अकेले ही खाना खाऊंगा, तुम अपने मित्र को साथ लेकर आना।"

जब मैं और मिस्टर आर० हाथी पर चढ़ चुके, तब मैंने अपने मित्र से कहा कि "मित्र तुम बड़े भाग्यवान हो। आज तुमको बादशाह सलामत के साथ भोजन करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।"

मित्र। "यह तो बुरी सुनाई। इससे तो मैं अकेलेही या तुम्हारे साथ भोजन करना भला समझता हूं।"

मैं। "ऐसा नहीं हो सकता। तुम पर तो बादशाह की कृपा दृष्टि है। तुमको तो अपना भाग्य सराहना चाहिये। अपने पास बैठला कर उन्होंने तुम्हारा बड़ाही सत्कार किया और तुम ऐसा कहते हो"।

मित्र। "मैं ऐसी इज्जत से बाज आया। सत्कार-पूर्वक उस मसनद के बाढ़दार झगर पर बैठने से खड़े रहना हजार गुना सुखदायक है।"

प्रत्यक्ष में यद्यपि वह नाहीं नुकर करते थे, परन्तु चित्त में बड़े गदगद हो रहे थे कि बादशाह की उनपर विशेष कृपादृष्टि है। 'मन भावे मुड़िया हिलावे' का मामला था। सारांश यह कि उन्होंने बादशाह का निमंत्रण शीघ्रही मान लिया। मालूम देता था कि उनको विश्वास होता जाता है कि व्यापारी बनने की अपेक्षा दरबारी बन कर रहना, उनकी सहजात इच्छा है, इसलिये निमन्त्रण में खूबही बन ठन कर गए।

जब हमलोग बादशाह के पीछे २ खाने के कमरे में गए, तब उन्होंने अपने नए मित्र को अपने बगल में बैठने की जगह देनी चाही और मास्टरजी से कहा कि आप मिस्टर ब्रा० को मेरे पासही बैठने की जगह कर दें। उनके लिये कुरसी बिछा दीगई। यह उनका और भी सम्मान किया गया। और वह कुरसी पर बादशाह के बगल में इस प्रकार से बैठे, मानो उनका सारा जीवन बादशाहों के साथ ही बैठने में व्यतीत हुआ है। अब तो उनका इतना जी खुल गया था कि जो जो सत्कार उनका किया गया, उसे वह बड़े हर्ष और धैर्य पूर्वक स्वीकार करने लगे।

जब शराब की बोतलें खुलने लगीं। बादशाह का चि[illegible] खिलने और आनन्द में आने लगा। तब वे अपने नए मित्र [illegible] बोले, "मेरे एक बड़े जिगरी दोस्त आजकल लण्डन में हैं, तु[illegible] वहाँ जाते हो न ?"

विदित रहे कि यह 'जिगरी दोस्त' एक अंग्रेज थे, [illegible] पहिले अवध में रेजिडट रह चुके थे और बादशाह से उन[illegible] गहरी मित्रता होगई थी। उनका जो नाम हो, पर मैं उन[illegible]

स्मिथ करके लिखता हूं। स्मिथ साहब की मेम बड़ी सुन्दरी थी। सुनने में आता है कि बादशाह सलामत की उक्त मेम से बड़ी प्रीति थी। मेरे लखनऊमे आने से पहिले की यह बात है। अतएव जो कुछ कि लोगो से सुना है वही लिख रहा हूं। लोगों में यह भी प्रसिद्ध है कि मि० स्मिथ जब लखनऊ से गए, तब उनके पास पचत्तर लाख रुपये (अर्थात ७५०००० पाउण्ड) थे। इन रुपयो से उन्होंने इतने कम्पनी के कागज खरीदे कि अन्त में कम्पनी की ओर से इस बात की पूछ गीछ हुई और बङ्गाल की गवर्मेंएट ने इसका अनुसन्धान गुप्त रीति से किया, जिसका फल यह हुआ कि मि० स्मिथ इस्तेफा देकर लण्डन चल दिये।

बादशाह ने फिर कहा, 'मेरे एक परम मित्र इङ्गलिस्तान में इन दिनो बिराजमान हैं। तुम भी वहीं जाते हो न'। कुछ तो मानसिक प्रेमभाव और कुछ मद्यपान के कारण से बादशाह की आवाज प्रेम रस से भरी हुई थी।

मि० आर०। 'वह कौन साहब हैं जिनको श्रीमान के कृपा पात्र होने का सैाभाग्य प्राप्त है।'

बादशाह। 'वाह वाह, अजी वही मिस्टर स्मिथ, जो पहिले यहा रेजीडेंट रह चुके हैं।'

मि० आर०। 'मि० स्मिथ, मि० स्मिथ। मैं उन्हें खूब जानता हूं, उनका एजंट भी रह चुका हूं'।

बादशाह। 'ठीक वही, तुमने खूब पहिचाना। मित्र क्या तुम कहते हो कि तुम उनको भलीभांति जानते हो? मुझे उनके साथ बड़ा प्रेम था, अब क्या है। बाप रे बाप, मेरा जी उमड़ा आता है, मन करता है खूब रोऊं। हा साहबो, गिलास भर लो

श्रीर स्मिथ साहब के क्षेम कुशल का प्याला पीओ'।

हम सब लोग गट गट करके पी गए।

बादशाह। 'जण्टिलमैन, (फिर प्याला भर कर) अबकी दो दो प्याले मिसेस स्मिथ के लिये पीजिये'।

अब की लोगों ने दो २ प्याले पीए। बादशाह नशे में चूर होने लगे श्रीर मनोव्याकुलता के कारण विह्वल होगए।

बादशाह। "इङ्गलिस्तान जाकर क्या तुम स्मिथ साहब से भी मिलोगे?"

मि० आर०। "मैं अवश्य उनसे मिलूंगा। क्योंकि मुझको भी उनसे एक काम है।"

तब बादशाह ने अपनी बड़ी सुन्दर रत्न जटित जेबीघड़ी (जिसका दाम १५००० रु॰ के है) चेन समेत अपने गले से उतार कर मि० आर० के गले में पहिना दिया श्रीर हिकला हिकला के कहने लगे, "कि तुम मुझे धर्म से विश्वास दिलादो कि इस घड़ी को तुम स्वयं अपने हाथ से स्मिथ साहब के मेम के गले में इसी प्रकार से पहिना दोगे, जैसे कि मैं ने तुम्हें पहिनाया है।

मि० आर०। "मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यदि वह स्वीकार करेंगी, तो मैं अवश्य मेम साहबा के गले में पहना दूंगा"।

बादशाह। "तुम उनसे कहदेना कि यह मेरा स्मरणार्थ चिन्ह है। बस वह फौरन लेलेंगी। रा। हमारे मित्र के लिए मुलतान खिलत श्रीर ५०० मोहर मगावो"।

खिलत लाईगई जिसमे दो कश्मीरी शाल थे, इनमें अच्छी कारीगरी के काम बने हुए थे श्रीर एक गुलूबन्द भी था। बादशाह ने अपने ही करकमलों से शाल उन्हें उढ़ाया श्रीर माथित भी

अपना हाथ लगाए हुए सहायता कर रहा था। मि० आर० मारे गरमी के पसीने में नहागए, परन्तु मनही मन में मारे आनन्द और आल्हाद के फूले नही समाते थे। उस रात की बैठक बहुत देर तक रही। बादशाह सलामत ने स्मिथ साहब और उनकी बीबी की बातो के सिवाय और कोई बात ही न की और उनकी बहुत सी वे बातें भी कह डालीं जिनका उल्लेख करना मैं उचित नही समझता हू।

निदान जलसा समाप्त हुआ। हमारी पालकिया तो लगी ही हुई थीं। बादशाह सलामत ने चलती समय मि० आर को बड़े प्रेम से हाथ मिलाकर विदा किया और आप खवासो पर सहारा दिए हुए अन्त पुर सिधारे। मेरे मित्र खिलत पहने ही हुए नीचे तक आए, जहा हमलोग की सवारिया लगी थी।

दूसरे दिन सवेरे हमलोग खाही रहे थे कि नवाब का आदमी ५०० मोहरो की थैली, जिसे मि० आर को बादशाह ने खिलत के साथ देने को कहा था, लेकर आया। मि० आर दि-खोआ उसे लैाटा देना चाहते थे, पर मैंने उन्हे समझाया कि यदि लैाटा दी जायगी, तो बादशाह भारी अपमान समझेंगे। साराश यह कि बहुत समझाने बुझाने पर उन्होंने ले लेना स्वीकार किया *। दरबार के नियमानुसार उसको सिर आखो से स्वीकार करलेनाही उत्तम था और फेर देने से यह अर्थ लगाए जाते कि यह रकम कम समझ कर अस्वीकृत हुई है और

* अब कैसे गप से लेलिया, भेंट की मोहरो की बात तो याद न रही होगी ?

T P works.

कोर्नी फाइसवयुध।
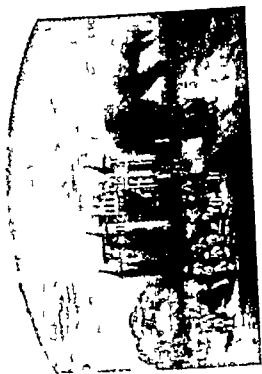
पलथी मार कर बैठा करते थे (जैसे विलायत मे दर्जी बैठते हैं)। परन्तु नसीरुद्दीन को तो अङ्गरेजियत समाई हुई थी, उन्हों ने एक बहुमूल्य और अति उत्तम सोने और हाथीदांत की बनी हुई कुरसी मसनद की जगह इस तख्त पर रखवा दी थी।

इस तख्त पर एक चौखूटा शामियाना तना हुआ था, इन के दण्डे अन्दर से लकडी के थे, जिन पर सोने के पत्तर मढे थे। इन दण्डों मे और शामियाने में अनगिनत बहुमूल्य रत्न जडे थे। शामियाने के आगे एक बडा पन्ना लगा हुआ चमक रहा था। कहा जाता है कि इसके बराबर का पन्ना जगत भर में नहीं है। तख्त के परदे भी कमरों के सदृश लाल मखमल के थे, जिन पर सुनहरी जरदोजी से काम बने हुए थे और इसके किनारों पर मोतियों की झालरें टँकी हुई थी। इस सिंहासन के दाहिनी ओर रेजिडेण्ट साहब के लिए एक सुनहरी मुलम्मे की कुरसी सदा बिछी रहती थी।

'दरबारे आम' के दिन अथवा राजसभा के समय हिन्दुस्तानियों से अवध के उमरा, नवाब इत्यादि और अङ्गरेजों में से वे अफसर जिन्हें रेजीडेण्ट आज्ञा देते थे, इसी कोठी में बादशाह के सामने हाजिर होते थे। जैसा मैं ऊपर लिख चुका हू, ये लोग हाथों में नजर (भेंट) लिए हुए सामने आते और खूब झुक झुक कर सलाम करते थे। जिन पर बादशाह प्रसन्न रहते, उनकी भेंट को वे उङ्गलियों से छू लेते और जिनसे कुछ रुट रहते, उनको दूरही से देख कर गरदन हिला देते। नवाब वजीर भेंट लेकर तख्त के एक किनारे रखते जाते और दर्बारी लोग भेंट दे देकर उलटे पांव अर्थात बिना पीठ मोडे हुए दाए

या बाए हट जाते। अङ्गरेज लोग दाहनी ओर और हिन्दुस्तानी लोग बाईं ओर हट कर खड़े हो जाते थे। जब सब लोग भेंट दे चुकते, तब बादशाह सलामत एक हार रेज़िडेंट के गले में डाल देते और रेज़ीडेंट साहब एक हार बादशाह को पहिना देते। तदुपरान्त ये लोग कमरे के बीच में आकर खड़े होते, फिर जिन लोगो का बादशाह सत्कार करना चाहते, अथवा जिनकी मर्यादा रेज़ीडेंट बढ़वाना चाहते, उनको हार पहनाए जाते थे। ये हार प्राय रुपहले बादले के बने होते थे। हम प्राइवेट अनुचरों को भी कई बेर ये हार मिले थे, परन्तु हमलोग दरबार के उपरांत उन्हें हिन्दुस्तानी जौहरियों के हाथ बेच डालते थे। इनका मूल्य पांच रुपए से लेकर पचीस रुपये तक होता था।

इस कृत्य के उपरांत दरबार बरखास्त होता था और रेज़ीडेंट को पहुंचाने दरवाजे तक बादशाह प्राय जाया करते थे और विदा करती समय उनके हाथ पर थोड़ासा गुलाब का अतर डाल कर "खुदा हाफिज़" कहते थे। इसके पश्चात बादशाह जल्दी से अपने प्राइवेट कमरे में चले जाते, जहां हम लोग पहिले ही से पहुंचे रहते। फिर यहां बादशाह अपना ताज और जामा उतार कर एक किनारे फेंक देते और कुरसी पर बैठ कर अङ्गुलिया चटकाते हुए कहते, "खुदा का शुक्र है, जो जल्दी छुट्टी हो गई, हा यारो 'ताज व ताज़ः तो बनो। खिटखारी तो मुझे पका मारती है'।

बादशाह के उस इमामबाड़े की, जो 'शाह नजफ' के नाम से विख्यात है, बनावट लखनऊ की इमारतों में निराली

रूमी दरवाज़ा और बड़ा इमामबाड़ा।
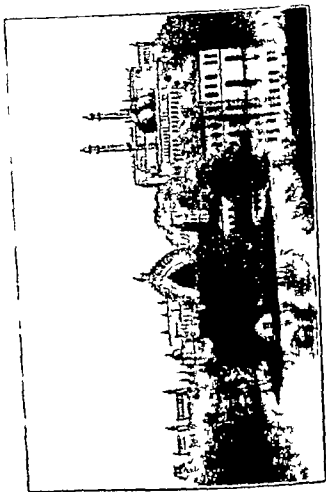
सब से उत्तम है। शीया सम्प्रदाय के मुसलमान मुहर्रम की 'इज्जादारी' अर्थात् ताजिएदारी के लिये जो इमारत बनाते हैं, उसे इमामबाड़ा कहते हैं। इसका सविस्तर वर्णन आगे चल के अन्तिम अध्याय मे लिखा जायगा। प्रत्येक माननीय पुरुष अपना २ इमामबाड़ा अलग बनवाते हैं और उसके मालिक मरने पर प्राय उसी में गाड़े भी जाते हैं।

बड़ा इमामबाड़ा लखनऊ में रूमी दरवाजे के पास है, यह फाटक तुरक देश के उस फाटक के सदृश बना है, जिसके कारण 'तुरक के सुलतान' को 'बाबे आली' का पद मिला है। रूमी दरवाजा और इमामबाड़ा दोनो की रचना बहुत ही सुन्दर है, और दोनो इमारतें एक टक्कर की हैं। इमामबाड़े के सामने बड़े बड़े दो चौखूटे सहन हैं, जिनमें उत्तम २ तराशे हुए पत्थरो का फर्श लगा है। बाहरी सहन से भीतरवाला सहन कई फुट ऊचा है।

इस इमामबाड़े की बनावट लदाव की है, जिसे बिशप हेबर साहब * 'गाथिक' बनावट की लिखते हैं।

इस इमारत में नुकीले कलश हिन्दुओ के शिवालयो के सदृश लगे हैं और गुम्बद मुसलमानो के मसजिद के से बने हैं, यह बड़ी इमारत बहुत ऊची, भारी, अत्युत्कृष्ट, महत्त्व विशिष्ट और सुन्दर है। इसके बीच का दालान कुछ ऊपर १६० फिट लम्बा और ५० फिट चौड़ा है। इसकी शोभा और शान को इसी बात से समझ लेना चाहिये कि एक धीर पुरुष ने,

* इन्हीं के विषय में एक कहावत अब तक लोगों में विख्यात है कि "जिसे न दे मौला, उसे दे आसुफुद्दौला।"

उसे स्वयं देख कर लिखा है कि अवध के बड़े दानी और महा प्रतापी नवाब आसफुद्दौला * ने इस इमामबाड़े में दस लाख पाउण्ड (अर्थात् डेढ़ करोड़ रुपए) के झाड़, फानूस और आईने सजाए थे।

अब मैं इमामबाड़े को छोड़ कर "मारटीन साहब की कोठी' का विवर्ण प्रारम्भ करता हूं। इस प्रकाण्ड गृह-समूह को जेनरल मारटीन साहब ने, जो एक फ्रांसीसी थे, अपने व्यय से बनवाया था। इस शताब्दी के आरम्भ में वे कम्पनी के पलटन में एक 'गोरा सिपाही' के पद पर भरती हुए थे, फिर वे नवाब अवध की पलटन में चले गए जहां क्रमशः उन्नति करते २ वे फौज के जनरैल बन गए और उन्हों ने बड़ा धन संचित किया। मुर्गबाजी में ये बड़ेही निपुण थे और नवाब सआदत अली खां को जो उस समय अवध की गद्दी पर थे, इनके साथ बाजी बद कर मुर्गों की जोड़ लड़ाने का बड़ा ही शौक था।

मारटीन साहब एक लाख पाउण्ड (१५ लाख रुपया) केवल अपने जन्मभूमि 'लीयानस' में एक अनाथालय और स्कूल बनवाने के लिये छोड़ गए, और उतनेही धन से कलकत्ते में एक कालिज बनवा गए और फिर उतनाही धन लखनऊ में कालेज स्थापित करने को छोड़ मरे। उनके इच्छानुसार इस नव संस्थापनाओं (Institution) का नाम 'ला मारटीनियर (La Martiniere) रक्खा गया है। उनकी उक्त कीर्ति अब तक चली आ रही है और कालेज चल रहे हैं।

---

* देखो कलकत्ता रिव्यू, वाल्यूम ३ पृ० ३८१ (Calcutta Review Vol III, page 381)

ला मार्टीनिअर की कोठी।
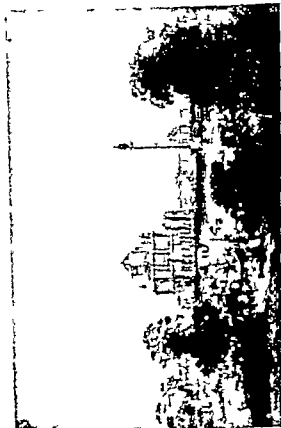
जिसका नाम मारटीनियर की कोठी है । यह उनका निवास गृह था, जिसे उन्होंने अपना स्मारक चिन्ह 'सराय या कारवा सराय के लिए छोड़ा था। मैंने सुना है कि इसका नाम उन्होंने अपने एक मिया के नाम पर रक्खा था, जिसे वह अपने जन्मभूमि फ्रांस में ही छोड़ आए थे और वह बिचारी इनके धनाढ्य होने से बहुत ही पहिले परलोक सिधार चुकी थी। इस लिए कि अवध के बादशाह, उसे जब्त न करलें वह उसी के अन्दर गाड़े गए, क्योंकि वह जानते थे कि मुसलमान बादशाह चाहे वह कैसा ही अन्यायी क्यों न हो, पर वह क़ब्र की रक्षा अवश्य करता है। यात्री लोग इस इमारत को देखने जाते हैं, उनको उक्त साहब की क़ब्र नीचे तहखाने में दिखाई जाती है। इनकी प्रति मूर्ति स्वेत सङ्गमरमर की बनी हुई ताबूत पर रक्खी है, जिसे दो रंगे हुए सिपाहीयों की मूर्ति उठाए हैं। इसकी दस्तकारी बहुत अच्छी नहीं है।

जनरेल साहब के मरने पर, जब इनकी कोठी का सारा असबाब नीलाम हुआ, तब इसको 'कम्पनी बहादुर' के एजंट ने गवरनर जनरेल की कलकत्तेवाली कोठी को सजाने के लिए खरीद लिया। ये सब असबाब 'कम्पनी' को मुफ्त मोल हाथ लगे, क्योंकि कम्पनी के मुकाबले मे बादशाह ने बोली बढ़ा कर असबाब लेना नहीं चाहा। कम्पनी बहादुर को इस बनियाऊ चाल पर बड़ा घमण्ड था। ऐसी चालाकी तो कोई नीच बिसाती और दुकड़हा बनिया भी न करता होगा।

यदि क़ान्स्टेन्शिया (मारटीन साहब की कोठी) के विषय में इतना ही कहा जाय कि वह एक बड़ी भारी, महान और

चमत्कारी इमारत है, तो मानो उसके विषय में सभी कुछ कहा जा चुका। इसमें के किसी किसी स्थान को देख कर मुझे बरखेश्वर का बाग याद आजाता था, विशेष करके इसमें के चौपड़वाले जलाशय को देख कर, जिनके किनारे किनारे कटे छटे हुए गाछ लगे हुए थे। यह बात तो प्रत्यक्षही है कि प्रचुर धन लगा कर यह सब दृश्य बनाया गया था। फिर भी यह इमारत सुहावनी और एक सी न थी। क्योंकि इसके सहन और दीवारें तो अंगरेजी ढंग के थे और कंगूरे और गुम्बज देशी चाल के। कमरों में विलायतीपन टपकता था, तो बरान्दे और खिड़कियों से हिन्दुस्तानी पन झलकता था। कान्स्टेन्शिया का माहात्म्य और विलक्षणता ही प्रधान गुण है।

लखनऊ की मसजिदों और बाजार की बनावट का ढंग देशी मसजिदों और बजारों से ऐसा कुछ अधिक प्रभेद नहीं कि जिनका वर्णन यहां किया जाय। यदि यहां कुछ निरालापन है तो इतनाही कि यहां के बाजारों में लोग हथियार बांधे सिरउठाये घूमा फिरा करते हैं। यहां के रईस लोग जब बाहर जाते हैं, तब उनके साथ बहुत से हथियारबन्द नौकर साथ रहते हैं और जितना ही वे अमीर होते हैं, उतने ही अधिक आदमी उनके आगे पीछे चला करते हैं। इन शोहदों के कारण जरा जरा सी बात पर बहुधा तलवारें खिंच जाया करती हैं जब कभी लड़ाई हो जाती है, तब इन के गोलमाल और चीख पुकार की खबर दूर दूर तक पहुंच जाती है। उस समय शान्त प्रकृति के पुरुष या भीरू लोग उस गली की ओर ही नहीं जाते और जो लोग मजाके और गवाह होते हैं, उनकी भीड़ की भीड़

समझ आती है। कभी २ तो कई खून हो जाते हैं, कई लाशें गिर जाती हैं। अखबारों से मालूम होता है कि अब सन् १८५५ में भी लखनऊ की वही दशा है, जो सन् १८३५ मे थी॥

लखनऊ के बड़े २ मकानों में एक विशेषता और है, जिसका वर्णन रहा जाता है अर्थात् वह तहखाना है, जिसके अन्दर गरमियों मे जब सूर्य्य का ताप बहुत बढ़ जाता है तब लू से बचने के लिये दिन मे लोग रहते हैं। आश्चर्य्य की बात यह है कि इसी जगत के एक भाग मे तो अत्यन्त गरमी से बचने के लिये तहखाने बनाते और दूसरे भाग मे अत्यन्त शीत से बचने के लिये बिलों मे घुसे रहते हैं। एक इस सिरे दूसरा उस सिरे।

शाही महल में भी तहखाने बने हुए थे, जिनके सहन भूपृष्ठ से नीचे थे और हम योरोपियन दरबारियों के लिये तो ये तहखाने बहुतही घुप्प थे। उनकी बन्द हवा से हमारा चित्त घबड़ाने और सांस घुटने लगता था। मै तो इन अन्धेरी और घुट कमरो की अपेक्षा, जिनमें बादशाह बैठा करते थे, ऊपर के कमरों में रहकर गरमागरम हवा के थपेड़े खाना अच्छा समझता। भाग्यवश बादशाह हमलोगों को इन तहखानो मे बहुत नहीं ठहराते थे, क्योंकि स्वयं बादशाह सलामत का भी जी घबड़ा घबड़ा उठता था। सच तो यह है कि महल में पङ्खों के बराबर लगातार चलते रहने से चाहे कैसीही गरमी पड़ती हो उनको गर्मी का अनुभव नहीं हो सकता था। कभी २ जो वे तहखाने में बैठते भी तो केवल अवध के उमरा की एक फैशन की बात समझ कर, परन्तु इसमें बादशाह को सुख वा आनन्द नहीं मिलता था। वे उसके नियमबद्ध भी नहीं होते थे। अतएव गरमियों

में बहुत दिनों तक वे तहखाने में अपनी बैठक नहीं रखते थे।

लखनऊ की दूसरी विचित्र बात यह है कि यहां के बाजारों और गलियों में भिखमङ्गों की झुण्ड की झुण्ड देखने में आती है और इसको भी मानों यहां का एक अनूठा दृश्य समझना चाहिये। इस विषय में कई लोग बहुत कुछ लिख चुके हैं, इस लिये यह आवश्यक नहीं है कि मैं भी सविस्तर लिख कर 'पिष्टस्य पेष्टनम्' करूं। जिन लोगों ने इटली के नगर देखे हैं, उनके लिये तो यह लखनऊ का दृश्य नया नहीं है। अब तो सब लोग फ्रांस, स्पेन और इटली को थोड़ेही दिनों में जा कर देख आ सकते हैं, अतएव लखनऊ के भिखमङ्गों के झुण्ड का वृत्तान्त विशेष लिखना मैं आवश्यक नहीं समझता। किसी किसी ने लिखा है कि इस लखनऊ में बुढ़िया भिखमंगिनें इतनी हैं कि इस जगत के किसी भाग में उतनी न होंगी। यह बात ठीक है। परन्तु इसका कारण मैं नहीं बता सकता।

लखनऊ के हर गली कूचों में कोई न कोई भिखमङ्गा भीख मांगता अवश्यही मिलेगा—कहीं लड़के, कहीं जवान, कहीं बूढ़े, कोई रोगी, कोई लंगड़ा, कोई लूला, कोई कोढ़ी। मर्द और औरत 'दाता भला करे' की आवाज लगाते, फटे हालों, रोनी सूरत बनाये भीख मांगते फिरा करते हैं। यहां की यह एक चलन होगई है कि जब कोई रईस बाजार की सैर करने को जाते हैं, या जब कोई त्योहार होता है, तब यहां खैरात बांटी जाती है, जिससे इस भिखमङ्गी का जोर अधिक होगया है मानों यह भी निखट्टुओं का रोजगार सा होगया है और भिखमंगों की संख्या बढ़ गई है। हिन्दुस्तान में यही लोगों को

बिना हाथ पैर हिलाये ही बहुत कुछ मिल जाया करता है, और यहा के लोग भी बडे सन्तोष के साथ आशा लगाये बैठे रहा करते हैं। गर्म देशो में सन्तोष के साथ आशा पर बैठे रहने की बेल खूब फूली फली है। परन्तु लखनऊ के फकीरो में एक अद्भुत बात,देखने में आई, वह यह है कि जितने मई भिखमङ्गे हैं, वे सब हथियार से लैस रहते हैं और अपने भिखमङ्गी करने पर उन्हें लज्जा नहीं आती। लज्जा तो दूर रही उलटे वे लोग अपने इस पेशे पर इठलाते हैं। ढाल तलवार बाधे भिखमगे जब किसी अमीर को देखते हैं, तब चट हाथ फैला कर आशीष देने लग जाते हैं--'ईश्वर सदा बनाये रक्खे,खाने को कुछ मिलजाय'। जहा उन्होने 'दोआ' दी बस वह एक दिन की मजदूरी पाने के हकदार होगए और यदि किसीने उनको दुत्कार बताई किंवा उनकी ओर से मुह मोडा, तो वे खुल्लमखुल्ला "मा बहिन बखानने" लग पडते हैं। मुह दर मुह गाली देते हैं।

लखनऊ में भिखमङ्गी को लोग बुरा नहीं समझते,यह बात उनकी टिर और ऐठन सेही प्रगट होती है। "मागें भीख पूछें गाव की जमा" यह लखनऊ केही फकीरो में देखने में आया। जब किसी अमीर के घर लडका होता है, तब ये लोग बैठे हिसाब लगाते हैं कि अमुक के घर मे लडका हुआ है, अबकी इतना मिलेगा, अथवा लडकी हुई, इतनी खैरात बटेगी। उन को रत्ती रत्ती मालूम रहता है कि फला खुशी मे इतना खर्च होगा, उसमे से इतना खैरात किया जायगा। मैंने एक विख्यात फकीर का हाल सुना है, इसके पास स्वय उसीका हाथी था, जिसपर चढ कर वह रोज शहर का चक्कर लगाता और

भीख मांगता फिरता था और अपने चेलो से भेंट लिया करता था ॥
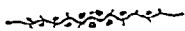
सातवां अध्याय ।

खूनी घोड़ा ।

एक दिन बग्घी पर सवार होकर लखनऊ की एक सुन्दर सड़क पर मैं जा रहा था। मेरे साथ मेरे एक मित्र भी थे, हम लोग गोमती के किनारे की सड़क से महल को जा रहे थे। इस सड़क पर बराबर सन्नाटा देख कर मुझे आश्चर्य हो रहा था, दूर तक किसी आदमी की सूरत तक नहीं दिखाई देती थी और यदि इक्का दुक्का आदमी जाता दिखाई भी पड़ जाता था, तो वह सड़क कतरा कर भागा चला जाता था। जहां के राज्य में नित्य अंधाधुन्ध होता रहे और राजा स्वतन्त्र और अधर्मी हो, वहां नित्य ऐसी २ बातें होती रहती हैं कि जिन्हे देख कर विदेशी दंग रह जाय। हम लोगो ने कानाफूसी करके यही विचार किया कि आज किसी को प्राणदण्ड दिया जाने को है, किंवा ऐसी ही कोई नई बात हुई है, जिस भय से लोग घर से नहीं निकलते।

चलते चलते एक जगह मैं क्या देखता हूं कि बीच सड़क में लहू लुहान, कुचली कुचलाई किसी की लाश पड़ी है। हम लोग बग्घी ठहरा कर देखने को उतर पड़े, देखा कि वह एक स्त्री की लाश है, उसका अङ्ग भङ्ग ऐसा हो गया था कि पहचानना कठिन था। रक्त लाश के नीचे बह रहा था,और रूप से यहां पड़ी थी। उसके कपड़े भी लीथड़े २ हो गए थे। इस के बाद

को किसी ने दांतों से चिचोड़ कर ऐसा चबा डाला था कि वह निरा मांस का एक लोथड़ा जान पड़ता था। इसके लम्बे २ बाल जो उखड़ कर सड़कों पर पड़े थे, वे लहू में सने हुए थे। यह घटना देख कर हमारा रोमाञ्च हो गया था और हमसे देखा नहीं जाता था। हमलोग वहां बहुत नहीं ठहरे।

हमलोग आगे बढ़े चले जाते थे, रास्ते मे कहीं चिड़ी का पूत तक नहीं दिखाई देता था। सारे सन्नाटा छाया हुआ था। थोड़ी दूर आगे जाने पर एक और लाश किसी युवा की सड़क के एक किनारे पर पड़ी मिली। पासही के एक मकान की छत पर एक बादशाही सिपाही खड़ा दिखाई दिया, जो सड़क पर चारो ओर देख रहा था।

मैंने पूछा, 'यह क्या बात है'।

सिपाही।"खूनी घोड़ा आज छूट गया है। अरे! वह फिर इसी ओर आ रहा है। साहब! अपने को बचाओ, भागो, आज वह गरमाया हुआ है और खूनी हो रहा है।"

मैं इस घोड़े के विषय मे सुन चुका था कि बादशाह के सवारों में से एक सवार का घोड़ा बड़ा क्रूर और कट्टर है। इस का नाम 'आदमी-खानेवाला' वा 'खूनी घोड़ा' था, क्योंकि वह कई आदमियों की जान लेचुका था। सिपाही ने फिर पुकार कर कहा,'साहब देखो वह इसी ओर दौड़ा आ रहा है, अपनी जान बचाइये, अपनी जान बचाइये'।

इतनेही में हमने देखा कि दूर से एक कुम्मैत रङ्ग का बड़ा घोड़ा हमारी ओर दौड़ा चला आ रहा है। वह मुंह में एक बच्चे को धरे हुए बड़ी क्रूरता के साथ झिंझोड़ रहा था।

'छुरिया' और 'खूनी घोड़ा'
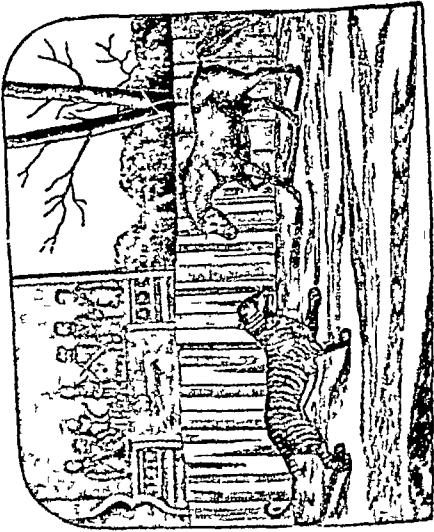
कठिन है। उसकी चमकदार खाल, जिसपर क्रमशः लाल धारियां पड़ी हुई थीं, उस छोटीसी टट्टुई की खरहरी खाल की अपेक्षा बड़ीही सुहावनी मालूम देती थी। इस 'खूनी घोड़े' की चिकनी, चमकीली और स्वच्छ खाल के सामने भी भुरिया के खाल की चमक दमक बहुत बढ़ी चढ़ी थी।

एक दिन पहिलेही से शेर बिना चारा पानी के भूखा रक्खा गया था, जिसमे वह भूख के मारे विरोधी पर शीघ्रही आक्रमण करे। ठाठर में घुसतेही वह दोनो घोड़ो को विकाल दृष्टि से देखने लगा और दबे पाव धीरे २ उनकी ओर बढने लगा। 'नृभक्षक' घोड़ा अपनी आखे शेर की आखो से बराबर मिलाये हुए खड़ा था, एक निमेष मात्र के लिये भी उसने अपनी दृष्टि उधर से न हटाई। घोड़ा अपनी गरदन नीची किये हुए और एक टाग कुछ आगे को बढाये हुए, बड़े धैर्य्य के साथ खड़ा आक्रमण की अपेक्षा कर रहा था और भुरिया के साथ फेरे भी रगा रहा था। उसकी दृष्टि बराबर शेर परही जमी हुई थी। अब बिचारी टटुआनी का हाल सुनिये। मारे भय के वह तो पत्थरासी गई थी और बेजान के सदृश चुपचाप दुम दबाये कोने मे खड़ी अपनी कुशल मना रही थी। वह इतनी सहमी हुई थी कि अपने बचाने के विचार की भी उसे सुध न थी। एक हलकी सी झपट के साथ भूरिया इस बिचारी टटुई की ओर लपका और उसने एकही थपेड़े से टटुई को भूमि पर धम से गिरा दिया और अपने दात उसकी गरदन में प्रवेश कर दिये और चूम२ कर खून पीने लगा। यह निर्दयता का बध था, क्योंकि उस बिचारी घोड़ी ने कुछ भी हाथ पैर नही हिलाये।

अब बादशाह हाथ मल मल कर अङ्गरेजी में कहने लगे कि 'देखना, खून पीकर भुरिया और भी क्रूर होजायगा।' इन अङ्गरेजों ने भी हां में हां मिलाई। मोरछलवालियां यद्यपि अङ्गरेजी भाषा से अनभिज्ञ थीं, तथापि बादशाह को प्रसन्न और हँसते देख कर, चुप रही थीं। आपुस में एक दूसरे की ओर देख देख कर मुस्कुराईं और फिर तमाशा देखने लगीं।

तीन मिनिट या पांच मिनिट तक (इससे अधिक नहीं) भूरिया बैठा उस घोड़ी का खून चूसता रहा। परन्तु उसकी दृष्टि बराबर 'खूनी घोड़े' ही की ओर लगी रही। घोड़ा भी आँखें भिड़ाये धैर्य्य के साथ खड़ा था, और वह तनिक भी भय भीत नहीं मालूम देता था। गरदन सीधी किये हुए, कनौटियां चढ़ाये, दुम उठाये अपने शत्रु [शेर] को घूर २ कर सावधानी के साथ वह देख रहा था, मानो वह भी युद्ध करने को प्रस्तुत है।

सारांश यह कि भूरिया ने टटुआनी का सब खून पी लिया और उसमें कुछ भी शेष न छोड़ा। तब उसने अपने पंजे लाश पर से उठा लिए और दो एक बेर फुरेरी लेकर, बदन चुराए हुए कटघरे के चारों ओर इस प्रकार दाव घात लगाता हुआ धीरे धीरे घूमने लगा, जैसे चूहे को पकड़ने के लिए बिल्ली पैंतरे बदलती है। इसके चलने की चाप ज़रा भी नहीं सुनाई देती थी। भूमि पर वह अपने बड़े२ पंजे एक के पश्चात् दूसरा रखता था और उसके मुलायम तलुओं के कारण चलने की आवाज़ नहीं होती थी। वह अपने पंजे को धीरे से उठाकर और धीरे से भूमि पर रखता था। उसकी लाम्बी पीठ धीरे२ ऊँचे उठती और ज्यों२ अपने अगले या पिछले पैर उठाता

हुआ आगे बढ़ता, त्यो २ उसके कन्धे वा उसकी कमर उभड़ जाती और चलने में अग के प्रसार और सकोच के साथ उसकी खाल झोल खाजाती, मानो उसकी हड्डियो से उसका कोई सबध ही नहीं है। इस दृश्य को देख कर कौन भूल सकता है? और मोरछलवालिया और बादशाह तो इधर उधर भी देख रहे थे, परन्तु यूरोपियन लोग आखें गाडे हुए और कान लगाए हुए उनकी एक एक चाल को निहार रहे थे। घोड़ा बीच में खड़ा शेर के चक्कर के साथ फिरता जाता था। इसकी गरदन, कान, आख वैसेही थी, जैसी उपर लिख चुके हैं। शेर यद्यपि इतना बलिष्ट था, तौ भी वह अब तक बिल्ली के सदृश दाव घात में धीरे २ चल रहा था। घोड़े के घूमने से जो उसकी टाप उठती और भूमि पर पड़ती थी, उसकी आवाज के सिवाय और कोई खटका नहीं सुनाई देता था। सभी लोग ध्यान लगाये चुपचाप तमाशा देख रहे थे।

अन्त को शेर ने एक छलाग मारी और बिजली के समान घोड़े पर जा गिरा। घोड़ा इसके लिये चाकचौबन्द खड़ाही था। ऐसा प्रत्यक्ष होता था कि भुरिया ने उसकी गरदन वा अगले अङ्ग को पकड़ना चाहा था, परन्तु घोड़े ने उस से भी अधिक फुरतीलापन दिखाया। इसने झट अपनी गरदन और कन्धे सिकोड़ कर ऐसा कुछ किया और भुरिया को पिछले पुट्ठो पर इस प्रकार लिया कि शेर के पिछले पजे तो पुट्ठो के इधर उधर लटक गए और उसके अगले पैर भूमि पर जा पड़े। इस दाव से बचने का शेर को तनिक भी अवसर न मिला। वह सम्हलने भी न पाया था कि घोड़े ने अपनी नालदार दुलत्ती

इस ज़ोर से फटकारी कि भुरिया भूमि पर दूर जा गिरा। हम लोग यह अच्छी तरह देख भी न सके कि यह पीठ के बल गिरा या किस बल, क्योंकि वह गिरा तो उसका कुछ अङ्ग भूमि पर था और कुछ टाटर पर। वह फिर फुरती के साथ उठ खड़ा हुआ और दांत पीसता हुआ दांव घात की ताक में फिर दबी चाल से चराने लगा, मानो कुछ हुआ ही नहीं है। घोड़ा अपनी जगह खड़ा क्रोध से फुंकार मार रहा था और दूसरी बार की अपेक्षा कर रहा था। उसके पिछले पुट्ठे घायल होगए थे और शेर के वरिष्ठ पंजों के चिन्ह स्पष्ट दिखाई देते थे, जिनमें से लहू की धारा बह रही थी।

बादशाह। (एक अङ्गरेज अनुचर से जो उनके निकटही खड़ा था) 'यबकी बेर भुरिया घोड़े को मारही डालेगा'।

अनुचर। 'बेशक, हुज़ूर'।

अब फिर बिल्ली के समान एक एक कदम उठा कर भुरिया चारों ओर फांचे काटने लगा, उसका गोल गोल भारी मुंह घोड़े ही की ओर था। धीरे धीरे पंजे उठाता और धीमे धीमे भूमि पर रखता हुआ यह घूम रहा था और उसकी धारीदार खाल हड्डियों और पुट्ठों से अलग झोल खा रही थी। घोड़ा भी नथने फुलाये, चमकती हुई आंखें निकाले, शेर की चाल इसी प्रकार होशियारी के साथ देख रहा था, शीश ऊपर सिरा आ हुआ है। घोड़ा अपना सिर नीचे किये, गरदन बढ़ाये, कनौटियां चढ़ाये, शेर से आंखें लड़ाये, अगला एक पैर कुछ उठाये, शेर की भूलगत सयपाग की अपेक्षा कर रहा था कि शेर कब छलांग मार कर उसपर आक्रमण करे (जैसे कि पहिले कर चुका

था) वैसेही फुरती के साथ यह भी अपना अङ्ग चुरा कर कुछ आगे को फलाग मारे।

पूरे आठ वा दस मिनिट तक भुरिया लगातार चक्कर लगाता रहा और घोडा भी बराबर आखें भिडाये हुए बीच में घूमता था, बीच २ में दो एक बेर क्रोधपूर्वक वह फुफकार भी मार देता था। कभी कभी भुरिया अपना प्रकाण्ड मुख खोल कर जबडो पर के खून के धब्बो को, जो अब तक लगे हुए थे, अपनी जिह्वा से चाट लिया करता। एक बेर (केवल एकही क्षण के लिये) शेर फिर टट्टुआनी की लाश पर जाकर ठिठका, मानो वह उसका लहू फिर पीना चाहता था, परन्तु वह शीघ्रही उधर से लौट पडा और पुन चक्कर काटने लगा।

अन्त को पुनराक्रमण का समय आगया। भुरिया मृत टट्टुआनी के पास ठहर कर इस फुरती से उछला कि हम सब लोग उसकी तडपान देखकर सहम गए और काप उठे, यद्यपि हमलोग ऊपर के खण्ड मे खडे थे और उसकी तडपान का आसरा देख रहे थे। मोरछलवालियो में से तो दो एक झिझक कर दबे मुह चीखही उठीं। उछाल मारने से पहिले भुरिया न तो डकारा और न गुर्राया। ऐसा मालूम दिया कि जैसे किसी गलवनिक बाटरी (Galvanic Battery) से निकल कर तडित शक्ति ने उसे अचाञ्चक हवा में उठा दिया।

परन्तु खूनी घोडा इस अद्भुत औचक में न आया। अबकी बेर इसने अपनी गरदन और भी नीची करली और ऐसा जान पडा कि फलाग मारे हुए शत्रू के नीचे आपही पैठ गया। अब फिर भुरिया के पजे उसके पुट्ठों मे गहरे धस गए, पर आगे से

तनिक ओर पिछले भाग पर, इस बेर भुरिया का मुंह पेट में भी आगे आ लटका था और पिछले पंजे घोड़े की कोख में घस गए। एक क्षण मात्र भुरिया इस दशा में पड़ कर काप उठा और और अपने पेट के बल उसकी पीठ छाप लेना और दबा रखना चाहा, परन्तु इस 'बीर' घोड़े ने फिर कसकर लत्ती मारी और इतने ज़ोर से उछला कि मानो कलाबाजी खाना चाहता है। अबकी बेर फिर उसने अपनी नालदार सुम इस ज़ोर से भुरिया के मुंह पर तड़ातड़ लगाई कि वह लुढ़क कर भूमि पर मुर्दा समान होगया।

क्षण मात्र भुरिया भूमि पर पड़ा रहा, परन्तु फिर झट उठ खड़ा हुआ और उठते ही ठाठर के बराबर दौड़ने लगा, जिससे मालूम होता था कि अब वह आक्रमण करना नहीं चाहता, किन्तु भागना चाहता है। उसके जबड़े की हड्डी टूट गई थी और वह दुम दबाए, पीड़ा के मारे चिल्लाता हुआ ठाठर से निकल भागना चाहता था जैसे कि कोई कुत्ता चाबुक खाकर दुम दबाए भागता है। खूनी घोड़ा अब भी ध्यान लगाए हुए देख रहा था, मालूम होता था कि अभी उसे भुरिया के फिर झपट पड़ने का डर बना हुआ है। भुरिया इतनी शीघ्रता के साथ दौड़ता फिरता था कि घोड़े को उसके साथ घूमते रहना कठिन पड़ गया। भुरिया को अब मुकाबिला करने का साहस न था, किन्तु जब उसे किसी प्रकार भाग बचने का मार्ग न पड़ी थी और वह आतुर होकर रोने लगा। नीचे से किसी ने चिल्ला कर कहा कि "अरे! मालूम होता है कि भुरिया का जबड़ा टूट गया है"। यह आवाज़ ऊपर तक आई और का

शाह ने सुन ली"।

बादशाह। (हमलोगो से)--"भुरिया का जबड़ा टूट गया। अब इसे हटा लेना चाहिए।"

हमलोग। "हुजूर की जैसी मरजी"।

इशारा कर दिया गया। पिंजड़े का दरवाजा खोल कर ठाठर का फाटक उठा दिया गया। भुरिया झटपट पिंजड़े में घुस कर एक कोने में दबक बैठा।

जब 'खूनी घोड़े' ने देखा कि उसका शत्रु भाग खड़ा हुआ, तब अपने विजय प्राप्त करने पर वह हिनहिनाने और मारे खुशी के टाप से जमीन खोदने लगा। तदुपरान्त वह टटु-आमी की लाश की ओर गया और कुछ देर तक उसे सूंघता रहा और फिर उसे लातो से कुचल कुचला कर ठाठर के चारो तरफ दौड़ने लगा—मानो वह बाहर खड़े हुए आदमियो को पकड़ कर खा जाना चाहता है। इस समय इसका खून उबल रहा था, शेर हो या मनुष्य किसी का भय उसे न था, जो सामने आता उसी पर वह आक्रमण करने को बफर रहा था।

थोड़ी देर उसके बफरने को देख कर बादशाह सलामत ने किसी हिन्दुस्तानी आदमी से कहा, 'दूसरा शेर छोड़ा जाय'। फिर हमलोगो से अङ्गरेजी में कहने लगे, 'खुदा इससे समझे, अब भुरिया का बदला इससे लेना पड़ा'। हमलोग ने हाथ बाँध कर मुस्कराते हुए झुक कर बड़े शिष्टाचारी से कहा कि "ठीक यही कर्तव्य है" और फिर अदब के साथ दूसरा तमाशा देखने को हट कर खड़े हो गए।

बादशाह। "देखो जी, खूनी घोड़े ने कैसी भयङ्कर

लतियामारी हैं"।

हम में से एक अङ्गरेज—"जी हुजूर, बड़ी ही भयानक लतिया थीं, भुरिया के मुह पर जब उनकी दोलत्ती पड़ी थी, तब उसके आघात का शब्द तक मैंने सुना था"।

इतने में शेरों का रखवाला आगया और उसने निवेदन कराया कि यदि आज्ञा हो तो वह हाजिर हो। बादशाह ने आज्ञा दी कि 'अच्छा आने दो'। रखवाले ने आकर निवेदन किया कि 'जहांपनाह की उमर दराज, अभी दो घंटे हुए कि शेरों को राातिब खिला दिया गया है, यदि आज्ञा हो तो जो सब से अच्छा शेर है, वह ठाठर में छोड़ा जाय"।

बादशाह। "पाजी कहीं का, दो घण्टे पहिले ही क्या रातिब दे दिया?"

रखवाला। (सहम कर कांपता, थरथराता और झुककर सलाम करता हुआ) 'खुदावन्द, रातिब खिलाने का नियम यही समय था'।

बादशाह। "यदि शेर ने आक्रमण न किया, तो तुमको ठाठर में जाकर 'खूनी घोड़े' से लड़ना पड़ेगा"।

थोड़ी देर के उपरान्त एक पिंजड़ा लाया गया, लोग शेर को ध्यान से देखने लगे। शेर का रखवाला मारे डर के मरा जाता था। वह बड़ा डर रहा था, क्योंकि वह जानता कि जो बात बादशाह के मुह से निकली वह पूरी बिना हुए नहीं रह सकती चाहे कुछ हो।

भुरिया का पिंजड़ा जब हटा दिया गया तब सब अङ्गरेज गये और हमलोग शराब पीने लगे। यह शराब ...

रक्खी रहने से शीतल होगई थी, इसके पीने से चित्त शीतल होगया, क्योंकि वहा गर्मी बहुत थी और विशेष करके हम अङ्गरेजो का गर्मी के मारे बुरा हाल था। बादशाह सलामत की सहेलिया पीछे परा जमाए और हाथो में मोर की पंखड़िया लिए बादशाह को बराबर झल रही थीं। अपने गोरे२ कला-इयो को, जिनमे जड़ाऊ कङ्गन पड़े थे, और गोल २ भुजाओ को जिन पर भुजबन्द और नौरतन बधे थे, बड़े हाव भाव और मनोहर मरोर के साथ, हिलाती हुई इस प्रकार हवा कर रही थी कि बादशाह के देखने मे आड़ नहीं पड़ती थी।

शेर का पिंजड़ा लाकर ठाठर के फाटक पर लगा दिया गया, दोनो के दर्वाजे खोल दिए गए। शेर धीमे से उठा और उसने ठाठर के चारो ओर देखा, फिर वह दर्वाजे पर आकर ठिठक रहा, मानो वह आगे बढ़ने से झिझकता है। जब उसको एक बरछी की नोक पीछे से चुभोई गई, तब उसकी झिझक जाती रही और वह अहाते में निकल कर घूमने लगा। पिंजड़े और ठाठर के फाटक बन्द कर दिए गए। अब वह घोड़े को सुस्थिरता के साथ देखने लगा। थोड़ी देर वह घोड़े को घूरता रहा और घोड़ा भी अपना मुह शेर की ओर किए हुए खड़ा था। कुछ देर देख भाल कर शेर टट्टू की लाश के पास चला गया और जो कुछ दो चार बूद लहू उसमें शेष रह गया था, उसे चाटने लगा और फिर घोड़े की ओर देखने लगा, जो उसी आन बान से अपने बचाव के दाव पर डटा खड़ा था।

यह शेर भुरिया से बड़ा था, परन्तु इसके खाल की धारिया उतनी सुन्दर न थी। भुरिया की चाल ढाल बहुत ही सुडौल
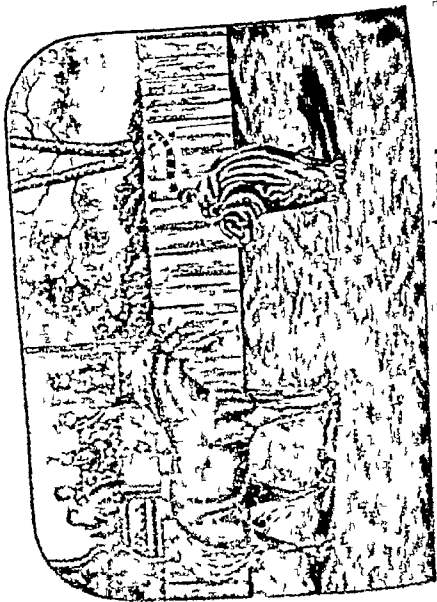
शेर ऐसी जगह जाकर बैठा कि वहा तक लोहे के छडो का पहुचना कठिन था। तपे हुए छडो से उसे उठाने के प्रयत्न किये गये, परन्तु सब निष्फल हुए,क्योंकि छड छोटे थे। अन्त को हार कर एक बड़ा लम्बा बरछा शेर को गोदा गया। झुंझला कर वह उठा और बरछे को पकड कर उसी सीध मे ठाठर पर झपट पड़ा और बांस पकड कर जोर २ से झिझोरने और हिलाने लगा। उसका इस प्रकार ठाठर को झिझोरना बडे भय की बात थी। यदि वह ठाठर तोड कर बाहर निकल आता,तो बडी विपत्ति होती। परन्तु लोगो ने गर्म २ तपे छडो द्वारा उसे वहा से शीघ्रही हटा दिया। वह बफरता और गरजता हुआ वहा से चल दिया और इसने ठाठर के दो तीन चक्कर लगाए। घोड़ा भी बराबर अपनी दृष्टि इस पर जमाए साथ २ चक्करफेरी लगाता रहा। लोगो ने बहुत कुछ प्रयत्न किये कि किसी प्रकार वह घोडे पर आक्रमण करे, परन्तु उनकी कुछ न चली। लोग उसे गरम २ छडो से दागते, जलाते और बरछे गड़ाते थे,सारांश यह कि हर तरह से क्रोध दिलाते थे, पर जब देखो तब वह अपना गुस्सा बांस के ठाठर परही उतारता था और मुह बाए बड़े २ विकराल दांत देखाता हुआ आदमियो के ही ओर झपट पड़ता था। किसी भांति से भी वह घोडे पर आक्रमण करने का साहस नहीं करता था और घोड़ा भी उससे बल कर छेड़खानी करना नहीं चाहता था।

जब लोग सब तरह से हार गए, तब मुझे यह डर लगा कि कहीं 'शेर का रखवाला' ही ठाठर में न भेजा जाय, परन्तु बादशाह सलामत उस बात को भूल गए थे और चिल्ला कर

कहने लगे कि "घोड़ा तो बड़ा शूरवीर मालूम होता है। अच्छा शेर को हटाओ और तीन अरने भैंसे लाओ, देखो इनसे यह क्या करता है"।

जङ्गली भैंसे यद्यपि भारी भरकम और भद्देसल होते हैं, पर जब ये गुस्से में आते हैं, तब इनसे बढ़कर क्रूर कोई भी पशु नहीं होता। कई बेर मैंने अपनी आंखो देखा है कि ये बड़े भारी २ हाथी को मार सींग मार सींग भगा देते हैं।

पिंजड़े की खिड़की खोल कर ठाठर का दरवाजा उठा दिया गया और शेर ऐसी फुरती से पिंजड़े में चला गया कि इसके एक अंश की भी फुरती निकलती समय उसने नहीं की थी। इसके पश्चात् कुछ देर तक शराब लुढ़ा की। जब भैंसे आए, तब एक एक करके तीन बेहंगम और देखने में भीषण भैंसे ठाठर के अन्दर हांक दिए गए। ये भैंसे टकटकी बांधे इधर उधर भारी २ सिर और सींगों को निष्प्रयोजन ही हिलाते और झटकारते ठाठर के बीच में आने लगे।

ज्यों ज्यों भैंसे आगे बढ़ते आते थे, त्यों त्यों 'खूनी घोड़ा' भी पीछे हटता जाता था। इनका प्रकाण्ड डील डौल देख कर घोड़ा घबरा गया। पहले शेर से सप्राणिक जुट कर चुकने पर जब दूसरा शेर आया था, तब भी वह इतना नहीं घबराया जितना इन कुरूप और विकट पशुओं के चौड़े सपाट माथे, मोटे और भारी सींगों और काले २ दुनमुन और बेढ़ने शरीरों को देख कर वह व्याकुल हुआ। फुंकारता और [illegible] हुआ कदम २ वह पीछे हटने लगा, परन्तु उसकी यह [illegible] डर की थी। भैंसे निर्भय उसकी ओर दुरांये बढ़े आ रहे थे,

घोड़ा तनिक भी उनमें डर का चिन्ह देखता, तो वह अवश्य उनपर झपट पड़ता।

ये जंगली भैंसे मिले जुले साथही साथ अपनी सींगो को इधर उधर फटकारते थे, कभी वे भूमि पर फुंकार मारते, कभी ठाठर के बाहर के आदमियो की ओर देखते, कभी कोठे पर दृष्टि दौड़ाते और कभी घोड़े से आख लड़ाते थे, मानो वे हमारी ओर देखकर पूछा चाहते हैं कि वे किस काम के लिए यहा लाए गए हैं। घोड़े पर धावा करने का विचार उनके मस्तिष्क मे उत्पन्न ही नहीं होता था। इनको बौखलाये और अस्थिर देखकर घोड़े ने ढाढस बाधा। पहिले तो वह टापो से जमीन कुरेदने और नाक फुला कर फुफकार मारने लगा। फिर वह एक एक कदम आगे बढता, फिर नथने फुला कर फुकार मारता। इसी प्रकार धीरे २ एक एक इंच बढता उनके निकट आगया, भैंसे भी इसके आने पर कुछ ध्यान न देते थे और सिर हिलाते मिले जुले खड़ रहे थे। घोड़ा भी धीरे २ आगे बढताही जाता था, यहा तक कि घोड़े का मुह आगे बढे हुए एक भैंसे के सिर से छूगया और वह हिनहिना कर, फुफकार कर और गर्दन बढा कर सूघने लगा, तौ भी उस भैंसे ने परवाह न की। एक पुरानी कहावत है कि "बहुत मिठास में कीड़े पड़ते हैं," यहा तो वह कहावत ठीक २ उतरी, क्योंकि जब घोड़ा हिनहिना २ कर उन्हें सूंघ चुका, तब वह दो एक कदम और निकट आकर एक दम घूम पड़ा और उसने पास के भैंसे की पसलियो पर अपनी नालदार टापो से कस कर एक दुलत्ती मारी। यह मार ऐसी अचानक, हठात और भयानक थी कि बिचारा भैंसा थोड़ी देर के लिये

अचेत सा होगया और इसके साथी कुछ इस प्रकार झूम झूम कर सिर हिलाने लगे, मानो वह झूम २ कर कह रहे हैं कि "वाह वाह, शाबाश।"

भैंसो की बौखलाहट देखकर बादशाह सलामत खिल खिला कर खूबही हँसे और कहने लगे कि "अब तो 'खूनी घोड़ा' क्षमा के योग्य है, उसकी जानबख्शी होनी चाहिये, अच्छा उसे हटा लो।"

उसी दम आज्ञा पालन की गई। होशियारी से फन्दे डाल कर घोड़ा पकड़ा गया और अस्तबल में भेज दिया गया, यह विजयी घोड़े का शेष जीवन बड़े सुख और मान के साथ कटा।

बादशाह ने उसी समय कहा कि "इसके लिये लोहे का पिंजड़ा बनवाऊंगा और इसका पालन पोषण कराऊंगा, अल्लाह जान के सिर की कसम यह घोड़ा बड़ाही बहादुर है।"

इस घोड़े के लिए एक लोहे का पिंजड़ा इतना बड़ा बनवाया गया, जो लण्डन के साधारण खाने की कोठरी से दुगुना बड़ा था, इसमें घोड़ा चारो ओर टहला करता था और जो लोग उसे देखने आते, उन पर वह दांत निकाल कर झपट पड़ता और कभी २ पिंजड़े के खंभों पर भी उसी ढङ्ग से लत्ती झाड़ता जैसी लत्ती चला कर उसने भैंसों पर विजय प्राप्त की थी।

जब मैंने लखनऊ छोड़ा, तब तक यह जीता था और लखनऊ में यह एक अद्भुत तमाशा था॥
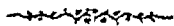
आठवा अध्याय।

"राजा योगी अगिन जल इनकी उलटी रीति"

बादशाह की निष्ठुरता और राजा बख़तावरसिंह।

लखनऊ के हिन्दुस्तानी दर्बारियो में नाम मात्र के सैनिक जनरैल, राजा बखतावरसिंह से बढ़ कर बादशाह का मुहलगा और कोई न था। मैंने इन्हे नाम मात्र का सैनिक जनरैल इस कारण से लिखा है कि अवध में यदि किसी काम की सेना थी कि जिसका प्रजा भय मानती हो, तो वह केवल कम्पनी बहादुर की फौज थी। बादशाह के यहा भी सवार और पैदलो की सेना थी, जिनकी वर्दी कुछ लो फारसी सेना के समान थी और कुछ कम्पनी की फौज के सदृश थी। एव सवार, पैदल, तोपखाना इत्यादि सब मिला कर शाही सेना ४० वा ५० हजार होगी। इस सेना का कमाडर इनचीफ (सेनापति) नवाब वज़ीर का बेटा था और जनरैल राजा बखतावरसिंह थे। हमलोग और हिन्दुस्तानी दर्बारी लोग भी राजा बखतावरसिंह को सर्वदा जनरल ही कह कर पुकारा करते थे, कदाचित ही कोई उनका नाम लेकर बुलाता हो। बादशाह साहब को हँसी दिल्लगी और बालको कीसी चुहुलबाजी में विशेष अनुराग था और बखतावरसिंह तथा नापित मे खूब ही फक्कड़बाजी हुआ करती थीं। यदि कोई अनजान मनुष्य इनको इस समय देखता, तो वह यही समझता कि स्कूली लड़के थोड़ी देर के लिये छुट्टी पाकर एकत्रित हुए हैं और आपस में दिल्लगी कर रहे हैं। नीचातिनीच भाण्डपन और हास्यपूर्ण ठट्ठे बादशाह

के सम्मुख आपस में हुआ करते थे और बादशाह सलामत बैठे उनको बढ़ावा देते रहते थे। हिन्दुस्तानियों में राजा बख़तावर सिंह और अङ्गरेजों में नापित इन दोनो की जोड़ तोड़ सबसे बढ़ कर हुआ करती थी।

राजा बख़तावरसिंह कोई मूर्ख या अल्प बुद्धि के मनुष्य न थे, किन्तु इनको अपने प्रताप तथा पद का अभिमान भी पूर्णतया था। उनसे जहां तक हो सकता था अपने मान और मर्यादा को बनाए रखने की भी चेष्टा करते थे, और हंसी ठट्ठा और फक्कड़पन भी चतुराई के साथ किया करते थे, क्योंकि इस छिछोरेपने से बादशाह सलामत प्रसन्न होते थे। निकृष्ट व्यवहार होने पर भी किसी२ मनुष्य में आन्तरिक विवेक और बुद्धियान हुआ करते हैं। हिन्दुस्तानियों में इनकी बड़ी मान मर्यादा थी और प्राय लोग इन्हें राजकाज और लोकव्यवहार में अति निपुण मानते थे। सभी लोग इन्हें जनरेल२ कहा करते थे, परन्तु व स्तव में इन्हें पुलिस का बड़ा अफसर कहना ही उचित था, क्योंकि इनके सिपाहियों से वही सब काम लिए जाते थे, जो इङ्गलिस्तान में पुलिस से लिए जाया करते हैं। जैसे दरबारी उमरा के अरदली में रहना, बादशाह की सवारी के जलूस में चलना इत्यादि इत्यादि।

ऊपर लिखी बातो से आप लोगों को स्पष्ट मालूम होगया होगा कि हिन्दुस्तानी दरबारियों में राजा बख़तावरसिंह का बड़ा दौरदौरा था।

यह पुरुष एक गदमीयान्, मुख्याधिकारी, बादशाह के सगे मित्र तथा एक उत्तम राजपूतकुलोत्पन्न थे, इन्हीं कारणे

इनकी मान, मर्यादा, प्रताप और प्रभुत्व सभी अधिकहो रहे थे। इनके प्रभाव और प्रताप को देख नवाब-वजीर अपने जी ही जी में कुढे जाते थे, परन्तु यावत् जहापनाह की कृपादृष्टि और राजनायिल की मैत्री बनी रही, तावत् इन्हें नवाब वजीर की कुछ भी परवाह न थी। अस्तु प्रत्यक्ष में तो वे एक दूसरे के परम मित्र बने रहते थे। बखतावरसिंह और नवाब जब आपस में मिलते, तब बडे प्रेम से मिला करते, झुक २ कर परस्पर सलामें किया करते, एक दूसरे की बगल मे बराबर बैठते और आपस मे एक दूसरे की शुश्रुषा और प्रशसा किया करतेथे। फिर भी नवाब वजीर मुसलमान ही थे और जनरैल साहब हिन्दू ही थे।

लखनऊ मे बादशाह की अनेक कोठिया थीं, उनमें से एक कोठी में एक दिन बैठे हमलोग शिकार और पशुयुद्ध के तमाशे देख रहे थे। एव पशुओं की लडाई, चीर फाड, हार जीत, झपटा झपटी, भागाभाग देखते २ ऊब गए और हमलोग एक दूसरेकमरे में, जो ठीक रमने के सामने बना हुआ था, जा बैठे। तमाशे देखते २ जी घबरा उठा था, इसलिये हम सभो ने अपने मन प्रफुल्लित करने के लिये दो एक घूट बरफ से ठढी की हुई शराब से अपने गले हरे किये और दो एक बिस्कुट खाये। बादशाह सलामत भी प्रसन्न मन बैठे खिलखिला रहे थे और बखतावरसिंह भी चुहुलबाजी मे दत्तचित्त होकर हँसते हँसाते और जहापनाह का जी बहलाने मे तत्पर थे।

अब वहा से उठने का वक्त आ चुका था, क्योंकि रात्रि के ब्यालू का समय समीप आ रहा था, यद्यपि अभी कुछ दिन का

शेष था। जलूस के सवारो और चोवदारो की पुकार हो चुकी थी, वाडी गार्ड के कप्तान ने सबको एकत्रित कर लिया था, और इसकी सूचना भी आ चुकी थी। बादशाह सलामत मेज पर से उठे, ये इस समय अङ्गरेजी कपडे पहिने थे और अपनी अङ्गरेजी टोपी के अन्दर हाथ डाले उसे नचा रहे थे, कभी२ ऊचा हाथ करके भी अपनी टोपी को चक्कर दे दिया करते थे। यहा तक तो सब बातें ठीक२ थीं, कोई बात गडबड की नहीं पाई जाती थी। इसी भांति हँसते खेलते हमलोग कई बेर पहले भी रह चुके थे। बादशाह की सर्वदा से यह एक आदत थी कि जब वे अपनी मौज में रहते, तो प्राय अपनी अङ्गरेजी टोपी को अपनी उङ्गली पर नचाया करते थे। बादशाह आगे आगे आ रहे थे और उनसे दो तीन ही कदम पीछे मेरे ही साथ२ राजा बख्तावरसिंह भी चले जाते थे। हमलोग मिले जुले (बादशाह की यही आज्ञा थी कि ऐसे अवसरो मे आगे पीछे पर ध्यान न दिया जाय, किन्तु समान ही भाव बरता जाय) द्वार तक पहुच चुके थे।

सब लोग चुपचाप चले आ रहे थे कि टोपी नचाते नचाते बादशाह की उङ्गली उसमें घुस कर बाहर की ओर निकल पड़ी। यद्यपि बादशाह विशेष कर उत्तमोत्तम वस्त्र धारण किया करते थे, तथापि यह टोपी स्यात सामान्य ही बाजारू रही हो अथवा विशेष नचाने से उसके भीतर का वस्त्र रगड से घिस कर फट गया हो। चाहे जो कारण हो, बादशाह की उङ्गली उसके पार हो गई, इस पर वे हँस पडे और हमलोगो की ओर देखने लगे कि जिसमें हम सब भी हँस दें। हम सब तो हँ

लिए थे ही, अपना कर्त्तव्य जान कुछ मुस्करा दिए। कहीं भावी वश हँसी२ में बखतावरसिंह के मुह से निकल पड़ा, "हुजूर के ताज में छेद।"

बस हँसी हँसी में इतनीही बात बेसमझे बूझे उनके मुह से हठात निकल पड़ी। इतना कहना था कि दुर्भाग्यवश बादशाह को यह बात बहुत बुरी लगी, क्योंकि उनके पिता और बहुत लोग इनके राज्य पाने के विरोधी थे और वे चाहते थे कि इन्हे राजगद्दी न मिले, क्योंकि इन्ही के भाई को वे लोग गद्दी पर बैठाना चाहते थे, अत राजगद्दी और तत्सम्बन्धी ताज के विषय मे किसी प्रकार का कुवाच्य यह नहीं सह सकते थे। यदि कम्पनी बहादुर और रेजीडेंट इनके मध्यस्थ न होते, तो इन्हें कदापि यह गद्दी प्राप्त न होती। यही हँसी की बात, यदि किसी अन्यान्य अवसर पर, अथवा किसी भिन्न रीति से,कही जाती, तो बादशाह कभी उसरे बुरा न मानते। परन्तु "होनहार नहि मिटे, करे कोई लाखो चतुराई।"

बस बादशाह के कान में इन शब्दों का पड़ना था कि उन का तेवर बदल गया, चेहरा लाल हो गया। इसी के क्षण मात्र पूर्व इनके मुखारविन्द से जो प्रसन्नता के मेघ वर्ष रहे थे,वे सब आंधी में उड़ कर अदृश्य हो गए, मारे रोष और क्रोध के मुह झँवरा गया और दोनो नेत्र रक्तवर्ण हो गए। इस समय मैही उनके समीप था, उन नीली पीली आखो से मेरी ओर देख कर वे बोले,"इस विश्वासघाती और कृतिघ्न की बातें तुमने सुनी?" बादशाह का यह स्वभाव था कि जब प्रसन्न होते तब भी असीम और जो क्रोध करते तो उसका भी अन्त न लगता।

मैंने उत्तर दिया, "जी हुज़ूर ।" मैं इतना ही कहने पाया था कि बादशाह ने बाडीगार्ड के कप्तान को बुला कर कहा—"इसे बाँध कर अभी पहरे में करो।" फिर रौशनुद्दौला नवाब वजीर की ओर देख कर बोले, "रौशन! जाओ इसका सिर कुचवा दो।"

हा! यह कैसा त्रास का समय था! बादशाह को इस बात का पूरा अधिकार था कि कम्पनी के नौकरों के अतिरिक्त अपनी प्रजा को जैसे चाहें प्राणदण्ड दें, इसमें कोई रोक टोक न कर सकता था। इनका यह भी स्वभाव था कि यदि कोई उनका क्रोध शान्त करना चाहता, तो वह और भी बढ़ जाता था। बाडीगार्ड का कप्तान (जो एक अङ्गरेज था) और नवाब वजीर दोनों के दोनों बख्तावरसिंह की ओर बढ़े, जो सिर झुकाए हाथ पर हाथ धरे चुपचाप सन्नाटे में खड़ा था और एक शब्द भी उसने मुँह से न निकाला।

उसके समीप जाकर नवाब-वजीर ने कहा, "जहाँपनाह की आज्ञापालन करना हमारा और तुम्हारा कर्तव्य है।" नवाब-वजीर यद्यपि देखने में तो मिन घना हुआ था, तथापि इस कार्य के करने में उसे कुछ भी सकोच न हुआ।

देशी रियासतों में जहाँ के राजा स्वतन्त्र और नियमरहित हैं, वहाँ के दरबारियों के बिगड़ने और बनने का अवसर नित्य ही हुआ करता है, अतः दरबारियों को ऐसे घटनाओं के देखने में विस्मय या हर्ष नहीं होता और वे इसे एक राज्य व्यवहार मात्र समझा करते हैं। 'या तो हाथी पाइया, या तो हाथीपाँव' कहावत स्वच्छन्द राजदर्बार के लिये बहुत ठीक कही गई है

तदनन्तर कप्तान बोला, "बखतावरसिंह मेरा कैदी है" और वह उसका हाथ पकड़ कर ले चला। चलती समय कप्तान हमलोगो की ओर ऐसी दृष्टि से ताका कि जिससे यह आशय निकलता था—"इस विचारे के बचाने के लिये जहा तक बन पड़े, हमलोग कुछ करें और जहातक हो सकेगा वह भी इसका उद्योग करेगा।"

जब बखतावरसिंह सामने से चला गया, तब बादशाह ने क्रोध मे आ अपनी टोपी पृथ्वी पर पटक दी और उसे लातो से कुचल डाला। अब तक इनका क्रोध प्रज्वलित अग्नि के समान भड़क रहा था। जो कुछ मैं लिख गया हू यह एक क्षण मात्र का कृत्य था।

फिर अपनी नीली पीली आखो से मेरी ओर देख कर बादशाह पूछने लगे, "अगर इङ्गलिस्तान के बादशाह से कोई इस प्रकार कुभाषा बोलता, तो वह क्या करते?" यो पूछते जाते थे और क्रोध से भरे पृथ्वी पर अपने पैर पटकते जाते थे।

मैंने निवेदन किया, "वे भी इसी तरह उसे गिरफ़ार करवा कर भिजवा देते, जैसे हुजूर ने किया है और फिर तह-कीकात करने के पश्चात् जैसा उचित समझा जाता, उसे सजा दी जाती।"

बादशाह। (द्वार तक पहुचते २ अपनी पहिली आज्ञा भूल कर) "मैं भी ऐसाही करूगा।"

मैंने झुक कर सलाम किया और पूछा, "हुजूर के आज्ञा की सूचना रोशनुद्दौला को दे दू?" इतना कह कर मैं आगे को लपक गया।

वे लोग घोड़ो पर सवार होकर जा ही रहे थे, आगे आगे कप्तान साहब, उनके पीछे दो सवारो के मध्य में बख़्तावरसिंह और सब के पीछे रौशनुद्दौला था। मैंने कुछ दूरही से पुकार कर बादशाह की पिछली आज्ञा उन्हें सुना दी। मेरे इस सूचना देने पर, यद्यपि रौशनुद्दौला जी से तो कुछ कुढ गया, तथापि लोगो को सुनाने के लिये वो बोला—"जहांपनाह से हमाही की आशा थी।" इधर उधर अनेक लोग खड़े थे, उन सभी को सुनाने ही मात्र के लिये रौशनुद्दौला ने इतना कहा। बख़्तावरसिंह ने भी मेरा सन्देसा सुन और समझ लिया होगा, क्योंकि मैंने हिन्दी ही भाषा मे ज़ोर से पुकार कर कहा था कि जिससे वह भी भली भांति सुन ले, परन्तु उसने घूम कर देखा तक भी नहीं। दरबारी लोग प्राय ऐसी बातो का बड़ा ही बचाव रखते और सब तरह से सावधान रहा करते हैं।

बादशाह सलामत जब हाथी पर सवार होने लगे, तब अपने मित्र नापिल से बोले,—"बख़्तावरसिंह को ज़रूर प्राण दण्ड की सजा दी जायगी।" भला फिर किसकी सामर्थ्य थी जो कहता कि ऐसा न होना चाहिये। हमलोगो (अङ्गरेज बहुवरे) को विश्वास था कि यदि रेजिडेण्ट साहब चाहेंगे, तो उस दीन की जान बच जायगी, उसकी जायदाद चाहे न बचे।

इस रमने से, जहां की यह घटना है, गोमती तक कुछ ही मीलो की दूरी है। हमारे घोड़े, हाथी आदि एक नाव के पुल पर से जो बड़ा पटैला सा था, पार होकर लखनऊ पहुंच गए। यह पुल प्रायः बादशाह की सवारी ही के उतरने के हेतु बनाया गया था, जो इस किनारे या उस किनारे लगा रहता था। जो

पटैला देखने में ते। भद्दा सा था, परन्तु बादशाह केही जाने के लिये था, इस हेतु इसकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। सामान्य लोगों के लिये एक दूसरा पुल बँधा रहता था। यह भी देखने में बड़ा भद्दा था, परन्तु लोगों को उस पर से आने जाने में बड़ा सुबीता रहता था, केवल मध्यान्ह में उसके बीच के दो एक डोंगे घंटे दो घंटे के लिये हटा दिये जाते थे, जिसमें व्यापारियों के माल की जाने आनेवाली नावें निकल आया करें।

महल मे पहुंच कर बादशाह शान्त होगए और उनका वह क्रोध धीमा पड़ गया। हमलोगों के जी में लगी थी कि देखें बखतावरसिंह के विषय में अब बादशाह क्या करते हैं? हमलोगों से न रहा गया और चलती समय एक प्रभावशाली अनुचर ने अवसर पाकर यही बात छेड़ही तो दी।

बादशाह बोले, "जब तक बखूबी तहकीकात न हो लेगी, तब तक उसको प्राणदण्ड न दिया जायगा।"

इतना सुनतेही हमलोगों को कुछ ढारस बँध गई, पर तौ भी हमलोगों को इस बात का बड़ाही भय था कि हमलोगों के चले जाने पर बादशाह के हिन्दुस्थानी सेवक न जाने उनके कानों में क्या भरदें। क्योंकि जब कभी किसी धनिक और सम्मानित व्यक्ति का झगड़ा आपड़ता, तो ये लोग प्रायः प्राण वध या धन हरण केही दण्ड की अनुमति दिया करते थे। इसमें भी बहुत कुछ धन और सामग्री हरण होने की आशा थी, अत ये अब भी अपने हाथ रंगने के प्रत्याशी हो रहे थे। इसलिये केवल कप्तान साहबही की योग्यता ऐसी समझी गई कि वे जाकर रेजिडेण्ट साहब को इसकी सूचना दें, यद्यपि रेजिडेंटसाहब

भी विवश थे, क्योंकि उनको इस विषय में न तो कोई अधि कारही था और न कोई ऐसा मार्गही सूझता था कि वे इस बीच में पड सकें। इस झगडे में एक राज्य सेवक पर राज विद्रोह का दूषण लगाया गया था, अत: कम्पनी इस विषय में कुछ रोक टोक नहीं कर सकती थी। जो हो, पर रेजिडेण्ट साहब इस मध्य में अपना बोलना उचित नहीं समझते थे।

घर लौटने के समय हमलोग अभागे बखतावरसिंह से मिलने के लिये गए। वह महल के समीपही एक सडी सी कोठरी में रक्खा गया था, जिसमें पहिले एक नीच जाति का सेवक रहता था। दो हिन्दुस्तानी सन्तरियों का उसपर पहरा था। ऐसे बडे और मान्य व्यक्ति का ऐसे नीच गृह में रक्खा जानाही कैसा भारी दण्ड है? जब हमलोग वहां पहुंचे तो हमने उस दीन और दुखिया की ऐसी शोचनीय और शोकमय दशा देखी कि बस 'त्राहि! त्राहि!' कुछ वर्णन के योग्य न थी।

उस कोठरी में एक खुरहरी और २ छोटे पावों की घटिया सी खटिया बिछी हुई थी। इसपर कोई बिस्तरा क्या कि एक चटाई तक भी न बिछी थी। हमलोगों ने सुना कि यह सब बादशाह कीही आज्ञानुसार किया गया है और नवाब वर्ज़ीर ने कप्तान शाहब को ऐसी ही आज्ञा दी है। इस अपमानित रईस सबकी वस्तुए उतरवा लीगई थीं। इसकी पगडी, ढाल तलवार, पेटी शाली रूमाल, जामा इत्यादि सभी छीन लिये गए थे। यह विचारा केवल एक धोती पहिने हुए एक दुष्ट सेवक के भाईं उस घुनवेवाल खाट पर नग्न देह से पड़ा था।

जब हमलोगों ने उससे बातचीत की, तब वह बोला,

कुछ मैंने कहा था वह केवल हँसी ठट्टे में कह दिया था, विना कुछ आगा पीछा सोचे विचारे मेरे मुंह से यह बात निकल पड़ी। बादशाह सलामत इस बात को भी भलीभांति जानते हैं कि जब उनके मान्यवर पिता और कुटुम्ब के लोगो ने उनके राज गद्दी होने पर विरोध किया था, तब भी मैं न तो उनका साथी था और न मैंने उस विषय में कोई सम्मति ही दी थी। साहवो! मुझे तो मरना ही बदा है और अब मेरी जान अवश्य ही जायगी, क्योंकि रैाशनुद्दौला मेरा शुभचिंतक नहीं है, परन्तु आप लोगो से मेरी प्रार्थना है कि आप मेरे कुटुम्ब तथा वंश को अपमानित होने से बचावें। यदि आप लोग रेजिडेण्ट साहव से निवेदन कर प्रार्थना पूर्वक कहेंगे तो वे अवश्य उन्हें इस आपत्ति से बचा लेंगे। मैं मरूँ हूं, मैं सब दु ख को सह लूंगा, मृत्यु का कष्ट भी झेल लूगा, पर—हाय! मेरी स्त्री, बच्चे और वृद्ध पिता जी की, जो बिस्तरे पर से उठ बैठ भी नहीं सकते, क्या दशा होगी? हा! मेरी स्त्री, जिसने अपने कुटुम्बी जनो के सिवाय किसी परपुरुष का मुखावलोकन भी अवतक नहीं किया—मेरे बच्चे, जो अभी तक अज्ञान बालक हैं—मेरे मान्यवर वृद्ध पिता जो पूरे असमर्थ हैं—इन सभो की मेरे मरने के पश्चात् क्या गति होगी और ये सब क्या करेंगे? इसी चिन्ता से मेरा हृदय व्यग्र हो रहा है। हे मेरे दयालू और करुणाशील साहवो! आप लोग कृपा कर मुझे इतना वचन दीजिये कि इन निरपराधियो की रक्षा में आप लोग अवश्य ही उद्योग करेंगे।"

उसके ऐसे करुणात्मक वचन सुन हमलोगो ने उसे पूर्णतया विश्वास दिलाया कि नि सन्देह जो कुछ हमलोगो से होना

सभव है उसे हम उठा न रक्खेंगे। सन्ताप और खेद के कारण जितने शब्द उसके मुख से निकलते थे, सभी करुणा से भरे होते थे। हा! यह भी कैसा हृदयविदारक दृश्य था? यद्यपि देशी राज्यो के छिछोरपन, निष्ठुरता और अन्याययुक्त कार्य्यों को देखते२ हमलोगो के हृदय वज्रवत् दृढ हो गये थे, तथापि इस दीन की करुणामय वाणी सुन कर हमारे आसू टपक पडे और रोमाच होआया।

वह पुन कहने लगा, "सब तो छिन गया, अब मेरे पास यह एक रत्न मात्र शेष रहगया है।" यह एक अनमोल पन्ने की अँगूठी थी, जिसे वह सर्वदा अपनी उँगली में पहिने रहता था। इस अँगूठी को उतार उसने हममें से एक सम्प्रतिष्ठ अङ्गरेज अनु चर के हाथ में पहना दिया और कहा, "यदि मेरे वशज धन हीन होजायँ, मेरा सपूर्ण धन हर लिया जाय और किसी प्रकार से उनके प्राण बच जाय, तो उनके खाने पीने के लिए इसे बेच डालना। परन्तु हे कृपासिन्धु! मेरी फिर भी यही प्रार्थना है कि यथासाध्य उन निरपराधी और निरावलम्ब जनो को अपमान और दुर्दशा से रक्षा करने में आप लोग उद्यम करना. वे सब आपको हृदय से धन्यवाद देंगे और आशीर्वाद करेंगे।"

हमलोग उसके समीप चिरकाल तक नहीं ठहर सकते थे। हमलोगो ने उसे सब तरह ढाढस दिलाई और कहा कि जहा तक हमारा वश है, हम अपने वचन पालन करने में कुछ भी उठा न रक्खेंगे। जब हमलोग विदा हुए, तब वह सतोषयुक्त अपने जीवन से हाथ धोए हुए, चुपचाप बैठा था और अपने बचने की उसे जरा भर भी आशा नहीं थी। क्योकि बादशाह

आज्ञा वह अपने कानों स्वय सुन चुका था और यह समझता था कि अब जो विलम्ब हो रहा है,वह केवल उसे सताने और यातना करने के अभिप्राय से है। वह मरने पर प्रस्तुत बैठा था और खेदित तथा पीड़ित हो सिर हिला हिला कर कहता था, "मैं बादशाह की प्रकृति को प्राय आपलोगों से कुछ अधिक जानता हू ?" कारण यह कि इससे भी अल्प अपराधो पर अनेक व्यक्तियो को इससे भी कठोर दण्ड पाते वह अपनी आखो से देख चुका था।

आज ही सन्ध्या के समय बखतावरसिंह के मामले का विचार होनेवाला था और तदनन्तर हमलोगों को बादशाह के साथ भोजन पर भी बैठना था। इस बीच में हमलोग अपने २ घर चले गए पर हमलोगों के मन उदास और शोचमय थे,तथा यही दृश्य आखों के सामने घूम रहा था।

सन्ध्या समय हमलोग महल में गए, तो एक कमरे में कप्तान साहब से भेंट हुई और रेजिडेण्ट से मिल कर जो कुछ बातचीत हुई थी उसे उन्होंने हमलोगों को सुनाया और कहने लगे "ईश्वर जाने इसका क्या परिणाम होना है। मैं तो ईश्वर से यही प्रार्थना करता हू कि मै इस काम पर न होता, किन्तु मुझसे कोई दूसरा काम लिया जाता, तो उत्तम था। आपलोगों ने कुछ और भी सुना?आज बखतावरसिंह का बूढा बाप,बीबी और बच्चे सभी पकड़ कर उसी कोठरी में लाकर बैठाये गए हैं।" बादशाह के एक खवास से मालूम हुआ है कि अभी आध घटे पीछे हमारी बुलाहट होगी। यह सुन हमलोगों ने आपस में सम्मति की कि अब चल कर उसके कुटुम्ब की भी दशा देख आवें,

सम्भव है उसे हम उठा न रक्खेंगे। सन्ताप और खेद के कारण जितने शब्द उसके मुख से निकलते थे, सभी करुणा से भरे होते थे। हा! यह भी कैसा हृदयविदारक दृश्य था? यद्यपि देशी राज्यों के छिछोरपन, निष्ठुरता और अन्याययुक्त कार्य्यों को देखते २ हमलोगों के हृदय वज्रवत् दृढ हो गये थे, तथापि इस दीन की करुणामय वाणी सुन कर हमारे आंसू टपक पड़े और रोमांच होआया।

वह पुनः कहने लगा, "सब तो छिन गया, अब मेरे पास यह एक रत्न मात्र शेष रहगया है।" यह एक अनमोल पन्ने की अँगूठी थी, जिसे वह सर्वदा अपनी उँगली में पहिने रहता था इस अँगूठी को उतार उसने हममें से एक सम्प्रतिष्ठ अङ्गरेज बहादुर के हाथ मे पहना दिया और कहा, "यदि मेरे वंशज धन हीन होजायँ, मेरा सम्पूर्ण धन हर लिया जाय और किसी प्रकार से उनके प्राण बच जाय, तो उनके खाने पीने के लिए इसे बेच डालना। परन्तु हे कृपासिन्धु! मेरी फिर भी यही प्रार्थना है कि यथासाध्य उन निरपराधी और निरावलम्ब जनों को अपमान और दुर्दशा से रक्षा करने में आप लोग उद्यम करना, वे सब आपको हृदय से धन्यवाद देंगे और आशीर्वाद करेंगे।"

हमलोग उसके समीप चिरकाल तक नहीं ठहर सकते थे। हमलोगों ने उसे सब तरह ढाढस दिलाई और कहा कि जब तक हमारा वश है, हम अपने वचन पालन करने में कुछ भी कसर न रक्खेंगे। जब हमलोग विदा हुए, तब वह सन्तोषयुक्त अपने जीवन से हाथ धोए हुए, चुपचाप बैठा था और अपने बचने की उसे ज़रा भर भी आशा नहीं थी। क्योंकि बादशाह

आज्ञा वह अपने कानो स्वय सुन चुका था और यह समझता था कि अब जो विलम्ब हो रहा है, वह केवल उसे सताने और यातना करने के अभिप्राय से है। वह मरने पर प्रस्तुत बैठा था और खेदित तथा पीड़ित हो सिर हिला हिला कर कहता था, "मैं बादशाह की प्रकृति को प्राय आपलोगो से कुछ अधिक जानता हू?" कारण यह कि इससे भी अल्प अपराधो पर अनेक व्यक्तिया को इससे भी कठोर दण्ड पाते वह अपनी आखो से देख चुका था।

आज ही सन्ध्या के समय बखतावरसिंह के मामले का विचार होनेवाला था और तदनन्तर हमलोगो को बादशाह के साथ भोजन पर भी बैठना था। इस बीच में हमलोग अपने २ घर चले गए पर हमलोगो के मन उदास और शोकमय थे, तथा यही दृश्य आखो के सामने घूम रहा था।

सन्ध्या समय हमलोग महल मे गए, तो एक कमरे में कप्तान साहब से भेंट हुई और रेजिडेण्ट से मिल कर जो कुछ बातचीत हुई थी उसे उन्होने हमलोगो को सुनाया और कहने लगे "ईश्वर जाने इसका क्या परिणाम होना है। मै तो ईश्वर से यही प्रार्थना करता हू कि मैं इस काम पर न होता, किन्तु मुझसे कोई दूसरा काम लिया जाता, तो उत्तम था। आपलोगो ने कुछ और भी सुना? आज बखतावरसिंह का बूढा बाप, बीबी और बच्चे सभी पकड़ कर उसी कोठरी में लाकर बैठाये गए हैं।" बादशाह के एक खवास से मालूम हुआ है कि अभी आध घटे पीछे हमारी बुलाहट होगी। यह सुन हमलोगो ने आपस मे सम्मति की कि अब चल कर उसके कुटुम्ब की भी दशा देख आवे,

और उसे ढाढस भी देआवें कि रेज़िडेण्ट साहब अवश्य ही उन सभों को बचा लेंगे। इस समय हमलोगों का उस दु:खद स्थान पर जाकर उसको कुटुम्ब सहित देखना कौतुकार्थ न था, किन्तु उसपर करुणार्द्र होकर हम गए थे।

मैंने अपने जीवन के नाट्य पटल में अनेक हृदयवेधी घटनाएं देखीं, परन्तु ऐसा कोई दृश्य नहीं स्मरण आता कि जिसे देख कर मेरा हृदय इतना सतप्त हुआ हो, जितना इन अभागे स्त्री और बच्चों की दुर्दशा देख कर मेरा कलेजा फटा जा रहा था। इन सभों के साथ भी वही बर्ताव किया गया था, जो बखता वरसिंह के साथ किया गया था, अर्थात इनके भी वस्त्राभूषण उतरवा लिये गए थे और उन्हें केवल एक एक मोटी धोती पहिना दी गई थी। ये सब एक दूसरे से सटे और सिर झुकाये हुए मरने पर प्रस्तुत बैठे थे। उस बुड्ढे की यह अवस्था थी कि उसके सपूर्ण शरीर में झुर्रियां पडी थीं, हड्डी २ अलग निकली हुई थी और वह बिचारा बैठा बिलबिला कर रो रहा था। यह दीन बुड्ढा कुछ अपने मरने के शोच में नहीं रोता था, किन्तु अपने पुत्र और उसके स्त्रियों तथा सन्तानों के लिये फूट्टे फाड़ कर विलाप कर रहा था। युवा और कोमलांगी स्त्रियां जो बडे सुख से पली थीं, जिन्होंने परपुरुष के कभी मुख भी न देखे थे और न उन्हीं का मुख इसके पूर्व तक किसीने देखा था, वे सब वहां सकुचित तथा परस्पर सटी हुईं, सिर झुकाये अपने बालकों को गोदी में लिये दबकी बैठी थीं और उजड्ड तिलंगे जो खडे पहरा दे रहे थे, अथवा वहां बैठे थे, उनपर आवाजें कस कस कर उन्हें घूर रहे थे। एक स्त्री अपने बच्चे को छाती

लगाये ऐसी बैठी थी, माना इस आपत्तियों में भी वह मातृस्नेह का उदाहरण दरशा रही थी। एव एक श्रीर स्त्री सिर झुकाये उदास चित्त श्रीर मलीनवदन और दु खपूर्ण सती बैठी थी। इनके अङ्ग प्रत्यङ्ग का सुढाल सैादर्य्य स्यात् किसी चित्रकार के हृदय मे कभी ही उपजा होगा, इनका चम्पकवर्ण तथा गेहुवा रङ्ग मन को हरण करे लेता था, श्रीर उनके भ्रमरवत काले और कुचित केश दर्शको के मन को लपेटे लेते थे। यद्यपि उन्होने शोकाकुल हो जान बूझ कर अपने केशे को इस भाति छितरा दिये थे कि जिससे उनके मुख और स्कन्ध छिपे रहें, तथापि उनका सैादर्य्य और भी बढ गया था।

जब इन विपदग्रस्तो को विदित हुआ कि हमलोग वखतावरसिंह के मित्र हैं और उनको दिलासा देने आये हैं, तब उनका भय दूर हुआ, जो कि हमारे आने पर उन लोगो के जी में समा गया था श्रीर जिसके कारण से वे आपस में श्रीर भी चिमटी जाती थीं, श्रीर अब उनके हृदय में हमलोगो के गुणानुवाद का प्रादुर्भाव होने लगा। वे स्त्रिया श्रीर छोटे छोटे बच्चे हमारे पैरो पर गिर श्रीर रो रो कर गिडगिडाते श्रीर उस राज्यापराधी की रक्षा के निमित्त हमसे दीन हो विनती करते थे। हमलोगो के आगे उनका भूमि पर गिर कर घिघियाना तथा भय श्रीर करुणा पूर्ण हो विलाप करना, यह एक ऐसा दु खद दृश्य हमलोगो के नेत्रगोचर हुआ कि जिसे देख आप से आप कलेजा टुकडे२ हुआ जाता था श्रीर उनपर अत्यन्तही करुणा उत्पन्न होती थी। ये सब अपनी रक्षार्थ नही रोते चिल्लाते थे, किन्तु उसी व्यक्ति की रक्षा चाहते थे, जिसके दैवात

एक वेसमझे बूझे शब्द कहने पर यह आपत्ति आई थी, जिस कारण वे सब भी विपत्ति मे पड गए थे। सच तो यो है कि यदि भारतवर्ष की रक्षा हुई है या हो सकती है, तो केवल यहा को स्त्रियो के सुचरित्र, पातिव्रत धर्महो के प्रताप से, क्योकि यहा की स्त्रियो से अधिकतर भूमण्डल भर में किसी सभ्य देश की स्त्रि जाति में भी इतना सुचरित्र, इतनो धर्म्मनिष्ठा, ऐसा पतिव्रत्य, यह कुलीनता, ऐसी निर्दोपता कदापि नहीं पाई जाती। योरोपवासीयो को प्राय नीच जाति की स्त्रियो से व्यवहार करना पडता है और वे तद्वत् सभी को समझ लेते हैं, परन्तु उनका यह अनुमान वैसा ही भ्रम मूलक है, जैसे कोई विदेशी यात्री इङ्गलिस्तान की सडको पर गैस के प्रज्वलित प्रकाश में भडकीले वस्त्र पहिने व्यभिचारिणी स्त्रियो को इधर उधर विचरते देखकर वहा की सम्पूर्ण स्त्रियो को वैसाही जान ले।

हमलोगो ने उन दु खित स्त्री, बालक और बुड्ढे की प्रार्थना को स्वीकार किया, तथा उनको संतोष और ढारस देकर विश्वास दिलाया। हमको कुछ धैर्य्य भी होगया था, क्योंकि रेजिडेण्ट साहब ने नवाब वजीर को बुलवा भेजा था और यह भी कहला भेजा था कि यदि कोई दोषी है तो बखतावरसिंह है, उसके कुटुम्बियो ने क्या अपराध किया? उन सभो को प्राणदण्ड या उनकी यातना करना सर्वथा अनुचित है, ऐसा कदापि न होना चाहिए। यद्यपि कम्पनी बहादुर बादशाह को किसीको प्राणदण्ड देने पर नहीं रोक सकती, तथापि निरपराधी स्त्री और बालको को मरवा देने में कदापि अनुमति नहीं देती। इस

की यदि इङ्गलिस्तान में खबर पहुची, तो वे लोग क्या कहेंगे? यह कम्पनी के लिये एक बड़ी अपमान की बात होगी।

बखतावरसिंह के पास चिरकाल तक ठहरने का अवसर न था, क्योंकि यदि हमलोग बादशाह सलामत के समय पर हाजिर न होते और उनको यह ज्ञात होजाता कि हम सब राज्यविद्रोही के पास मिलने गए थे, तो उनके क्रोध की सीमा न रहती और वे हमसे भी बिगड़ जाते। अतएव हमलोग शीघ्रही महल को चल दिये कि वहा पहुचकर इन लोगों की मुक्ति का कोई उपाय करें।

बखतावरसिंह के बालबच्चो के विषय में रेजिडेण्ट साहब के पक्ष लेने से बखतावरसिंह के बच जाने की भी कुछ आशा होगई थी। रेजिडेंट साहब ने नवाब-वजीर से स्पष्ट कह दिया था कि यदि बखतावरसिंह के कुटुम्बियो का बालभी बाका हुआ, तो कम्पनी उन्हीं को इसका उत्तरदाता समझेगी, इसलिये वह अत्यन्त डरा हुआ था। नवाब वजीर अथवा नाबिल भली भांति जानते थे कि रेजिडेंट से बिगाड़ कर लेना उनके लिये भला न होगा। सन्ध्या समय जब हम सब इकट्ठे हुए, तब सब ने मिलकर बादशाह से जी खोल कर उसके लिये क्षमा प्रार्थना की। निदान बादशाह ने थक कर कहा, "अच्छा, उस नमक-हराम की जाबख्शी हो, लेकिन उसकी जागीर और जायदाद सब जब्त होजाय और एक पिंजरे में बन्द करके वह लखनऊ से बाहर निकाल दिया जाय।"

यह आज्ञा दी और नवाब वजीर को यह काम सपुर्द किया गया। इसी अवसर पर अवध के उत्तरी देश का एक मुसल्मान सरदार लखनऊ में आया हुआ था और वह सबेरेही अपने देश

को जाने वाला भी था। यह विचार ठहरा कि बखतावरसिंह को कैद करके इसीके साथ लखनऊ के बाहर भेज दिया जाय, परन्तु इतने पर भी बादशाह सन्तुष्ट न हुए और बोले, 'उसकी ऐसी बे इज्जती होना चाहिये, जैसी आज तक किसी राजा की न हुई हो। उसकी पगड़ी, कपड़े, तलवार और पिस्तौल सब लेआओ।'

बादशाह की आज्ञानुसार ये सब वस्तुएं सम्मुख आईं। हिन्दुओं का ऐसा विश्वास है कि किसीकी पगड़ी का अपमान करना स्वत उस व्यक्ति के अपमान केही तुल्य है। अस्तु एक मेहतर बुलवाया गया और वहीं हमलोगों के सम्मुख तत्काल उस मेहतर ने प्रसन्नतापूर्वक उस पगड़ी को भ्रष्ट कर दिया, तब बादशाह का हृदय शीतल हुआ। मेहतर का प्रसन्नतापूर्वक इस कार्य्य को करने में यह कारण था कि उसकी छुई हुई वस्तु को फिर कोई न लेता, किन्तु वह उसीको मिल जाती थी, जिसे फिर धोकर सुखा लेने के पश्चात् वह प्राय त्योहारों के दिनोंमें अपने और अपनी स्त्री के पहिनने के काम में लाया करता था।

फिर तलवार लाई गई, जिसे एक बराबा लोहार ने तोड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला। अब तपचा आया और लोहार उसे भी हथौड़ा मार कर तोड़नाही चाहता था कि उसे यह ध्यान हुआ कि स्यात् तपचा भरा हुआ न हो और जो देखा तो वस्तुत भराही पाया, तब वह रुक गया। कहीं बादशाह की भी दृष्टि उसके रुकने पर जा पड़ी और वे उसका कारण भी न समझ गए। बादशाह ने क्रुध होकर पूछा, 'क्या वह भरा हुआ है?'

एक आपदा से छुट्टी नहीं पाई थी कि दूसरे ने आ घेरा। देखिये किस्मत क्या गुल खिलाती है।

पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुरप्रसाद खत्री
मु० सिद्धेश्वरी—बनारस सिटी।

लखनऊ के शाही महलात।

ठाकुरप्रसाद खत्री,

पदार्थ विज्ञानकोष, रासायनिककोष, भुगर्भ विद्या, ज्योतिषप्रबन्ध,
हमारी प्राचीन ज्योतिष, इत्यादि के
ग्रन्थकर्ता।

प्रथम बार १०००] [मूल्य प्रथम खंड ।॥)

Printed at the L. P. Kashi—1906
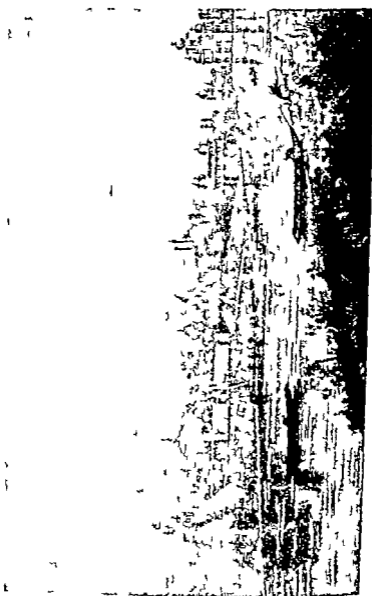
'शाह नजफ' 'इमाम बाड़ा' और शाही महलात के दृश्य।

लोहार। 'हुज़ूर क्षमा करें तो कहू, दोनो नाले भरी हैं।'

बादशाह। (हमलोगो की ओर देखकर गुस्से से) "या हैदर! क्या मैंने पहिले ही नहीं कहा था कि यह शख्स बड़ा भारी राजद्रोही है? अब आपलोग बताइये कि क्या कहते हैं? आपलोगो ने सुना? पिस्तौल की दोनो नालें भरी हैं। क्या यह पहिले से बिना कुछ समझे ही भरी गई थी?"

मास्टर साहब। (जी कड़ा करके) "हुज़ूर! जनरल का तो यह धर्म ही है कि जहांपनाह की रक्षा के लिये हमेशा पिस्तौल भरी हुई तैयार रक्खे?"

बादशाह। "ओफ! आप ऐसा कहते हैं! तब तो कसम खुदा की और लोगो की भी सलाह लेनी पड़ी कि क्या यह सचमुच उनका कर्तव्य ही था? अच्छा कप्तान को बुलाओ।

अब उस दिन फिर बखतावरसिह के प्राणो की रक्षा तराजू के कांटे की तौल पर आ लगी कि जो तनिक भी फूक से भी इधर उधर डोल जाय। हमलोगो को इस बात की कठोर आज्ञा हो चुकी थी कि हम किसी प्रकार बातों वा संकेत से कप्तान को इसका मर्म न जता दें। हमको यद्यपि इस बात का विश्वास था कि कप्तान भी हमारे ही समान बखतावरसिह का शुभचिन्तक है, तथापि हमें यह भय लग रहा था कि यदि एक शब्द भी उलटा पुलटा उसके मुह से निकल गया, तो फिर अभागे अपराधी की कुशल नहीं है। इतनेही मे कप्तान आ पहुचा और बादशाह को सलाम कर उनके सामने आ खड़ा हुआ।

बादशाह। "भला, कप्तान यह तो बताओ कि कि क्या

राजा वखतावरसिंह, अ', अब तो वह राजा और सिंह नहीं रहा, वखतावर का भरी पिस्तौल रखना वाजिब था या खाली?

बस इसीके उत्तर पर अपराधी का मरन जीवन निर्भर था। हमलोग भी नि स्वास चुपचाप वैठे थे, परन्तु यहा लोहार को खडे और मेज पर पिस्तौल धरी हुई देख कर, तथा बाद शाह के इस पूछने और हमलोगो के उत्कठित भाव को दे कर, उसने भी ताड लिया कि यह क्या बात है।

कप्तान। "वेशक हुजूर। कमानियर और जेनरल का या कर्तव्य है कि अपने मालिक की रक्षा के लिये हमेशा भरी हु पिस्तौल पास रक्खे, क्योंकि न मालूम कब उसकी जरूरत प जाय, उस वक्त खाली पिस्तौल किस काम आवेगी?"

बादशाह। (अपनी बात को कटी देख कर) "अच्छा, इं छोड कर तोड डालो और टुकडे २ करके फेंक दो?"

तदनन्तर नियमानुसार भोजन आया, फलो के अच्छे हु होने पर तर्कवितर्क होते रहे, भलीभाति मद्यपान होता रह एव सभी कृत्य नित्य नियमानुसार होते रहे, पर उन विचा दीन दुखियो पर किसीका भी ध्यान न था, जो समीप ही ए कोठरी में बन्द पडे हुए थे। उनके विषय में किसीने जिज्ञा सक न की। बादशाह सलामत अपने मद्य की धुमकी ल और तमाशे देख देख कर हँस रहे थे। वही हँसी ठठे, व मसखरापन, वैसाही छिछोरपन होता रहा, जैसा कि सर्व हुआ करता था।

दूसरे दिन प्रात काल ही रेजिडेंट साहब उन दीन दु खित वखतावरसिंह से मिलने आये और उनको ढारस

कि वह उनकाही पन लेंगे और उनकी अधिक दुर्गति न होने देंगे। बड़े साहब को उन लोगो ने बड़े बड़े आशीर्वाद दिए, जहां तक कि वे उपकाराहृ स्त्रिया और लड़के दे सकते थे। इन के वहा जाने से, उन सभो के प्राण में प्राण आगए और उन्हें यह सहारा होगया कि उनकी रक्षा करनेवाला सहायक भी कोई है।

दूसरे दिन पूर्वोक्त उत्तरदेशीय नवाब के साथ बखतावरसिंह अपने कुटुम्ब के सहित एक बन्दी (क़ैदी) के समान विदा कर दिया गया। बखतावरसिंह तो एक पिंजरे में बन्द था और कुछ विशेष यातना भी उसे दी जाती थी, परन्तु उसके बालबच्चों के साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया गया। हिन्दुस्तानियों पर रेजिडेण्ट का हस्तक्षेप तो मानो जादू कासा काम कर जाता था। धनी, दरिद्र, राजा, बाबू, सिपाही इत्यादि सभी कम्पनी बहादुर और उनके प्रतिनिधि रेजिडेण्ट से डरते ही रहते थे। इन सभो को कम्पनी बहादुर का वैसाही भय था, जैसा कि किसी व्यक्ति को देवता वा दानव का भय हो। मूर्ख वा अज्ञानी हिन्दुओं के जी मे यही समाया हुआ था कि "कम्पनी बहादुर" कोई अत्यन्त बड़ा, बलवान, सर्वशक्तिसम्पन्न दानव है, जो यद्यपि अतिदूर रहता है, तथापि वह भारतवर्ष की सपूर्ण बातो को देखा करता है? वे लोग यह नहीं जानते थे कि वह कौन है,—कोई उत्तम व्यक्ति है या नीच, देवता है या दानव,—पर तौ भी इतना अवश्य समझते थे कि यह कोई भयानक वस्तु है, जिससे वे सर्वदा भयभीत बने रहते थे।

बखतावरसिंह के चले जाने पर फिर हमको उसकी कोई खबर नहीं मिली केवल इतनीही बात सुनने में आई कि उसके सम्बन्धी लोग उसका पालन कर रहे हैं और जिसके अधिकार में बखतावरसिंह छोड़ा गया था, वह रईस भी कुछ अपनी भलाई सोच कर उसके साथ अच्छा बर्ताव करता है। यह भी सम्भव है कि यहां के धनिकों की नाईं इसने भी अपने धन में से कुछ भाग छिपा कर रख छोड़ा हो और इसकी जायदाद छिन जाने पर भी बहुत कुछ बच रहा हो। इसमें तो सन्देह नहीं कि रौशनुद्दौला ने ढूंढ २ कर और भलीभांति पता लगा लगा कर बखतावरसिंह का सभी धन हर लिया था और बचा सामान नाम मात्र को भी न छोड़ा था, तथापि जब किसी मौके पर उस (बखतावरसिंह) को बादशाही सेवकों और रेजिडेन्ट के नौकरों को घूस देने की आवश्यकता पड़ती, तब उसे यथेष्ट द्रव्य प्राप्त होजाता था।

अब बखतावरसिंह की कहानी पूरी करने के लिये तत्सम्बन्धी सभी बातें यहां लिखे देता हूं और वह यह हैं कि इसी वर्ष में बड़ा भारी काल अवध में पड़ा। चावल के अकाल से सभी अन्न महंगे होगए थे। इसका परिणाम यह हुआ कि चारों ओर हाहाकार मच गई और लखनऊ में तो मानो विपत ही फैल गई। लोगों में यह बात प्रसिद्ध होगई कि बनियों ने जानबूझ कर अन्न मँहगा कर दिया है। इससे लूट मार होने लगी। जब बादशाह सलामत बाहर आते, सभी बनियों के विरुद्ध निवेदनपत्रों की बौछार हौदे पर होने लगती और जब बादशाह घोड़े पर निकलते तो हाथों हाथ पत्र दिये जाते थे।

निदान जब बादशाह दुखी होगए, तब उन्होने बाहर निकलना ही कम कर दिया।

बखतावरसिंह को देश निकाला मिले एक वर्ष होचुका था, पर अब तक लखनऊ मे शान्ति न हुई। अब भी लोग निवेदन पत्र दियेही जाते थे और बादशाह सलामत का इन पत्रो तथा भूखो की लम्बी २ विपत्ति कथा पढते और सुनते नाक मे दम आ गया था। वे ऐसे घबड़ा उठे थे कि उनके समझ मे कुछ नही आता था कि अब क्या करना उचित है।

एक दिन दरबार मे बादशाह ने कहा, 'शहर मे अन्धेर मच रहा है, मैंने अब तक कभी नही सुना था कि लखनऊ में इतने दिनो तक ऐसी आफत और हलचल बनी रही हो।"

इसपर नवाब वजीर ने इसका कारण फसल की कमी बताया।

बादशाह। "वाह! वाह रैाशन, तुम तो खूब बूढी औरतो की तरह पैदावार की कमी का रोना ले बैठे, मैं कहता हू कि जरूर कुछ दाल में काला है। हाल की फस्ल तो अच्छी हुई थी। क्यो मास्टर साहब! तुम्हारी समझ में क्या आता है?"

मास्टर। 'मेरी समझ मे तो बाजार का बन्दोबस्त ठीक नहीं है, यदि ठीक तैार पर इन्तिजाम किया जाय, तो सब बात बन सकती है।'

बादशाह। "वल्लाह! तुमने बहुतही यथार्थ बात कही। मैं भी यही समझता हू। अच्छा, हमलोग बाजार चल कर एक बार जाच परताल करें। परन्तु हमलोगो को भेस बदल कर चलना चाहिये। देखो, बगदाद मे खलीफा भेस बदल कर घूमा

करते थे, वैसाही हमलोगों को भी करना चाहिये और इसमें हर्ज ही क्या है? इसमें दोनो काम हो जायंगे—जी भी बहल जायगा और सब पता भी लग जायगा ।"

बस बादशाह ने चलने की आज्ञा देही दी। जब मौज आगई और जी में ठन गई तब भला फिर उन्हें कौन रोक सकता था, भेस बदल कर बाजार में जाना अवश्यही था। परन्तु यह किसी ने भी न सोचा था कि वहा जाकर क्या करना चाहिए और जाने में लाभ क्या हो सकता है? बादशाह सलामत तो अङ्गरेजो के भेस में चटपट तैयार होगए, रौशनुद्दौला ने भी भेस बदल लिया। एक दो अङ्गरेज अनुचर भी उनके साथी हो लिये। शेष अङ्गरेजो को आज्ञा हुई कि वे दूर दूर रहें, जिसमें यह न प्रगट हो कि ये सब भी उसी मँडली के हैं। नवाब वजीर और बाडीगार्ड के कप्तान ने पूरा २ प्रबन्ध कर लिया था कि जिसमें कोई अचानक घटना न आन पड़े, क्योंकि उनके कुटुम्बी लोग ही ऐसे अवसर पर चूकने वाले न थे,कदाचित वे लोग, बादशाह के इस तरह रुप बदल कर बाजार में घूमने की सुनगुनी पाकर बादशाह की पिटवाही दें, अथवा बदमाशों से उन्हे मरवाही डालें। ऐसी घटनाओं के रोकने के लिये नवाब वजीर ने अलग और कप्तान ने अलग चुपचाप अपने २ सिपाहियों को आज्ञा देदी कि वे लोग भी साधारण प्रजा के भेस में हथियारों से लैस दूर दूर साथही साथ रहें। फिर जहां सपूर्ण प्रजा ही हथियार बाधे खुली घूमती है, वहा के इस भेस बदलने पर कौन शका कर सकता था।

इसका भी कुछ डर न था कि उनके पास या दूर रहने

से भी किसी का इस बात पर ध्यान जायगा, क्योंकि यहां के बाजारों में तो नित्यही सांझ के समय प्राय इतनी भीड़-भाड़ और रेलपेल रहा करती थी कि बिना धक्कमधुक्के के कोई मार्गही नही चल सकता था। इस समय तो यहां के बाजारों की तङ्ग सड़कें ठसाठस भर जाती थीं और इस कारण वहां इतनी घमासान भीड़ होजाती थी कि यह पता भी नहीं लगता था कि कौन आया और कौन चला गया।

हमलोग जब बाजार में आये, तो वहां अतर और फुलेल से वासित लोग इधर से उधर आ जा रहे थे। ढाटा बांधे कल्ले-चल्ले के राजपूत और पठान लोग ढाल, तलवार लगाये अपनी कोहनियों से भीड़ चीरते,हमलोगों से भी धक्कमधुक्का करते और तिरछी आंखों से गुरेरते पास से निकले जा रहे थे और उनके चलने फिरने में ढाल और तलवारों के झनाझन शब्द हो रहे थे। बड़ी लम्बी २ दाढ़ीवाले नमाजी और परहेजगार मुसल-मान लोग हमलोगों को देख कर कहने लगते। "भला, यह साहब लोगों के घूमने की कौनसी जगह है?" दुबले पतले हिन्दू लोग भी मुसकिरा२कर हमलोगों को अपनी दुकानदारी की वस्तुएं दिखाते और नम्रतापूर्वक चिकने चुपड़े, मीठे मीठे शब्दोंमें अपने माल बेचने की तार जमाते। सारांश यह कि इस प्रकार घूमतेघामते हमलोग एक सर्राफ की दूकान के पास पहुंचे,जहां की सड़क कुछ चौड़ी थी। इस सर्राफ के आगे कटो-रों में भरे रूपयों के ढेर रक्खे थे, मानो वही उनका टेबुल था। यह मोटा ताजा सराफ पलथी लगाये अपनी दुकान के बीच में बैठा था,जैसे भारतवर्ष के साधारण दुकानदार और इंगलि-

स्थान के दर्जी बैठा करते हैं। इससे थोड़ी दूर पर दो बलवान और हृष्टपुष्ट नौकर खड़े थे।

इतने में एक मनुष्य अच्छे वस्त्र पहिने हुआ, जो देखने में एक भला मानस जान पड़ता था, आया और उससे जयगोपाल करके बड़े सौहार्द से भेंट की और बोला, "माधो! तुमने कुछ सुना? आज एक और चावल की मण्डी लुट गई?"

माधो। (सिर हिला कर) "क्या बताए? बड़ा बुरा समा आगया है।" फिर हमलोगों को उधरही आते देख और यह समझ कर कि स्यात् यह लोग कुछ सौदा लें, वह हमारी ओर बढ़ा।

ज्यों ही पूर्वोक्त बात बादशाह के कान में पड़ी, त्यों ही बादशाह घूम कर देखने लगे और उन दोनों की बातचीत सुनने के लिये कि वह अब क्या कहेंगे ठहर गए, तथा एक तम्बोली की दुकान की ओर देखने लगे।

भलामानुस। "अजी बड़ाही अंधेर मच रहा है। व्यापारियों को दुकान खोलना और माल बेचना कठिन पड़ गया है, यही डर लगा रहता है कि कहीं लुट न जायँ।"

सर्राफ। (फिर सोच से सिर हिला कर) इसमें क्या सन्देह है। बड़ाही बुरा काल बीत रहा है, बड़ा कठिन समय आगया है, पहिले ऐसा अँधेर न था, अब तो अधाधुध हो रहा है, क्या किया जाय? इतनेही में एक बाबू भी आगए और बोले, 'क्या मोहर के रुपये देंगे?'

महाजन। "लीजिये, लीजिये जनाब, पर आजकल तो १५॥≡)।। का भाव है। अन्य दुकानदार तो ।≈) बट्टा काटते हैं,

लेकिन मैं सिर्फ।) यहा सूंगा, भाई क्या किया जाय बड़े कठिन दिन बीत रहे हैं।

बाबू। "हा, जब बख़्तावरसिंह बादशाह के दीवान थे, तब तो ऐसी बातें कभी नहीं होती थी,वह बाजार का बन्दोबस्त खूब रखते थे,भला उनके समय में क्या ऐसा होने पाता?

बादशाह सलामत यह सुन कर और भी चौकन्ने हुए और इन बातो को बड़े ध्यान से कान लगा कर सुनने लगे तथा थोड़ा आगे बढ़ कर उन कटोरो को देखने लगे जो पासही एक ठठेरे की दूकान पर रक्खे हुए थे।

महाजन। "जनाब। आप ठीक कहते हैं, उनका प्रबन्ध बहुत ठीक था। राजा बख़तावरसिंह के समय मे बाजार में कभी गड़बड़ हुआही नहीं,पर अब तो बुरा समय आगया है, बुरा क्या बल्कि बहुतही बुरा!"

बाबू साहब तो इतना कहकर चलते बने। उस समय मैंने यह समझा था और अब भी यही समझता हू कि वह मनुष्य अवश्य इसी काम के लिये बाजार में आया था। कदाचित बख़तावरसिंह वा उसके किसी मित्र अथवा सम्बन्धी को बादशाह के बाजार में आने की किसी प्रकार टोह लग गई हो और उसी ने उस अपमानित जेनरल की कार्य्यवाही दिखाने के लिये यह चाल खेली हो।"

यह सब सुन कर बादशाह सलामत कुछ चिन्ता मे डूब गए और महल को लौट आये। अब इनके चित्तमें एक नई धुन समा गई। जैसे उन मनुष्यो को जिनमें मर्म जानने की बुद्धि नहीं होती, उनके हृदय में दूसरो की बात जम जाती है, वैसेही

इनको वखतावरसिंह का ध्यान था घरा और जो कुछ उसके विषय में बाजार में सुना था, वह सब इनके हिये में भली-भाँति प्रवेश कर गया। अब इन्हें वखतावरसिंह की धुन लग गई। दिन रात उसी का ध्यान रहता, जब देखो उसी का जिक्र।

इस घटना से दो मास पीछे वखतावरसिंह पुनः अपने पुराने पद और अधिकार पर दरबार में दीख पड़ने लगे और उसी प्रकार अपने काम करने लगे जैसे पहिले करते थे। अब तो बादशाह उनकी पिछली बातों को ऐसे भूल गए कि मानों कुछ हुआ ही न था। दैवात् उस वर्ष की फसल अच्छी हुई। जब मैंने लखनऊ छोड़ा था, तब तक राजा वखतावरसिंह उत्तम प्रकार से जेनरल का काम कर रहे थे और बादशाह सलामत की इन पर पूर्णकृपादृष्टि रहाकरती थी—केवल इतनाही नहीं, किन्तु इनका सम्मान आगे से भी बहुत बढ़ गया था॥

नवा अध्याय।

बादशाही हरम।

हम मर्द लोगों ने हरम के अन्दर जाकर कभी नहीं देखा और न अन्तःपुर के महिलाओं के रहन सहन को ही देखा। तो भी वहां का बहुत कुछ पता हाल हमको मालूम है। यूरोपियन लेडियां महल में बेगमातों से मिलने जाने पाती थीं। जो लोग, जो बराबर अन्दर महलों में आया जाया करते थे, दरबार में भी आते और हमसे मिला करते थे। इसमें सन्देह

नहीं कि बहुतसी बातें महल की हमें नहीं मालूम हैं, तौ भी बहुत कुछ बातें हम जानते हैं, जो हमने इधर उधर से और खोजों से सुनी सुनाई हैं और ऐसे विवर्ण के साथ सुनी हैं कि यहा का वृत्तान्त लिखने मे हमें अब अटकल से अनुमान करने की आवश्यकता नही रह गई है।

अन्त पुर के सम्बन्ध में सब से अधिक अद्भुत बात, जिसे सुन कर यूरोपवासियों को आश्चर्य्य होगा, महल की पहरा देनेवाली स्त्री सिपाही वा स्त्री देवढ़ीदारिनें हैं। मैंने इनको मर्द सिपाहियों के समान महलों के फाटक पर पहरा देते और इधर उधर घूमते देखा था। कुछ दिनों के पश्चात मुझे मालूम हुआ कि वे वास्तव में स्त्रिया हैं। पहिले मैं उन्हें यही समझता था कि ये नाटे क़द के सिपाही हैं, जो ढीली ढाली वर्दी पहने हुए हैं। इनके छोटे क़द और इनके कम चैाड़े वक्षस्थल को छोड़ कर और कोई बात इनमें ऐसी न थी, जिससे इनमें और मर्द-सिपाहियों में भेद प्रगट होता हो। इँग्लिस्तान में ढीलीढाली वर्दी पहिने राक्षा कबूतर बने सिपाहियों को मैं नित्यही देखा करता था, इसलिये इन्हें देख कर मुझे कोई आश्चर्य्य उत्पन्न नहीं हुआ था।

ये स्त्रियां अपने लम्बे बालों का जूड़ा सिर के ऊपर बाध लेती हैं और फिर उसपर मुरेठे पहिने रहती हैं, इन लोगों की वरदी वैसीही होती है, जैसी हिन्दुस्तानी फौज के सिक्ख सिपाहियों की है, अर्थात् सङ्गीन चढी हुई बन्दूकें, पेटी, कारतूसों का परतला, जाकेट, पतलून इत्यादि जैसे कि बङ्गाल की फौज में देखा जाता है। इन स्त्री-सिपाहियों से हरम के पहरे का

काम लिया जाता था और बाहर मैदान में ये लोग कवायद किया करती थी, जिन्हे एक हिन्दुस्तानी पलटनिया कवायद सिखाया करता था, ये लोग कवायद के नियमानुसार चलना, घूमना, सलामी उतारना, बन्दूक भरना और निशाना लगाना, सङ्गीन चढाना और उतारना इत्यादि सब काम जानती थीं। मैंने कई वेर इनकी पलटन को परा जमाये परेड पर खड़ी देखा है। यह मैं नहीं बता सकता कि युद्ध में खड़ी होकर ये लोग बराबर मर्द-सिपाहियो से लड़ सकती हैं या नहीं। मेरी समझ में तो वे नहीं लड़ सकती थीं। इस पलटन में कारपोरेल और सारजट भी स्त्रिया ही होती थीं, और मुझे विश्वास है कि सारजयट से बढ़ कर अफसरी इस पलटन में न थी।

इन में से प्राय स्त्रिया ब्याहुता होती थीं और कभी २ इन्हे अपने शौहर के पास जाकर रहने के लिये महीने दो महीने पर बारी बारी से छुट्टी मिल जाती थी। परन्तु जब तक बनता वे अपने नौकरी ही पर हाजिर रहती थीं। जब तक मुझे मालूम न हुआ था कि ये स्त्रिया है, तब तक मैंने कभी ध्यान भी नहीं किया था कि इनका डीलडौल मरदो के डीलडौल के समान नहीं है। इँग्लिस्तान में मैंने तोन्दीले सारजट बहुत से ऐसे देखे हैं, जो इनमें की पेटवाली अर्थात् गर्भिणी सिपाही स्त्रियो के समान दिखाई देते थे। इनको देख कर प्राय बादशाह सलामत हँसा और ठटोलबाजी किया करते थे और इन बिचारी प्रसव-वालियो को इनाम भी दिया करते थे। इस अवस्था में पेट बढ़ने से वरदी में कुडौल दिखाई देने के कारण वे लोग थोड़े दिनो के लिये पलटन से अलग रक्खी जाती थीं।

इन सिपाही स्त्रियो की दो कम्पनिया थीं। इनका बल और पराक्रम वा अपराक्रम को पाठक स्वय समझलें। जब मैं लखनऊ में था, मेरे सामने केवल एक वेर इन कम्पनियो को बादशाह ने अपनी मा से युद्ध करने के निमित्त भेजा था। मैं कही ऊपर लिख चुका हू कि जब नसीरुद्दीन के पीता गाजीउद्दीन हैदर ने ठान लिया था कि इन्हें राजगद्दी न मिलने पावे, तब उन्होंने इनको अपने अधिकार में रखना चाहा था, कि यदि आवश्यकता हो तो इनको (अर्थात् अपने पुत्र नसीर को) जान से मरवा कर बखेड़ा दूर करदे। उस समय इनकी मा बडी वेगम साहब ने इनकी रक्षा की थी और इनके लिए बड़ी शूरता वीरता के साथ लड़ी थीं। उन्होंने अपने सेवको और चाकरो को अस्त्र शस्त्र से सुज्जित किया और बादशाह से भिड पड़ीं, जिससे उन्हीं की विजय हुई थी। जब दोनो ओर से लहू की नदिया बह गईं, तब रेजीडण्ट ने बीच बचाव कर दिया। लोग समझते होगें कि नसीरुद्दीन अपनी मा के इस उपकार का जो उन्होने उनके बेबसी की अवस्था में किया था, सदा गुण गाते होगे और उसे भूले न होगे। परन्तु इनके पिता गाजीउद्दीन ने जैसा इनके लिए किया था, वैसाही नसीरुद्दीन ने अपने लड़के के साथ करना चाहा। इस वेर फिर बड़ी बेगम ने अपने पोते का पक्ष लिया और अपने पास रखकर नसीरुद्दीन को देना अस्वीकार किया। तब बादशाह ने बडी वेगम को महल छोड़ कर दूसरी जगह चले जाने का हुकुम दिया। इससे बड़ी वेगम के जी में और भी खटका होगया और महल छोड़ना स्वीकार न किया। बादशाह ने हरप्रकार के उपदेश और

काम लिया जाता था और बाहर मैदान में ये लोग कवायद किया करती थीं, जिन्हें एक हिन्दुस्तानी पलटनिया कवायद सिखाया करता था, ये लोग कवायद के नियमानुसार चलना घूमना, सलामी उतारना, बन्दूक भरना और निशाना लगाना सङ्गीन चढाना और उतारना इत्यादि सब काम जानती थीं। मैंने कई बेर इनकी पलटन को परा जमाये परेड पर खडी देखा है। यह मैं नही बता सकता कि युद्ध में खडी होकर ये लोग बराबर मर्द-सिपाहियो से लड सकती हैं वा नहीं। मेरी समझ में तो वे नही लड सकती थीं। इस पलटन मे कारपोरेल और सारजट भी स्त्रिया ही होती थीं, और मुझे विश्वास है कि सारजयट से बढ कर अफसरी इस पलटन में न थी।

इन मे से प्राय स्त्रिया व्याहुता होती थीं और कभी २ इन्हें अपने शौहर के पास जाकर रहने के लिये महीने दो महीने पर पारी पारी से छुट्टी मिल जाती थी। परन्तु जब तक बनता वे अपने नौकरी ही पर हाजिर रहती थीं। जब तक मुझे मालूम न हुआ था कि ये स्त्रिया हैं, तब तक मैंने कभी ध्यान भी नहीं किया था कि इनका डीलडौल मरदो के डीलडौल के समान नही है। इँग्लिस्तान में मैंने तोन्दीले सारजट बहुत से ऐसे देखे हैं, जो इनमें की पेटवाली अर्थात् गर्भिणी सिपाही स्त्रियों के ही समान दिखाई देते थे। इनको देख कर प्राय बादशाह सलामत हँसा और ठठोलबाजी किया करते थे और इन सिपाही प्रसव-वालियो को इनाम भी दिया करते थे। इस अवस्था में पेट बढने से वरदी में कुडौल दिखाई देने के कारण वे लोग थोड़े दिनो के लिये पलटन से अलग रक्खी जाती थीं।

इन सिपाही स्त्रियो की दो कम्पनिया थीं। इनका बल और पराक्रम वा अपराक्रम को पाठक स्वय समझलें। जब मैं लखनऊ में था, मेरे सामने केवल एक बेर इन कम्पनियो को बादशाह ने अपनी मा से युद्ध करने के निमित्त भेजा था। मैं कहीं ऊपर लिख चुका हू कि जब नसीरुद्दीन के पीता गाजीउद्दीन हैदर ने ठान लिया था कि इन्हे राजगद्दी न मिलने पावे, तब उन्होंने इनको अपने अधिकार में रखना चाहा था, कि यदि आवश्यकता हो तो इनको (अर्थात् अपने पुत्र नसीर को) जान से मरवा कर बखेड़ा दूर करदें। उस समय इनकी मा बड़ी बेगम साहब ने इनकी रक्षा की थी और इनके लिए बड़ी शूरता वीरता के साथ लड़ी थीं। उन्होंने अपने सेवको और चाकरो को अस्त्र शस्त्र से सुज्जित किया और बादशाह से भिड़ पड़ीं, जिससे उन्हीं की विजय हुई थी। जब दोनो ओर से लहू की नदिया बह गई, तब रेजीडण्ट ने बीच बचाव कर दिया। लोग समझते होगें कि नसीरुद्दीन अपनी मा के इस उपकार का जो उन्होंने उनके बेबसी की अवस्था में किया था, सदा गुण गाते होगे और उसे भूले न होगे। परन्तु इनके पिता गाजीउद्दीन ने जैसा इनके लिए किया था, वैसाही नसीरुद्दीन ने अपने लड़के के साथ करना चाहा। इस बेर फिर बड़ी बेगम ने अपने पोते का पक्ष लिया और अपने पास रखकर नसीरुद्दीन को देना अस्वीकार किया। तब बादशाह ने बड़ी बेगम को महल छोड़ कर दूसरी जगह चले जाने का हुकुम दिया। इससे बड़ी बेगम के जी में और भी खटका होगया और महल छोड़ना स्वीकार न किया। बादशाह ने हर प्रकार के उपदेश और

धमकियों से काम लेना चाहा। भला बेगम साहब कब डरने लगी थीं। उस समय बादशाह ने अपने सिपाही स्त्रियों को आज्ञा दी कि वे जाकर उनसे महल खाली करालें और उन्हें निकाल बाहर करें, परन्तु बड़ी बेगम के आधीनवाली स्त्री पहिरेदारिनों ने उनसे युद्ध करके उन्हें हटा दिया। इस लड़ाई में जो गोलियां चली थीं, उनमें से बहुत सी तो मेरे घर के ऊपर से भन्न भन्न करती निकल गई थीं और दो चार गोलियां खिड़कियों में आकर लगीं और फोड़ कर अन्दर आ गिरीं, तब मुझे कुछ सन्देह हुआ। जब नौकरों से पूछगीछ की तब मालूम हुआ कि गोलियों के चलने का कारण क्या था। उस समय में लखनऊ की ऐसी दशा थी कि प्राय बन्दुकें चल जातीं और दो चार की जान जाती, इसलिए ऐसी बातों का हमलोग बहुधा ध्यान भी नहीं देते थे कि क्या हुआ। इस युद्ध में बड़ी बेगम के पन्द्रह सोलह पहरेदारिनों की जान गई।

इस समय भी रेजिडन्ट ने बीच में पड़कर झगड़ा ते किया। बादशाह ने प्रतिज्ञा किया कि अब वह बेगम साहब को न सताएंगे और न अपने बेटे को म गेंगे, यदि बेगम साहब महल छोड़ देंगी। रेजिडेंट ने राजकुमार के रक्षा का जिम्मा लिया और बेगम ने खुशी खुशी महल छोड़ दिया। बेगम साहब को अंग्रेजों के वचन मात्र का जितना विश्वास था, उतना बादशाह वा उनके धर्मधारियों के कसम का भी न था। सच तो यह है कि यूरोप में रहकर कोई नहीं जान सकता कि इङ्गलिस्तान का भय या अंगरेज लाग का प्रताप अन्य देशों में कितना है।

बड़ी बेगम साहब ने अपने बालक पौत्र के लिये इतना कुछ किया, इतनी वीरता दिखलाई, तो भी इस लड़के को गद्दी न मिली, क्योंकि नसीरउद्दीन ने ढिंढोरा पिटवा दिया था और जगह २ फाटकों पर विज्ञापन लगवा दिये थे कि यह लड़का अनौरस अर्थात् हरामी है। इस अवस्था में गवरमेंट ने विचार किया कि ऐसे कलंकित लड़के को राज-गद्दी न मिलनी चाहिये। मार्नित के निकाल दिये जाने के पश्चात् जब बादशाह को विष दिया गया, तब उनके मरने पर बेगम साहब ने फिर धींगधांग मचाई और अपने सिपाही ले दौड़ी। अपनी फौज से रजीडन्टी को घेर लिया और नसीरुद्दीन के बेटे को गद्दी पर बैठा कर ढंढोरा पिटवा दिया। परन्तु रजीडन्ट जरा भी न डरे, यद्यपि उनके प्राण जाने का भय था, तो भी उन्होंने इस लड़के को बादशाह होने में अनुमति न दी। उन्होंने शीघ्रही छावनी से फौज मँगाई। फौज के आने पर जहां दो चार गोले छोड़े गए, बस सारी शान्ति होगई, भीड़ छट गई और नसीरुद्दीन के चचा को गद्दी मिली, जिनके साथ नसीरुद्दीन ने बुरा बर्ताव किया था। मुझे विश्वास है कि यह बूढ़ी बेगम और यह लड़का अब तक लखनऊ में जीवित हैं। बड़ी बेगम का ऐसा करना उचित ही था और दोनो बेर उन्होंने विजय भी प्राप्त की। यदि किसी और देश में वा अन्य अवसर पर वे ऐसी शूरता दिखातीं, तो इन बड़ी बेगम साहब का नाम इतिहासों में लिखा जाता। फिर भी उनकी शूरता और वीरता सराहने योग्य है और रजीडन्ट करनैल लो साहब की भी दृढ़ता प्रशंसनीय है कि उन की बुद्धिमत्ता और धीरता के कारण झगड़ा जहां का तहां दब

गया, नहीं तो इसका बड़ा बुरा फल निकलता।

हरम के चाकरनियों का वर्णन करते करते मैं क्या का क्या लिख गया। इन सिपाही-स्त्रियों का वर्णन करते २ मैं दूसरी २ बात छेड़ बैठा।

एक और प्रकार की चाकरानिया हैं, जो डोलिया, इत्यादि उठाया करती हैं। इन मेहरियों की फौज अलग ही है, इनमें भी बड़े छोटे अफसर रहा करते हैं। इनकी सरदारिन एक बड़ी बलिष्ट मरदाने चाल की सुन्दर कहारी थी, ये बादशाह की बड़ी मुह लगी और सिर चढ़ी थी। इससे और बादशाह से बहुधा ठठोलबाजी और खिल्ली हुआ करती, जो सभ्य लोगों के सुनने योग्य नहीं हैं। इन दोनो की बोली ठोली यदि कोई सुने किया उनके कौतुक देखे, तो यह कोई न कहे कि बादशाह और लौंडी में यह जयादराजी हो रही है। मैंने एक व्यक्ति से, जो उस समय लखनऊ में थे, सुना है कि इसी मेहरी* ने बादशाह के कुटुम्बियों से घूस लेकर नसीरुद्दीन हैदर को विष दिया था।

बेगमातों की सेवा में बहुत सी दाइया, मामाए, मेहरियां

* मालूम होता है कि इसी मेहरी का नाम "धनिया" होगा, क्योंकि दोही मेहरिया मुह लगी थीं, एक का नाम धनिया और दूसरी का 'दुलारी'। धनिया सब से अधिक सिर चढ़ी थी। बादशाह के मृत्यु का वृत्तान्त यह है कि ये बीमार तो रहते ही थे, एक दिन 'कहारी' दाया के यहां से कलिया और करैला पक कर आया उसे खाकर सो गये। आधी रात को पाखाने गए, वहां से जो आये, खेंचवाई आरम्भ होगई हिचकी बोल कर सोए और बेहोश होगए, कोई कहता है उस कहारिन ने नरगुज के पानी में विष मिला कर दिया। तात्पर्य यह कि वे विष से मरे।

इत्यादि रहा करती थी, इनमें से कुछ तो पुश्तैनी होती और कुछ गरीब लोगो से उनके सौन्दर्य्य के कारण मोल लेली जाती थीं, इनका काम गाना बजाना, कहानिया कहना वा पैर दबाना होता था।

मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है कि निकलुआ या त्यक्त या चरित्रभ्रष्टा महेलिकायें चुपचुपाते महल ही में समाप्त कर दी जाती थीं। जैसा कि कस्तुतुनिया मे प्राचीनकाल में होता था और जहा तक मैंने सुना है, यह काम खोजे ही किया करते थे।

मीर हसन अली की मेम* इस विषय में मुझसे ज्यादा ठीक वर्णन कर सकती हैं। ये बातें केवल बादशाही हरम में ही नही होतीं, किन्तु लखनऊ के प्राय बडे बडे घरो में भी ऐसी बातें हुआ करती हैं।

मिसेस मिरजा हसन अली लिखती हैं, "यद्यपि इन लौंडियो को बेगमातो के काम करने के लिये सदा उपस्थित रहना पडता है, तथापि इनके साथ उत्तम बर्ताव किया जाता है और उनके आराम के लिये उचित बन्दोबस्त रहता है। ये लोग अपना २ काम पारी २ से किया करती हैं। इन दासियो की स्वामिनें भी इनपर वैसी ही दया दृष्टि रखती हैं, जैसी और

* यह मेम साहबा बिलायत की रहने वाली थीं। जब मीर हसन अली विलायत गए थे, तब वहा से ब्याह करके इसे लखनऊ साथ लेते आये। यह मेम १२ वर्ष लो उनके साथ हिन्दुस्तान में रहीं और अपने पति को दूसरी बीवी ब्याह नहीं करने दीं। कुछ बीमार होकर यह विलायत गईं, फिर यहा से न लौटीं। उन्होने एक किताब लिखी है, जिसमें हिन्दुस्तान का हाल है और इस किताब को 'प्रिन्सेस आफ वेल्स' के समर्पण कर दिया—इस किताब का नाम 'Observations on the Mussalmans of India' है।

दासियो पर। इनका दासत्व दुखमूलक नहीं है, अर्थात् ये लोग पराधीन तो है, परन्तु इनको किसी बात का दुःख नहीं दिया जाता, क्योकि मुसल्मानो मे इन लौंडियो का रहना आवश्यक समझा जाता है और उस घराने के अमीर और माननीय होने का यह भी एक चिन्ह है। जब ये युवा होती हैं, तब उदार चित्तवाली स्वामीनें इनका विवाह बराबर जोड़ के नौकरो से करा देती हैं और इनके बच्चो को भी खिलाती और पालती हैं, इनके पालन पोषण के अर्थ मासिक वेतन भी देती हैं, उनसे हिल्मिल कर रहती हैं और यदि उचित समझती हैं, तो इन्हें स्वतन्त्र भी कर देती हैं। साधारण रूप से यह कहा जा सकता है कि मुसल्मानी घरानो में यदि कोई लौंडी के साथ अपनाइत का बर्ताव न हो, तो समझना चाहिये कि वह लौंडीही पाजी और निकम्मी है। यह उन लौंडियो की अवस्था है, जिनकी स्वामिनें कारुणिक और सुशीला हैं। अब लखनऊ के दासियों की दूसरी अवस्था भी सुन लीजिये, जिसे मेम साहबा ने सामान्य रूप से लिखा है, जैसा कि स्त्रियो का स्वभाव होता है। यदि यही बात कोई पुरुष वर्ग लिखता, तो कोमलचित्त वाली स्त्रियो को दुःख होता। यह लिखती है --

"मैंने सुना है कि एक बड़े माननीय और नामी घराने की बेगम साहब ने एक सुन्दर लौंडी को बचपने से पाला था कुछ काल पाकर इसी लौंडी की उसके युवा स्वामी के साथ गांठ होगई, तो भी बेगम साहबा उसे अपने पासही रक्खे रहीं। इसमें सन्देह नहीं कि बेगम को इसकी खबर होगई थी। जब इस लौंडी की आज्ञाकारी और मालिक उसके स्वामी से

धीरे २ बढ़ गई, तब यह आकाश मे पैर रखने लगी और अपने स्वामी बेगम साहबा की मान मर्यादा तक इसने कम करदी और लड़कपन से जोकुछ उत्तम वरताव उसपर हुए थे,उन्हे भुलाकर उलटी उनकी वरावरी और अपमान करने लगी। मुझे यह नहीं मालूम हुआ कि किन २ बातो मे उसने अपमान किया, परन्तु इतना सुना है कि बेगम साहबा ने अपनी मर्यादा रखने और अन्य लौंडियो को भय दिलाने के निमित्त अपनी अप्रसन्नता इस प्रकार प्रगट की और उसको दण्ड भी इस रीति से दिया, जो कुलीन स्त्रियो के ही योग्य था। उन्होने चादी की मोटी जजीर बनवाई और हुक्म दिया कि प्रति दिन थोडी देर तक इस जजीर से बाध कर सब के सामने उसको चारपाई पर लिटा दो, जिसमें वह लौंडी शरमा कर अपना कुकर्म छोड दे। चारपाई पर पडे रहना तो कोई दण्ड न था, यदि बाधी न जाती, तो वह आपही खुशी से पड़ रहती,परन्तु जजीर से हाथ पैर जकड़ा हुआ अन्य दासियो के सामने पडे रहना लज्जा की बात थी"।

उक्त मेम साहब ने फिर भी जनानखाने के दृश्य का भड़कीला और उत्तम पटल दिखाया है। मालूम होता है कि घोर अंधेर के पटल कदाचित उनको देखने में नहीं आये। जब कोई लौंडी युवा अवस्थावाली वा रूपवती नही होती, किन्तु कुरूपा हो, तो उसके मालिक को इतना भी ध्यान नहीं होता कि उसे क्या दु ख है और दण्ड देने में भी वे दया नहीं करते। मुसलमानो की सभी स्त्रिया कोमलचित्तवाली देवी स्वरूपा तो नहीं होतीं,जैसा कि आगे के वृत्तान्त से प्रगट होगा। इसमें सन्देह नही कि जब सौतिया डाह,वा किसी बात की आन और

लाग की अग्नि भड़क उठती है, तब उनकी क्रूरता और कठोरता की सीमा भी नहीं रहती।

यद्यपि रूप में वह वैसीही अत्यन्त सुन्दर स्त्री होती हैं, जैसी कि मिसस हसन अली ने लिखा है, किन्तु कभी २ ऐसा भी होता है कि एक ज़रा सी बात पर उनका इतना क्रोध चढ़ जाता है कि कठोर से कठोर दण्ड देने से भी वे नहीं डरतीं या सकुचातीं। अभी आठ वर्ष से अधिक नहीं हुए कि एक मुसलमान बेगम की कठोरता का वृत्तान्त सुन कर कलकत्ते में हलचल पड़ गई थी और सब लोग उसपर घृणा प्रगट करते रहे। बात यह थी कि वह लौंडी हुक्के पर गुल खूब सुलगा कर नहीं रखती थी। कई बेर लौंडी को समझा दिया गया, तौ भी वह न मानी। इसपर एक दिन उक्त लेडी को इतना क्रोध उत्पन्न हुआ कि उन्होंने उस लौंडी को अन्य लौंडियों बांदियों द्वारा भूमि पर पटकवाकर लाल लाल जलते गुलों से दाग दिया, जिससे वह बिचारी इतनी जल भुन गई कि कुछ दिनों पश्चात मरगई। यह हाल पुलिस ने सुना। इस परदेवाली स्त्री पर मुकद्दमा साबित हुआ और कालेपानी का दण्ड हुआ। जब सज़ा का हुकुम होगया, तब तो परदे में से बीबी साहब को बाहर आना पड़ा और जब उसका निक़ाब उतारा गया, तब उस समय सम्वाददाताओं की ओर से जो रिपोर्टर वहां विराजमान थे, वे लोग उनके सौन्दर्य्य को देखकर ऐसे मोहक होगए कि उन्हें नहीं सूझता था कि किन शब्दों से उसकी सुन्दरता का वर्णन करें। उसकी सुन्दरता अनुपम और विलक्षण ही थी।

मैं स्वीकार करता हूं कि मैं इतने दिनों लखनऊ में रहा

और वहा के रईसो से भी मेरा मेलजोल रहा, तो भी मैंने बहुतही कम लौंडियो पर अत्याचार किए जाने का वृत्तान्त सुना। हा, लौंडियो और गुलामो पर कोड़े लगाने वा उनको अपमानित करने का दण्ड लखनऊ मे दिया जाता था, पर वैसी क्रूरता का नाममात्र भी न था, जैसी अमेरिका में प्रचलित थी, जैसा कि मिसस स्टो ने वहा के हबशी गुलामो पर अत्याचार का वर्णन लिखा है। इन खोजो से मुझे घृणा थी, इसका कारण मैं इस समय ठीक नहीं बता सकता। मुझे विश्वास होगया है कि इन्हीं खोजो के कारण और उनके चुगली चपाती खाने से हरम मे लौंडिया बांदियो इत्यादि के साथ क्रूरता का बरताव होता रहता है। और इन्हीं दुष्टो के हाथ उन्हे दण्ड मिलता है। ये लोग जब कोड़े लगाते हैं वा अन्य प्रकार का दण्ड देते हैं, तब बड़े उत्साह और रुचि के साथ जी खोल कर, मानो इसमे उन्हें कुछ हर्ष होता है।

लखनऊ के उमरा घरानो मे लौंडियो, बांदियो के समान खोजे भी रहा करते हैं, बादशाही अन्त पुर मे तो इनकी सख्या डेढ़ सौ से कम न होगी। इन सब का अफसर बादशाह बेगम* की ड्योढी पर रहा करता है, जो दिल्ली के बादशाह की बेटी थीं और खोजा अफसर का प्रबंध में बड़ा प्रभाव और मान्य होता है। हिन्दुस्तान के उपरी देशो में लोग बच्चो को चुरा कर हिजड़ा कर देते हैं और उसे अमीर उमरा के हाथ बेच डालते हैं। मालिक का इनपर बड़ा विश्वास रहता है। मिसस हसन अली लिखती हैं "इन लोगो को इतना अधिकार रहता है, जो

* बादशाह की पहली ब्याहता बीबी 'बादशाह बेगम' कहलाती हैं।

अन्य चाकरों को नहीं होता। जब और जिस समय ये चाहें जनानखाने के अन्दर जा सकते हैं। शाही हरम में तो ये लोग बेगमों को नहलाते धुलाते तक हैं और अन्य लौंडियों की अपेक्षा उन्हीं से यह काम बहुधा लिया जाता है।"

अवध के राज्य में ये खोजे लोग बड़े बड़े पद पर नियत रहे हैं, यहां तक कि ये जिलों और परगनों की मालगुजारी उगाहते और राज्य के भारी २ काम किया करते थे। विशप हेबर साहब ने एक का वृत्तान्त यों लिखा है कि एक बेर बादशाह एक खोजे के घर पर पधारे थे, तो उसने उनके लिये दस लाख रुपये का एक सिंहासन बैठने को बनवाया था और फिर उस सिंहासन को बादशाह के भेंट कर दिया।

मुसलमानी धर्मशास्त्र के अनुसार दास पर उसके स्वामी का स्वत्व होता है और जो कुछ धन वह एकत्रित करे उसपर भी स्वत्व उसके स्वामी का ही है, अतएव खोजे लोग जो कुछ धन संचित किये रहते हैं, उनके मरने पर उनके मालिक को मिलता है। इसी कारण से इन खोजों या अन्य दासों को उनके स्वामी मूल्यवान कपड़े, गहने इत्यादि पारितोषिक में बहुत दिया करते हैं। जो कुछ इन दासों को दिया जाता है, वह मानो थोड़े दिनों के लिये दूसरे के पास धरोहर के समान रहता है, क्योंकि इन दासों के न तो कोई उत्तराधिकारी होता है और न उसकी थाती किसीको मिल सकती है। मैंने सुना है कि एक बेर ऐसा हुआ था कि एक धनवान, खोजा जो एक बड़े जागीर का भी हकदार था, मरती समय अपनी जायदाद किसीके नाम लिख गया। इसके मरने पर उसके उत्तराधिकारी में

झटपट मृत खोजे के महलात, जायदाद और उन माल असबाब पर जो वह छोड़ गया था, अपना अधिकार कर लिया। ज्योंही इसकी सूचना दर्बार में पहुंची बादशाह ने अपना स्वत्व बताया। उक्त उत्तराधिकारी पर सेना भेजी गई और दोनो मे घमासान युद्ध हुआ—जब बहुत कुछ चढ़ाई की गई, तब जाकर उसपर बादशाह का अधिकार हुआ। फिर थोड़ी सी कड़ाई करने पर समस्त सँचित धन—सोने और चांदी के माल का भी पता चल गया और बादशाह ने सब कुछ ले लिया। इसमें (मुसल्मानी) धर्मशास्त्र के नियमो का पूरा २ प्रतिपालन किया गया, अर्थात् एक दमड़ी भी उसमे से उत्तराधिकारी को नही मिली। इसमें सन्देह नहीं कि अवधवासियो को इस प्रकार के झगड़े टंटे करने की बात पड़ गई है और बच्चो की तरह जरा जरा सी बात पर खूब लड़ भिड़ जाते हैं। इन झगड़ो से इतना तो होता है कि उनके हथियार बेकाम पड़े २ मैले नहीं होते।

हरम के बाहर की बातो अर्थात् ख्वा ड्योढ़ीदारमें, कहारिया और खोजो में ही हमलोग अटक गए। आइए तनिक सी कड़ा कर और परदा उठा कर भीतर की भी सैर कर आवें। आशा तो है कि बहुत सी लेडिया भी मेरे साथ अन्दर देखने भालने चलेंगी। महल के अन्दर की इमारत की बनावट और बाहरी भाग (जहा तक हमलोग बिना रोकटोक जा सकते थे) की बनावट में कोई अधिक भेद नहीं है। हिन्दुस्तान की साधारण इमारतो का ढाचा यही होता है कि अंदर समचतुर्भुज सा किंवा लम्बोतरा चौखूटा चौक होता है और

पिता गाजीउद्दीन को इन सजावटों का बड़ा शौक था, परन्तु झाड़, कँवल इत्यादि से उन्होंने केवल अपने बैठने के कमरों को वा इमामबाड़े को सजाया था।

बादशाह के जितने महल थे उनकी अलग २ ड्योढ़ियां, जुदा २ मसनद, पृथक २ दालान इत्यादि भी थे। प्रत्येक बेगमात की कदाचित महीने में एकबेर पारी आती थी कि जब बादशाह वहां जाते हो। कभी २ तो इससे भी अधिक दिन उपरान्त बादशाह के दर्शन उन्हें प्राप्त होते थे, फिर भी वे बादशाह की बेगमात ही मानी जाती थीं। यद्यपि उन्हें मालूम होजाता था कि उनकी लौंडियों में से किसी,पर बादशाह की दृष्टि पड़ गई है और उसे बादशाह चाहते हैं। यह भी जानती थीं कि दोनो का मिलाप तक होगया है,पर मुझे विश्वास है कि इसका वे लोग बुरा नहीं मानती थीं। चाहे लौंडी का कितना ही प्यार दुलार होजाय, बेगम साहब कितनी ही दृष्टि से गिर जाय,परन्तु महल में दोनो के पद में समानता नहीं हो सकती थी। बेगम साहब बेगमही गिनी जाती थीं और लौंडी लौंडी ही मानी जाती थी। इस विषय में बादशाह ने भी कभी हस्तक्षेप नहीं किया। उनके मानमर्यादा में कोई बात कम न होने दी।

इसप्रकार की बेगमात और शाही बेगमों के यथार्थरूप देखने का कई बेर मुझे अवसर मिला है। इनके सिवाय अन्य स्त्रियों के भी वहांवाले देखे हैं, जो बादशाह के पीछे खड़ी होकर मोरछल डुलाया करती थीं। वे भी बहुतही मूल्यवान सुन्दर वस्त्र धारण किये रहती थीं। वे सब बड़ी रसीली,मोहनी स्वरूप

और युवा होती थीं, इन्हें हमलोग देख सकते थे। यद्यपि येलोग परदे वालिया गिनी जाती थीं और उनको आख भर के देखना असभ्यता और अनादर समझा जाता था। तौ भी हमलोग चोरी छिप्पा देखही लेते थे। बेगमातो की लियास भी मैंने कई बेर देखी थी, क्योंकि बादशाह सलामत जब स्नान करके बाहर आते, तब कभी कभी उन बेगमो का पहिनावा आपही पहिन लेते थे, जो उस समय उनकी मनचढी होती थीं। कभी २ साफ को वह गाघ के परदे के पीछे चले जाते, जो खाने के कमरे के एक ओर लटके रहते थे और वहीं से वेगमाती पोशाक पहिने दुलहिन बने हमलोग के सामने निकल आते थे।

सम्भव है कि बेगमातो के पहिनावे और बादशाह के उक्त पहिनावे मे भेद हो अथवा बेगमातो के लिबास से कुछ अतर हो, परन्तु वस्त्र इत्यादि तो वही होगे। बादशाह जब बेगमाती वस्त्र धारण कर लेते थे तब वह बेगमही मालूम देते थे। पैजामे वा लहगे साटन, किमखाब अथवा किसी और उत्तम कपड़े के होते थे, जो नीचे की ओर जिसे पायचे कहते हैं, ढीलेढाले रहते थे, या तो उन्हें बटोर कर उनमें गाठ दी रहती थी या पीछे की ओर ढेर के ढेर जमीन में लटके पड़े रहते थे। कमर में यह पैजामा सुनहरी वा रूपहली "इजारबन्द" से बँधा रहता था, जिसके सिरो पर कलाबतून के लच्छे और फुंदने टँके होते थे, जो आगे की ओर पिंडलियो तक लटके रहते थे। इन फुदनो और भब्बो में जवाहिरात और मोती ठके रहते थे। ये पैजामे घुटने के नीचे खूब ढीलेढाले फैले हुए और कमर से ऊपर की ओर सकरे होते २ कमर पर कँसे हुए होते थे।

कमर के ऊपरी भाग में चोलिया या अँगियाएँ पहिनी जाती थीं, जो बड़े महीन कपड़े (जैसे गाच की जालिया या महीन मलमल) की होती थीं। इनके कपड़े जितनेही महीन होते उतनेही फैशनेब्ल समझे जाते। समस्त हिन्दुस्तान में इस वस्त्र का बहुतही प्रचार है और इस बात का बड़ा ख्याल रहता है कि यह अङ्ग पर ठीकमठीक आवे, यदि इनमें तनिक भी सिकुड़न हो वा सीयन दिखाई दे, तो दूषण समझा जाता है। बेगमों की अँगियों में गरदन के चारों ओर सुनहली कटोरियों, सलमे और सितारों से सुन्दर बेल बूटे बने रहते हैं। चोलियों के ऊपर कुरतिया पहिनी जाती हैं, जो प्राय जालियों की होती हैं। यद्यपि यह कुरती ऊपर से पहिनी जाती है, पर इससे कमर के नेफे इत्यादि की सुनहरी झलक, चमक दमक और अँगिया का कटाव इत्यादि नहीं छिप जाता।

इनपर एक हलका सा दुपट्टा या चद्दर ओढ़ी जाती है, जो प्राय सुनहरी या रुपहली बादले के होती है—घर घर में या घर से बाहर जाने पर बराबर ओढ़ा जाता है। ढाके की मलमल भी दुपट्टे बनाने के काम में आती है। इन दुपट्टों के बनाने और पल्लू इत्यादि लगाने में बड़ा परिश्रम किया जाता है। ये दुपट्टे पीछे की ओर से सिर को ढके रहते हैं और दोनों कांधों पर उनके आंचल पड़े रहते हैं। इसके ओढ़ने की मन-भाव ऐसी प्यारी होती है कि कुरूपा स्त्री भी ओढ़ कर जँचने लगती है और रूपवान स्त्रियों का तो जोबन दूना हो जाता है, भला इनकी सुन्दरता का क्या ठिकाना। खड़े होने पर दुपट्टे का एक आंचल लपेट कर दाहिने कांधे पर ओढ़ लिया

जाता है और दूसरा आंचल दोहरा कर उसी कंधे पर डाल दिया जाता है, परन्तु बैठने पर दोनो पल्ले समेट कर आगे को वा कोख में रख लिये जाते हैं। कभी २ ये दुपट्टे कंधे पर से सरक जाते हैं। घर की बड़ी बूढी स्त्रीयां इसे बुरा समझती हैं और इसे कुचरित्रा स्त्रियों का पहनावा मानती हैं।

अब आप अपने मन में ऐसी सुललित लावण्यवान स्त्री के चित्र की भावना कीजिये कि जो ऊपर लिखे हुए वस्त्रा-लंकार धारण किए हो। उसका वर्ण गौर वा खुले गेहुयें रंग का हो। उसके पैरों मे नोकदार जूती हो। उसके नन्हे २ हाथ, पैर नह मेंहदी वा माहावर से गुलाबी रंगे हो, उसकी कोमल सुदृष्ट और सुलज्जित काली विशाल आखें जिनमें सुरमे लगे हो। उसकी भौवें एसी कमानदार और सुथरी हो कि जिनके वाल इस सुन्दर्ता से सुशोभित हो कि मानो धन्वि बन गए है। उसका सुचिक्कन भाल और मस्तक, गोल २ मुखड़ा जिसके सिर पर के वाल चमेली के फुलेल में महकते हुए हो, जिन पर कंघी की हुई और पट्टी जमी हुई हो और कुछ बाल के लट आगे को लहराते हुए हो और शेष बालों की चोटी पीछे को समेट कर गुथी हुई पीठ पर लटक रही हो। वह कानो में भांति २ की बालियां, नाम में बड़ी सी नथ पहने हो जिसमे बड़े २ दो मोती और उनके बीच में एक माणिक पड़ा हो। एक ऐसी रूपरंग और आनवान की स्त्री का ध्यान करो, जिसमे पूरी २ सुघरता और लालित्य और सुकुमारता कूट २ कर भरी हो और और तुम्हारे नेत्र के आगे इस सजधज से, खड़ी हो कि उसके ऊपर का अंग महीन कपड़ो से अधखुला और ओढनी से कुछ छिपा

और नीचे का भाग लहँगे से ढपा हो, तो तुम्हें अवध के दरबार की स्त्रीयों का पूरा २ अनुभव हो जायगा—कदाचित बेगमों का भी यही चित्र हो।

बादशाह के बेगमों की सवारी लखनऊ में कभी कभी धूमधाम से निकलती है। यदि वे कहीं के दर्शन पर्शन के लिए अथवा किसी दूर के देवालय वा मसजिद में सजदा होने की लालसा से मनस मानने जाती हैं, तो उनके सवारी की धूमधाम देखने योग्य होती हैं। नौबत नकारा केवल बादशाह-बेगम के ही आगे बजता है, जैसा मैं ऊपर कह आया हूं। केवल इन्हीं के संग छत्र, सूर्यमुखी और मोरछल रहता था और शेष लवाजे का सामान सबके लिए एक समान होता था।

बादशाह बेगम की सवारी किस धूम धाम से दरगाह जाती थी, आइए इसको भी सैर आपलोगों को करादी जाय। सवारी के आगे आगे सबसे पहले बादशाही गारद के सवार, रूपहले का दोजी के काम की झकाझक नीली रंग की वर्दियां डाटे, हाथों में झण्डियां और बल्लम लिए और बैंड बाजा बजाते निकलते थे। इनके पीछे पैदलों की दो पलटनें होती थीं, ये भी झण्डियां और बाढ़ लिए रहते थे। इनके पीछे आसा बल्लमवालों की जमातियां जिनके हाथों में चान्दी के बल्लम और बरछे होते थे और जिनकी श्वेत रंग की वर्दियां अपने आगे चलने वाले पैदलों के अरूण वर्ण की वरदियों के साथ बहुत ही भली मालूम देती थीं। इनके पीछे एक कल्गी श्वेत वस्त्र धारण किए हुए शाही निशानात लिये और कढ़ी हुई रेशमी कार झण्डियां फहराते चलती थीं। इनके पीछे एक बन्द पालकी में

बादशाह बेगम बिराजमान रहती थीं। यह पालकी चांदी की मढ़ी होती थी और इसको २४ कहार उठाते थे। पाव पाव मील पर कहार लोग बदलते रहते थे। यह कहार चुस्त लिबास पहने रहते और ऊपर से कारचोबे के काम की लाल बनात की ढोली ढाली कबा पहने रहते थे। इनकी पगड़िया भी लाल रंग की होती थी, जिनपर आगे सुनहरी रुपहरी मछलिया टकी रहती थीं और इन मछलियों के बगल में सुनहरे फब्बे कन्धे तक लटकते रहते थे। मेहरियों की भी झुण्ड साथ साथ रहती थी, इनका काम यह होता था कि जब सवारी दर्गाह पहुंच जाती थी, तब ये लोग पालकी उठाकर अन्दर लेजाती। इन मेहरियो के पीछे सोने चांदी के "आसाबरदार" और चोबदारों की भीड़ होती, जो जोर जोर से बेगम साहब के नाम और पद का कड़का बोलते चलते थे और भिखमंगों को हटाते जाते थे, क्योंकि लखनऊ के फकीर बड़े धरनादेनेवाले और अड़ियल होते हैं और सहज में नहीं टलते। इसके अतिरिक्त सवारी निकलती समय रुपए पैसे लुटाये जाते हैं, इसलिए फकीरों की एक अलग भीड़ होजाती है।

'आसाबर्दारों और चोबदारों' के बाद खोजो के अफसर की सवारी चलती थी, जो हाथी पर सवार रहता था। इस अफसर के मान मर्यादा का वर्णन ऊपर किया जाचुका है। ऐसे अवसर पर इसके वस्त्र बड़े मूल्यवान निरे सुनहरी काम के होते थे और तदनुसारही शमला होता और बहुमूल्य दुशाला भी उसके कंधे पर पड़ा रहता था, मानो कोई सजा हुआ पुतला बैठा है।

इस ख्वाजासरा के पीछे बेगम साहब की लौंडियों, बांदियों दाइयों की सवारियां होतीं, जो पालकियों, नालकियों, चण्डोलों, रथों इत्यादि जनानी सवारियों पर जाती थीं। पालकी क्या है इसे तो आपलोग खूब ही जानते हैं। चण्डोल जरा बड़ा होना होता है, जिसकी बनावट में बड़ी लागत आती है। रथ भी एक सवारी है जिसे दो बैल खींच कर लेचलते हैं (इसे तो सभी हिन्दुस्तानी भाई जानते हैं) इनके भी पीछे सिपाही लोग, बरछीबर्दार और आसाबल्लमबर्दार के झुण्ड के झुण्ड रहते हैं। बेगमों के साथ उनकी दाइयों इत्यादि की तायदाद १५० से २०० तक की होती है। आप कदाचित पूछें कि भला यह सब क्या काम किया करती हैं? तो इसका उत्तर यह है कि महल में जितने काम किये जाते हैं उन्हें यही सब तो करती हैं। कोई किस्से कहानियां सुनाती हैं, और रात को बेगमों का जी बहलाती रहती हैं। कोई पैर दाबने के लिए होती हैं, जो नित्य घण्टों पायचप्पी किया करती हैं। कुछ बेगमों की पोशाकें सीया करती हैं। हिन्दुस्तान में प्राय मर्द दरजी ही स्त्रियों के भी कपड़े सीते हैं, पर बादशाही महल में यह भी काम स्त्रियां ही करती हैं। कोई कुरान पढ़ कर सुनाया करती, और शेष सी. ढिया घर के फुटकर काम काज करती हैं। ये बांदियां चाहे कैसे ही छोटे काम पर हों, पर बाहर नहीं निकल सकती हैं किन्तु परदे ही में रहती थीं।

इस धूम धाम, शान शौकत, ठाठ बाट के साथ बेगम साहब की सवारी निकला करती थी। अपने इस ठाठ बाट पर इन बेगमों को बड़ा घमण्ड रहता था और उनके नाम का ऐसा

इक्का लोगो में बज जाता था, इसे सुन कर वह प्रसन्न हुआ करती थीं।

अच्छा अब सवारी की सैर हो चुकी, इस ख्याली चित्र को चित से हटा दीजिये, क्योंकि यद्यपि इनके साथ इतना भीड भड़क्का, और शानशौकत का सामान रहता है, तो भी ये बिचारियां दयापात्र हैं, क्योंकि ये लोग सोने के गहनों से लदी हुई एक कैदी के समान हैं। इङ्गलिस्तान के एक गरीब दुकानदार की स्त्री इन बादशाहो की सोने से चित्री हुई बेगम से कहीं ज्यादा सुखी और सौभाग्यवती होती है।

दसवा अध्याय।

बटेर, शेर इत्यदि छोटे बडे जानवरो की लडाई।

अवध के दरबार मे बहुत से साधारण खेल तमाशे हुआ करते थे, उनमें से एक तमाशा सिखाई हुई चिड़ियो और बनैले जानवरो की लडाइयो का कराया जाता था। इसी निमित्त वे लोग पाले और सिखाए जाते थे। तीतर वा बटेर अथवा बुलबुल वा लाल को जहा बढावा दिया तहा वे भिड पडते और पंजो और चोच से जुटकर इस ढिठाई और बीरता से लडने लगते कि देखने वाले दङ्ग रह जाते (कोई जानवर चारे पर लडते हैं और कोई मादीन् के लिये भिड पडते हैं) बादशाह सलामत को भी तीतर की लडाई बहुत पसन्द थी। जब इनकी लडाई कराई जाती, तब भोजन के उपरान्त टेबुल पर से सब वस्तुए हटा

ली जातीं और जानवर नशे पानी से तैयार करके लाए जाते। बादशाह सलामत अपनी जड़ाऊ कुर्सी पर जहां के तहां टेबुल के पास बैठे रहते थे और नौकरों को हुकुम देते थे कि जोड़ छोड़े जाय, तब दो तीतर लाकर मेज़ पर खड़े कर दिये जाते थे। पहिले तो ये जानवर खड़े होकर हमें अचम्भे से निहारने लगते मानो पूछते हैं कि वे यहां क्यों मगाए गए हैं। इधर एक तीतर बोल पड़ा उधर दूसरे तीतर ने भी ज़ोर से आवाज़ दी—इसी प्रकार वे दो एक बेर बोलते, परन्तु अभी तक इनमें कोई शत्रुता के तेवर नहीं प्रगट होते। इतने में बादशाह के आगे एक मादिन लाकर बीच में बैठा दी गई। अब दोनो तीतर भकड़ते बरते धीरे धीरे कदम उठाते मादीन की ओर चले कि जाकर उससे तनिक मेलजोल करें। ये लोग ऐसेही अलवार से चलते जैसे कोई तुरुक मसजिद या हरम में जा रहे हैं।

जब वे देखते कि दूसरा भी बढ़ता हुआ मादीन की ओर आ रहा है बस वहीं से उनकी चाल ढाल से द्वेष भाव और शत्रुता प्रगट होने लगती। एक ने पर फुला लिए, दूसरे ने गरदन उठाई, एक ने शाफ लगाई, दूसरे ने भी कड़क के आवाज़ दी—मादीन बिचारी चुपचाप खड़ी ये सब कुतूहल देखती रहती है। इतने में दोनो एक दूसरे पर झपट पड़े। इधर गुत्थम गुत्था हुई, उधर मादीन अपनी जान बचा के भाग खड़ी हुई और ये दोनो मर जूझते रहते। ऊंचे उठा उठा के, फेर गड़े कर कर के और चोंच बढ़ा बढ़ा कर ये जानवर लगते गहरी मारा मारी करने। इनके लात फटकारने और पंजे मारने का ढङ्ग ऐसा कौशल विहीन नहीं होता, दोनो की दृष्टि लगी होती है, दाहने

आगे को बढ़ी रहती हैं, क्रोध और कोप में डैने फड़क २ उठते हैं, लातें उठती हैं और भूमि पर आ जाती है, दोनो दाव घात में हटते बढ़ते रहते हैं। कभी झपटने का भाव देखाते और पर तोल तौल कर रह रह जाते हैं, कोई झपटना चाहता है, तो कोई हट कर घात बचा जाता है, प्रत्येक क्रोध मे भरे एक दूसरे के लहु का प्यसा मालूम देता है। प्रत्येक यही चाहता है कि अपनी चोच अपने शत्रु के अंग मे घोपकर लहू लुहान करदे और विजय का सेहरा अपने सिर बांधे। इन योधाओं के चारो ओर मनुष्य झुके पड़ते हैं और आखें जमाए खड़े देखते रहते हैं। कभी एक को बढ़ावा दे दिया, कभी दूसरे की प्रशसा करके उसे गरमा दिया, इस समय बादशाह सलामत तो सब से अधिक जोश में भर जाते हैं।,

अन्त को दोनो पक्षी साथ उड़ कर टेबुल से कुछ ऊपर ही हवा में एक दूसरे से गुथ जाते हैं, एक के पंजे दूसरे की जांघो वा पुट्ठो मे धसे हुए और चोच आंखो पर गड़ी हुई रहतीं हैं, लहू बहने लगता है। कई जगह लहु लुहान हो जाता है इधर उधर घाव हो जाते हैं। स्पष्ट मालूम होता है कि यह लड़ाई देखौआ नही है, यह खिलवाड़ वा बनावटी युद्ध नहीं है। बिजयी जो वहा अकड़ा खड़ा रहता है उसपर तमाशाइ लोग शाबाश के पुल बाध देते हैं, तीतर भी अपने जोश और घमण्ड में आकर दो चार हाक लगा देता है। अभी युद्ध की समाप्ति नहीं हुई। कुछ दम लेकर शत्रू फिर बढ़ता है। उस के जाघो वा पसलियो से जो लहू बहा है उसकी उसे जरा भी परवाह नहीं है और वह अपने शत्रु से साहस और जी जान

के साथ फिर जुट जाने और भिड़ जाने के लिये प्रस्तुत दिखाई देता है।

अब दोनो झपट कर उठे और पञ्जे एक दूसरे में गड़ गए और एक ने चोंच से दूसरे की आंख पकड़ कर झिंझोड़ डाली। जो तीतर पहिले जीता था वह अब की दब गया, पर उभड़ने न पाया और कुछ पीछे हट गया। उसकी एक आंख का कोआ निकल कर लटकने लगा। सच तो यह है कि यह बड़े निठुरता का खेल है, परन्तु हमलोग और सब तमाशबीन वहां टेबुलके चारो ओर खड़े तमाशा देखा करते थे, ऐसी लड़ाई देखते देखते हम इसके ऐसे अभ्यासी होगए थे कि इन बातों से हमें कुछ भी खेद नहीं होता था। फिर कमरे में कहकहे पर कहकहा उड़ने लगा और जिस तीतर की आंख निकल पड़ी थी उसे लोग बढ़ावा देने लगे। परन्तु उसे दिलासा और बढ़ावा देने की आवश्यकता नहीं थी, क्षणमात्र ही में उनकी फिर गुत्थम होगई। अब की बेर बड़ी प्रचण्ड कठोरता के साथ वे एक दूसरे को 'मड़ोड़' करने और 'धुनकने' और 'छुड़ौवल' करने लगे,जबतक एक उनमें से 'कोफ्ती' होकर मुर्दे के समान गिरता नहीं तब तक वे हटते भी नहीं। जब एक तीतर चूर हो कर गिर गया, तब जाकर लड़ाई समाप्त हुई। विजयी की एक आंख निकली हुई थी और वह बेदम सा अपनी सफलता प्रगट किये खड़ा था। यदि किसीका एक भी पैर बच जाए और या बम न हुआ हो तो उसका बड़ा भाग्य समझना चाहिये। और इस विजयी को चुमकारते, शाबाशी देते हुए उठा लेजाते हैं। कुछ देर बाद वह भी मर जाता है।

तदनन्तर शराब की बोतलें जो हटा दी गई थी, अब फिर लाई गईं और प्याले चलने लगे। इस समय बादशाह सलामत बड़े आमोद में होते और लोगों से 'नास लेने' को वेर वेर कहा करते! लोग भी दिखाने को नास की चुटकी लेते भी जाते हैं* पर सूंघते नहीं, नाक पर उंगली लगा कर रह जाते। बादशाह के पीछे पेचवान लगा दिया जाता। अबलायें (मोरछल वालिया) चिलम की आग सुलगाती रहती। बादशाह सलामत हुक्का पीते जाते और धूम्रा उड़ाते जाते और उस तीतर के लात मारने वा मुंह डालने वा आंख निकाल लेने पर और किसी के 'कनेर'† मारने पर कहकहे मारा करते।

बादशाह फिर खुश खुश कहने लगते 'कि अभी लड़ाई और होनी चाहिये'। तब हाली मवाली पूछने लगते कि हजूर अब किसकी जोड़ हो बटेर की, तीतर की वा मुर्गों की? तब बादशाह जिसकी पाली लाने को कहते वही आती और फिर उसी प्रकार लड़ाई कराई जाती। इन लड़ाई के वक्त उधम मच जाता, क्योंकि शराब के नशे में सभी लोग धत्त रहते और जब तक बादशाह ऐसे मत्त न होजाते कि बोल तक न सकें, तब तक जोड़ पर जोड़ छूटा करतीं।

अब बारह सिंहो का वृत्तान्त सुनिये। यह पशु छोटा

*हिन्दुस्तानी दरबार में छींकना बुरा समझा जाता है। मैं ऊपर लिख चुका हूं कि छींकने वाले की नाक काट ली जाती थी।

†विदित रहे कि कूकीपन (पकड़कर छोड़ना नहीं) पुनुकना, मरोड़ करना इत्यादि शब्द बटेर इत्यादि की लड़ाई में बोले जाते, बटेरबाज इत्यादि के ये मुहावरे हैं।

और फुरतीला होता है और इसकी बनावट सुललित और अङ्ग कोमल। हिमालय की तराई में ये पशु बहुत होते हैं, वहां से पकड़ कर ये लखनऊ में लाये जाते हैं और यहां इन्हें लड़ने की शिक्षा दी जाती है। इनकी लड़ाई बादशाही बाग में वा एक घेरे में जो इसी काम के लिये बनाया जाता है, हुआ करती है। बादशाह सलामत ऊपर कोठे पर बैठा करते हैं और उनके सखा सब उनके चारों ओर खड़े तमाशा देखते हैं। जिस पैंकदमी से और पैंतरे के साथ धीरे धीरे कदम उठा कर ये बड़े २ सींगवाले लड़ने के लिये एक दूसरे की ओर बढ़ते हैं, इससे बढ़ कर उत्तम दृश्य दूसरा नहीं होता। उनका बड़ी बड़ी सींगों का हवा में बल खाना, चाल से उनका पैंकदमी चलना, ऐंठना मैंडना, बीच बीच में ठुमुक जाना और फिर आगे बढ़ना, यह एक ऐसा दृश्य होता है कि देखने ही योग्य है, इसका वर्णन करना दुस्तर है। उनकी मनोहर और निराली चाल देखकर चित्त तो बड़ा प्रसन्न होता है परन्तु अन्तःकरण कुत्सित भी होता है कि ये बानबान और मधुर चारा ऐसी तुच्छ बात में दिखलाई जाती है।

दोनों अपनी अपनी सींगों को सामने करके मस्त चलते हैं और सींग से सींग जोड़ के बल कर धक्कम धक्का करते हुए दोनों कभी आगे बढ़ते कभी पीछे हटते हैं। उन को, बहुत कुछ टकुरचाली और सींगों की मरोड़ा मरोड़ी के वे पैंतरे बदलते हुए खूबही गुथ जाते हैं। इस समय दोनों के अङ्ग अङ्ग, सब मस्त, पुट्ठे पुट्ठे तने रहते हैं और वे अपना बल मात्र लगा कर एक दूसरे को ढकेलते हैं। इस अवस्था में

अपना पूरा २ बल लगादेते है,जिसका अन्तिम् फल यह होता है कि एक न एक की जान जाती है। दोनो के पिछले पैर आपुस में धक्का देनेको भूमि पर तने हुए रहते हैं, मानो वे भूमि में जडे है। सिर नीचा किये हुए, पैर भूमि पर जमाए हुए और एक दूसरे को ढकेलते और टक्कर लडाते हुए दोनो ठेलमठेला करते है, उनके अङ्ग २ तने हुए दाढ्य रहते हैं। साराश यह कि वे खूबही दृढता से लडते हैं।

कभी एक ढकेलता और दूसरा हठ जाता, कभी दूसरे के हूल से पहिला पीछे खिसक जाता और फिर पहिला दूसरे को ढकेल कर दो चार कदम हटा ले जाता। इस अवसर पर दोनो की नस नस फूली हुई होती हैं और पुट्ठे तने होते हैं। दोनो विजय प्राप्त की इच्छा मे घमासान युद्ध करते रहते हैं। किमी का भी पैर भूमि से नहीं उठता, यदि उठा भी तो झट भूमि पर टिक जाता, इनके अङ्ग के एक एक भाग की चाल, इनकी बनावट और जोड तोड के विरुद्ध नहीं होने पाती।

इसी प्रकार लडते २ एक न एक का दम टूट जाता है और उसका बल कम होने लगता है। उसकी बडी बडी आखो से भय के लक्षण प्रगट होने लगते है,अब जो उसके पैर उठते और भूमि पर पडते हैं तो उसमें थरथराहट होने लगती है। वह पहला सा तनाव अब नही रहता और वह बिचारा पीछे हटने लगता है। अब उसमें शत्रु का प्रहार और धक्का रोकने की सामर्थ्य शेष नहीं रह जाता। दूसरा बारहसिघा अपने शत्रु को अब और भी बलपूर्वक रेलने लगता है। ज्यो २ वह बलहीन होकर पीछे हटता जाता है, त्यो त्यो विजयी उसे

अधिक शक्ति से हटाता और ढकेलने लगता है। एक का साहस टूटने लगता है और दूसरे का बल और पराक्रम बढ़ता जाता है, अतएव विजयी और भी दृढ़ता के साथ दूसरे को रेलता चला जाता है।

इस समय ऊपर कोठे पर, जहां वे बादशाह सलामत और हमलोग बैठे देखा करते हैं, बड़ा ही जोश होने लगता है और लोग आखें फाड़ फाड़कर, गरदनें बढ़ा बढ़ा कर देखते हैं कि अब उनमें कैसे निपटती है। इस समय बादशाह सब से अधिक उत्सुक और व्यग्र होते हैं और चिल्ला २ कर बोल उठते हैं, "देखना वह चला, उसके पैर उखड़ गये, काला काला मारे लिए जाता है।"

अब सन्देह न रहा—काला बारहसिंघा बराबर आगे को ढकेलने ही चला जाता है। उसका सिर और भी झुका हुआ है, उसका पुट्ठा २ तना हुआ है, अङ्ग अङ्ग फड़क रहा है। दूसरे बारहसिंघे का यह हाल है कि मारे भय के उसकी आखें नि कली पड़ती हैं और इधर उधर नाच रही हैं। मारे डर के उसके हाथ पैर फूलने लगे हैं। अभी वह लड़ता तो जाता है, पर उसका सुगठित सुन्दर अङ्ग थर्राने और विवश होने लगा है। हटता २ अन्त को वह घेरे के सिरे तक पहुंच जाता है और उसकी पिछली टांगें टट्टर के खम्भों से लग जाती हैं और पीछे हटने का दाव नहीं रहता, फिर भी निर्दय विजयी उसे ढकेलता ही जाता है।

यह अवस्था देखकर कोई न कोई कोठे पर से बोल उठता है, "मुबारक हो हुजूर," क्योंकि यह साफ मालूम हो गया

देख रहा है कि बिचारा निराश हारा हुआ बारहसिंगा एक ओर टट्टर से भिड़ गया है और दूसरी ओर से उसका शत्रु उसे रेलता ही जाता है। इसपर उस देखने वाले के मुह से निकल ही जाता है, "बस, अब इन्हें बचा लेना चाहिए।" इसपर बादशाह खूबही ठट्ठे उड़ाते हैं।

दबा हुआ बारहसिंगा कांपता जाता है, पर अभी तक लड़ने से नहीं हटता, इस शब्द को सुन कर जहां तक बन सकता है वह अपने दीदे ऊपर करके देखने लगता है। वह यह नहीं जानता कि वेलोग इसकी सहायता करने को कहते हैं। अब उसका रहा सहा बल भी मन्द पड़ता जाता है। उसका कंपित अंग डगमगाने लगता है, पर उसका शत्रु सिर झुका झुका कर रेले पर रेला दियेही जाता है। अब उसके पुट्ठों में तनाव लेश मात्र भी नहीं रहजाता और वह झट अपना अङ्ग सिकोड़ कर विजयी के सामने से गरदन फेर लेता है मानो जान छुड़ा कर भाग जाने की चेष्टा करता है। उसके सिर हटाते ही सींगें जकड़ बन्दी से छूट जाती हैं और विजयी की नोकीली सींग उसके पसलियो में घुस जाती हैं और बिचारे घायल पशु की गरदन घूम जाती है। आंखो से आसू की धारा बहने लगती है और मारे पीड़ा के वह 'बेंबें' करने लगता है।

जान बड़ी प्यारी होती है, बड़ी फुरती और झटके के साथ वह अपने शत्रु के दबाव से निकल कर निकल भागता है। इस झटके से शत्रु की गरदन तक घूम जाती है और वह तीर के समान निकल भागता है और हवा की तरह तेजी से टट्टर के चारो ओर दौड़ने लगता है कि कहीं से भागने

का रास्ता उसे मिल जाय।

इस अवसर पर भी कोठे पर बड़ा उद्वेग व हल्ला होने लगता है। अभी और लड़ाई होने वाली है और बादशाह स्वयं चिल्ला २ कर शाबाश शाबाश कह कर भगोड़े पशु को शाप देते रहते हैं।

यह बारहसिंगा जान छुड़ा कर ऐसे ज़ोर से भागता है कि उसपर आंख नहीं ठहरती और न उसके साथ साथ दृष्टि जा सकती है, यह बारहसिंगा भागता जाता है और बड़ी तत्परता के साथ भागने का पथ ढूंढता फिरता है, परन्तु उसे भागने का दाव नहीं मिलता। जब यह टहर के चारों ओर बड़े वेग से चक्कर काटने लगता है, उस समय उसके घाव स्पष्ट दिखाई देते हैं और इस बीच में उसका विपक्षी फिर भिड़ने के लिये सावधान हो जाता है। अब वह अपना सिर इतना झुका लेता है कि थूथन घुटनों से लग जाता है और सींगें जिनकी नोकें ओर लहू से लिपटी रहती हैं, भागते हुए शत्रु के बीच में होती हैं। वह भागते हुए हरन को ताक देखता रहता है, ज्योंहि दाव पाता है वह उसपर ज़ोर से टूट पड़ता है और विपक्षी के अङ्ग में सींगें गड़ा देता है। ये सींगें देर में खूब धंस जाती हैं और बेचारा भग्न पशु बेताब होकर आ मर कर गिर पड़ता है। और तब विजयी अपनी सींगें मार मार कर पराजित बारहसिंघा के अङ्ग से निकाल लेता है और अकड़ कर बड़े घमण्ड के साथ सिर उठाये हुए खड़ा हो जाता है।

जहां पर शेर चीते कटहर जानवरों, दरिन्दों में लड़ने, भिड़

विकट और वृहत शरीर वाले भारी दिग्गज हाथियो की लड़ाई होती है वहा उनका वर्णन छोड कर मैं भी एक तुच्छ पशु की लड़ाई का, चाहे देखने मे वह कैसीही सुराजित लड़ाई क्यो न हो,वर्णन क्यो करने लगा ? तीतर, बटेर,बुलबुल,मुर्गे, पलवे मेढे और बारहसिघो की लड़ाईया तो लड़को के खेल के समान हैं। दो शेरो मे एक दूसरे की चीरफाड़ काटाकूटी करने वा दो गैंडो में अपने वरछी सदृश सींगो को गड़ाने के आगे तो ये बहुतही तुच्छ और क्षुद्र खिलवाड़ हैं। यदि उनका विवर्ण हमारे दयाशील पाठक सुनें,तो अलबत्ता उनको प्रहसन और भयानक और करुणा रस का आनन्द मिल सकता है ॥

शेर की लड़ाई।

दो शेर,जो लड़ाने के लिये विना चारा पानी के कई दिन पहिले से भूखे रक्खे जाते हैं, एक मजबूत टट्टरो से घिरे हूए अहाते में लाकर छोड़े जाते हैं, उस समय इतना सन्नाटा रहता है कि सूई भी गिरे तो उसकी आवाज सुनाई देजाय, क्योकि प्रत्येक व्यक्ति की यही प्रतीक्षा रहती है कि देखें क्या होता है।

बादशाह के पशुागार मे एक बड़ा शानदार शेर था, जो लखनऊ में कई लड़ाइयां जीत चुका था। इस शेर का नाम 'कगरा' था। जितने शेर मैंने देखे हैं उनमें यह शेर सचमुच सब से बड़ा था,इसकी चिकनी और चमकदार खाल पर बहुत सुन्दर धारियां थीं, और जब वह प्रसन्नता पूर्वक चलता फिरता था, तो ये धारियां उसके अङ्ग और लाम्बी पीठ पर बड़ीही भली मालूम देती थीं। शेर के पारखी लोग समझते थे कि इसके जोड़ का शेर मिलना दुर्लभ है। एक बेर यह खबर

मिली कि एक बड़ा भारी जङ्गली शेर तराई में बिना चोट चपेट खाये पकड़ा गया है। यह तराई हिमालय के नीचे, अवध और नेपाल के बीच में सघन वन है। सभों ने सोच लिया था कि यदि यह शेर आजायगा तो कगरा के साथ बराबर के जोड़ की लड़ाई होगी और तब बड़ा मज़ा आयेगा।

यह नया शेर, जिसका नाम "तराई वाला" शेर रक्खा गया था, बड़े यत्न के साथ लाया गया था, जिसमें उसकी लड़ाई उस समय कराई जाय, जब कि सरकारी फौज के कमान्डर जनरैल बादशाह अवध से मिलने आवें। इस तमाशे के लिये बड़े बड़े सामान किये गए थे। जिस अहाते में लड़ाई होने को थी, वह खूब सजाया गया था। उसमें तोरन और फूलों के हार लटकाये गए थे, जैसा कि रङ्गबिरङ्ग के सजावट के लिये हिन्दुस्तान विख्यात है। जिस कोठे पर बादशाह और कमांडर-इन-चीफ बैठ कर तमाशा देखनेवाले थे, वह सुनहरी परदों और झण्डियों से खूब सजा हुआ था। गद्दी के ऊपर राजसी चतरछत्र और कारचोबी के जड़ाऊ छत्र लगाये गए थे। कमान्डर इन चीफ और रेज़ीडेंट के लिये बादशाह के दोनों बगल में कुरसियां रक्खी गईं थीं, उनपर भी मखमली गलर लगे हुए थे। इस अवसर पर बादशाह सलामत "ताज" (मुकुट) पहिने हुए थे। यह ताज हाथही में बना था और इसमें बड़े बड़े बहुमूल्य रत्न जड़े हुए थे और उसपर मोती [illegible] बांकपन के साथ लगा हुआ था। अब यह बादशाह [illegible] बड़े मर्यादा से काम काज करते थे। उनके चेहरे का [illegible] चेहरा रङ्ग जिसमें कोमलता और गम्भीरता भरा हुआ [illegible]

इस भड़कीले रत्नजटित ताज और कोमल पर के तुर्रे के कारण और भी तेजवान और शोभनीय और दर्शनीय मालूम देता था। इस अवसर पर यह अपनी देशी पोशाक चीनी कमखाब की बनी हुई पहिने हुए थे। रेश्मी कपडे पर सुनहरे रूपहले कलाबत्तू और सलमे सितारे के काम थे,जो हिलने जुलने पर ऐसा चमकता था, मानो जवाहरात चमक रहे हैं। कमाण्डर इनचीफ अपनी जरनैली वरदी पहिने थे और रेजीडण्ट साहब सादी पोशाक धारण किये हुए थे। यह सारा दृश्य ऐसा था कि कभी कोई नहीं भूल सकता, चाहे हजारो आवश्यक बातें चित्त से विस्मृत होजाय, पर यह सदाही चित्त पर बनी रहेगी।

कगरा और तराई वाले शेर के पिंजडे आमने सामने दालान में ऐसी जगह रक्खे गए थे कि हमलोग ऊपर कोठे से भली भांति देख सकते थे। पिंजडो में ये शेर इधर उधर टहल रहे थे, उनकी चमकती हुई लम्बी २ पीठ खूब दिखाई पड़ती थी, बीच बीच मे जब कोई आदमी पिंजडो के पास से होकर निकल जाता था तो शेर ऐसी जोर से गूंजते और मुह बा कर दांत ऐसा निकालते थे कि जी दहल जाता था।

ये पिंजडे आमने सामने कुछ देर तक इस कारण से रक्खे रहे कि दोनो को मालूम हो जाय कि कोई दूसरा शेर भी वहां है। क्योकि यद्यपि शेर इतना बडा हिंसक और कट्टर जानवर है, तो भी वह स्वभावत बडा डरपोक होता है, यदि अचानक उसे किसी भय का सामना पड़ जाय तो वह डर कर दबक जाता और मुह मोड कर भाग जाता है और फिर साम्हना नहीं करता।

मैंने दो बेर ऐसा देखा है कि दो शेर भूखे प्यासे रखकर लड़ाने को तैयार किये गए थे, पर जब वे अहाते में कूद कर आए, (पहिले उन्हें मालूम न था कि वहां कोई दूसरा शेर भी है) और जब दोनो का एकाएक सामना होगया, तब दोनो की यही चेष्टा होने लगी कि वे किसी प्रकार अपने अपने पिंजड़ो में भाग जाय। जब पिंजड़ो में न जा सके, तो लाचार दोनों दबक कर पेट के बल बैठ गए और एक दूसरे को घूरने लगे, पर लड़ने का नाम न लिया।

अब झगरा और तराईवाले शेर ने एक दूसरे को खूब देख लिया, क्योंकि अपने अपने पिंजड़ो में टहलते हुए कभी २ ये शेर एक दूसरे पर झपट कर पिंजड़ो पर खड़े होजाते और बड़ी ज़ोर से गरजते और दांत निकालते थे। कमांडर इन चीफ और रेजिडेण्ट ने इन दोनो शेरो को पहिले ही [illegible] २ देख भाल लिया था।

कमांडर-इन-चीफ साहब उनको बड़े ध्यान से देख रहे थे, इतने में बादशाह ने उनसे कहा, "कहिये साहब आप किसपर बाज़ी बदते हैं"।

कमांडर-इन-चीफ। 'हुज़ूर। मुझे तो क्षमा करें'। (बात यह थी कि इनके राज में बड़ा गोलमाल हो रहा था, यहां शासन प्रबंध अच्छा न था, इसलिये कम्पनी सरकार बादशाह से रुष्ट थी, इसी कारण से कमांडर-इन-चीफ उनके साथ बाज़ी लगाने से झिझके थे)।

फिर बादशाह ने रेज़ीडेण्ट की ओर फिर कर कहा, "रेज़ीडेण्ट साहब, झगरा पर [illegible]"।

रेजिडेंट। "अच्छा हजूर, मुझे स्वीकार है, मेरी समझ में तो तराई वाला ही जीतेगा।"

यह सुन कर बादशाह मारे खुशी के हाथ मलने लगे। अब उनको बाजी में आनन्द आने लगा था। फिर नवाब वजीर की ओर देखकर—

बादशाह। "कहो नवाब, तुम तराई वाले पर बाजी लगाते हो।"

"वजीर। जहा पनाह रेजिडण्ट साहब की बूझ सदा ठीक होती है। मैं उसपर अवश्य बाजी बदूंगा।"

(स्मरण रहे कि नवाब वजीर तो नाम मात्र को वजीर थे, हा वह मालदार बहुत थे, अङ्गरेज नापित, जो इस समय अनु-चरो के बीच में खड़ा था, अलबत्ता पूरी २ वजारत करता था)।

बादशाह। "अच्छा तो 'कगरा' पर सौ अशर्फिया हुई।"

वजीर ने शर्त मान ली और अपने काशमीरी पटके में से एक छोटी सी सुन्दर पाकेट-बुक निकाल कर उसपर टाक लिया। यह इसलिये नहीं टाका था कि यदि बादशाह भूल जावें तो उन्हे दिखला कर याद दिलाया जाय, किन्तु इस हेतु से टाका था कि यदि बादशाह कहने लगे कि नहीं जी तुमने कगरा पर बाजी बदी थी, तो उस समय वह इस याददाश्त को दिखा सके और दबी जबान से अपना सदेह प्रगट करे कि कदाचित जहापनाह भूलते हैं, मेरी भूल नहीं है और यदि उसपर भी जहापनाह हठपूर्वक कहें कि तुमने तराई वालेही पर बाजी लगाई थी, तो वह अपनी हार मान कर १०० अशर्फिया खुशी से देदें और जब कोई मोटी असामी हाथ

लग जाय तब उससे उतनी रकम वसूल करले।*

इशारा किया गया—दोनो पिंजडों का फाटक एक साथ ही खोला गया। सराईवाला शेर एकही छलाग में पिंजडे से बाहर आगया और अपना मुंह बाये हुए पूछ उद्वेग से इधर उधर हिलाने लगा। कगरा जरा ठस्से के साथ निकला, पर इसकी भी चालढाल और बांकपन देखेही थी। इन दोनो के बीच में ५० फिट की दूरी होगी, जहां से ये दोनो शेर एक दूसरे को खड़े घूर रहे थे और मुंह खोले हुए दुम बराबर हिलाते रहे।

अन्त को कगरा दो चार कदम आगे बढ़ा और इतना कि बली जहां खड़ा था वहीं पर अपना पैर तोड़ कर बैठ गया परन्तु वह अपना पैर सिकोड़े हुए कगरा को घूर रहा था ऐसा जान पड़ता था कि वह उसपर फलांग मारने वाला है। कगरा भी उसकी ओर टकटकी लगाए उसी के पास धीरे २ होशियारी के साथ बढ़ता जाता था, परन्तु वह सीधे सामने नहीं बढ़ता था, किन्तु जरा कतरा के तिरछे जाता था, मानो वह गोल चक्कर लगाता हुआ शत्रु के पास आ रहा था और जब वह कुछ पास पहुच गया, तब सराई वाला शेर उठ खड़ा हुआ और वह भी उसी तरह कतरा के तिरछा आगे बढ़ा, दोनों गोल चक्कर सा लगाते हुए धीरे धीरे निकट होते जाते थे। ऊपर कोठे पर सन्नाटा छाया हुआ था, कोई दम तक नहीं मारता था। प्रत्येक की दृष्टि शेरों की ओर लगी हुई थी और वे दोनो बराबर गोलाकार बढ़ रहे थे। दोनों शेर बहुत बड़े २ थे दोनो शेर बड़े सुन्दर, मोटे ताजे और बलवान थे।

तराई वाले की रंगत झगरा से कुछ हलकी थी, अलबत्ता काली २ काली धारियों के बीच में पीलेपन की झलक अधिकथी। दोनों बड़ेही सुन्दर, बड़े ही निडर और कट्टर और बड़े ही भयंकर थे।

वे लोग धीरे २ एक दूसरे के निकट बढ़ही रहे थे कि झगरा तड़पा। यह पहिले कई बेर लड़ाइयां जीत चुका था इसलिये उसे अपने बल पर बड़ा भरोसा था। यह नहीं मालूम होता था कि उसने जान कर अपने इच्छा से छलांग मारी है, किन्तु ऐसा मालूम दिया कि मानो किसी अन्य बल ने वा विद्युत शक्ति ने उसे हवा मे उछाल दिया है। यह तड़पान ऐसी अचानक ऐसी फुरती की और ऐसी प्रचण्ड थी कि मालूमही नहीं हुआ था कि वह जानबूझ कर कूदा है। तराई वाला भी असावधान न था। जिस वेग से झगरा हवा मे उड़ा, उतनीही फुरती से उसका विपक्षी भी उछल कर हटा। दोनों एकही साथ उड़े। कैसे अद्भुत रीति से उन्होंने फलांग मारी थी कि वाह वाह। झगरा का यह दांव खाली गया और वह भूमि पर गिरा। अभी वह सम्हला ही न था, अभी उसका पैर टिकने भी न पाया था कि तराई वाला उसपर आ पड़ा। विपक्षी के पंजे झगरा के गरदन पर जोर से गड़ गए और उसके भयानक जबड़े उसके गले को झंझोड़ने लगे। इसमे बस एक क्षण लगा होगा, अभी हमलोग इतना ही देखने पाये थे कि तराई वाले का दांव चल गया है। हमलोग भलीभांति यह देख भी न सके थे कि उसके पंजे झगरा के गरदन पर पड़े हैं और वह मुंह से शत्रु के गले को झंझोर रहा है कि झगरा ने एक छलांग भरी,

तीक्ष्ण पजे लगातार चल रहे थे और दोनो अपने २ मुह को खूब खोल कर अपने २ विपक्षि की का गला पकड़ना चाहते थे। इतनी जल्दी २ यह मल्ह युद्ध होता था कि हमलोगो को यह देखना कठिन था किसने क्या वार किया, और किसने किस प्रकार दाव बचाया।

ये दोनो पजो और मुह से कहरपने के साथ युद्ध करते जाते थे और निकट होते जाते थे, बीच बीच मे गरजते और बफरते भी थे और एक दूसरे को जकड़बन्द करते जाते थे। दोनो एक दूसरे के गले में मुह धँसाये और पजो से गरदन पकड़े अपने २ पिछले पैरो के बल खड़े होगए और लगे कुश्ती लड़ने, कभी नोचते खसोटते, कभी खीचते मड़ोड़ते, कभी झड़पाझड़-पी करते और कभी पछाड़ा पछाड़ी का उद्योग करते। ये सब काम बड़े बल और दक्षता से वे कर रहे थे। यह लड़ाई घोर और ध्यानानुकर्षक थी। लेडिया यदि शेरो की लड़ाई देखें वा सुनें तो भयानक! वा निष्ठुर! कह कर भाग खड़ी हो। पर मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि इस लड़ाई में बहुत कुछ उच्च और उत्कृष्ट भाव सम्मिलित होता है, और इसमे सन्देह नहीं कि ऐसी लड़ाइया बनो में प्रायः हुआ करती है।

दोनो शेर आपुसमें चिमटे हुए छ फिट से भी अधिक ऊचे अपने पिछले पाव पर खड़े प्राण-घातक युद्ध कर रहे थे। उनके गोल गोल सिर और चमकती हुई आखें, उनके स्तम्भ सदृश्य दृढाङ्ग पर शोभा देती थीं। यह देखकर आश्चर्य होता था कि कितनी दृढता और योद्धेपन के साथ एक दूसरे की गरदनो पर उनके पजे जमे हुए थे। ये दोनो न तो अपनी

लगा। परन्तु वह न छूट सका। तराईवाला बड़ी दृढ़ता के साथ उसके गले से चिमटा हुआ था, उसके दांत गहरे गड़े हुए थे। कगरा अपने छुड़ाने के व्यर्थ यत्न मे उसे दूर तक घसीटता लेगया। यद्यपि उसने गला छुड़ाने का बहुत कुछ उद्योग और पराक्रम किया, पर सब निष्फल हुआ। घात पाकर तराई वाला भूमि पर से पड़े पड़ेही तड़प कर उसपर चढ़ बैठा।

वस्तुत लड़ाई समाप्त होगई, कगरा अब अपने शत्रु के नीचे पड़ा था, लहू की धारा उसके अङ्ग से बहने लगी थी और अब वह इस योग्य न रहगया था कि वह फिर पाला जीत सके। तराईवाले ने अपना एक पंजा उसके नीचे के जबड़े पर अड़ा कर और उसके मुंह को फेर के अपने दांत उसके गले मे पूर्ण रूप से गड़ा दिये। अब कगरा विवश होकर इधर उधर पंजे मार कर उसकी खाल नोचे खसोटे डालता था। परन्तु इस के मुंह की पकड़ छूट चुकी थी और स्पष्टरूप से अपने विजयी की दाब और काट में वह घुरघुर हुआ जाता था।

कोठे पर हिन्दी और अङ्गरेजी भाषा में लोग कहने लगे कि 'कगरा हार गया'।

बादशाह ने भी स्वीकार कर लिया कि "हां, वह हार गया"। उसीदम आज्ञा दी गई कि कगरा का पिंजड़ा खोल दिया जाय और तराईवाला शेर हटा दिया जाय।

उस क्षण लाल २ गरम छड़ ठाठर में डाले गए और जब विजयी खूब जलाया और दागा गया, तब कहीं जाकर उसने कगरा को छोड़ा। तमाशे भर में यह काम अत्यन्त निठुरता का था, पर किया क्या जाता कगरा के छुड़ाने का एक यही

उपाय था। सारांश यह कि तराईंवाला हटा दिया गया, इसके पंजे लहू में लिथरे हुए थे। अब वह हटा तो लहू की धारा भूमि पर गिर रही थी। कगरा का पिंजड़ा खोल दिया गया और वह झटपट उसमें जा घुसा। पराजय के चिन्ह स्वयं उसकी चाल से प्रगट थे, दुम दबाये अपने पिंजड़े में अब वह जा रहा तो लहू के धब्बे अखाड़े में टपकते जाते थे। यद्यपि वह भागता हुआ पिंजड़े की ओर गया तो भी वह घोड़े के समान वेग से नहीं भागा, किन्तु बिल्ली के समान पैर दबाये और बदन चुराये हुए दौड़ गया। गरम गरम सब तराईंवाले के सामने धरे हुए थे, जिसमें वह उनका पीछा न करे तो फिर भी वह उसी की ओर मुंह किये, आँखें चमकाता हुआ अपने पराजित शत्रु को देख रहा था। कगरा पिंजड़े तक पहुंचा भी न था कि तराईंवाले ने फिर गरम २ झटके छलांग मारी, परन्तु वह पराजित तक न पहुंच सका [illegible] वेग से दौड़ कर पिंजड़े के कोने में उसी दबक कर बैठ गया, जैसे कुत्ता मार खा कर कोने में दबक जाता है।

तराईंवाला बराबर अपने पराजित शत्रु को घूर घूर के निरख रहा था, एक पल के लिये भी उसने आंख उधर से न हटाई। फिर वह दो तीन कुरकुरी लेकर अपने पंजे को चाटने लगा और फिर उठ कर सावधानी के साथ टहलता हुआ अपने पिंजड़े की ओर चला गया। उसके पीछे [illegible] दो [illegible] और [illegible] समय यह २ लहू की बूंदें जो टपक रही थीं उनसे मालूम होता था कि यह विजय भी कुछ महंगा ही नहीं प्राप्त हुआ है, किन्तु यहीं लहू पानी एक करने पर मिला है॥

ग्यारहवां बयान।

मेढो और हाथियो को लड़ाई।

चिड़ियो, बारहसिंगो और शेरो की लोक प्रसिद्ध लड़ाइयो के चित्र तो मैंने खींच दिये है, अब मैं भारी भरकम और पर्वताकार जानवरो के समर युद्ध का वर्णन करता हूं। ऊटो से बढकर बेहङ्गम और जङ्गलीपने की लडाई दूसरी नही होती। लखनऊ में इन जानवरो को लडना सिखाया जाता है, परन्तु दैव ने इन्हें शात और उपयोगी पशु बनाया है, कुछ लडने भिडने के लिये नही। जब मनुष्य लोग मनमौज और जी बहलाव के निमित्त उनको लड़ाका बनाना चाहते हैं और हठ करके लड़वाते भी हैं, तो यह तमाशा कुत्सित और घृणोत्पादक होता है।

यह बात विख्यात है कि पीरू देश के लामा नामक भेड़ के समान ये जानवर भी अपने बैरी के मुह पर अपने गले से झाग की बौछार करने लगते हैं। मैंने अपनी आखो से देखा है कि जो ऊट लड़ाई के लिये सिखाये जाते हैं वे पेट भर के झाग उडाते हैं, यह विभत्सकार तमाशा होता है। इनकी एकही प्रकार की पकड भी है, जो लम्बे२ होठ और दात से होती है और उनकी खीचा खिचैावल किसी भाति भली नहीं मालूम पडती। इस लडाई मे सिर घुम जाता है और आखें गई आई होजाती हैं, पर उनका बड़े डौलवाला अङ्ग बचा रहता है।

गेंडा भी स्वाभावित शान्त और अहिंसक पशु होता है। विशप हेबर साहब लिखते हैं कि गाजीउद्दीन के समय में

यह गाड़ी में भी जोते जाते थे और इनपर हौदा भी बाँधा जाताथा। परन्तु मैंने ऐसा कभी नहीं देखा। यद्यपि यह पशु अहिंसक होता है, तथापि प्रकृति ने इसे बिचारे नर की अपेक्षा युद्ध के लिये ही अधिक योग्य बनाया है। कटारी जैसी इसकी थूथन, कवच से भी बढ़कर अभेद्य उसकी खाल, बड़े जघन शरीर और बड़े गठीले हाथ पैर, ये सब उसे ऐसे प्रबन्ध मिले हैं कि यह बड़े से बड़े शत्रु से लड़ सकता है। मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है कि जब यह उत्तेजित होजाये तो यह हर बाहे घोड़ा को भी जीत लेगा, इसका जोड़ बस हाथी है।

इन लड़ाई तमाशों के लिये शाही जानवरखाने में भारिरे के पशु इतने बहुतायत से थे कि जो मेरे केवल इस कथन से प्रगट होजायगा कि जब मैं अवध के बादशाह के यहां नौकर था, तब केवल गैंडे १५ से २० तक वहां रहा करते थे। बादशाह के रमने में ये खुले रहा करते थे, वहां एक अहाता घिरा हुआ था और वे उसी के अन्दर घूमा फिरा करते थे।

बहुधा करके इसी बादशाह की कोठी में और कभी कदाच गोमती किनारे की कोठी 'मुबारक मंज़िल' के मैदान में भारी जानवरों की लड़ाई कराई जाती थी। इनके लिये प्राय एक घेरा बनाया जाता था, जिसके एक ओर बादशाह के बैठने के लिये शामियाना इस प्रकार बनाया जाता था, जैसा कि अंगरेज़ी या मकानों के आगे गाड़ी के लिये बरामदा होता है। विलायत से बढ़कर कलकत्ते में इसकी चाल बहुत है। कभी कदाच ऐसा भी होता था कि यह लड़ाइयां खुले मैदान में कराई जाती थीं। ऐसे अवसर पर भूमि में मज़बूत खम्भे गाड़गाड़ कर तमाशा

देखने के लिये मचान बनाई जाती थी। जो गेंडे लड़ाये जाते हैं वे नर होते हैं और हाथियो के समान एक विशेष ऋतु में ही वे लड़ने योग्य होते हैं। उस समय दो मस्त गेंडो को नशा पानी खिला कर अहाते में आमने सामने लाकर छोड़ देते हैं वा इनको चतुर घोड़सवार लोग बरछो से गोद गोद कर मैदान में ले आते हैं। प्राय दोनो एक दूसरे को देखतेही लड़ने के लिये उद्यत होजाते हैं, क्योकि सूघने ही से उन्हे मालूम हो जाता है कि दूसरा गेंडा नर है वा मादीन। फिर वे दोनो सिर कुछ नीचा किये हुए एक दूसरे पर झपट पड़ते हैं और अहाते के बीच में क्रोध में दौड़ कर भिड़ जाते हैं और बनैले सूअर के सदृश अपने शस्त्रयुक्त थूथन भोकने लगते हैं।

इनके पीठ और पैरो की खाल इतनी मोटी होती है कि छुरी जैसी तीक्ष्ण थूथनी के सीग से भी उसपर खरोट वा चिन्ह तक नहीं पड़ता। हा,उनके कोमल पेट और बगल इन थूथनी से घायल होजाते हैं। दोनो भिड़ कर यही चाहते हैं कि थूथनी के सींग अपने शत्रु के पैरो के बीच मे घुसा कर बगल वा छाती में हूल दें और उसे फाड़ दें। यदि घात लगजाती है तो तनिक से सींग की झटकार से वहा का चमड़ा फट जाता है।

परन्तु दोनो का उद्योग यही रहता है, इसलिये उनकी गरदन और थूथन ही पहिले टकराते हैं। वे आपुस में सींग मारते हैं, एक दूसरे को ढकेला करते हैं, गरदनें खूब नीची झुकाये हुए घुरघुराते हैं और ऐसी फुरती और चटकाव, शक्ति और सामर्थ्य दिखाते हैं कि देखने वाले को आश्चर्य्य होता है कि ऐसे भद्दे पशु से यह कैसे सम्भव है। जब ये टकराते हैं

तो दोनो के थूथनो के आघात से फटाफट, खटाखट की आवाज होती है, उनकी सींगें भी टकरा जाती हैं, इनके टकराने का शब्द सुनकर ज्ञात होता है कि उनका भिड़ पाना लड़कों का खेल नहीं है। अन्त को किसी न किसी प्रकार वे थूथनी से थूथनी, सींग से सींग, सिर से सिर मिला कर जुट जाते हैं। इनका सिर बराबर झुका हुआ रहता है जिससे छाती अर्थात् टांगो के बिचले भाग को वे रोके और बचाये रहते हैं। घोर युद्ध होने लगता है। अपने पूरे बल और शक्ति से दोनो बराबर एक दूसरे को ढकेलते रहते हैं। जितना बल उनके शरीर में प्रकृति ने दिया है, उसे पूरा पूरा लगा कर अपने भारी शरीर का सारा बोझ वे एक दूसरे पर डाल देते हैं। वे आपुस में धक्कमधुक्का, रेलपेल, ठेलाठेली दीर्घप्रयत्न के साथ करते रहते हैं। जो कमजोर होता है, वह अपनी जगह छोड़ने लगता है। पहिले तो वह धीरे २ पीछे घसकता, कदम कदम हटता जाता है, फिर जल्दी २ पीछे भागने लगता है, इस तरह पुष्ट और बलवान गैंडा और भी असामान्य दृढ़ता और कड़ापने से अपने शत्रु को ठेलने लगता है। अन्त को कमजोर गैंडा जब देखता है कि उसका कुछ बश नहीं चल सकता, तब अपनी थूथनी और सींग अलग करने के लिये छटपटाकर फिर पीछे छटक जाता है। बस इसी समय लड़ाई की हारजीत का निपटारा होता है। मैंने कई प्रकार से इनकी लड़ाई का निपटते देखा है। यदि लड़ाई घिरे अहाते में होती है, तो निबल को भागने या पीछे हट कर छुटकारा पाने की जगह नहीं रहती और पराक्रमी शत्रु उसे या तो घोर रूप से घायल

करके गिरा देता है वा उसकी जानही ले लेता है। यदि निवल घायल होकर गिर जाता है, तो गरम गरम छड़ किंवा बरछों से विजयी शत्रु को लोग हटा देते हैं। परन्तु खुले मैदान मे निवल गैंडा, यदि वह फुरतीला हुआ तो, कभी कभी अपने को छुड़ा कर बड़े वेग से भाग जाता है और बहुत घायल नहीं होने पाता और बलवान उसका पीछा किये दौड़ता है, यहा तक कि दृष्टि से दोनों ऊझल होजाते हैं। ऐसे अवसर पर निपटारा भूमि की अवस्था और पशुओं की चातुर्यता पर निर्भर है। जो कहीं पीछा करने वाले ने भग्गू गैंडे को पकड़ पाया, तो फिर उसे कोई नही बचा सकता, क्योंकि वह एकही हूले में एक फुट गहरा घाव पेट वा छाती में कर देता है। हा, एक बेर, केवल एक ही बेर, मैंने ऐसा देखा कि उस लड़ाई का फल जैसा हमलोग ने समझा था, उस से विरुद्ध निकला।

यह लड़ाई खुले मैदान में हुई थी। ऐसा हुआ कि निवल गैंडा पहिले तो धीरे २ पीछे हटने लगा, फिर कुछ शीघ्रता से, और अन्त में वह छुड़ाने को झोक से पीछे उछला और अलग हो गया। बलवान गैंडे ने, मूर्खपने से अपने विपक्षी के इस चाल पर चौंधिया के, अपनी थूथन ऊपर कर लिया। इसके फुरतीले विपक्षी ने झट उसके मुह उठाने को देख लिया और वह भागनेही वाला था, पर घात पाकर रुक गया और अपनी थूथन सीधी करके नीमेष मात्र में अपने शत्रु के छाती पर पिल पड़ा और टागो के बीच में सींग घुसेड़ दिया। घायल गैंडे से लहू की धारा बह निकली और वह पीड़ा से चिल्ला पड़ा। उससे मालूम हुआ कि निवल गैंडा, जो निराश होकर भागनेही वाला था,

बीत गया। घायल गेंडा भागने को मुडा, उसके घाव से लहू का परनाला सा बहने लगा था और उसकी आंतें बाहर निकल आई थीं। इसके शत्रु ने कई कदम तक तो भागने दिया और फिर अपनी थूथनी नीची करके उसके पिछले पैरों के बीच में हूल मार कर और भी चीर दिया, जिससे उसका पेट चिथड़े चिथड़े होगया और वह बेकाम होकर गिर पड़ा। सब चतुर सवारों ने लम्बे २ बरछों से विजयी को खदेड़ दिया। उसको हटाना भी कठिन होगया था। यह घायल गेंडा मर गया या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। इस विषय में मैंने कुछ सुना तो था पर अब भूल गया हूं कि क्या सुना था। हिन्दुस्तानी लोग, जो इनके रखवाले होते हैं, ऐसे प्रवीण होते हैं कि कोई आश्चर्य की बात नहीं जो यह अच्छा होगया हो।

गेंडे और हाथी की लड़ाई इतनी मनोहर नहीं होती जितनी कि गेंडे और शेर की। गेंडे और हाथी के लड़ाई में पहिले तो उन्हें लड़ने के लिये उद्यत करनाही सहज नहीं होता, चाहे हाथी कैसाही मस्त हो और गेंडा कितनाही गर-माया हुआ हो। यदि वे लड़ने की ठान भी लें, तो हाथी अपनी सूंड़ ऊपर को उठाये हुए और माथा आगे को बढ़ाये हुए झपटता है और गेंडा या तो घात में चौकस खड़ा रहता है किंवा थूथनी झुकाये वह भी लपक पड़ता है। हाथी के दोनो दांत गेंडे के दोनो पार्श्व पर से बिना हानि पहुंचाये ही सलक जाते हैं और हाथी अपने विशाल मस्तक से इस मोटेताजे पशु को पीछे ढकेलने लिये आता है। यदि हाथी का दांत गेंडे में ठेंस रखाजाता है, जो कभी कभाग होजाया करता है तो बस यह

अपना दांत निर्दयता के साथ घुसेड़ देता है, परन्तु लड़ाई मे प्राय हाथी ही हारा करता है, क्योंकि गेंडा अपना थूथन हाथी के अगले पैरो के बीच में घुसा कर सींग में कही न कहीं चीर डालता है और हाथी अपनी सूड से उसे मारता, ठोकता और हटाता रहता है, परन्तु बचता नही। हाथी के दांतो के कारण रुक कर वह अपना थूथन हाथी के शरीर मे दूर तक प्रवेश नही कर सकता कि जिससे गहरी चोट पहुचा सके।

जोकुछ हो पर गेंडे और शेर की लड़ाई अत्यन्त ही पराक्रम और ताव की होती है। गेंडे जैसे भारी पशु का अटल हो कर चौकसी से चुपचाप खड़े रहना और शेर जैसे सापेक्ष छोटे जानवर का बिल्ली के समान झपट पड़ने के लिये धीमे धीमे दबी हुई चाल चलना। गेंडे का थूथनी नीचे झुकाये रखना और शेर का दांत पीरे रहना, गेंडे के थूथन पर टोटी जैसा सींग बचाने की घात पर निर्भयता के साथ रखना और शेर का गोल गोल सिर उसकी चमकती हुई आंखें और उसपर भी उसके पैाढे तीक्षण पजे, ये सब चीजें देखने योग्य और चित्त को आकर्षण करने वाली होती हैं। गेंडे की पीठ तो चोट चपेट और जोखिम से बची रहती है और जब शेर उसपर झपटता है तो उसके पजे उसके ढाल सरीखी पीठ को न धर सकते हैं और न उसपर कुछ हानि पहुचा सकते हैं। यदि कहीं शेर की झपेट और बोझ से गेंडा गिर पड़ता है तो, बस उसके भाग्य की समाप्ति ही होजाती है अर्थात उसकी मौत ही आजाती है। उस समय शेर पजो और दांतो से उसे चीर, फाड़, काटकूट के टुकड़े २ कर डालता है, क्यों कि शेर केवल चीरफाड़

और चबाना जानता है । मैंने सुना है कि कभी कभी ऐसा हो जाता है, परन्तु मैंने अपनी आंख से ऐसा होते नहीं देखा।

दस विस्वे में नौ विस्वे गैंडा ही जीतता है। शेर बारम्बार उसपर झपटता, कूदता और तड़पता है, परन्तु गैंडे की कवच समान मोटी खाल पर उसका कोई वश नहीं चलता, परन्तु गैंडा जब अवसर और घात पाजाता है, तब अपनी तीक्षण भयकर सींग से काफ़ी घाव शेर के अङ्ग मे कर देता है । उस समय शेर लड़ाई से मुंह फेर लेता है और यदि गैंडा उसपर झपटता है, तो शेर अपने भारी भरकम शत्रु के आगे से सहज में भाग जाता है।

जगत भर में गैंडे के समान अवेध्य योद्धा और मजबूत जानवर कोई नहीं है। इसपर किसी प्रकार की चोट नहीं लग सकती और न कोई शस्त्र उसपर आघात पहुंचा सकता है। वास्तव में गैंडे ऐसा और कोई पशु नहीं है, जिसमें हर प्रकार की मार, झपेट, आघात इत्यादि के सहने की सहनशीलता और धीरता हो। एक घिरे हुए अहाते में शेर ऐसे हिंसक पशु से सामना होजाने पर भी यह तनिक भी व्याकुल और अधीर नहीं होता और न घबराता है। किन्तु बड़े अद्भुत स्थिरता और गम्भीरता के साथ हर प्रकार की घटना सहने के लिये यह दृढ़ खड़ा रहता है। सच तो यह है कि उसकी वज्र सरीखी मोटी खाल ही उसके बचाव और रक्षा की आश्रय है और उसके मुख की बनावट भी इस प्रकार की होती है कि उसपर किसी प्रकार का घाव नहीं पहुंच सकता। पूंथनी से लेकर माथे तक उसका चेहरा अन्दर को धंसा रहता है, उभरी हुई हड्डियों के बीच में

इसकी खालें ऐसी घनी हुई होती हैं कि उनपर कोई क्षति जल्दी पहुच ही नही सकती और इसपर भी छोटी सी नोकीली सींग सब से ज्याद रक्षा करने वाली चीज है और वही शत्रु को मारने के लिये भयकर शस्त्र भी है। अब गेंडे के शारीरिक बल का भी ध्यान कीजिये। यह सब बाते होने पर भी एक बनैले सूअर सदृश जानकर गेंडे का सब से बड़े जानवर हाथी और हिंसक पशु शेर का सामना करना और उनपर विजय प्राप्त कर लेना चमत्कार नही है तो क्या है। शेर बब्बर से गेडे को लडते मैंने नहीं देखा है। अवध के बादशाह के यहा गिनती के तीन चार केशरी थे और वे विशेष अवसर के लिये लगा रक्खे गए थे। परन्तु मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है कि इन दोनो की लड़ाई ठीक ठीक शेर और गेडे की लड़ाई के समान ही होती होगी। वस्तुत दो शेर बबर ठीक वैसेही लडते हैं, जैसे दो शेर लड़ा करते है। लखनऊ मे कोई शेर बबर ऐसा न था जो वहा के बड़े शेर के जोड़ का उसके समान बल वाला हो। शेर बबर हिमालय के पश्चिमोत्तर प्रात में जो थोडे से मिल जाते हैं, अथवा एशिया महाद्वीप में जो प्राय करके मिलते हैं, वे अफरीका महाद्वीप के शेर बबर के बराबर के नहीं होते। परन्तु मुझे इस बात मे सन्देह है कि बङ्गाल का शेर केशरी से अधिक भयङ्कर और हिंसक नहीं होता। लन्दन वा पेरिस के पशुागार में लखनऊ के बड़े शेरो के बराबर का शेर बबर मैने कभी नहीं देखा।

शाह अवध के १५७ हाथियो में एक हाथी एकदन्ता ऐसा था जो सौ लड़ाइयो ने विजय प्राप्त कर चुका था। इस हाथी का नाम 'मरियर' था और बादशाह सलामत उसे बड़ा प्यार

करते और चाहते थे। यह जो कई लड़ाइयां लड़ा था इसलिये इसका एक दांत थोड़ा २ करके कई लड़ाइयों में टूटा गया था। मलियर बड़ा भयङ्कर और काले रंग का हाथी था और जब यह मस्त हो जाता तब यह बड़ा ही भीम और हिंसक हो जाता था।

जब कमांडर-इन-चीफ लखनऊ में आए थे, तब यह विचार किया गया था कि मलियर के जोड़ का हाथी चुना जाय और एक बेर मलियर का मल्ल युद्ध अखाड़े में लाकर फिर कराया जाय। भाग्यवश हाथियों के गरम होने का भी यही ऋतु था। मलियर मस्त हो रहा था, एक दूसरा 'बख़ावर' नामक काले रङ्ग का हाथी भी मस्त होगया था--इन दोनों का जोड़ चुना गया।

जब हाथी मस्त हो जाते हैं, तब बड़ा दो नर एक दूसरे को देख पाते हैं, बस लड़ने पर चट उद्यत होजाते हैं, इनके उसकाने वा उत्तेजना दिलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। दोनों हाथियों के जो 'महावत' होते हैं, वे उनपर बैठे रहते हैं। इस ऋतु में बयास् जब वे मस्त होते हैं तब उनके महावत ही उनके पास तक जा सकते हैं और कोई पास नहीं फटक सकता। इस अवस्था में भी वे अपने महावत के वश में दासों के समान रहते हैं।

हाथियों के लड़ाई के लिये अधिक बन्दोबस्त की आवश्यकता नहीं होती। हां, एक मजबूत रस्सा गरदन से लेकर पोंछ तक बांध देते हैं, जिसे पकड़े हुए महावत लड़ाई के समय हाथी पर बेधड़क बैठा रहता है। आप लोग सहज ही

में समझ सकते हैं कि बिचारे महावत की जान ऐसे अवसर पर कैसे जोखिम में रहती है, परन्तु इन लोगों को अपने हाथी के नाम और प्रसिद्धता का इतना उत्साह होता है कि हरएक महावत की यही इच्छा होती है कि उसका हाथी लड़ाई के लिए चुना जाय। क्योंकि इससे उस महावत और उसके हाथी दोनों की प्रतिष्ठा होती है। लड़ाई में जो कहीं कोई महावत गिर जाता है, तो विपक्षी हाथी अवसर पातेही अवश्यमेव उसको मार डालता है, इसलिए वह बिचारा खूब जोर से रस्से को पकड़े रहता है, जैसे किसी टूटे हुए जहाज के तख्ते को डूबता हुआ मनुष्य थामे रहता है।

कमाण्डर-इन-चीफ जिस समय लखनऊ आए थे, उस अवसर पर 'मलियर' की लड़ाई उनको दिखाने के लिए कराई गई थी, हमलोग गोमती किनारे के एक बादशाही महल में तमाशा देखने बैठे थे। इस किनारे पर नदी के अन्दर से मचान बाँध कर बैठने के लिए जगह बनाई गई थी। उस पार सामने ही खुला मैदान रमने का था और उसी पार लड़ाई होनेवाली थी और उक्त बनाए हुए बालाखाने में कमाण्डर-इन-चीफ, बादशाह, दरबारी और हमलोग तमाशा देखने को बैठे थे। इस स्थान पर गोमती का पाट लन्दन नगर के 'फ्लीट स्ट्रीट' की सड़क से अधिक चौड़ा न था और हमारा बालाखाना नदी में बना था, इसलिए हमलोग पासही से लड़ाई की सैर देख सकते थे। सामने के किनारे पर हरी २ घास लगी हुई थी और दूर तक कोई आड़ न थी अर्थात हमलोग दूर तक बिना रुकावट के देख सकते थे।

बादशाह के इशारा करने पर दो हाथी सामने सामने से लाये गये, दोनो पर महावत बैठे हुए थे। एक दन्ता मनियर ऐसा भय जनक नहीं मालूम देता था, जैसा कि काले रङ्ग वाला उसका ग्रानडील जोड़, जिसके साथ उसे लड़ना था और इसके दांत भी बहुत बड़े २ थे। ज्योंही उन्हों ने एक दूसरे को देखा, त्योंही दोनो हाथी सूंड़ और पोंछ उठाए हुए और जोर से चिंघारते हुए डुलामुल शरीर से जहां तक होसका बड़े वेग से एक दूसरे पर आप से आप दौड़ पड़े, मानो उनके जी में लड़ने की स्वयही प्रेरणा हुई। लड़ाई के समय हाथियों का स्वभाव है कि वे अपनी सुण्ड सीधी ऊपर को आकाश में उठाए रहते हैं, जिसमें उन पर कोई क्षति और हानि न पहुंचे। क्रोध से पोंछ भी उसी भांति उठी रहती है। गरज और गड़गड़ाहट से मिली जुली उनकी चिंघार, होती है।

'मनियर' और उसका विपक्षी बड़े क्रोध में भरे हुए पहुंचने के साथ एक दूसरे पर झपटे। इनके बड़े २ मस्तकों के टक्कर के धमाके की आवाज इतने जोर से हुई कि वह आध कोस तक सुनाई दी होगी। आप लोग इसे अत्युक्ति और बढ़ा कर लिखना समझेंगे, पर सचमुच ऐसा नहीं है। जब आप लोग हाथी के डील डौल, उसके शरीर का बोझ, उनके दौड़ने और झपटने की झोंक को दृष्टि में रख कर उनके टक्कर का ध्यान करेंगे, तो आपको आश्चर्य न होगा। एक बेर नहीं कई बेर ऐसे अवसर पर मैंने देखा है कि एक या एक से अधिक दांत टक्कर के आघात से उखड़ कर हवा में टुकड़े होके गिर गये।

पहली टक्कर हो चुकी, अब दोनो हाथी अपने २ पुनश्च

हाथियों की लड़ाई।

से एक दूसरे को ढकेलने लगे। मुह से मुह, दात से दात भिड़ा हुआ है, केवल सूड आकाश मे सीधी ऊपर को उठी हुई अलग हैं, उनके भारी २ और मोटे २ पैर स्तम्भ सदृश भूमि पर जमे हुए है और वे ठेलम् ठेला, रेलपेल, धक्कम धुक्का और धीगामुश्ती कर रहे हैं, ये केवल ढकेला ढकाली एकही टेक और दीर्घ-धीरता की नहीं होती, किन्तु उनके पर्वताकार शरीर की बारम्बार हूल और टक्कर होती है। मस्तक तो पल मात्र के लिए भी अलग नही होता, किन्तु वे ज्यो २ हूल मारते है उन की पीठ कभी सिकुड कर टेढी हो जाती है, कभी फैलकर सीधी हो जाती है। महावत लोग जो उनकी गरदन पर बैठे है, वे भी चुप और सुस्त नहीं है, किन्तु जोर जोर से, गले फाड २ कर चिल्लाते और अपने २ हाथियो को बढावा देते रहते हैं और उनको क्रोध दिलाने और आगे बढ़ाने के लिए जोर जोर से अकुश उनके सिर पर मारते और कोचते रहते हैं। यह ऐसा तम शा है कि प्रत्येक तमाशा देखनेवाले दम साधे हुए आख लड़ाए देखा करते हैं, इस तमाशे मे देखने वालो के नस २ में लहू दौड़ने लगता है और नाड़िएं फड़कने लगती हैं। इस समय दो विकाल-शरीरवाले जानवरो का वलपूर्वक उचण्डता के साथ एक दूसरे को ढकेलना और ठेलना और महावतो का अपने शक्ति भर उनको बढावा देते रहना तमाशाईयो को सन्नाटे में डाल देने वाला होता है।

यह तो स्पष्ट ही है कि जैसे और बनैले पशुयुद्ध में होता है कि बलवान ही विजय प्राप्त करता है, वैसा ही इसमें भी होता है। ऐसा भी हुआ है कि बलहीन अपनी चचलता और

फुरती के कारण जय की कीर्ति पा जाता है, परन्तु ऐसे उदाहरण कम हैं। अन्य पशुओं की अपेक्षा हाथियों में तो ऐसा कदाचित ही कभी हुआ हो, सो भी बहुत कम। आप लोग सब में पूछते होंगे कि इस धक्काधुक्की का अंतिम परिणाम क्या होता है। सुनिये, यदि बलवान हाथी बल हीन हाथी को गिरा देता है, तो पराजित हाथी की जान जाती है। जब कभी बहुतही मावलवता और प्रचण्डता होती है और निबल पीछे हटने से घटकई नहीं कर सकता, तो कभी २ ऐसा भी होता है कि जब निबल बलहत और निराश होकर भागने को घबराया हुआ शीघ्रता कर मुड़ता है, तब घूमती समय बलवान हाथी की टक्कर खाकर वह लुढ़क कर गिर पड़ता है और उसका काम वहीं समाप्त हो जाता है। विजयी अपने दांतों को शत्रु के पेट में निर्दयता के साथ पैठा देता है, जो बिचारा लुढ़का हुआ पड़ा रहता है और उसका प्राण ले लेता है। और यदि निबल घटकई और शीघ्रता से मुड़ कर भाग निकलता है, तो दूसरा हाथी उसका पीछा किए दौड़ता है। या तो भगु जान बचा कर निकल ही जाता है,किंवा पीछा करने वाले हाथी के सूंड़ की मार और दांत के आघात से घायल ही हो जाता है।

मैं क्या का क्या लिखने लगा। हां, मलिमर और उसका विपक्षी लश्करकन्द्रा के साथ लड़ रहे थे। बादशाह सलामत, अङ्गरेजी फ़ौज के कमांडर इन-चीफ और रेजिडेंट साहब बड़े ही ध्यान से हाथियों के हूले मारने को देख रहे थे। सबलोग देखने में इतने डूबे हुए थे कि सब लोग बाकस्सम चुपचुप बैठे थे। दालान में सन्नाटा छाया हुआ था।

अन्त को भीम पराक्रमी मलियर, यद्यपि एकदन्ता था, परन्तु धीरे२ शत्रु के छक्के छुड़ाने लगा। अब तो उसके शत्रु का अगला पैर जमीन से कुछ उठा। यह नहीं मालूम होता था कि आगे बढ़ने को पैर उठाया गया था वा पीछे हटाने को, क्योंकि धक्काधुक्की अभी तक अपने जोरों भर वह कर रहा था। परन्तु यह झट ही खुल गया कि पैर जो उठा था, वह आगे बढ़ाने के निमित्त न था, किन्तु पीछेही हटने के लिये था। यह पैर अभी भूमि पर जमा कर रक्खा भी न था कि झट दूसरा पैर उठा और फिर धट भूमि पर आ गया। मलियर के महावत ने उसके पैर उखड़ने को देख लिया। अब वह और जोर२ से गला फाड़ के बढ़ावा देने और चिल्लाने लगा और बड़े जोर२ से अंकुस मारने लगा। मलियर को बढ़ावा देने की आवश्यकता न थी, वह आप ही पुराना खुर्राट और लड़तिया था। उसे ज्ञात हो रहा था कि अबकी फिर जय का सेहरा उसके सिर बंधा चाहता है, इस विश्वास से उसका बल, पराक्रम और भी बढ़ गया था, वह और उसका महावत दोनो क्षण २ में प्रोत्साहित हुए जाते थे।

इस समय दोनो हाथी हमारे बराण्डे के बाईं ओर गोमती के तट से थोड़े ही से गज के दूरी पर थे। भागने वाला हाथी कदम कदम पीछे हटता हुआ नदी के पास आगया। अन्त को यकायक पीछे छटक कर वह अपने शत्रु से अलग होगया और झट फिर कर नदी में कूद पड़ा। इसका महावत जो रस्सा पकड़े हुए पीठ पर चिमटा हुआ था, अबवह हाथी के गर्दन पर आगया और हाथी तैर कर इस पार आने लगा। शत्रु के भाग जाने पर मलियर और भी खिजला गया। इसका महावत चाहता था

कि वह पीछा करे और मलियर पानी में जानाही नहीं चाहता था। किनारे ही पर खड़ा क्रोध में भरा आंखें निकाले इधर उधर देख रहा था कि अब वह किसपर पिल पड़े। महावत अभी तक उसे अंकुस गोदे ही जाता था, धीरे २ नहीं किन्तु उद्वेग में भरा जोर २ से हांकता और आगे बढ़ने को झुंझला २ कर अंकुस मार रहा था, इतने में मलियर झोंक से घूमा, महावत का आसन उखड़ गया और वह धम से जमीन पर आपड़ा। बिचारा गिरा भी तो उस बफरे हुए हाथी के आगे ही गिरा, जिसे वह एक क्षण पहिले कोंच २ कर और भी क्रोधान्ध और दुःनिग्रह बना रहा था। हमलोगों को तनिक भी सन्देह न रहगया था कि एक क्षण में उसका अंतिम समय आगया है। हमलोग इतना ही देखने पाए थे कि वह गिर कर भूमि पर चित पड़ा है, उसका एक पैर नीचे मुड़ा हुआ है, दूसरा आगे को फैला हुआ है और दोनो हाथ ऊपर को उठे हुए हैं, और उसका शरीर चोट खागया है। यह देखते ही देखते हाथी ने अपना मोटा और भार' पैर उसके छाती पर रखदिया और हड्डियो के चुरमुर होने की आवाज सब हमें सुनाई दी। बेचारे का सारा शरीर कुचल कुचला कर भुरता बराबर होगया।

उस बेचारे को चिल्लाने तक का अवकाश न मिला। हाथी के गर्दन पर से उसका डगमगाना, गिरना, गिरने में धमाके की आवाज का होना, हाथी का उस पर पांव रखदेना, और हड्डियों का कड़कना चूर होजाना, यह सब एक पल में होगया। परन्तु इतने पर भी हाथी का क्रोध शान्त न हुआ। छाती पर पांव रक्खे उसने अपनी सूंड से उसका हाथ पकड़ा और शरीर से

मधुमंगल का गिर पड़ना और मस्त दफरे हुए हाथी का उसे मार डालना ।

उखेड़ लिया और क्षण मात्र में हाथ को आकाश में उछाल दिया। उसमे से लहू का तरारा निकल रहा था। इसी प्रकार दूसरा हाथ भी सूंड से पकड़ और उखेड़ कर हवा में फेंक दिया गया। यह बड़ाही त्रासजनक समा था। तमाशे के इस उलटे परिणाम से नि सन्देह हमलोग भयभीत होगए थे। सब के रोंगटे खड़े होगए थे। पर इसमे किसीका दोष न था, यदि था तो उस विकराल हाथी का। इतने मे हमलोगो का डर और भयकम्प और भी बढ़ गया जब हमने यह देखा कि एक स्त्री कोख मे एक छोटा लड़का दबाये, जिस ओर से मलियर आया था, उसी ओर से दौड़ती हुई मलियर के पास लपकी चली आ रही है। यह देख कर कमांडर-इन-चीफ तो घबड़ा कर खड़े होगए और कहने लगे —

"जहां पनाह! एक और खून हुआ चाहता है। क्या इस के बचाने का उपाय कोई नहीं हो सकता?"

बादशाह। "अब क्या उपाय हो सकता है? यह महावत की जोरू मालूम देती है। निश्चय वही है"।

परन्तु रेजिडेंट साहब ने हुक्म देदिया था कि घोड़सवार बरछा लेले के जल्द जाय और हाथी को हांक लेजाय। हुक्म देदिया गया सो तो ठीक हुआ, पर इस काम का करना एक क्षण में नहीं हो सकता था। कुछ तो सवारों तक हुक्म लेजाने में देर लगी। फिर उन लोगो के सवार होने और पांच पांच साटे मारो का दो ओर से घूम कर होशियारी के साथ जाने में देर हुई। ये लोग मस्त हाथी के सूंड मे, जो कोमल होती है, लम्बे लम्बे बरछे की अनी गड़ा गड़ा कर, चुभाचुभा कर हँका ले

जाते हैं। वास्तव में ये लोग बड़े पटु और निपुण सवार होते हैं और जब कभी उनके बरछे की चोट बचा कर हाथी उनपर झपट पड़ता है, तो वे बड़े चटकई और फुरतीलेपन से घोड़े को कुदा कर चट अलग हो जाया करते हैं। ये लोग गारेमार कहलाते हैं। (

अभी गारेमार लोग सवार होकर और परे बांध कर हाथी को हँकाने दोनों ओर से जाही रहे थे, कि वह दिवानी स्त्री येहरी के भाग भगत हाथी के पास पहुंची गई। और रो कर बोली —

"अरे मलियर, मलियर, अरे निरदयी, दुष्ट! देख तो यह तैने क्या किया। ले अब पूरी तरह घर भर का नाश कर दे। हाय तैने घर तो ढा दी अब दिवारों को भी गिरादे। हाय! तैने मेरे धनी को तो मार डाला, जिसे तू बहुत प्यार करता था। ले अब मुझे और उसके बच्चे को भी मार डाल'।

जो लोग हिन्दुस्तान के व्यवहार से अनभिज्ञ हैं, उनको उक्त बात हास्यजनक, मिथ्या और व्यर्थ मालूम देगी, परन्तु लेखक यह स्त्री विलाप कर विलाप करती हुई हाथी से कह रही थी लगभग वही उसके शब्द या अब भी जो ऊपर लिखे गये हैं। उसकी एक एक बात मेरे चित पर दृढ़ता से अंकित थी। बात यह है कि महावत और उसके बाल बच्चे अपने हाथी के बातचीत करते हैं और वे लोग शक्ति सम्पन्न समझ कर आदमियों के समान उसे झिड़कने, पुचकारने, पुचकारते, फुसलाते, मनाते और उसकी प्रशंसा किया करते हैं।

हमलोग समझते थे कि अब थोड़े दम में यह अपनी

जानवर महावत की कुचली हुई लाश से फिर कर उस विधारी स्त्री और उसके बच्चे को भी चीर कर रख देगा। परन्तु हमारा सोचना मिथ्या जान पडा। मलियर का क्रोध धीमा होगया और वह अपने किये पर पछताता जान पड़ता था। वह गरदन निहुराये, कान झुकाये खड़ा था। उसने अपना पैर चुर मुर लोथ पर से हटा लिया। तब वह स्त्री हाथी से चिमट गई और हाथी लज्जित और शोकातुर हो चुपचाप खडा होगया। यह दृश्य बड़ा करुणारसात्मक और मनोद्रावक था। वह स्त्री रोती विलाप करती हाथी के इधर उधर घूमती लाखो गाली प्रदान कर रही थी और हाथी अपने अपराध से लज्जित और उदास हो रहा था और दुख भरी आखो से उसे देख रहा था। उस निर्छल और अनजान बच्चे ने दो तीन बेर हाथी की सूड धरली और उससे वह खेलने लग पडा। मालूम होता था कि वह पहिले भी इसी तरह सुण्ड से खेला करताथा। क्योकि यह कोई अनोखी बात नही है महावत के लडके हाथी के अगली टागो के बीच मे घुस कर खेलाही करते हैं। यह भी कोई अनूठी बात नही है कि हाथी सदा महावत के लडको के साथ खेलते २ उनपर सूड फेरा करता है। पहिले तो लड़के को कुछ दूर तक हाथी दौड जाने देता है, फिर वह हाथी उस दौड़ते हुए लडके को सूड से उठा लाता है और ऐसे प्यार से उठा लाता है जैसे उसकी मा उठा लेजाती है।

इस बीच में घोडसवार साटेमार घोडा फेंके जा रहे थे। वेलोग बडे तेज और चालाक घोडो पर सवार थे और इस काम में बडे चतुर थे। अब वे दोनो ओर से हाथी के पास आन

पहुंचे और धीरे से बरछी की नोक सूंड पर लगा कर उसे हटाना चाहते थे। उस वक्त मलियर ने झुंझला कर कान फटफटाया और वह क्रोध में सवारों को देखने लगा। उसके आंखों और त्यूरियों से स्पष्ट मालूम होता था कि वह अपने महावत के स्त्री के कहे में ही रहना चाहता है। उनके हटाने से वह न हटेगा। सवारों ने एक बेर फिर बरछे गोदे। अबकी बेर जरा जोर से चुभा दिया। पहिले तो हाथी अपनी सूंड ऊंची करके चिंघारा और फिर अपने बाये ओर के सवारों पर झपट पड़ा। वे लोग क्षण मात्र में घोड़ा कुदा कर वेग से भागे और मलियर ने उनका पीछा किया। मलियर को फिर क्रोध आने लगा, और वह दूसरी टोली पर झपटा। अब उनके भागने की बारी थी, वह लोग भी उसी फुरती से भाग खड़े हुए जैसे पहिली टोली भागी थी और हाथी इन के पीछे पीछे वेग से जा रहा था।

इस समय बादशाह ने चिल्ला कर कहा "कि उस स्त्री से कहो मलियर को बुला ले, उसके बुलाने पर वह चला आवेगा।"

उस स्त्री ने मलियर को बुलाया। इसकी आवाज सुनते ही मलियर दुम दबाये ऐसे चला आया जैसे पालतू कुत्ता अपने मालिक का बुलाना सुन कर आ जाता है।

तब बादशाह ने आज्ञा दी "कि उस स्त्री से कहो कि मलियर पर वह अपने लड़के समेत सवार होकर उसे हांक लेजावे।" यह आज्ञा उस स्त्री को पुकार कर सुनाई गई। स्त्री ने मलियर से बैठ जाने को कहा। उसके कहते ही वह बैठ गया और वह ऊपर चढ़ गई। तब मलियर ने पहिले उसके पति की कुचली हुई लाश सूंड से उठा कर उसे देदी और फिर लड़के को

उठा कर दिया। उस वक्त से यह स्त्री अपने पति के स्थान पर महावत बन गई और मलियर को चुपचुपाते हाका लेगई। उस दिन से यही उसकी रखवाल अर्थात् महावत होगई। मलियर किसी दूसरे को अपना महावत बनने ही नहीं देता था। जब कभी वह गरमा जाता, जब कभी वह मस्त होता, जब वह क्रोध में आजाता वा जब कभी वह घोर उद्दण्ड करने लगता, और जहा इस स्त्री ने उसे पुकारा तहा वह उसके वशिभूत हो जाता, जहा इस स्त्री ने उसके सूड पर हाथ फेरा तहा वह शात हुआ, चाहे वह कैसाही बफरा होता। स्त्री भी निर्भय और नि शक उसपर सवार होती और उसे हाका करती थी। जो प्रभुत्व और जो अधिकार इस नारी का उसपर था उसके मरने पर आशा है कि उसके लडके को उतना ही प्रभुत्व उसपर प्राप्त हुआ होगा।

इक महावत के जान जाने का वृत्तात तो सविस्तर मै सुना चुका अब दूसरा वृत्तात लिखता हू, जिसमे महावत की जान बाल बाल बच गई थी, यद्यपि हमलोग उसके बचने की आशा छोड चुके थे।

एक बेर की बात है कि इसी प्रकार हाथियो की लडाई एक अहाते मे कराई गई थी जिसमें चारो ओर लोहे के कटहरे लगे हुए थे। उसमे नीचे लिखी घटना हुई थी। नियमानुसार दोनो हाथियो में घमासान युद्ध, और देर तक ठेला ठाली होती रही। अन्त को निर्बल हाथी हारमान कर झोक से पीछे हटा और कठरे के चारो ओर दौडने लगा। विजयी उसका पीछा कर रहा था। आज्ञा दी गई कि भग्गू हाथी को

बाहर निकल जाने दो। ज्योंही वह हाथी बाड़े में से निकल कर बाहर को भागा, न मालूम क्योंकर उसका महावत बाड़े के अन्दर की ओर गिर गया। पहिले तो पीछा करने वाले हाथी ने कुछ देर तक उसे नहीं देखा, परन्तु बाड़े से निकलने का यही एक रास्ता था और हाथी वहीं खड़ा था, तब इस बिचारे का बचना या भाग जाना असम्भव था। थोड़ीही सी देर, केवल दो तीन क्षण, बफरे हुए हाथी की दृष्टि उस पर न पड़ी। अन्त में उसने देखही लिया और देखतेही उस पर झुक पड़ा। इस समय उसकी सहायता करनी भी कठिन थी, क्योंकि यह सब बात एकही दो पल में होगई। हाथी उस बिचारे अभागे पर टूट ही पड़ा, क्योंकि हाथी अपनेही महावत को मानते हैं और अपने शत्रु के महावत को शत्रु ही समान समझते हैं।

इस हाथी के महावत का लड़का संग चलता था, वह हाथी के फेरने का उद्योग करता था, पर भला हाथी कब मानने लगा था। उसका सब उद्योग निष्फल होता था।

हाथी ने उसे मार डालने और मसल डालने के लिये सूंड़ उठाली थी, उस समय वह बिचारा कटहरे से सटा हुआ कोने में सिमट कर खड़ा होगया। हाथी ने कोने में अपना सिर डाल कर बड़े जोर से ठेला। कोने के दोनों ओर से जिसके बीच में कि वह महावत खड़ा था, हाथी के दोनों दांत कटहरे से बाहर निकल आए और अपने पूर्ण बल से वह बराबर ढकेलता और इसी प्रकार मारता रहा जैसा हाथी लड़ने में मारा करते हैं। बिचारा महावत कटहरे के कोने में सिकुड़ा खड़ा था। कटहरे के दांत के बीच में होने से उसका बदन चुराए,

दोनो हाथ लटकाए कोने से चिमटा हुआ था।

कोठे पर से हमलोग समझते थे कि बिचारे महावत का पिचला होगया होगा, क्योंकि हम लोग को हाथी का पर्वताकार पिछला भाग ही दिखाई देता था, जब कि वह खड़ा कटहरे में हूले मार रहा था—परन्तु हमारा सोचना गलत निकला। जब उस महावत ने देखा कि वह कोने मे अभी तक बचा हुआ है, तो वह धीरे धीरे खिसक कर बैठ गया, हाथी तो उसे देखही नही सकता था, किन्तु वह यही समझता था कि वह उसे खूब कुचल रहा है। जब वह बैठ गया, तब बड़ी फुरती के साथ हाथी के अगले पैरो के बीच से निकल कर वह बाढे के बीच की ओर भागा। जब हमलोगो ने उसे बड़े चुपचाते हाथी के पाव के बीच से निकलते और बिना चोट चपेट खाए देखा तो हमलोगो को आश्चर्य सा हुआ। न तो इसकी कोई हड्डी टूटी और न कहीं छिलोर लगी थी। एक क्षण मे वह कटहरे के बीच मे से निकल कर जीता जागता बाहर आगया। लोग अभी महताबी और चरखी इत्यादि हाथी को हटाने के लिये लाही रहे थे कि वह महावत बच बचाकर सकुशल कटहरे के बाहर निकल आया, जिसके विषय मे एक ही क्षण पहले हमलोग समझते थे कि उसकी कुचली कुचलाई लोथ मिलेगी। "सच है मारने वाले से बचाने वाला जबरदस्त है"।

बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि हाथी चाहे कैसाही मस्त और क्रोध में भरा वा वफारा क्यों न हो, जहा उसके आगे आतशबाजी छोड़ी गई तहा वह सहम कर भिल्ली हो जाता है।

हाथी कैसे ही मग़रूर और क्लिष्ट रूप से आक्रमण कर रहा हो, बान व चरखी के छूटने ही से वह डर कर रुक जाता है और चरखी या बान को छूटते देख कर वह भयभीत होकर जान लेकर भागता है। इसी लिए जब हाथी मस्त होता, अथवा जिस ऋतु में मस्त होकर भयानक और अदमनशील हुआ करता है, तब आतशबाज़ी सदा तय्यार रक्खी जाती है॥

बारहवां अध्याय।

मोहर्रम।

हिन्दुस्तानवासी मुसलमानों के आचार व्यवहार, रहन-सहन इत्यादि में जो जो परिवर्तन कालान्तरों में हुए हैं उन्हीं पर कुछ आश्चर्य होता है। अरब जाति के एक महीने में जि-सका नाम मुहर्रम है, मोहम्मद साहब के कुटुम्बी और उनके धर्म के पालक हसन और हुसैन की मृत्यु का वार्षिक शोक हिन्दुस्तान के आधे से अधिक मुसलमान लोग किया करते हैं,—लखनऊ के दरबार में भी यह महीना बड़े शोक और उदासी से मनाया जाता है। आधे से अधिक मुसलमान शोक मनाते हैं। इनमें दो बड़ी सम्प्रदायें हैं, एक 'शीया' और दूसरे 'सुन्नी' कहलाती हैं। इन दोनों सम्प्रदायों में ऐसा ही मत विरोध है जैसा कि ईसाइयों के रोमन कैथॉलिक और प्रोटे-स्टन्ट सम्प्रदायों में। मुख्य मत सुन्नी का है और कारण कि इनसे साथ शीया है, अर्थात् इसलाम मज़हब से लेकर प्रारम्भिक समूह

तक के मुसलमान सुन्नी मतावलम्बी हैं और यूफरात से जावा तक के मुसलमान शीया मतवाले हैं।

हिन्दुस्तान मे मुहर्रम महीना ऐसाही कभी बीतता होगा जिसमें गोलमाल, लड़ाई झगड़ा, खून खराबा न होता हो। शीया लोगो का विश्वास है कि इमाम हसन और हुसैन अन्यायपूर्वक और क्रूरता के साथ मारे गए है और सुन्नी लोग यह मानते हैं कि उस समय के खलीफा ने उन्हे न्यायपूर्वक मरवा डाला था, क्योंकि वे लोग इमाम बनने के अनधिकारी थे।

मुहर्रम लगते ही प्रथम तारीख को लखनऊ में ऐसा मालूम देता है कि मुसलमानो ने जगत का समस्त व्योवहार, अनुराग और सम्बन्ध हटात् त्याग दिया है। गलियो मे सन्नाटा मालूम देता है, लोग घर से बाहर नहीं निकलते और घर ही मे बैठे सकुटुम्ब शोक किया करते हैं।

दुसरी तारीख को गलियो मे फिर भीडभाड होजाती है। लोग मातमी पोशाक पहने 'ताजियो' के पास झुण्ड के झुण्ड चलते फिरते दिखाई देते हैं, जगह जगह पर 'ताजिए' हसन और हुसैन के स्मरणार्थ रक्खे हुए होते है। इन ताजियो का ढाचा 'करबला' के आकार का सा होता है, जो 'युफरात नदी' के किनारे 'मशहद' मे (यह शहर बगदाद नगर से लगभग ६० मील दक्खिन् पश्चिम के कोने मे) उपस्थित है। इसी मे उक्त दोनो इमाम गाडे गए थे। ये ताजिए 'इमामबाड़ो' में अथवा धनाढ्य अपने मकानो मे रखते हैं। अवध के बादशाह का ताजिया जो वर्तमान बादशाह के पिता ने निकाला था वह इङ्गलिस्तान से बन कर आया था। यह 'ताजिया' हरे

काठ का बना हुआ था और उसपर सुनहरी मीना किया हुआ था और यह बड़ा पवित्र माना जाता था।

इमामबाड़ा मुहर्रम केही लिये बनवाया जाता है और जिस वंश का यह इमामबाड़ा बनवाया हुआ होता है उस वंश के सबमान्य पुरुष प्रायः उसी में 'दफन' किये जाते हैं। बादशाही इमामबाड़ों की भी यही व्यवस्था है। हसन और हुसेन के कब्र की प्रतिमा या प्रतिरूप जिनको ताज़िये कहते हैं जो इमामबाड़े में रक्खे जाते हैं उनका सामना मक्के की ओर रहता है। शाही इमामबाड़ों में ताज़िए के ऊपर मखमल का कारचोबी शामियाना लगा रहता है। इसके सामने एक 'मिम्बर' भी रक्खा रहता है जिसपर मुल्ला लोग खड़े होकर और मक्के की ओर मुंह करके इमाम हुसैन के 'शहीद' होने का वृत्तान्त पढ़ते हैं। यह मिम्बर उन्हीं पदार्थों का बना होता है जिसका कि ताज़िया। इस मिम्बर का आकार एक छोटे चबूतरे के सदृश होता है—उसमें कटहरा या कोई रोक नहीं बनी होती—पढ़नेवाला इसपर खड़े होकर या बैठकर (जैसी इसकी इच्छा हो) पढ़ता है।

इस अवसर पर कन्दीलों और झाड़, फानूस, हांडी, दीवालगीरों और मुर्ग़ों की रोशनी इतनी बहुतायत से होती है कि दीपप्रभा से आंखों में चकाचौंधी लग जाती है। ज़रदोज़ी और कारचोबी के काम के अलम, निशान, झण्डे, पञ्जे, चन्द्रसूर्य की ढालियां, सुनहरे रुपहले पटकों, झंडियों को बारह इमाम और मौला के चहरियों और नामों की अलमदारी से सजा दिया जाती हैं। सफ़ेद व स्याहपोशों का शोकमय उदास

चेहरा किए हुए चलना फिरना ठीक ऐसा ही मालूम देता है, जैसा कि मिसस हसन अली ने लिखा है कि "इन दृश्यो को देखकर वही सब दृश्य मुझे याद आगए जो सहस्त्ररजनी (अलिफलैला) पढकर मेरे जी में अङ्कित होगए थे।" ताजियो के नीचे अरब देश के बादशाहो के राजचिन्ह जैसे कि सुनहली 'अमामा,' आफताब अर्थात सूर्यमुखी और रत्नजटित शस्त्र रक्खे रहते हैं—जिससे यह बात प्रगट कराई जाती है कि इन दोनो 'शहीदो' को मुसल्मानो के इमाम वा खलीफा बनने का अधिकार था जिसे कि मिथ्या पक्षपाती सुन्नी लोग स्वीकार नहीं करते।

मुहर्रम भर बड़ी २ मोमबत्तियो के लाल और हरे मृदङ्ग ताजिए के चारो ओर बला करते हैं और दिनरात दो बेर 'अज्जादारी की मजलिस' (शोक की सभा) हुआ करती है— रात को जो मजलिस होती है वह बड़ीही चित्ताकर्षक होती है, उसमें भीडभाड़ बहुत होती है। इस मजलिस मे बादशाह अपनी भड़कीली 'मातमी पोशाक' पहने, रत्नजटित ताज, जिसमें अत्यत स्वेत और कोमल पर का तुर्रा लगा होता है, सिर पर धरे, 'वाकेखा' (जो उक्त इमामो का वृत्तात बाचता है) के आगे बैठे होते हैं। उनके पीछे उनके अनुचर दो दो की कतार से गरदनें झुकाए शोकातुर मुह बनाए, नीची आखें किए हुए इमामबाडे में आते है—झाड, फानूस, मृदङ्गें भाति २ के जगमग २ जलते रहते हैं, यह दृश्य बडेही शोभा का होता है। इस समय वहा बडा सूनसान रहता है, जो देखने ही योग्य होता है। जब 'वाकेखा' या मोलवी लोग

कुछ पढ़ने लगते हैं तब जितने लोग वहां वर्तमान रहते हैं सब मौनधारण किये चुपचुपाते ध्यानपूर्वक सुना करते हैं।

शमओं का प्रकाश से रह रह कर चमक उठना—इमामबाड़े के अन्दर की दीप्ति और फिर उसमें झाड़ों से किरनों का फूटना, कारचोबी झण्डे, निशान, अलम, पटके और झालरों की जगमगाहट और चमचमाहट ऐसी होती थी कि मानो अग्नि भड़क उठी है। मुल्ला उक्त इमामों के मारे जाने का वर्णन पढ़ता है, पढ़ते ही उसके बातों में तेज झलझलाने लगता है, सुननेवाले पहले तो उदास मुंह लटकाए चुपचाप बैठे सुना करते हैं और फिर धीरे२ कुछ फाड़ कर रोने लगते हैं। ज्यों२ उनके विपत्तियों का वृत्तान्त आता जाता है, पढ़ने वाला और भी ज़ोर२ से पढ़ता है—सुनने वाले और भी फूट फूट कर रोने लग जाते हैं। किसी किसी के आंखों से आंसू भी बहने लगता है, कोई हिचकियां लेने लगता, कोई सिसकियां भरने लगता है। यहां तक कि विशेष२ वर्णन पर तो एकाएक 'हसन हुसैन' कह कह कर ये लोग छातियां पीटने लग जाते हैं। पहले तो विलाप धीमे२ होती है, परन्तु थोड़ेही देर में जोर ज़ोर से छाती कूटने और चिल्ला२ के 'हसन हुसैन' कहने लग जाते हैं। इतने ज़ोर से छाती पिटावन होती है कि सारा इमामबाड़ा गूंज उठता है और देर तक हाय हाय मची रहती है, पूरे दस मिनिट तक धड़ाधड़ छाती पीटना, ढाड़ें मार कर रोना, 'हसन हुसैन' कह कह कर चिल्लाना होता रहता है। फिर शिया और हलकान होकर सब चुप होजाते हैं। विलाप कुछ मन्द हो जाती है, सन्नाटा हो जाता है और सब शोक में डूब जाते हैं।

श्रम करने के उपरान्त मनुष्य को सुस्ताने की आवश्यकता पड़ती है ऐसे शीत देश मे जहा हिम पड़ता है और बहुतही ठढी पुरवैया हवा बहकर दांत से दान्त बजा देती हो मनुष्य यदि प्रति घण्टे ३७ मील दौड़ने का परिश्रम करे और उष्ण देश में जहा गरमी के कारण पारा ९७ अंश चढ़ा रहता है दसही मिनट तक लगातार 'हसन हुसैन' कहता हुआ छाती पीटे तो दोनो का श्रम समान होगा और विश्राम दोनो को लेना पड़ेगा। इस वक्त लोगो को शरबत पीने को मिलता है। बादशाह सलामत और उनके कुटुम्बी लोग हुक्के पीते हैं और शेष लोग अपने २ पटके मे से लायची, छालिया निकाल २ के खाते हैं। इतने में फिर 'वाके ख्वानी' प्रारम्भ हो जाती है और पुन पिट्टस मच जाती है और हसन हुसैन होने लगता है, तदुपरात लोग विश्राम लेने लगते हैं। सब के अन्त में मरसीया ख्वानी होती है। यह उर्दू भाषा में होती है, सभी लोग इसे समझ सकते हैं, इस लिये इसे लोग बहुत रुचि से सुनते हैं। मरसिया ख्वानी जब हो जाती है, तब सब लोग खड़े हो कर इमामो के नाम लेते हैं और 'तबर्रा' पढते (अर्थात अनधिकारी खलीफाओ को गालिया देते) हैं। इसके बाद 'मजलिस' बरखास्त हो जाती है।

मुहर्रम भर इमाम बाड़ो में रात दिन यही हुआ करता है। बादशाह सलामत तो मुहर्रम को विशेष करके बहुत ही मानते थे। मैं ऊपर लिख चुका हू कि उन्हो,ने मन्नत मानी हुई थी कि जब वह तख्त पर बैठेंगे तो दस दिन की जगह चालीस दिन तक मुहर्रम का शोक (सोग) मनाएगे। इसको

यह पूरी तरह निबाहते थे। मुहर्रम भर वह मरदाने ही में रहा करते थे अर्थात् जनाने महल में नहीं जाते थे। न शराब पीते थे, न नाच तमाशे देखते थे। अंगरेजी रीति का भी भोग विलास जो उन्हें बहुत प्रिय था वह न करते थे अर्थात पूर्ण रूप से सोग मानते थे। बेगमातों के इमामबाड़े महलों में अलग बने हुए थे, जहां की सुनामी अथवा मरसिया पढ़ने वाली स्त्रीही होती थी। मैंने अच्छी तरह सुना है कि बेगमातों में भी छाती का पीटना "हसन हुसैन" कह कर रोना होता था। इनकी मजलिसों में तो विलाप और मातम करना मर्दों की मजलिसों से भी अधिक होता था। स्त्री लोग शोक के समस्त चिन्ह धारण करती हैं, दुःख और सन्ताप को पूरी रीति से निबाहती हैं। एक बेर किसी हरम वाली से उसने पूछा था कि मुहर्रम में तुमलोग अपने गृह्य बाल बच्चे, या बाप मां को क्यों भूल जाती हो, इस पर उन्हों ने कहा "हमको अपने पैगम्बर ही के कुटुम्बियों के मरने का दुख क्या कम है, जो हम अपना दुखड़ा और से रोवें"।

इमामबाड़े में केवल जाने ही से अथवा मजलिस में शरीक होने ही से शीया लोग 'हसन हुसैन' के 'शहीद' होने का शोक नहीं मानते, किन्तु मोहर्रम के एक महीने तक वे भोग विलास की सब वस्तुएं छोड़ देते हैं। गुदगुदे तोशकों के स्थान पर केवल चटाई, नरम २ पलंग की जगह साधारण सरहरी चारपाई पर वे सोते हैं। इन दिनों वे लोग मोटा अन्न खाते हैं। गरमागरम 'कोरमा' और 'मजेदार पुलाव' छोड़ कर केवल रोटी, दाल, साग ही खाते हैं। स्त्रियां अपने आभूषण

उतार डालती है—आभूषण का उतार डालना हिन्दुस्तानी स्त्रियो के लिए बड़े शोक और दुख की बात है, क्योंकि हिन्दुस्तानी अबलाओ को आभूषण पहनने की बडी लालसा और उत्कंठा होती है और इनके पहिनने से वे बड़ी प्रसन्न रहती हैं और दिन रात इनसे अपना शृङ्गार पटार किया करती हैं।

लखनऊ वालो का विश्वास है कि हुसैन के 'अलम का पंजा' (झण्डे का कलश) जिसे एक फकीर यात्री पश्चिम देश से ले आया था—स्मरणार्थ लखनऊ में वर्तमान है। जिस स्थान पर यह रक्खा हुआ है उसे 'दरगाह' कहते हैं—यहीं पर मुहर्रम की पांचवीं तारीख को बड़े धूम धाम और भीड भाड़ के साथ सारे लखनऊ के झण्डे (अलम) चढ़ाये जाते हैं। बादशाह के महल से यह दरगाह पूरे पांच मील पर है। यह दरगाह बहुत बड़ी है—इसी के बीच में उक्त पंजा एक चबूतरे पर एक बास में लगा हुआ है और इसके चारो ओर झण्डियां, सूर्यमुखी इत्यादि कौतुकसूचक वस्तुएं लगी हुई हैं।

मुहर्रम की पांचवीं तारीख के प्रात काल ही से लखनऊ वाले अपने अपने 'अलम' लेकर टोली की टोली, दरगाह की ओर जाते दिखाई देते हैं। प्रत्येक टोलियो के 'अलम' अलग अलग होते हैं। ऐसे अवसर पर हिन्दुस्तानवासी लक्ष्मीवान पुरुष अपने२ आडंबर और ठाठ निकालते और अपनी २ महिमा दिखाते हैं। बादशाही इमामबाड़े से जो 'अलम' उठता था वह बड़े ही धूम धाम और वैभव के साथ निकलता था। इस 'जलूस' के आगे छ या आठ हाथी होते थे, जिन पर रूपहले काम की झूलें पड़ी रहती थीं—इन पर जो लोग बैठे रहते थे

वह पूरी तरह निबाहते थे। मुहर्रम भर वह मरदाने ही में रहा करते थे अर्थात् जनाने महल में नहीं जाते थे। न शराब पीते थे, न खेल तमाशे देखते थे। अंगरेजी रीति का भी भोग विलास जो उन्हें बहुत प्रिय था वह न करते थे अर्थात पूर्ण रूप से सोग मानते थे। बेगमातो के इमामबाड़े महलों में अलग बने हुए थे, जहां की मुल्लानी अथवा मरसिया पढ़ने वाली स्त्रीही होती थी। मैंने पक्की तरह सुना है कि बेगमातों में भी छाती का पीटना "हसन हुसैन" कह कर रोना होता था। इनकी मजलिसो में तो विहस और तवर्रा कहना मरदो की मजलिसो से भी अधिक होता था। स्त्री लोग शोक के समस्त चिन्ह धारण करती हैं, दुःख और सन्ताप को पूरी रीति से निबाहती हैं। एक बेर मिसस हसन अली ने उनसे पूछा था कि मुहर्रम मे तुमलोग अपने मृत्य बाल बच्चे, वा बाप मा को क्यो भूलजाती हो, इस पर उन्हो ने कहा "हमको अपने पैगम्बर ही के कुटिम्बियो के मरने का दुख क्या कम है, जो हम अपना दुखड़ा और ले बैठें"।

इमाम बाड़े में केवल जाने ही से अथवा मजलिस में शरीक होने ही में शीया लोग 'हसन हुसैन' के 'शहीद' होने का शोक नहीं मानते,किन्तु मोहर्रम के एक महीने तक वे भोग विलास की सब वस्तुएं छोड़ देते हैं। गुदगुदी तोशकों के स्थान पर केवल चटाई, उत्तम२ पलंग की जगह साधारण सरहरी चारपाई पर वे सोते हैं। इन दिनो वे लोग मोटा अन्न खाते हैं। गरमागरम 'सालन' और 'मजेदार पुलाव' छोड़ कर केवल रोटी, दाल, भात ही खाते हैं। स्त्रियां अपने आभूषण

उतार डालती है—आभूषण का उतार डालना हिन्दुस्तानी स्त्रियों के लिए बड़े शोक और दुख की बात है, क्योंकि हिन्दुस्तानी अबलाओं को आभूषण पहनने की बड़ी लालसा और उत्कंठा होती है और इनके पहिनने से वे बड़ी प्रसन्न रहती हैं और दिन रात इनसे अपना शृङ्गार पटार किया करती है।

लखनऊ वालों का विश्वास है कि हुसैन के 'अलम का पजा' (झण्डे का कलश) जिसे एक फ़कीर यात्री पश्चिम देश से ले आया था—स्मरणार्थ लखनऊ में वर्तमान है। जिस स्थान पर यह रक्खा हुआ है उसे 'दरगाह' कहते हैं—यहीं पर मुहर्रम की पाचवी तारीख को बड़े धूम धाम और भीड़ भाड़ के साथ सारे लखनऊ के झण्डे (अलम) चढ़ाये जाते हैं। बादशाह के महल से यह दरगाह पूरे पाच मील पर है। यह दरगाह बहुत बड़ी है —इसी के बीच में उक्त पजा एक चबूतरे पर एक बास मे लगा हुआ है और इसके चारो ओर झण्डिया, सूर्यमुखी इत्यादि कौतुकसूचक वस्तुए लगी हुई हैं।

मुहर्रम की पाचवीं तारीख के प्रात काल ही से लखनऊ वाले अपने अपने 'अलम' लेकर टोली की टोली, दरगाह की ओर जाते दिखाई देते हैं। प्रत्येक टोलियों के 'अलम' अलग अलग होते हैं। ऐसे अवसर पर हिन्दुस्तानवासी लक्ष्मीवान पुरुष अपने२ आडंबर और ठाठ निकालते और अपनी२ महिमा दिखाते हैं। बादशाही इमामबाड़े से जो 'अलम' उठता था वह बड़े ही धूम धाम और वैभव के साथ निकलता था। इस 'जलूस' के आगे छ या आठ हाथी होते थे, जिन पर रूपहले काम की झूलें पड़ी रहती थी—इन पर जो लोग बैठे रहते थे

वे हाथो में झण्डे, पताके और निशान लिए रहते थे—इनके पीछे सिपाहियो का एक गारद होता था—इसके पीछे एक व्यक्ति विशेष रूप से शोकातुर बना हुआ चलता था, जिसके हाथ में काले कपड़े से मढ़ा ऊंचा बांस होता था—इस छड़ के ऊपर उलटी कमान में दो तलवारें लटकती होती थीं। इसके पीछे बादशाह सलामत स्वयं रहते थे और इनके बगल बगल इनके सम्बन्धी और कुटुम्बी और शाही मुल्ला लोग होते थे। फिर इनके पीछे एक घोड़ा होता था जिसे 'दुलदुल' कहते हैं। जब 'हुसैन' मारे गये अर्थात शहीद हुये तब इसी पर सवार थे। यह एक बड़ा अरबी घोड़ा और स्वेत रंग का होता था और इसी काम के लिए सधाया हुआ रहता था। इसके पांव, कोख इत्यादि लाल रंग से रंगी हुई होती थी-इसके चारो ओर तीर खुसे रहते थे जिससे उस समय की अवस्था, जो घोड़े और उसके सवार की हुई थी, प्रगट कराई जाती है।

अरब जातियो की सी एक पगड़ी, तीर और कमान दुल-दुल के ज़ीन पर रक्खी होती थी—घोड़े पर जो कारचोबी की पलान पड़ी रहती थी, वह सफेद रंग के घोड़े पर बड़ी ही खुलती थी। इसके कुब्बे और झालरें सब सुनहरी कलाबतून की होती थीं और घोड़े की झांझ, हमेल इत्यादि गहने सब ठोस सोने के बने होते थे। इसके साथ बहुत से नैाकर चाकर तड़क भड़क कपड़े पहिने हुए चलते थे। ये लोग हाथो में सुरा गाय के पोंछ की चवर लिये हुए चवर करते जाते थे, दुलदुल के पीछे बादशाह के नैाकरो की झुण्ड और सवारो का रिसाला, पैदलो की पलटन और तमाशाइयो की भीड़ होती थी।

ये 'अलम' दरगाह में होकर उस स्मरणीय 'पजे' के सामने लाए जाते हैं और फिर उस पजे से छुला कर दूसरे दरवाजे से उन्हे बाहर लेजाते हैं, जिसमें दूसरे अलमो के आने की जगह होजाय। सारे दिन यही तांता लगा रहता है। एक टोली जाती है, दूसरी आती है। लखनऊ शहर से इसी प्रकार बारी बारी से अलम उठ कर दरगाह को जाते रहते है। बाजे ताजियो को तो भीड छटने और रास्ता मिलने का आसरा करने में तीसरा पहर हो जाता है, किंवा किसी के 'अलम' उठने में किसीकारण विशेष से भी विलम्ब हो जाता है। मैंने सुना है कि एक दिन में पचास हजार 'अलम' दरगाह में चढाये गए, फिर भी इतने झण्डो का एकही दिन मे चढाये जाना कुछ बहुत ज्यादा नही समझा जाता था।

मनुष्य के जीवन में सुख दुख और हर्ष शोक दोनो साथ २ लगे हुए है। इसका प्रत्यक्ष उत्तम प्रमाण हिन्दुस्तान से बढ कर दूसरी जगह नही मिल सकता। मुहर्रम का महीना विशेष करके दुख शोक मनाने और रोने पीटने के लिये होता है,फिर भी उसीके बीच में एक दिन खुशी और विवाह का भी होताहै। मुहर्रम की सातवीं तारीख को विवाह की बारात बडे धूमधाम से निकाली जाती है,इसे 'मेंहदी' कहते हैं। इस दिन 'हुसैन' की लाडली बेटी का विवाह उसके चचेरे भाई कासिम के साथ हुआ और उसी दिन करबला मे कासिम मारा गया। 'मेहदी' में विवाह की सी बारात और चहलपहल होती है और यह हँसी खुशी और धूमधाम के साथ विशेष करके रात को निकाली जाती है। गरीबो की मेंहदिया अमीरो के

इमामबाडो में जाती हैं और नवाबो या उमरा लोगों की मेंहदियां बादशाही इमामबाडे मे चढाई जाती हैं।

इस दिन इमामबाडे खूब सजाये जाते हैं और खूबही रौशनी की जाती है। यह सजावट मेंहदी अर्थात विवाह के हर्ष के अनुसार पूर्ण रीति से की जाती है। जब सजावट और रौशनी पूरी तरह होजाती है, तब सभी लोग विना रोकटोक उस जगमग रौशनी और सैर देखने को अन्दर आने जाने पाते हैं। हजारो आदमियो की भीड उस विशाल बाडे में भर जाती है, धक्कमधुक्का होने लगता है। कुछ लोग तो अद्भुत रङ्ग बिरङ्ग के झाडो को देख कर दङ्ग होजाते हैं। मुझे खूब याद है कि एक झाड तो वहा ऐसा था जिस में सौ मोमबत्तिया बल रही थीं, कुछ लोग रङ्गीन दीवालगीरियो कोही देखने खडे होजाते थे। भांति २ के कवल, मृदङ्ग, फानूस इत्यादि वहा प्रकाशित होते थे, कुछलोग ठिठककर 'इमाम के मजार' अर्थात् ताजिये की द्युति, प्रभा और चमक दमक को निहारने लग जाते थे, इसके सामने दो बादशाही राजचिन्ह रक्खे रहते थे जिनमें एक ओर एक बडा शेर बबर था और दूसरी ओर दो मछलियां कुकी हुई, मुह से मुह, पीठ से पीठ मिलाये हुए बनी थीं। झण्डो और पटको के फहराने को देखकर रसिक लोगो को आनन्द आता था और रुपहले कलाबतून से बना हुआ मक्के का फाटक, हुसैन के खेमे और करबला के मजारो के नकशों को देख कर कुत्सित चितवाले भी अपना चित्त बहलाते और तरह तरह की कल्पनायें किया करते थे। एक ओर नाना प्रकार के हथियार लटके रहते थे, जिन्हें देख कर योद्धा लोग
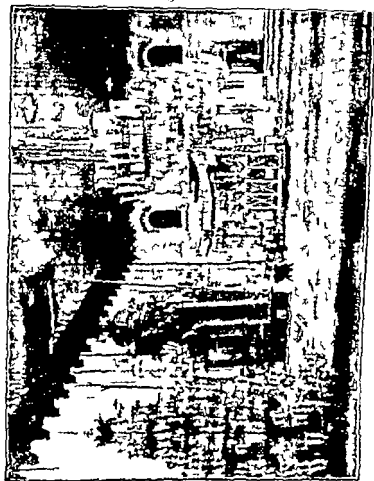
बड़े इमामबाड़े का भीतरी भाग।

T. P. work

उमङ्ग में भर जाते थे। इस सजाव मे तडक भडक, चमकदमक और देखावा बहुत होता था परन्तु सुरसता नही होती थी, इस लिये उसकी प्रभा, जगमगाहट और वैभव देख कर जो आनन्द आता था वह उनके सजावट से नही आता था।

तोपों के छूटने की आवाज जब बाहर से आने लगती तब मालूम होता कि 'मेंहदी' का जलूस आ रहा है। विवाह की खुशी और दफन करने का सोग दोनो एकही दिन होता है और अद्भुत रीति से दोनो काम साथही साथ होते है, क्योंकि कासिम उसी दिन मारा गया था, जिस दिन उसका विवाह हुआ था। जब तोपों के दनादन की आवाज आने लगती, तब शाही 'नकीब और चोबदार' के झुण्ड वहा जगह खाली कराने को आन पहुचते। ये लोग अपना काम खूब जानते हैं। इधर तो लोग खडे अन्दर की सजावट और अद्भुत अद्भुत चीजों के देखने में मग्न रहते, उधर येलोग उनको निकालना शुरू करते। हटाने और धक्का देने पर भी तमाशाई नहीं हटते। अभी देखने से उनकी तृप्तिही नही हुई है भला वे हटें कैसे। यदि लण्डन की पुलिस वहा आकर भीड हटाने के लिये नियत की जाय, तो वे लोग इन लम्बी २ दाढी वाले, हथियारवन्द और कमेयमे वाले मुसलमानों को देख कर क्या करेंगे यह मैं नही कह सकता। हा, ये बादशाही चोबदार एक सीधा उपाय करते हैं। पहिले वे लोग पुकार कर तीन बेर कह देते हैं कि जगह खाली करो, इसपर भी सैकडों आदमी डटेही रहते और 'ताबूत' के आगे ठठ के ठठ खडे उसकी शोभा निरखा करते। मेंहदी पास पहुचती जाती अब इतना समय नहीं है कि लोगों

को देखने का समय और दियाजाय। अब तीन बेर कहने पर भी भीड़ नहीं हटती, तब वे लोग कोड़े निकाल कर फटकारने लगते है। सटासट कोड़े लोगो के पीठ पर पड़ते हैं। कोड़े धीरे से नहीं चलाये जाते, किन्तु जोर से मारे जाते हैं। कोड़े खाकर लोग बड़बड़ाते,हाय हुई करते हुए हटने लगते हैं। किसी तमाशाई का साहस नहीं कि इन चोबदारो से लड़े,क्योंकि इन चोबदारो को वहा कोड़े फटकारने का अधिकार रहता है। ऐसे अवसर पर कोड़े मारने का ऐसा'दस्तूर'होगया है कि लोग उसे साधारण 'दस्तूर' समझ कर कुछ नहीं बोलते। कभी कभी तो यह कोड़ा किसीको इस जोर से लगता थी कि उसकी चोट से वह तिलमिला जाता और वह बिचारा कोड़े खाकर भौचक्कासा हो मुह देखने लगजाता और सिपाहीलोग कोड़े या बेंत बराबर फटकारते रहते। बिचारे तमाशाई कोड़े खाते और चोबदारो की गालिया सहते आगे बढ़ते चले जाते। गदहा, सूअर, कुत्ता इत्यादि गन्दी २ गालिया चोबदार लोग देते रहते और भेंड़ की तरह भीड़ निकालते रहते परन्तु उनका जवाब कोई न दे सकता था। कोड़े खा खा कर हाथ से चोट की जगह मलने लगते और सिपाहियों का मुह ताक २ कर रह जाते पर कुछ न बोल सकते। उनके हथियार बेकाम बधे के बधे ही रहते। यह सब 'दस्तूर' की महिमा है। हिन्दुस्तान में 'दस्तूर' और 'अधिकार' एकार्थ वाची समझे जाते हैं।

इतने में बारात पहुच जाती और इमामबाड़ा भी मेंहदी के आने के लिये खाली हो जाता। इमामबाड़े में फिर स नाटा हो जाता। जिस फाटक से आदमियो की भीड़ बाहर

निकाली जाती वह बन्द कर दिया जाता, केवल आगे का फाटक खुला रहता जहा खूब झकाझक रौशनी होती रहती। 'जलूस' में जो हाथी, घोड़े होते वे बाहर ही रह जाते, परन्तु सिपाहियो, बाजे गाजे वालो, तायफो, जलूस बरदारों, और मेंहदी के सामान लाने वालो से सामने का सहन खचाखच भर जाता और पच्चेकारी का फर्श भीड़ से बिल्कुल छिप जाता।

पहिले तो सिपाही लोग दाए बाए परा जमा कर खड़े हो जाते और इनके बीच से मेहदी की वस्तुए अन्दर जातीं, जिसमे चादी की थालियो और तशतरियो में भाति २ की मिठाइया, नाना प्रकार के फल, मेवे, चमेली, गुलाब इत्यादि के फूल, हार, गजरे और गुलदस्ते और फूलो की पलङ्गड़ी इत्यादि होती हैं और इन्हें भड़कीले सलमे सितारे के काम के कपड़े पहिने हुए कहार लेजाते हैं। ज्योंही फाटक पर मेहदी पहुचती है, 'आतशबाजी' छूटने लगती है। फिर इसके पीछे 'दुलहिन' की चादी की पालकी (जैसी कि बेगमातो की पालकिया होती हैं) आती है, इसके आगे तड़क भड़क कपड़े पहने हुए मशालची होते हैं। इसके पीछे शहनाई वाले बाजा बजाते मशालचियो के साथ आते हैं और बड़े धूमधाम और आनन्द मङ्गल के साथ सहन मे परिक्रमा करते रहते हैं। ये सब सामान ताजिये के आगे चढा दिया जाता, जिसमें यह सब चीजें भी ताजिये के साथ करबला लेजाय। अभी मेंहदी की सब चीजें अन्दर भलीभाति पहुचने भी नहीं पातीं कि इतने मे एक टोली शोक करने वालो (अज्जादारो) की शोक से मुह लटकाये, शोक के कपड़े पहिने, दुख मनाते इमामबाड़े मे आ जाती है।

क्योंकि जिस दिन विवाह हुआ था उसी दिन दुलहे की मृत्यु भी हुई, अतएव मेंहदी के आनन्द मङ्गल के साथही साथ पीछे२ शोक सूचक मण्डली इत्यादि आती है। तात्पर्य यह कि बड़े उत्तमता से सुख और दुख दोनो एक साथ दिखाये जाते हैं।

इस पिछली शोकातुर टोली के पीछे कासिम के कब्र के समान बना हुआ एक ढाचा रथि (तावूत) पर रक्खे हुए कुछ लोग कन्धे पर लिए हुए लाते हैं, जिसके पीछे सोग करनेवालो की भीड़ की भीड़ रहती है। कभी कभी तो तावूत के बदले में एक सधा सधाया घोड़ा रहता है। यह घोड़ा इमाम काजिम का समझा जाता है और इस पर उनकी 'जरदोजी' की पगड़ी, तलवार, तीर और कमान रक्खे हुए होते हैं, इसके ऊपर शाही राज चिन्ह अर्थात कारचोबी के छतर, सूर्य मुखी इत्यादि लगे रहते हैं। यदि इस घोड़े को इमामबाड़े में लाते हैं, तो यह घोड़ा बड़ा सीधा और शान्त सीखा सिखाया होता है और वह ऐसे आन बान से ठुमुक२ चलाता है कि जैसा चाहिए।

यह तो अन्दर का वृत्तान्त हुआ, जहा इन सब के उपरान्त नियमानुसार 'मजलिस' (अर्थात रोना पीटना) होती है। परन्तु अब इमामबाड़े के बाहर का विवर्ण सुनिये कि इमाम बाड़े के बाहर जो कृत्य होता है उसमें सर्वसाधारण को जितना मजा आता है उतना अन्दर के शोकमय कृत्य में नहीं आता। इमामबाड़े के बाहर जो जगह होती है वहा तक भीड़ लोगों के चले जाने से कोई न्यूनता नहीं होती, उस भीड़ में हर उम्र के मर्द और स्त्रिया इकट्ठे होते हैं। वहा घमासान भीड़ भड़क्का होता है, आदमियो पर आदमी गिरते हैं, उनमें गोलमाल, गाली

गल्लीज, हंसी दिल्लगी सभी कुछ होता रहता है। ये लोग रूपए पैसे लूटने के लिए बटुरे रहते हैं, जो ब्याह शादी मे बराबर लुटाये जाते हैं। यही रीति मेहदी के समय भी बर्ती जाती है, जो कासिम और हुसैन की बेटो की यादगार मे निकाली जाती है। जो लोग इसकाम पर नियुक्त किए जाते है वे लोग मुट्ठी भर भर कर और जी खोल कर रेजकारी और पैसे बाए दाए इस बहुतायत से लूटाते हैं कि जिसे देख कर योरोपवासी चकरा जाते हें। ऐसे अवसरों पर बिना किसी आगे पीछे के बिचार के जी खोल कर और धर्म कार्य समझ कर लोग खूब धन लूटाते है।

लखनऊ दर्बारकी यह प्रसिद्ध और ऐतिहासिक बात है कि किसी नवाब के समय में इस मुहर्रमके अवसर पर ३ लाख पाउड (अर्थात् ४५ लाख रुपया) खर्च होता था। इस जलूस की धूम-धाम, खर्च, और खैरात और भारीभारी वस्त्र इत्यादि को (जो एक बेर काम लाकर फिर काम मे नहीं लायेजाते) देखकर हमें आश्चर्य न करना चाहिए। हिन्दुस्तान के मुसलमानो की सम्पत्ति को उनके ताजिएदारी के धूम धाम से भली भांति आंक सकते हैं। समस्त मूल्यवान वस्तुए और सुनहले रुपहले पदार्थ जो ताजिए के लिए प्रति वर्ष बनाए जाते है, यदि एकही बेर बनवा कर रख दिए जाय और वेही प्रति वर्ष निकाले जाय तो इतना व्यय और धन की हानी न हो, परन्तु ऐसा कोई नहीं करता। जिस चीज से एक बेर काम लेलिया जाता है फिर वह चीज काम में नही आसकती, किन्तु मुहर्रम के पश्चात् ये सब पदार्थ कंगलो और गरीबो में बांट दिये जाते हैं—इसी कारण से

सर्वसाधारण लोग मुहर्रम मनाने में कोई बात नहीं उठा रखते।

मुहर्रम का पूरा वृत्तान्त अभी समाप्त नहीं हुआ। इमाम बाड़े। के ये सब सजाव, अलमो का धूमधाम से उठना, मेंहदी का धूम धड़क्के के साथ निकलना और ताजिए का बनाना, ये सब मुहर्रम के पूर्वाङ्ग हैं और इसका अन्तिम कृत्य देखने ही योग्य होता है। दोनो इमाम तो मरे हुए भूमिगत गड़े हुए हैं, परन्तु उनके मरण का शोक अभी लोगो के जी मे बना ही हुआ है। उनकी मृतक्रिया (जनाज़ा उठाना) प्रतिवर्ष बड़े उत्साह से होती रहती है, क्योंकि उनका जनाज़ा उठाने में बहुत कुछ धूमधाम की जाती है और उनके गाड़ने अर्थात् दफन करने के लिए लक्ष्मीवान लोग करबला का प्रतिरूप पहले ही से बनवा रखते हैं (इसको भी साधारण रूप से 'करबला' कहते हैं)।

ये करबलाए शहर की चारदिवारी से बहुत दूर पर होती हैं। बड़े तड़के ही से हजारो आदमियो की भीड़ की भीड़ तमाशा देखने या इस धर्म कार्य में शरीक होने के लिए, खाने पीने के बहुत कुछ पदार्थ और अन्य वस्तुए जो मुसलमानो के कब्र में रखी जाती हैं, साथ लेकर जाते हैं।

इस अवसर पर यह प्रयत्न किया जाता है कि सब सामान और दिखावा रण का सा हो, क्योंकि हुसैन का मृत सस्कार फौजी रीति से हुआ था। इसीलिये आगे झण्डे होते हैं। बैण्ड बाजे बजते हैं। करावीनें, बन्दूकें और पिस्तौल दागी जाती हैं, लोग तलवार दाम हिलाते, बनैठी बाना खेलते जाते हैं। सारांश यह कि प्रत्येक बातो मे सग्राम की नकल उतारी जाती है। अमीरो के ताजियो के पीछे २ गरीबो के भी बहुतसे ताजिये

रहते हैं,जिसमे उनके ताजिये भी जल्द करबला तक पहुच जायँ, क्योंकि उस दिन इतनी घमासान भीड होती है कि छोटे मोटे ताजियो को भीड चीर कर लेजाना कठिन होजाता है। इसके अतिरिक्त मतान्तरावलम्बी और विपक्षी सुन्नी लोग विघ्न डालने, लडने भिडने और रोक टोक करने को खडे होजाया करते हैं, क्योंकि ये वैधर्मी और विरोधी लोग इस कृत को वस्तुत धर्म विरुद्ध और निषिद्ध समझते हैं।

ताजिए के जलूस का ढग एक ही सा सब का होता है, अर्थात सब से पहिले हौदेदार हाथियो पर लोग हाथो में 'अलम' (झण्डे) लिए रहते है, जो बडे२ छड वा बास पर फहराया करते हैं। जो ताजिया धूम से उठता है उसमें दो या तीन किंवा छ हाथी भी होते हैं। हाथियो के पीछे ताशे और बैण्ड बाजे बजते रहते हैं,जो विशेष नियमित ध्वनी से बजाए जाते हैं। जहा सभी बाजे एक दम बजते रहते है--कई ताशे वाले, कई बैण्ड वाले,कई चौकी बजाने वाले बजाते रहते है-- और जहा धक्कम धुका होता रहता है,तो समझ लेना चाहिए कि वहा बाजो की ध्वनी सुस्वर और एक मेल की नहीं हो सकती होगी। बाजो के पीछे एक आदमी बडा लम्बा बास लिए रहता है जिस पर काला कपडा मढा होता है और उस पर उलटी कमान में दो तलवारें लटकती हुई रहती हैं-- इसे कुछ लोग सम्हाले रहते हैं। इनके हाथो मे भी काले कपडे से मढे छड होते हैं, जिनमे काले रेशम के फरहरे या लच्छे फहराते रहते हैं।

इन सब के पीछे 'दुलदुल' घोडा रहता है, जिसके साथ

बहुत से लोग होते है,जैसा कि पहले लिखा जा चुका है,अर्थात घोड़े के दोनो ओर दो साईस लगाम धरे रहते हैं और इसके आगे आगे एक अफसर सूर्यमुखी लिए हुए और एक उस घोड़े पर छतर लगाए हुए, कोई 'माही मरातिब' लिये हुए और कुछलोग घोड़े के सुनहरे वा चान्दी के गहने लिए हुए और बहुत से झंडीबरदार हरे कपड़े की तिकोनी झण्डियां लिए हुए साथ चलते है। दुलदुल की काठी पर कवच, सुनहरी काम की पगड़ी, तलवार, परतला इत्यादि रक्खे हुए होते हैं। इसके पीछे प्राय ताजिएदार अग्रणी बने और शोक में भरे साथ रहते हैं। ऐसे भीड़भड़क्के में कई मील पैदल चलना कदापि सुखद और सहज नही है।

साथ ही साथ कुछ लोग चान्दी और सोने का धूपपात्र लिये रहते हैं, जिसमें लोबान सुलगता रहता है। ये धूपदान चांदी और सोने की सिकड़ियों से लटके रहते हैं, जो चलने में दोलायमान होते रहते हैं (जैसे रोमन कैथोलिक गिरजा घर में धूपदान होते हैं) इसके पीछे 'मरसिया' पढ़नेवाले और ताजिएदार और उनके मित्र इत्यादि नङ्गे पैर चलते हैं। प्राय इनके सिरो पर गर्द और भूसी पड़ी रहती है, जो अगाध शोक का एक पुष्ट चिन्ह है।

इनके पीछे ताजिया होता है, जिसके ऊपर हरे मखमल पर सुनहरे वा रुपहले काम का शामियाना चोबो पर लगा रहता है, इसे बहुतसे आदमी उठाये रहते हैं। इसके पीछे कासिम का ताबूत,उसके पीछे उनकी बीबी की पालकी,दहेज के सामान भी क्रम से साथ मे होते हैं और सब मे पीछे ऊंटो

और हाथियो पर हुसैन के खेमे और रण के ठाठ बाट इस प्रकार लदे रहते हैं, जैसा कि हुसैन के मृत्यु पर लद कर मदीने से करबला को गये थे।

ये सब साज बाज तो ताजिए के अङ्ग ही हैं। इनके सिवाय हिन्दुस्तानी रीत्यानुसार खैरात का सामान लिए हुए हाथियो की कतार अलग होती है, जिनपर हौदे कसे होते हैं और उनपर विश्वासपात्र आदमी बैठे हुए रुपये, पैसे और रोटिया भिखमगो को बराबर बाटते चलते हैं। मुसलमान स्त्रियो का विश्वास है कि यह रोटिया जो इस तरह बाटी जाती है, वह बडी शुभफल दायक और पवित्र होती है। वे लोग अपने नौकरो को भेज भेज कर इन रोटियो के टुकडो को मँगाती हैं, यद्यपि वे लोग मनो रोटिया स्वय बटवाती हैं। मुहर्रम मे रोटियो का बाटना विशेष करके पुण्य जनक और धर्म समझा जाता है।

शहर के सभी गली कूचो से ताजिए निकला करते हैं, इस लिए बन्दूक, करावीन, पिस्तौल, पलीतेदार बन्दूक के धमाके और 'हसन हुसेन' की आवजो से सारे महल्ले रह रह कर गूंज उठते हैं।

जब ताजिए करबला (जो असली करबला की नकल पर बना रहता है) में पहुच जाते है, तब वे साधारण नियम के अनुसार गाड दिये जाते हैं। वहा कबरे पहले से खुदी रहती है और उन्ही गडहो मे ताजिये, फल, फूल, हार, गजरे और दहेज के सामान इत्यादि सभी दफन कर दिए जाते हैं। प्राय इस अवसर पर शीया और सुन्नियो का पुराना झगडा उबल उठता है और इस उपहास-जनक गाडने के समय उक्त दोनो विप-

स्त्रियों में लड़ाई झगड़ा, मारामारी, फाटाफूटी हो जाती है, यहां तक कि कई लोगों की जान तक चली जाती है।

स्मरण रहे कि मुहर्रम के रोजे (उपवास) और 'रमजान' महीने के रोजे में बड़ा भेद है। रमजान के महीने में तीस दिन तक सभी मुसलमान लोग सूर्योदय से सूर्यास्त तक न खाते हैं न कुछ पीते हैं, हुक्का तक नहीं पीते, इसको समस्त देश के मुसल्मान मानते हैं। इसको गङ्गा-तट-वासी मुसल्मान से लेकर अफरिका के उत्तर अतलान्तिक समुद्र तट पर बसनेवाले मैराज लोग तक सभी बराबर मानते हैं और उपवास करते हैं। परन्तु मुहर्रम के रोजे केवल शीया लोगही मानते हैं और बहुधा करके दस दिन तक 'रोजे' रखते हैं। जो लोग अधिक भक्तिमान और धार्मिक हैं, वे चालीस दिन तक बराबर रोजे उसी प्रकार रहते हैं, जैसे कि दोनो सम्प्रदाय के बड़े कट्टर धार्मिक मुसलमान रमज़ान के एक महीने पूर्व से एक मास पश्चात तक रमजान ही मनाते हैं और उपवास करते हैं।

मैं लिख चुका हूं कि मुहर्रम के दिनो में बादशाह सलामत के एकांत दर्शन भी कभी कदाच ही प्राप्त हो जाते थे नहींतो नहीं। किसी दिन सबेरे जब कभी वह दबार करते, तो हमलोग भी वहां हाजिर होजाते, परन्तु इसमें भी नागे पड़ते रहते थे। इस मास में कामकाज सब बन्द रहता था। जब कोई आवश्यक काम आ पड़ता, तो जब बादशाह सलामत राजनापिस से बाल मुंडवाते, तब हमलोग अवसर पाकर निवेदन कर देते।

अकबरे बादशाह सलामत अपने तख्त और भोज में जाकर जो प्राय स्वतंत्र राजा का स्वभाव होता है, वह अङ्गरेजी कपड़े

और अङ्गरेजी काली टोपी हाथ में लिए हुएही मुहर्रम की मजलिस में शरीक होने को इमामबाडे चले गए। इसपर मुसलमानो ने बहुत कुछ बुरा माना और गरदने हिला हिला कर, दाढी फटकार २ कर खूब गुरचो गुरचो करते रहे, हम अङ्गरेजो ने भी बादशाह के इस रङ्ग ढङ्ग को बुरा समझा था और जहा तक बनता था हमलोग भी उन्हे समझाते रहते थे कि अपनी प्राचीन चाल और मर्यादा ऐसे अवसरो पर वे न बदलें। परन्तु हमारी सुनता कौन है, उनके मन मौज मे जो आता सो करते थे, जो बात उनके मन के विरुद्ध होती उसपर वह कानही नहीं देते थे। मुझे मालूम है कि रेजीडेण्टी में सभो का यही ख्याल था कि इन सब बातो के कारण हमही लोग हैं। हमलोगो के समान रेजीडेण्ट साहब को भी मालूम होता रहता था कि दर्बार में क्या क्या होता रहता है, परन्तु वह यह नहीं जान सकते थे कि यह सब करनी स्वय बादशाह अपने मनमन्तगी से करते हैं वा अपने 'मुसाहिबो' की प्रेरणा से। हा, उनको विश्वास तो यही था कि हम अनुचरोके अनुमति से ऐसी बातें होती रहती हैं। कलकत्ता रिवियू (Calcutta Review) और अन्य हिन्दुस्तानी पत्र हमलोगो पर अन्याय पूर्वक यह दोष* लगाते थे कि हमी लोग के कारण से बहुव्यय और अत्याचार होता रहता है, यद्यपि हमलोगो का वश चलता, तो हम लोग सब से पहिले उन्हे रोकते, सच तो यह है कि हमलोग चित्त से इन सब कुव्यवहारो के वैसेही विरोधी थे, जैसे कि हम पर अपवाद लगानेवाले॥

* नहीं साहब उनका दोष लगाना अन्यथा है।

तेरहवा अध्याय।

हमारा लखनऊ छोडना।

जिन बातो से मुझे, केवल मुझी को नहीं किन्तु एक और साहब को भी, जिनको बादशाह मुझसे भी बढकर मानते और सत्कार करते थे, लखनऊ छोडना पडा उनके वर्णन करने में बहुत देर न लगेगी। राजनापित का अधिकार और प्रभाव दिन दिन बढता ही जाता था। प्रत्यक्ष बोध होता था कि वास्तव में 'लोखरवाला' ही अवध का शासन करता है, यहा तक कि रेजिडेण्ट का भी ध्यान इस बात पर पडा, उनके दृष्टि में भी यह बात खटकने लगी। लखनऊ में ऐसा कोई आदमी न था जो यह न जानता हो कि जब तक नापित साहब की मर्जी न हो किसी का सन्मान दबार में होगे या रहही नहीं सकता है। उसकी प्रधानता के कई कारण थे। लडकपन से अत्यन्त लाड, दुलार, कुशिक्षाओं से बादशाह सलामत के निपिट और खोटे आचरण होही गए थे, उस पर यकायक असीम धन प्राप्त हो जाने से और भी रहा सहा भ्रष्ट रसिकपना उनमें आगया और इन्ही दुराचरणो की वृद्धी से राजनापित को लाभ होता था। उसने अपने को ऐसा बना लिया था कि बिना उसके बादशाह का काम न चलता। यह अपनी धूर्तता से बादशाह को जिस रस्ते चाहता चलाता, पर अपने को ऐसा बनाए रखता मानो यह बादशाह का बडा आज्ञाकारी है और उन्हीं के इच्छानुसार चलता है। बादशाह के दबार में जितनी बोतलें मदिरा की खर्च होतीं, उन सभो से कुछ न

कुछ उसका जेब गरमाता था, ऐसी अवस्था में तो उसका लाभ इसी में था कि बादशाह शराब पीना कम न करने पावें। और फिर जिन खवास व रखडी पर बादशाह की कृपा दृष्टि फिरती, वे भी अपनी गरज को नापित साहब का हाथ अपने कमाई में से गरमाते रहते थे, यहा तक कि नवाब वजीर और शाही फौज के कमानियर साहब भी अपनी भलाई इसी में समझते थे कि इस बढे चढे अनुचर को मूल्यवान तोहफे दे देकर अपना पक्षपाति बनाये रक्खे। उसके नीच और लालची स्वभाव को देख सुनकर और बादशाह के इन दुर्व्यसनो के वृद्धी से जो कुछ उसे लाभ होता था उसे जान कर, फिर भी क्या आपको उसके इस कर्म पर आश्चर्य होगा।"

हमलोगो से,जो बादशाह सलामत के निज के नौकर थे, उनके दुर्व्यसन छिपे न थे और मुझे विश्वास है कि हम सबको जी से लगी थी कि बादशाह के कुव्यसन छूट जायँ और वह ठीक रस्ते पर लग जायँ*। हमलोग की इच्छा तो थी,पर उसके पूरा करने का उपाय हमारे हाथ मे न था। हमलोगो ने कई बेर आपुस मे बैठ कर इस बात पर विचार किया,परन्तु कोई ढब न लगता था। एक साहब ने जो बादशाह के ज्यादा मुह लग्गुओ मे थे,यह काम अपने सिर लिया कि वह बादशाह से कहेंगे कि रोज २ की मदोन्मत्तता अच्छी नही है। बादशाह ने शपथ भी खाई, इस बुराई को सकारा भी, और इस बुराई से बचने का प्रण करके उनका सन्तोष भी करा दिया,परन्तु फिर सब भुला दिया। इससे स्पष्टही है कि इन साधनो से तो नापित

* जो कहो तुम सच है साहब जो कहो तुम सच है।

का प्रभाव और प्रताप घटा तो नहीं किन्तु बढ़ता ही गया ।

मैं कही वर्णन कर चुका हू कि बादशाह और उनके चचाओ मे वैमनस्य चला ही आता था । और उन्होने जो बादशाह के पिता की बातो में हां में हां मिलाई थी कि इनको गद्दी न मिलने पावे, उस बात को बादशाह भूले न थे । जब कभी बादशाह सलामत अपने किसी चचा को अपने साथ भोजन करने को निमन्त्रित करते थे, तो केवल इसी लिए करते कि उन्हे खूब शराब पिला कर बनावें और उनका उपहास और अपमान करें । जो बात मैं लिखना चाहता हू, यद्यपि वह सुनने में विश्वासयोग्य नहीं मालूम होगी, परन्तु वास्तव में उसका अक्षर अक्षर सत्य है । ऐसी दुर्घटनाए कोई नहीं भूल सकता । अब मैं इस घटना को, जैसे वह हुई थी ज्यूं की त्यूं लिखे देता हू ।

एक बेर बादशाह ने अपने एक बूढे चचा को भोजन के लिये निमन्त्रित किया । उन्हे शराब पिलाई, जितनी वह पी सकते थे उससे कहीं अधिक उनको बरदस्ती पिलाई गई । राजनायित देख रहा था कि जिस प्रकार बादशाह स्वयं उन्मत्त हो रहे हैं, उसी प्रकार अपने चचा को भी वह उन्मत्त कराके उसकी दुरवस्था और दुर्गति देखा चाहते हैं ।

तब उस लोगर वाले ने कहा कि "इस समय 'स्प्रायरील' (घूमने का नाच)* का नाच होता तो मैं सआदत के साथ नाचता ।" विदित रहे कि बादशाह के उक्त चचा का नाम 'सआदत' था ।

यह सुनकर बादशाह फड़क उठे और उनके जी में यह

* यह एक प्रकार का अंग्रेज़ी नाच होता है ।

बात कुछ ऐसी समाई कि आप भी नाचने के लिये उठने लगे और बोले, "भई खूब सूझी, हा हा,खा, तुम हमारे चचाजान के साथ नाचो, बड़ी अच्छी बात है, बड़ा मजा आवेगा।

अब तो सारे कमरे में एकदम चहचहा मच गया। एक ओर रण्डियां नाच ही रही थीं, दूसरी ओर बादशाह साहब दिखाने के लिये नाचने को खड़े होगए थे और उस पिशाच और अपने चचा का तमाशा देख रहे थे। वह बिचारा बुड्ढा, उस असुर के पंजे मे विवश फँसा हुआ,घूमरियां खा रहा था और उस दुष्ट ने उस बिचारे को इतना चक्कर दिया कि बुड्ढे को घुमटा आने लगा। वह बिचारा वहां खड़ा तक नहीं रह सकता था। हँसते २ बादशाह के पेट में बल पड़ पड़ गया और आंखों मे आंसू भर आये। राजनापित ने चक्कर खाते २ उस बुड्ढे की पगड़ी उछाल दी। हिन्दुस्तानियों में पगड़ी उतार लेना बहुत बड़ा अपमान गिना जाता है। यद्यपि बुड्ढा नशे में चूर था, पर इस अपमान से वह मारे क्रोध के हांपने लगा और उसने झट तलवार खींचना चाहा।

नापित ने भी झटपट उसका हाथ पकड़ लिया और तलवार निकालने ही न दिया। फिर दुष्ट नापित ने बुड्ढे की पेटी, शाली पटका, सुनहरी ताश का जामा, इत्यादि सभी वस्त्र को एक एक करके उतार लिया और कपड़े फाड़फूड़ डाले। हम में से दो साहबों ने उस बिचारे विवश बुड्ढे को बचाना चाहा, मगर हमारे बीच बचाव करने पर बादशाह बड़े क्रुद्ध हुए और नशे में चूर तो थेही कहने लगे, 'साहबो बीच में से हट जाव ,दिल्लगी होने दो नहीं तो 'खुदा कसम' अभी तुम लोगों

को गिरफ्तार करा दूंगा।"

थोड़ी ही देर में वह बिचारा श्वेत बालों वाला बुड्ढा कमरे के बीच में नङ्गाधुड़ङ्गा खड़ा कर दिया गया और बादशाह और उनके घृणायोग्य लाड़ले नापित और खवासिनों का उपहास पात्र बन गया। बादशाह की अनुमति से उस बिचारे पर पानी छिड़का गया और थप्पड़ें भी पड़ीं, ज़ोर से नहीं केवल चुहुल में। उसकी यह दुर्दशा देख कर बड़ी करुणा आती थी। यद्यपि वह बिचारा नशे से बेसुध था, पर हाथों से मुंह ढांपे अपनी दुर्गति पर रो रहा था।

प्यारे पाठकगण, आप लोग स्वभाविक रूप से ही पुकार उठेंगे कि "इतना कुछ उपद्रव होता रहा और तुम सब बैठे तमाशा देख रहे थे और किसीने भी फूटे मुंह से रोका नहीं"। रोकने को तो कई बेर हमलोगों ने रोका, परन्तु हर बेर बादशाह ने डाट बताई, यहां तक कि कुछ लोग नङ्गी तलवार लिये हमारे ऊपर खड़े कर दिये गए कि जिसमें हमलोग चूं तक न कर सकें। अन्त को जब हमसे न देखा गया, तब हमलोग मन मारे यहां से हट गए। बल्कि बादशाह सलामत की यथा नियमित शिष्टाचार भी पूरी तरह न की। बादशाह हमलोगों की रोकटोक से इतने रुष्ट थे कि हमारे इस शिष्टाचारी की कमी पर उनका ध्यान ही नहीं गया।

हमारे पीछे यहां और क्या क्या हुआ उसका वृत्तान्त हमने पीछे सुना। बादशाह उसको नङ्गधुड़ंग ही नचाते पर तुले रहे और नापित साहब उसे साथ लिये हुए नाच रहे थे। उस समय महल के समस्त लोग—क्या मर्द, क्या स्त्री, क्या ख़्वाजा,

क्या दाइया—सभी लोग वहा बादशाह के चचा की दुर्गत देखने को इकट्ठा होगए और जब तक बादशाह नशे से बेसुध न होगए, यह धम्माचौकडी वहा बराबर मची रही। जब वह थक कर महल में गए, तब जाके उस बिचारे दुखिया को छुटकारा मिला।

अवध के समान हिन्दुस्तान के सभी देशी रियासतों में—वहा का बादशाह वा राजा ही सब कुछ है। उनके कुटुम्बियो का उतना भी गौरव और प्राबल्य नही होता, जितना एक नीच से नीच दरबारी का होता है। बादशाह के मुहलगू की जितनी चलती है और उसका जितना आदर सत्कार होता है,बादशाह के भाई या माता का भी नहीं होता। बादशाह को अपनी प्रजा की प्राण-रक्षा करने और प्राणदण्ड देने का पूरा २ अधिकार होता है, अतएव बादशाह के भोग विलास किंवा अन्याय परायणता और क्रूरता में कोई हस्ताक्षेप नहीं कर सकता और यदि किया जाय तो उस बिचारे दीन दुखिया के लिये और भी दुख का हेतु होजाता है। यदि कोई बात ऐसी है,जो कुतुहल के लिये थोडी देर के लिये कीजाती हो, तो हस्ताक्षेप होने पर और विशेष करके योरोपियन के रोक टोक करने पर वही बात बादशाह हट से देर तक कराते। क्योंकि योरोपियनो पर तो अपना क्रोध उतार ही नहीं सकते, यह भी उबाल उस बिचारे दीनही के सिर आन पड़ता। जब बख्तावर सिंह के हनने की आज्ञा,उनके एक अनर्थक और अविवेक हासोक्ति पर,दी गई थी (जिसका वर्णन ऊपर एक अध्याय में कर आये हैं) तब उसको इस बात का बड़ा खटका था कि

कहीं हमलोग उस बीच में न बोल उठें, नहीं तो और लेने के देने पड़ जायँगे। बख्तावरसिंह ने एक बेर हमसे कहा था "कि यदि आपलोग मेरे लिये कुछ कहते सुनते, तो इस जगत में कोई ऐसा न था जो फिर मेरी जान बचा सकता था।"

जैसा कि मैंने लिखा है ठीक उसी प्रकार से बादशाह ने अपने चचा 'सआदत'* की दुर्दशा कराई थी। इसी प्रकार का एक दृश्य, जो इससे कुछ दिन पहिले होचुका था, हमने अपनी आंखो पूरी तरह से देखा था। परन्तु उस बेर जिसकी दुर्गति बनाई गई थी वह एक नवयुती वेश्या थी कोई बुढ़िया न थी, यद्यपि उसने अपने बचाव के लिये बहुत कुछ यत्न किये, रोई, चिल्लाई, दुहाई दी, बहुत कुछ हाथापाई तक की और लड़ती झगड़ती भी रही, परन्तु दुर्जन नापित (दोनो अवसर पर यही उपधारक था) के आगे उसकी एक न चली और दुष्ट हज्जाम भला कहा रुकनेवाला था, वह भी उसे खिजला २ के बादशाह को हँसाता रहा। उस रण्डी का नाम मात्र पति भी सङ्गतियों में वहां उपस्थित था (यह तो सभी जानते हैं कि सगति लोग वेश्या के साथही रहा करते हैं) और जब उसने दरबार का यह रङ्गढङ्ग देखा तो, वह चालबाज भी बादशाह के प्रसन्नता के अर्थ नापित का साथी होगया और लगा उसीके ऐसी करने। ओफोह! एक स्वतन्त्र बादशाह के दरबारी लोग भी कैसे निर्लज्ज और कठोर हृदय वाले होते हैं।

यह सब बातें बहुत ही ओछी और अधम थीं और हम

* नवी अमजद ने इसी सआदत अलीखाँ के भाई [illegible] को गाजीउद्दीन [illegible] हैदर के मरने पर राजगद्दी मिली थी।

लोगो ने कई बेर बादशाह सलामत से निवेदन भी किया था कि यह सब नि प्रयोजन 'पापकर्म' होता रहता है। इतनाही नहीं किन्तु हमलोगो ने यह भी सुना दिया था कि हमलोगो को यह सब कुकर्म बहुत बुरे मालूम होते हैं। परन्तु हमारे बुरा मानने और घृणा करने की यह परवाह भी नहीं करते थे। अब एक और कुतुहल का हाल सुनाता हू जो इन सबसे भी निकृष्ट था।

बादशाह सलामत के एक और भी चचा थे,जिनका नाम 'आसफ' था और यह 'सन्यादत' से भी अधिक जीर्ण और वृद्ध थे। एक दिन यह भी निमन्त्रित किये गए। हमलोग एक दूसरे कमरे में बैठे हुए बादशाह और राजनायिक के आगमन की बाट जोह रहे थे। आसफ भी वहा हमलोग के साथ बैठे हुए थे। वह मुझे एक कोने में बुला लेगए और बहुत धीरे से, जिसमें कोई सुन न ले, कहने लगे, 'भला मुझे बादशाह सलामत ने क्यो बुलाया है, मुझ ऐसे बुड्ढे से क्या काम लेंगे?'

मैं। 'मैं समझता हू, अपने साथ केवल भोजन कराने को बुलाया होगा।'

आसफ। 'अफसोस, मैं बुड्ढा आदमी क्या अपने नवयुवक भतीजे के साथ बैठने योग्य हू,जो अभी युवा हैं और भोगविलास में डूबे हुए हैं। मेरे बाल पक कर रूई के गाला होगए हैं, मेरी आखें धुधला गई हैं। मेरा उनका साथ क्या,मुझे तो कुछ औरही रग दिखाई देता है,यह शगुन अच्छा नही है,किन्तु निकृष्ट है, क्योकि जब कभी हम में से किसी को यह बुलवाते हैं, तो कुछ न कुछ बुराई और उनका अपमान होता है।'।

इस बुड्ढे के वचन बड़े ही हृदय द्रावक और दीनभाव थे। उसके चित्त के क्लेश को देख कर मेरा तो चित्त विगलित होने लगा।

मैं। "आप डरें नहीं, देखिये कल ही आपके पुत्र के साथ बादशाह सलामत ने भोजन किया था और उनके साथ उत्तम बर्ताव किया।

बुड्ढा। "बात यह है कि जब नसीरुद्दीन के पिता का देहान्त हुआ था या जिस समय गाजीउद्दीन ने हमलोगों से प्रण कराया था कि उसका पुत्र नसीरुद्दीन राजगद्दी पर न बैठने पावे उस समय मेरा बेटा लखनऊ में न था, इसलिये उससे बादशाह को विद्रोह नहीं है। मैं तो ईश्वर से यही प्रार्थना करता रहता हू कि मुझे कुशलपूर्वक घरही में बैठे रहना मिले। क्या बादशाह के मन बहलाने के लिये सारा लखनऊ और लखनऊ में जोकुछ है वह सब कम है" ?

इतने में बादशाह सलामत अपने दुलारे हज्जाम के हाथ का सहारा लिये हुए आगए और शाहाना तरीके से हमारे सलाम लिये, क्योंकि इन समय उनपर विशेष तेज प्रगट हो रहा था। उनकी काली २ विशाल आंखें धामक पर और मुझ पर पड़ीं और जब निकट आगए, तब अपना हाथ धामक की ओर बढ़ा कर बोले, "धामक चचा आप आगए। बहुत दिनों से आप हमारे साथ भोजन करने नहीं आये"।

बुड्ढा। (डरते हुए हाथ मिला कर) "इस दास को श्रीमान ने आज कृतार्थ किया"।

बादशाह। (चलते २) "आइये चचा जान, मैं स्वयं

आपको मेज पर लेचलूगा"।

हमलोग पीछे हो लिये। अभी तक सब बातें नियमानुसार ही थी। बादशाह सलामत अपनी उस कुरसी पर बैठ गए जो बीच में जरा ऊचे चबूतरे पर रक्खी थी। हमलोग भी कुछ दाए, कुछ बाए अपनी २ जगह पर जाबैठे। बादशाह के ठीक साम्हने आसफ चचा बैठाए गए, उनके अगल बगल कोई न था। जब कभी कोई हिन्दुस्तानी बादशाह के साथ भोजन करने बैठते, तो वह ठीक उनके सामने बैठाए जाते थे—जहा कि आसफ बैठाले गए थे।

मदीरा शराब की बोतल खोलकर आसफ के सामने रक्खी गई। पहले 'यखनी' आई, फिर मछलिया, तदुपरान्त मुख्य भोजन के पदार्थ आए। बादशाह सलामत आसफ के साथ शराब पीते रहे। बादशाह का कोई बर्ताव बुरा न देखकर बुड्ढा तनिक सावधान हुआ और प्याले पर प्याला पीने लगा और अपनी बान के अनुसार बेर २ अपनी बडी २ स्वेत मोछ को टेता थाऔर उसपर हाथ फेरता जाता था।

बादशाह ने हममें से एक से कहा, "क्यो जी,तुम पीने में हमारे चचा का साथ क्यो नहीं देते"। इसी तरह बारी २ से हर एक से कहा। बिचारे आसफ को प्रत्येक के साथ एक एक प्याला पीना पड़ा। ऐसे ही करके जब वह चार वा पाच बेर प्रत्येक के साथ पी चुका,तब उसने उकता करशराब का आधा गिलास पीकर और आधा छोड कर मेज पर रख दिया। बादशाह की कहीं द्रष्टि उसपर पडगई,तब वह जरा रुखाई से बोले, "क्या मेरे यहा की शराब अच्छी नही है?" बूढे ने कहा कि

जी बहुत अच्छी है और वह उसे भी चढा गया।

खाना उठाया गया और अब मेवे धरेगए। मेवों के आते हीनित्य के तमाशे प्रारम्भ हो गए। उस रात भानमती के तमाशे थे और कुछ नाच गाना था। परन्तु बादशाह का ध्यान उस ओर कम था, किन्तु वह आस लगाये आसफ ही की ओर देख रहे थे।

मदीरा शराब की बोतल जो उसके सामने रक्खी हुई थी, अब खाली हो चली थी।

इसे देख कर बादशाह ने नाथित से कहा, "तुम्हें सूझता नहीं कि आसफ नवाब के पास अब शराब नहीं रहगई,जाओ एक और बोतल लाव।"

जब नाबित शराब लाने को उठा, तब बादशाह की और उसकी आंखें मिलीं और आंखो ही आंखो में कुछ बातें होगईं। आसफ बिचारा बहुत कुछ कहता रहा कि अब नहीं चाहिये और मोछो को बल देता जाता था, पर सब निष्फल हुआ। उस समय वह कुछ सुख मे नहीं बैठा था, हां, शराब के तरङ्ग में प्रसन्न बदन मालूम देता था।

नौकर चाकर तो वहां उस समय बहुतसे थे, इसलिए ऐसे अवसर पर स्वयं नाबित राम का शराब की बोतल लाने जाना मेरे जी में खटकने लगा कि अवश्य कोइ भेद है। पीछे जो मैंने पता लगाया तो मालूम हुआ कि वह बोतल विशेष करके आसफ के ही लिये तय्यार की गई थी जिसमें आधी शराब थी और आधी ब्रांडी मिली हुई थी। नाबित के जिस नौकर ने इन दोनो को मिश्रित किया उसीने मुझसे यह बात कही थी।

जब यह शराब आगई तब बादशाह ने कई 'टोस्ट' पीये, "पहिला प्याला अपने भ्रातृवत् इङ्गलिस्तान के बादशाह का," फिर अपने मित्र हिन्दुस्तान के 'गवरनरजनरैल' का। इस वक्त बादशाह बड़े प्रसन्न हो रहे थे। आसफ को जबरदस्ती पीनीपड़ती थी,यहा तक कि वह बिचारा नशे से धीरे२ बेसुध होगया। अब वह कुरसी पर सीधा बैठ न सकता था। उसकी गरदन कभी एक ओर ढुलक जाती कभी दूसरी ओर लुढक जाती और वह बिचारा बड़ी कठिनता से आखें खोल सकता था। साराश यह कि वह बहुत जल्द अधाधुध नशे मे चूर होगया।

यह देख कर बादशाह बड़े ही खुश हुए और हँसते हुए उन्होने अपने हितो हज्जाम दास की ओर फिर कर देखा और अभागे बूढे की टेढी गरदन के विषय में कुछ फबती कहने लगे।

इसपर नापित ने कहा कि 'इनकी मोछैं सवार देनी चाहिये' और इतना कह कर उठने को हुआ।

बादशाह। "हा, हा, हा, जाव जरा ठीक करदो। जरा कसके बल देना और खूब सुधार देना"।

नापित उठ के गया और बूढे बिचारे की मूछें पकड़ कर खीचने लगा, वह इतने जोर से झटका देता था कि बिचारे की गर्दन कभी दाए घूम जाती थी, कभी बाए। यह बरताव तो कोई भी हो सभी के लिये अशिष्ट और क्रूर था न कि बिचारे जरजर बुड्ढे के लिये। हमलोग ने इसका विरोध किया। हममे से दो साहब तो 'ऐसा नहीं चाहिये' 'ऐसा नहीं चाहिये' कहते२ खड़ेही होगए। इसपर बादशाह सलामत हमपर बड़े लाल पीले हुए और बिगड़ कर कहने लगे, 'आप लोग जरा भी बोले तो

आपलोगों के लिये अच्छा न होगा। क्या यह सूअर बुड्ढा हमारा चचा नहीं है? हम और उसे जो चाहेंगे उसके साथ बर्ताव करेंगे, तुम लोग बीच में बोलने वाले कौन होते हो'। पर हमारा अधिक बोलना निष्फल, था—निष्फल से भी गया गुजरा, यह डर था कि कहीं इस अभागे, बेबस बुड्ढे की और भी दुर्गति न हो। अभी तक उस बिचारे का सिर झोंके खा रहा था। मोछों को पकड़ कर खींचने से जो पीड़ा उसे हुई उससे वह बिचारा आंख फाड़ कर बोले हुए था, परन्तु फिर वह झोंक खाने लगा, नशे ने उसे दबा रक्खा था और वह नशे में अपटा गुड़गुड़ हो रहा था। थोड़े देर तो बादशाह नाक भौं सिकोड़े और भानमति का तमाशा देखते रहे। हमारे बीच में बोल उठने और पुकार मचाने को वह भूले न थे।

बुड्ढे की गरदन जो इधर उधर झूमती थी, उससे बादशाह को चाड़ पड़ जाती थी। इसपर बादशाह सलामत खिजला कर बोले, 'इस बदज़्मी की गरदन स्थिर कर देनी चाहिये'।

इतना सुनतेही नापित उठ खड़ा हुआ और एक मज़बूत पतली डोर कहीं से ले आया और आसफ के सिर पर पहुंच गया। फिर डोर के दो बराबर टुकड़े करके एक को उसके मोछ के एक सिरे में बांधा और दूसरे को दूसरे सिरे में। पहिले तो हमलोग नहीं समझे कि उसका क्या विचार है। बादशाह बड़े हर्ष से देख रहे थे और नापित के इस सूझ पर प्रसन्न हो रहे थे। जिसने कभी उस्तुरे, कैंची और कंघे का काम न किया हो उसमें ऐसी चमकी बातों में गाड़ नहीं लगाइ जा सकती जैसी कि हज्जाम ने लगाई थी। अभी यह नहीं

खुला था कि बधी हुई सुतलियो से और क्या काम लिया जायगा ? परन्तु इसके लिये हमें देर तक आशङ्का में न रहना पड़ा। जब वह सुतलियो के टुकड़े उसके मोढ़ो से बाधे जा रहे थे, तब बुड्ढा दो तीन बेर आखे खोल के, कुछ बड़बड़ाया। मदिरा और ब्राडी ने उसे बिल्कुल अचेत कर दिया था।

अब हमको तनिक भी सन्देह न रह गया था कि नापित क्या करना चाहता था। उसने डोरी के दोनो सिरे कुरसी के दोनो हत्थो से कसके बाध दिये, उसे तनिक भी चिन्ता न हुई कि बादशाह के चचा को इससे कितना कष्ट होगा। भानमति का खेल और रण्डी का नाच बराबर होता रहा। वे लोग अपने तमाशे करने मे ऐसे लगे थे, मानो वे उधर देखते ही नहीं कि टेबुल पर क्या हो रहा है।

इतने में बादशाह ने अपने लाडले के इस करतूत पर ताली पीट कर खूब जोर से कहकहा मारा। आसफ के मोढ़ो के दोनो सिरे कुरसी के दोनों हत्थो से (जिसपर वह बैठा हुआ था) कसकर बधे हुए थे। अब उसकी गरदन नशे से झोक खा कर छाती पर लटक आई। थोड़ी देर पीछे बादशाह ने नापित के कान मे कुछ कहा। फिर वह उठ कर बाहर चला गया। उस समय मुझे निश्चय रूप से विश्वास होगया कि अबकी कोई नई दुर्दशा इस बिचारे बुड्ढे की होने वाली है। तब मैंने दुखित होकर अपने उन मित्र की ओर देखा जिनके द्वारा मैं नसीरुद्दीन के दरबार मे भरती हुआ था। नापित को छोड़ इनको भी बादशाह सलामत बहुत मानते थे। मेरे मित्र, मेरी क्रोध भरी आखें देख कर, मेरे मन की बात भाप गए। कुछ देर तो यह अधीर

से चुपचाप बैठे रहे और फिर खड़े होकर बादशाह से नम्रता के साथ निवेदन करने लगे —"यदि आज्ञा हो तो मैं हुजूर के चचा को खोल दूं। यह तो बड़े अपमान और बदनामी की बात है"।

इतना सुनते ही बादशाह मारे क्रोध के लालभभूका हो गए और जमीन पर पाँव पटक पटक कर डाटने लगे, "निकल जाव कमरे में से, अभी चले जाव। क्या मुझे अपने घर में, अपने महल में भी अधिकार नहीं है। हट जाओ सामने से और जिन साहबों को मेरे और मेरे चचा के बीच में हस्तक्षेप करना हो वह भी तुम्हारे साथ चलदें'।

यह सुन के मैं भी उठा और सलाम करके अपने मित्र के साथ वहां से चल दिया। हट करना और जबरदस्ती बुड्ढे को खोल देना मूर्खता थी। हम दोनो साथही उस कमरे से उठ कर बाहर चले गए। हमारे चले जाने पर वहां क्या हुआ यह हमने पीछे सुन लिया। ज्योंही हमलोग उठ गए, नायिन कुछ आतशबाजी लेकर कमरे में गया। वही आतशबाजी बिचारे बुड्ढे के कुरसी के नीचे छुटाई गई। अभागे बुड्ढे के पांव झुलस गए और वह कुरसी के हत्थों को उठाये हुए भागा। भागने में झटके से उसकी मोढ़ो की दो नसें उखड़ गईं और साथ ही वहाँ का मांस भी छुट गया, बिचारा लहुलुहान होगया। अब तो सारा नशा भी हरन होगया। उसी समय इस बिचारे ने बादशाह को धन्यवाद दिया और कहने लगा, "लहू धमधम बह रहा है, इसलिये अब मैं अधिक यहां नहीं बैठ सकता"। यह सब धन्यवाद शिष्टाचार मात्र के लिये कपट का था, क्योंकि

वह जानता था कि यह सब उसके साथ अपमानित् बर्ताव किया गया है। वह अपने अनादर को खूब जानता था, परन्तु दरबार के नियमों को वह खूब समझता था, इसलिये उसने अपनी रुष्टता और कोप को प्रगट न होने दिया।

बादशाह सलामत कहकहे मार कर हँस रहे थे, परन्तु उनके अगरेज मुसाहिब चुप बैठे रहे। नापित के सिवाय और कोई भी नहीं हँसता था। और उसके चेहरे पर भी इस हँसी का अन्तिम फल देख कर हवाई छूटने लगती थी, मालूम देता था कि उसको भी इसका कुछ दु ख हुआ था*। उस रात को वहा अधिक चहलपहल न रही और बादशाह भी जल्दी ही उठ गए।

अब मेरे दोस्त की और मेरी कथा सुनिये। हमलोग वहा से चल कर सीधे काशटेनशिया गए, जिसे जनरैल मारटीन ने अपने रहने के निमित्त बनवाया था। अब इससे धर्मशाला वा सराय का काम लिया जाता था, जिसमें अङ्गरेज यात्री आकर ठहरते थे। इसमे वे मुफ्त में रह सकते थे, परन्तु खाना वा खिद-मतगार वहा से नहीं मिलता था। हमलोग इस हेतु से गए थे कि दो एक कमरे खाली कराले, क्योंकि हमलोग तो बादशाही मकानात में रहते थे और डर था कि कदाचित मकान फौरन खाली करने का हुक्म आवे। परन्तु ऐसा कोई हुक्म नहीं आया।

बादशाह के हाथो जो विपद और दुख लोगो को पहुचता

* क्यों न हो शाबाश! अपने जाति का इतना पक्ष। भला आप तो वहा थे नहीं, यह देखा क्योंकर। मालूम होता है कि आप भी वहा थे, पर अपने बचाव के निमित्त अपने चले आने की गढ़त करली।

था, उससे उनके कुटुम्बी लोग भी बिगड़ बैठे और उनके शत्रु बन गए। इनके चचा, चचेरे भाई और उनके साथी बादशाही नौकरों को सताने लगे। लखनऊ भर में गोलमाल होने लग पड़ा, यहां तक कि बादशाह के फौजी सिपाहियों पर भी द्रोहियों ने मार पीट प्रारम्भ करदी। बादशाह ने अन्त को रेजीडन्ट से सहायता मांगी। कम्पनी की फौज यदि आजाती तो यह गोलमाल सब मिट जाता, परन्तु रेजीडन्ट साहब ने अपनी फौज भेजना अस्वीकार किया, बल्कि बादशाह को बहुत कुछ समझाया बुझाया और कहा कि अपने कुटुम्बियों से मेल मिलाप करलें और स्वयं इस बीच में पड़ने को कहा।

एक सप्ताह तक तो (शहर में) बड़ा ऊधम रहा, फिर सब ठीक होगया। दर्बार फिर यथानियम होने लगा, हमलोग भी अपने काम पर बने रहे और हमारी इतने दिन न आने की बात गई आई हो गई।

उस घटना के पन्द्रह दिन के लगभग में बादशाह सलामत ने राजनापित को कलकत्ते किसी काम के लिए भेजदिया। यह तो याद नहीं है कि किस काम के लिए वह भेजा गया था, यथा सम्भव नए झाड़, फानूस, कन्दील, शराब इत्यादि लेने गया था। उसका भाई जो अभी कुछही दिन हुए विलायत से आया था उसकी जगह लखनऊ में रह गया था, पर इस की कुछ चलती न थी। हमलोग ने विचार किया कि नापित के उखाड़ देने का यही एक अवसर है, यदि अबकी कुछ न चली तो फिर कभी न चलेगी। जिन्होंने मुझे दर्बार में भरती कराया था, उनको बादशाह सलामत बहुत ही मानते थे और

उनका मान्य करते थे। उन्हों ने इस काम के करने की दृढ प्रतिज्ञा करली कि जब तक नापित यहा नहीं आता, तब तक उसे निकलवाने का भरसक खूबही प्रयत्न करेंगे और बादशाह को बुरे व्यसनो में न लगने देंगे। निज की बैठक में उन्हों ने बादशाह को इन सब खराबियो और ऊच नीच को खूब ही समझाया और यह भी कहा कि अधिक शराब पीने से उनका स्वास्थ भी बिगड़ जायगा। बादशाह सलामत इन बातो को ऐसा कान दबाए सुना करते, जैसे स्कूल के लडके। कई बेर उन के आंखों से आसू तक भर भर आए और कहने लगते, "आप का कहना बहुत ठीक है, आप यथार्थ कहते हैं, मै बडा मद्यपा हो गया हू। बड़ाही शराबी हू यह हर शख्स जान गया है। परन्तु यह सब खा की कर्तूत है, वल्लाह वह जो चाहता है मुझ से करा लेता है।"

कई बेर इसी विषय की बातचीत हुई और बादशाह ने भी प्रतिज्ञा कर लिया था कि जब नापित लैाटकर आवेगा तो अपने पद से अधिक न बढने पावेगा, और यह भी प्रण किया था कि वह भोजन में साथ न बैठने पावेगा और अब वह इतना सिर न चढने पावेगा। इस बात को बादशाह ने स्वय हमलोगो से कहा और हमलोगो ने यह सुन कर उनको धन्यवाद दिया और उनको विश्वास दिलाया कि केवल उन्हीं के भलाई के लिए ही नहीं किन्तु उनके राज्य और उनके स्वास्थ रक्षा के लिए भी, जिसकी उनको बडी लालसा है, यह काम जितनी जल्दी हो उतना ही उत्तम है।

बादशाह०। 'साहबो, आप लोगो को मालूम नहीं कि

जिस बात के लिये मैं दृढ़ता से ठान लेता हूं उसे पूरी रीति से निबाहता हूं, अब मैं उन मोटे सूअरों को दिखा दूंगा कि अब मैं ऐसा नहीं रहा कि वह जिधर चाहें उधर नाक पकड़ कर ले जाएं। आपको मालूम हो जायगा कि मैं अपने बात का कैसा धनी हूं। अच्छा अब एक गिलास 'क्लेरट' शराब की दो"।

इस दृढ़ प्रण के पश्चात एक सप्ताह तक हमलोग बराबर बादशाह के साथ यथा नियम मेज पर भोजन करते रहे और किसी दिन भी कोई नशे में चूर नहीं उठा। अब दरबार में सभ्यता और मर्यादा का प्रवाह बहने लग पड़ा।

एक दिन भोर समय हमने सुना कि आज रात को हजरत नाबिल बहादुर लखनऊ में आन पहुंचे। हमलोगों को बड़ी उत्कंठा थी कि देखें अब क्या होना है। यह खबर ठीक थी कि नाबिलखां आगए थे और सबेरे ही बादशाह के दर्शनों को गए थे। जब हमलोग मित्र के दुवार में गए, तो देखते क्या हैं कि बादशाह सलामत का सिर उनके खैरख्वाह के हाथों पर है। मुझे स्पष्ट मालूम दिया कि अयोग्यता उसके चेहरे से प्रकट हो रहा है। परन्तु उसने बड़े उदार के साथ हमलोगों से साहब सलाम न किया और हमलोगों ने भी उसका उत्तर वैसेही तपाक से दिया। बादशाह सलामत बैठे कलकत्ते, की बस्तुओं के रूप, गवरनर जनरैल, जहाज, धूमपोत इत्यादिकों के विषय में पूछते पीछते रहे और नाबिल उनका उत्तर देता रहा।

जब हमलोग वहां से उठ कर घर लौटने के लिये हाथि यों की ओर आ रहे थे, तब मेरे मित्र ने कहा "कि मुझे डर है कि बादशाह अपनी प्रतिज्ञा पालन न करेंगे"।

मैं। "यदि वह अपना प्रण न रक्खेंगे तो लखनऊ मे हमारा अधिक रहना भी नही हो सकता।"

मित्र। "हा ठीक है, यदि यही अवस्था रही, तो हमारा यहा रहना असम्भव है। कोई भला आदमी इन बातो को सहन नही कर सकता"।

हम दोनो में यह विचार निश्चित होगया कि साझ को भोजन के समय यदि नापित मेज पर बैठा तो मेरे मित्र उस पारटी में बैठना स्वीकार न करेंगे, किन्तु मैं बैठ जाउगा जिसमें वहा क्या क्या होता है उसका पता लगाऊ।

यह बात निश्चय मालूम होती थी कि नापित रात को भोजन में साथ ही बैठेगा। हमलोगो को इसमें तनिक भर भी सदेह न था। साराश यह कि हमलोगो ने बादशाह को पीछे के कमरे से उसी प्रकार नापित के कधे का सहारा लिये हुए आते देखा जैसे वह सदा आया करते थे। यह देखकर मेरे मित्र तो झटपट गोमती पार अपने घर को लौट गए। हमलोग यथा-नियम बादशाह के पीछे २ खाने के कमरे में गए। जब तक हम सब अच्छी तरह बैठ न गए बादशाह ने मेरे मित्र के चले जाने को देखा ही नही। जब उनकी कुरसी खाली देखी, तब पूछने लगे, "एं! हमारे मित्र कहा हैं?"

मैं। 'जहा पनाह, वह तो घर चले गए'।

बादशाह। 'हैं? वह चले गए? वल्लाह, यह तो अच्छा नही किया। अच्छा, उन्हे बुलवाव'।

एक हरकारा उसी दम उस पार उनके घर भेजा गया कि जाकर उन्हे बुला लावे। हमलोग भोजन करने लगे और ना-

पित भी साथ ही बैठा था। कुछ देर पीछे चोबदार लौट आया

बादशाह। 'वह कहां हैं?'

हरकारा। 'जहां पनाह उन्होंने बहुत कुछ विनती और प्रार्थना के साथ निवेदन किया है कि उनकी गैरहाज़री माफ कीजाय'।

बादशाह। 'प्रश्नातान के सिर की कसम, उनको कभी क्षमा न मिलेगी। जा कुत्ते, उनसे कहदे कि आप को अवश्य चलना पड़ेगा।'

हरकारे ने झुक कर सलाम किया और चला गया। अब दाल चावल के तश्त उठा लिये गए और गरिष्ट भोजन सामने लाए गये। उत्तम २ पदार्थों की सुगंधि से सारा कमरा महक महक होगया। इतने में हरकारा फिर आया और लगा रह रह के झुक कर सलाम करने। बादशाह ने पूछा, 'क्या क्या है?'।

हरकारा। 'साहब कहते हैं कि उनको आशा है कि जा पनाह उनके बुलाने पर अधिक आग्रह न करेंगे। वह कहते हैं कि उनके न आने का कारण पृथ्वीनाथ जानते ही हैं'।

यह जो सन्देश मिला बस बादशाह सलामत ने झुंझला के कांटा जोर से मेज पर पटक दिया। बादशाह जब बहुत झुंझलाते थे, तब कांटा जोर से पटक देते थे।

बादशाह (डांट कर बोले) 'जा, फिर जा और कहो कि यदि वह न आवेंगे, तो मैं स्वयं बुलाने जाऊंगा। अपने बादशाह से वह कभी ऐसा बर्ताव न करते, फिर मेरे साथ ऐसा क्यों करते हैं? जा, अभी जाकर बुला ला'।

हरकारा फिर तीसरी बेर गया। इतने में मेवे इत्यादि मेज पर लाकर रक्खे गए और कठपुतलीवाले बादशाह सलामत के प्रसन्न करने की चेष्टा कर रहे थे। इतने में हरकारा फिर आगया, परन्तु अबकी बेर साहब स्वयं साथ साथ आये, हरकारा ड्योढी परही आकर खड़ा होगया और कभी बादशाह की ओर देखता और कभी बाहर मानो वह सकेत करता है कि वह साहब को लेही आया, देखिये साहब वह आ रहे हैं।

बादशाह उनको आते देखकर बोल उठे,'आओ जी आओ, मेरे मित्र यहा बैठ जाओ (एक खाली कुरसी की ओर हाथ करके) एक गिलास शराब तो मेरे साथ पीओ। या हैदर, तुमको बुलाने में कितना सिर खप्पन करना पड़ा'।

साहब। 'हजूर मुझे क्षमा करें, अब मैं उसके (नापित को दिखा के) साथ कदापि न बैठूगा, हजूर मै तो नहीं बैठूंगा'।

बादशाह। 'छी छी, यह सब वृथा बात है। बैठो, बैठो। लाव जी हमारे लिये एक बोतल शम्पेन की लाव'।

इन लल्लोपत्तो से कुछ काम न चला। वह 'अङ्गरेज बच्चा' बफरा हुआ था, वह भला फुलासड़े में कब आने लगा था, वह बराबर दृढता के साथ 'नहीं नहीं' कहता और बादशाह को उनके प्रतिज्ञा का स्मरण दिलाता ही रहा।

बादशाह। (लितिया कर) 'बाप रे बाप। तुम बड़ा दुख देते हो जी। बड़े हट्टी हो'। इतना कहके बादशाह सलामत कुरसी पर से उठे, नापित और कप्तान को साथ आने को कहा और हठी अनुचर को साथ लेकर दूसरे कमरे में चले गए।

यहा बहुत देर तक बातें होती रहीं। दोनो ओर से,खूब

वादाविवाद होते रहे । नापित ने तो अपने को बिलकुल बादशाह की दया पर छोड़ दिया और बिगड़े-दिल साहब बादशाह को उनकी प्रतिज्ञा का ही स्मरण दिलाते रहे । कप्तान दोनो में मेल कराने का उद्योग करते रहे । बादशाह सलामत उस समय बहुत ही व्यस्त-चित थे । या तो कुछ बोलते ही न थे यदि बोले भी तो बहुत कम । अन्त में बादशाह ने, यह कहा कि अच्छा अब वैमनस्य जाने दो और आओ हम सब मिल कर शराब पीए । परन्तु मेरे मित्र ने इस बात को स्वीकार न किया । जब बादशाह ने देखा कि उनको सभी ने समझाया बुझाया, परन्तु यह किसी रीति से नहीं मानते, तो बादशाह ने पहिले डटी मार लिया, शपथें दिलाई, डराया धमकाया, फिर हार कर नापित का हाथ पाके खाने के कमरे में चले आये । कप्तान भी पीछे २ चला आया । हूदी साहब घर लौट गए ।

बादशाह (कमरे में चारों ओर देख कर) 'वह चले गए न।'

नापित । 'उनकी जगह पर दूसरा कोई आजायगा । इस में कठिनता ही क्या है।'

बादशाह । 'अच्छा ! जाने दो पाजर को, उनकी जगह कोई और आजायगा' ।

उस समय तो यह मालूम हुआ कि अब यह बात गई आई होगई । परन्तु ऐसा नहीं हुआ, अब मेरा नम्बर आया ।

अब बादशाह ने इधर उधर दृष्टि फिरा कर अपने सब मेहमानों को देखा, तब उनकी दृष्टि मुझपर पहुंच कर रुक

गई। मैं बैठा उन्हीं को देख रहा था। मेरी और उनकी आखें चार होगई। बादशाह ने चट अपनी दृष्टि मुझपर से हटाली और शराब की बोतल की ओर हाथ बढ़ा कर कुछ शराब के विषय में बुड़बुड़ाने लगे। मैंने अपना गिलास भरा, बादशाह ने अपना। अभी उनका हाथ बोतल ही पर था कि उन्होंने फिर गरदन फेर कर मेरी ओर देखा, परन्तु अब उनके चेहरे पर प्रसन्नता का चिन्ह न था किन्तु आखो से ज्वाला निकल रही थी। इतने में मैंने अपना गिलास उठाया और दर्बार के नियम के अनुसार कहा, 'पृथ्वीनाथ की ईश्वर रक्षा करे'। मेरे मुह से यह पूरी तरह निकला भी न था कि बादशाह ने अपना गिलास इतने ज़ोर से हटा दिया कि उसमें से शराब बाहर छलक पड़ी और क्रोध में भर कर बोले। "नहीं साहब मैं तुम्हारे साथ शराब न पीऊगा, तुम तो उनके मित्र हो न'।

मैं। 'हुज़ूर भी कल तक उनके मित्र थे और उनसे हुज़ूर ने कहा था कि हुज़ूर उनको कितना कुछ मानते हैं'।

बादशाह। (मारे क्रोध के तमतमा कर) 'आपलोग इन की बात सुनते हैं'? आपलोग ने इनकी बातें सुनीं? मेरे साथ इस प्रकार बातचीत करने की इनको ढारस कैसे हुई—हैं?'

मैं। 'श्रीमान तो अङ्गरेजों का सम्मान सदा रखते ही हैं। कभी २ वे भी अपने चित की बात खोल के पृथ्वीनाथ से निवेदन कर देते हैं। परन्तु मेरे रहने से श्रीमान को दुख हुआ। नि सन्देह मैं देर तक सामने बैठा रहा'।

यह कहता हुआ मै उठ खड़ा हुआ और वहा से बाहर निकल आया। जब मैं बाहर जा रहा था, तब बादशाह के

शपथ खाने का और टेबुल पर कांटा ज़ोर से पटकने का शब्द मेरे कान में पड़ा।

उसी रात को मेरे मित्र के पास आज्ञा-पत्र भेजा गया कि वह झटपट घर खाली करदें और हरकारों को आज्ञा दे दी गई थी कि यदि खाली करने में देर करें, तो उनका असबाब निकाल कर बाहर फेंक दें। परन्तु नवाब-वज़ीर इस आज्ञा को उतनी कड़ाई के साथ पालन कराना नहीं चाहता था। अङ्गरेज़ो से उसका जी बहुत डरता था। नवाब के नौकरों ने कान्सटेनशिया तक हमारा असबाब लेजाने में बहुत कुछ सहायता दी, जहां कि हट्टी साहब ने अपने और अपने कुटुम्ब के लिये पहिले ही से जगह खाली करवा रक्खी थी।

मैं भी झटपट कन्सटेनशिया में चला गया। मेरे कोई खाता तो था नहीं, इसलिये थोड़ीसी जो मेरी चीज़ें थीं, उन्हें बांधबून्ध कर ले जाने में मुझे कोई अधिक श्रम नहीं उठाना पड़ा। और होने से पहले ही हमलोग कान्सटेन्शिया में चले गए थे और वहां पहुंच कर रेजिडेण्ट की रक्षा में हो गए, जिन्होंने नवाब को पत्र द्वारा सूचना दे दी थी कि यदि हमारा बाल भी बांका होगा तो उसके उत्तरदाता नवाब ही होंगे।

कुछ दिनों हमलोग यहीं कान्सटेन्शिया में सुखपूर्वक रहे। जब हमने अपना सब बन्दोबस्त कर लिया, तब गोमती के रस्ते नाव पर होकर झटपट हमलोग कलकत्ते आ पहुंचे।

बादशाही कृपा का परिणाम मुझे यूं भुगतना पड़ा। अब राजनीति और बादशाह सम्बन्धी का वृत्तान्त पूरा करने के लिए थोड़ी ही सी बात रह गई है, वह भी सुन लीजिए।

ऐसा मालूम होता है कि जब राजनापित कलकत्ते गया था, जिसका वृत्तांत ऊपर लिखा जा चुका है,तभी उसकी इच्छा थी कि वह हिन्दुस्तान से चलदे। उसने बहुतसे रुपयो का 'कम्पनी कागज' खरीद लिया था और बहुतसा धन अलग भी जमा कर दिया था। वह खूब जानता था कि उसके ऐसे दिन एक समान न रहेंगे और वह चाहता था कि बादशाह से बिगाड होने से पहिलेही वह हँसी खुशी लखनऊ से चलदे। इसलिये उसने पहिलेही से यह ढङ्ग रचा था कि अपने एक भाई को विलायत से बुलवा लिया था और निस्सन्देह इसके भाई ही ने उन सब बातो से इसे सूचित भी कर दिया था, जो उसके अनुपस्थिती में वहा हुई थीं। जो जो सुधार हमलोगो ने दर्बार मे किए थे, उनकी चर्चा रेजीडेंसी और दर्बार दोनो जगह खूब होगई थी। नापित को आशा थी कि उसके पीछे उसका भाई दोनो काम करलेगा, अर्थात बादशाह का बाल सँवारना और रमने की अफसरी, परन्तु यह विचार उसका ठीक नही निकला वा तो उसने बादशाह के चञ्चल स्वभाव कोही नहीं पहिचाना किंवा अपने भाई के उस शक्ति को न आक सका कि जिससे वह बाद-शाह के चित को प्रस न रखकर अपने हाथ में रखना जानता था।

हमारे चले आने पर नापित को जो उसका पुराना अधिकार फिर मिला और बादशाह की अनुग्रह ज्यो की त्यो बनीही रही,इससे उसने और भी हाथ पैर निकाले और अपना प्रभुत्व जमाया। दर्बार में अब कोई रोक टोक करने वाला न रहा। वह जो चाहता करता। दर्बार के छिछोरेपन की चर्चा समस्त भारतवर्ष में होने लगी। कलकत्ता ट्रिब्यून् नामक पत्र

लिखता है कि 'दर्बार से योग्यता, मर्यादा, मान इत्यादि नि-
काल बाहर होगई हैं'। एक बेर नहीं कई बेर ऐसा हुआ है कि
करनल लो साहब रेज़िडेंट ने बादशाह से मिलना किया उन
के नाक के बाल मुसाहबों से बोलना तक बन्द कर दिया।

परन्तु इस अन्धेर खाते, बखेड़े और झंझट में पड़कर
बादशाह सलामत को हमारे चले जाने का बड़ाही पश्चाताप
हुआ। उनको अब जाके मालूम हुआ कि नासिर ने उन्हें कठ
पुतली बना रक्खा है और उसके इस करनी पर बड़ाही अन्दर
कुढ़ने लगे। उन्हों ने कई बेर उसको डाट डपेट भी की और
स्पष्ट रूप से कहा कि तेरेही कारण से मेरे दो उत्तम अनुचर
यहां से चले गए, जो मुझे शुभमन्त्रणा दिया करते थे। नासिर
जान गया कि अब यहां का रङ्ग बदल गया है उसपर कोई विपद्
आया ही चाहती है। वह होशियार होगया। उसके भाग्य पर
बादशाह की उतनी कृपादृष्टि नहीं थी और मनीरुद्दीन को भी
प्रगट होगया था कि वह (नासिर) अपनेही जैसे नीच लोगों
से मुझे घेरना चाहता है। शाही बावर्ची घर का मुखिया
(जिसको 'दारोगा बावर्चीखाना' कहा करते हैं) इनके
सिफ़ारिश से भरती किया गया था और यह व्यक्ति नासिर
का 'खासदां' था। जो दूसरे अङ्गरेज़ मुसाहिब रह गए थे,
उनकी कोई दाल न गलती थी। नासिर, उसका भाई और
मुखिया ही सब कुछ थे, ये लोग जो चाहते सो करते धरते।

सारांश यह कि सब बातों की परिसीमा होचुकी। दर्बार
के नित्य के कुचालों और षड्यन्त्र से रेज़िडेंट भी खिसिया-
गए थे। अब उनको आवश्यक हुआ कि बलपूर्वक दर्बार से

कुव्यवहारों को रोकें। बादशाह भी दुखी होगए थे, क्योंकि अब बादशाह के महल और दर्बार में ऐसे हिन्दुस्तानी खवासों की कमी न थी, जो बादशाह के कान नापित की बुराईयों से न भरते रहते हों, अर्थात चारों ओर से उसका उलहना सुनते सुनते बादशाह के कान पक गए। एक दिन बादशाह ने क्रोध में आकर नापित को डपेटा और कहने लगे, "हमारे शुभचिन्तकों को तुम्हीं ने निकलवाया है और अब तुम समझते हो कि तुम और तुम्हारे आवर्दे जो चाहेंगे मुझसे करवा लेंगे, पर तुम्हें शीघ्र ही विदित होजायगा कि यह तुम्हारी भूल है। रेजीडंट साहब का कहना ठीक है कि तुम नीच पैशाच-प्रकृती के आदमी हो और तुम्हारे ही कारण से हमारे दर्बार में इतनी बुराइयां उत्पन्न हुई हैं।

यह सुन कर नापित सहम गया और चौकन्ना हो गया। उसने देखा कि उसके आवर्दों के निकाल बाहर करने की बहुत कुछ सामग्री इकट्ठी हो रही है। एक रात को वह भाग कर कानपूर चला गया। वहां कम्पनी का राज्य था। बादशाह के कोप से बच कर वह निकल भागा,* वहां बादशाह का बस न चल सकता था। नसीरुद्दीन हैदर को जब यह मालूम हुआ कि नापित भाग गया है, तब उसी दम कुछ अफसरों को उसके घर पर भेजा, और उसके भाइ और बेटे को कैद करा दिया और उसका सब माल जब्त करा लिया। यदि रेजिडंट साहब बीच

* २२ सितम्बर १८५१ के लिटरेरी गजेट (Literary Gazette) में नापित के भागने का वृत्तान्त अन्य प्रकार से छपा है परन्तु मैंने जो कारण उसके भागने का ऊपर लिखा है वह ऐसे व्यक्ति से सुना है जो उस समय लखनऊ में वर्तमान थे जब कि नापित भागा था और मुझे इसकी सत्यता में तनिक भी सन्देह नहीं है।

में न पढ़ते तो उसके भाई और बेटे की गरदनें काट दीजातीं। ये लोग दस दिन तक कैद में रहे, फिर छोड़ दिए गए। जब तक कि बादशाह और नवाब वज़ीर ने मापित का सब माल असबाब अच्छी तरह जब्त न कर लिया, तब तक इन कैदियों को न छोड़ा। मापित के जो माल जब्त हुए, कहा जाता है कि उनका मूल्य लगभग दस हजार पाऊंड अर्थात एक लाख रुपए का था (विदित हो कि पहिले १ पाउण्ड १०) के बराबर गिना जाता था अब एक पाउण्ड १५) का होता है)।

ज्योंही मापित के भाई और बेटे कैद से छूट कर कानपुर पहुंचे, वह झटपट कलकत्ते होकर इङ्गलिस्तान चला गया। वहां से कितना धन लाया था इसका ठीक २ तखमीना नहीं होसकता, परन्तु मैंने सुना है कि वह चौबीस लाख रुपए से किसी प्रकार कम न था।

इङ्गलिस्तान जाकर उसने अपना रुपया वाणिज्य में लगाया और कुछ दिन तो काम खूब चला। उसने सौदागरी का काम किया, शराब बनाने के कारखाने का भी पत्तीदार था और चोक व्यापार का भी काम खोला था। जब इसने रैल के हिस्से लेने की सनक चढ़ी, इसमें उसको बड़ा भारी टोटा पड़ा, अन्त हानि सहते २ वह मुफलिस होगया और सन १८५४ में उसे दिवालियों की कचहरी (इन्सालवेन्सी) में जाना पड़ा। लंडन की डाइरेक्टरी में अबतक उसका नाम "........साहब" सौदागर छपा आता है। अब भी वह शहर से बाहर एक कस्बे में छुपके और क्लेशमयुक्त मकान में रहता है।

अब मर्गीफ़ाईट का वृत्तान्त सुनिए। इधर मापित का जब

जाना, उधर उनकी मृत्यु का आना होगया। उनके कुटुम्बियो ने धीरे२ अपने कस के आदमी दर्बार और महल मे भर्ती कराने प्रारम्भ कर दिए और चार मास के उपरान्त सन १८३७ मे बादशाह सलामत को विष दे दिया गया। उनके एक चचा साहब को, जो बहुत ही जर्जर और बुड्ढे थे और जिन से बादशाह अपने जीवित काल मे बुरा मानते रहे, उनके मरने पर गद्दी मिली और अब इन्ही का लडका अवध की गद्दी का मालिक है॥

॥ शुभम् ॥

में न पड़ते तो उसके भाई और बेटे की गरदनें काट दी जातीं। ये लोग दस दिन तक क़ैद में रहे, फिर छोड़ दिए गए। जब तक कि बादशाह और नवाब वज़ीर ने नापित का सब माल असबाब अच्छी तरह ज़ब्त न कर लिया, तब तक इन क़ैदियों को न छोड़ा। नापित के जो माल ज़ब्त हुए, कहा जाता है कि उनका मूल्य लगभग दस हज़ार पाउण्ड अर्थात् एक लाख रुपए का था (विदित हो कि पहिले १ पाउण्ड १०) के बराबर गिना जाता था अब एक पाउण्ड १५) का होता है)।

ज्योंही नापित के भाई और बेटे क़ैद से छूट कर कानपुर पहुंचे, वह झटपट कलकत्ते होकर इङ्गलिस्तान चला गया। वहां से कितना धन लाया था इसका ठीक २ तख़मीना नहीं होसकता, परन्तु मैंने सुना है कि वह चौबीस लाख रुपए से किसी प्रकार कम न था।

इङ्गलिस्तान जाकर उसने अपना रुपया वाणिज्य में लगाया और कुछ दिन तो काम खूब चला। उसने सौदागरी का काम किया, शराब बनाने के कारख़ाने का भी पत्तीदार था और जोखम आढ़त का भी काम खोलता था। जब उसे रेल के हिस्से लेने की सनक चढ़ी, इसमें उसको बड़ा भारी टोटा पड़ा, अन्त हानि सहते २ वह मुफ़लिस होगया और सन १८४५ में उसे दिवालियों की कचहरी (इन्साल्वेन्सी) में जाना पड़ा। लन्दन की डाइरेक्टरी में अबतक इसका नाम "......साहब" सौदागर लिखा जाता है। अब भी वह शहर के बाहर एक कस्बे में अच्छे और फ़ैशनेबुल मकान में रहता है।

अब मनोरञ्जन का वृत्तान्त सुनिए। इधर नापित का चले

जाना, उधर उनकी मृत्यू का आना होगया। उनके कुटुम्बियो ने धीरे२ अपने कस के आदमी दर्बार और महल में भर्ती कराने प्रारम्भ कर दिए और चार मास के उपरान्त सन १८३७ में बादशाह सलामत को विष दे दिया गया। उनके एक चचा साहब को, जो बहुत ही जर्जर और बुड्ढे थे और जिन से बादशाह अपने जीवित काल में बुरा मानते रहे, उनके मरने पर गद्दी मिली और अब इन्हो का लडका अवध की गद्दी का मालिक है॥

॥ शुभम् ॥
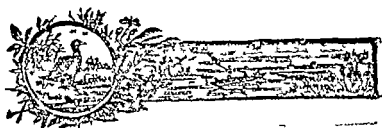
उपसंहार।

प्रिय पाठकगण! जो वृत्तान्त इस पुस्तक में लिखा गया है उसे पढ़ कर प्रायः बहुत लोगों ने यही समझ लिया होगा कि यह भी कोई उपन्यास या मन गढ़न्त उपज होगी, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। इसमें सन्देह नहीं कि इसके लेखक की लेखनी में लालित्य कूट कूट कर भरा है और उसने कुछ नमक मिर्च लगा कर इसे चुटपुटा भी बना दिया है, तो भी उसने वही घटनायें लिखी हैं जो उसने अपने आंखों देखी हैं।

नसीरुद्दीन हैदर के दरबार में कई अङ्गरेज उनके निज की मुसाहिबों में नौकर थे। इनमें से एक साहब ने, जो जो लखनऊ में ३½ वर्ष रह कर, देखा था उसे लिख कर सन् १८५५ ईस्वी में छपवा दिया। इस पुस्तक का नाम (Private life of an Eastern King) है। इसी का यह अनुवाद है। ग्रन्थकर्ता ने अपना नाम प्रकाशित नहीं किया। धन्यवाद किसको दूं।

इच्छा तो थी कि यदि अवध का इतिहास नहीं तो नसीरुद्दीन हैदर ही का पूरा वृत्तान्त लिखूं, परन्तु ग्रंथ बहुत बढ़ जाता था, इसलिये बहुत ही संक्षिप्त बातें उस बादशाह की लिख कर ग्रन्थ समाप्त करता हूं।

'लखनऊ के बादशाह' गाजीउद्दीन हैदर के नसीरुद्दीन हैदर बेटे थे। २० अक्टोबर सन् १८२७ को जब गाजीउद्दीन हैदर परलोक सिधारे, तब यह अवध की राजगद्दी पर बैठे। इस समय इनकी उमर २५ वर्ष के लगभग की थी। उन दिनों अवध राज्य में ऐय्याशी, फूट, बैर इत्यादि का बीज अच्छी तरह जम

पकड़ चुका था। राज्य दर्बारियो मे साजिशो और खुदगर्जियो का बाजार खूब गर्म था।

नसीरुद्दीन हैदर एक भोलेभाले, बहुत बड़े दाता और शैाकीन बादशाह थे। इनमें छलपेच न था और इनके दर्बारियो मे खुशामद और खुदगर्जी ने घर कर लिया था। आपुस की साजिशो और स्वार्थता के कारण कई नायब वजीर बने और बिगड़े, इनमे से रैाशनुद्दौला की खूब चली। राज्य के नष्ट होने और उसमें बहुत कुछ खराबी के हेतु यही वजीर साहब हुए। उदाहरण स्वरूप एक ही घटना लिख देना काफी है।

बादशाह से और उनकी मा 'बादशाह बेगम' से कुछ अन बन होगई थी (इसका कारण नीचे लिखा जायगा)। वजीर साहब ने बादशाह के खूब कान भरे, फिर भी एक दिन बादशाह साहब अपनी तरङ्ग मे आकर 'बादशाह बेगम' के पास चले गये और उनसे माफी माग ली। जब रैाशनुद्दौला ने यह हाल सुना बस जल भुन कर राख हो गया और यह चाल खेला कि एक ख्वाजासरा को लालच देकर साट लिया। बादशाह जब बादशाह बेगम के महल से लैाट कर आये, तब हजरत वजीर साहब ने उनसे यह जड़ दिया कि बादशाह बेगम तो उनके मरवा डालने की फिक्र में हैं, यदि अब उनके पास जाइयेगा तो अपनी जान से हाथ धोइयेगा। उक्त ख्वाजासरा से झूठी गवाही भी दिलादी। अब तो हमारे भोलेभाले बादशाह सहम गये और अपनी माता को दुश्मन समझने लगे। इस प्रकार मा बेटो मे शत्रुता करा दी। एक बेर बादशाह बीमार हुये, शराब इस बीमारी में जहर थी, मगर रैाशनुद्दौला के डर और मनाही से हकीम उसे रोक नहीं सकते थे। बादशाह तो

कंनीराम चांडियाकी पुस्तकें

न २३८

नाम. लखनेऊकी नवाबी

पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुरप्रसाद खत्री

मु० सिद्धेश्वरी — बनारस सिटी।

प्रथम भाग ।

॥ अवध की बेगम ॥

गंगाप्रसाद गुप्त ।

मूल्य ।-)

भूमिका ।

"Do what is right, quite irrespective of what people will say or think"   Epictetus

"अवधकी बेगम" का प्रथम भाग पाठकोंकी सेवामें उपस्थित किया जाता है। यह पुस्तक कई भागोंमें समाप्त होगी। इसके आगेके खण्ड बहुत शीघ्र शीघ्र छपते जायँगे। अगरेजी राज्यके प्रारम्भमें अवध और गुप्तप्रदेशकी अवस्था कैसी शोचनीय थी यही बात उपन्यासाकारमें इस पुस्तकमें दिखाई गई है। अवध को बेगमोंके ऊपर जो भयानक अत्याचार हुआ था उसका हाल पढ़कर पाठकोंका हृदय विगलित होगा। हाफिजकी लड़की की आत्महत्या, अमरसिंहकी कर्त्तव्यप्रियता, महारानी गुलाब-कुँवरिकी स्वधर्म्मनिष्ठा उदारता और परोपकारिता, तथा राजा चेतसिंहकी कापुरुषताका वृत्तान्त पढ़नेसे पाठकोंके चित्तमें अनेक प्रकारके भावोंका उदय होगा। इस पुस्तकके उपन्यासके रूपमें लिखे जाने पर भी ऐतिहासिक बातें कहीं बिगड़ने नहीं पाई हैं। अठारह वर्ष पहले बाबू चण्डीचरण सेनने बंगला भाषा में इस ग्रन्थको लिखा था। हमने इसे ऐतिहासिक और शिक्षा प्रद समझकर हिन्दीमें अनुवादित तथा सम्पादित किया है। आशा है कि इतिहासप्रेमी इससे ऐतिहासिक आनन्द और शिक्षार्थी इससे विशेष शिक्षा लाभ करेंगे।

गङ्गाप्रसाद गुप्त।

काशी, अप्रेल, १९०५ ई०

लोग क्या कहते हैं ?

"* * हिन्दी लिखनेवालोंमें बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्तकी गणना भी आदरणीय है। आपकी लेखप्रणाली बहुत अच्छी होती है * *"—बिहारबन्धु, १ जून १९०४ ईस्वी।

"बाबू गङ्गाप्रसादकी पुस्तकरचना सर्वप्रिय होती जाती है। आप बड़े तेज़ लेखक हैं। एकके बाद दूसरी, दूसरीके बाद तीसरी पुस्तक निकलती जाती है। आज तक इन्होंने बहुतसी पुस्तकें लिख डाली हैं। इस समय आप बनारसके 'भारतजीवन' के सम्पादक हैं। यह काम भी ये बड़ी ही योग्यतासे कर रहे हैं। इस साप्ताहिक पत्रका ये † सम्पादन भी करते जाते हैं और पुस्तकें भी लिखते जाते हैं। पुस्तक प्रणयनमें ये सहस्रबाहु हो रहे हैं। इनका साहित्यप्रेम, अध्यवसाय और लेखन कौशल प्रशंसनीय है * *।"—सरस्वती, जनवरी, १९०५ ई०।

"नागरीके उपन्यास लेखकगण बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्तकी शैली का अनुसरण करें।"—आरा ना० प्र सभा (तृतीय वार्षिक विवरणमें)

---

† जिस समय यह समालोचना 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई थी उस समय हम भारतजीवन के सम्पादक अवश्य थे परन्तु अब उक्त पत्रका सम्पादन हम नहीं करते।— (गं० प्र० गु०)

"आपका हिन्दी पर असीम प्रेम देखकर मुझे बड़ा आनन्द होता है। आप जैसे उत्साही लेखकोंकी हिन्दी उद्धारके लिये बड़ी आवश्यकता है। हिन्दीमें अनेक अच्छे लेखक हैं पर उनके हृदयमें अब किसी न किसी तरहका स्वार्थ है तब आपका प्रेम नि स्वार्थ मालूम देता है * *"—(प॰) सखाराम महता, बम्बई, चैत्र शु॰ १, स॰ ६१

"बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त काशीके सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक और हिन्दीभाषाके सुलेखक एव हितैषी हैं। थोड़ेही कालमें उन्होंने हिन्दीभाषामें जैसा नाम पाया है वैसा आजपर्यन्त इतने समयमें कदाचित्‌ही किसी लेखकने पाया होगा। उनके उपन्यासोंकी हिन्दीरसिकोंमें बड़ी भारी चाह है * *"—भारतधर्म,' बम्बई, ५ सितम्बर १९०४ ई॰।

" * * A man of your ability and perseverence can thrive in any business * *"—(पं॰) चन्द्रधर गुलेरी (बी॰ ए॰), अजमेर, १५ मार्च, १९०५ ई॰।

"* * * इस तिलस्मी जमानेमें आपके उपन्यास अत्युत्तम हैं। इनके पढ़नेसे प्राचीन दशाका स्मरण होता और मानसिक सरोवरमें उत्साहकी तरंगें उठने लगती हैं।"—(प॰) बलदेव प्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, १२ जनवरी १९०४ ई॰।

Dear Babu Ganga Prasad, • • Your works are creditable to you and I am glad to see that you are intent in doing a service to the literature of your country"—(लाला) सीताराम (बी० ए०) डिपटी कलेक्टर, मुरादाबाद, ११ अगस्त १८०४ ई० ।

"काशीके उपन्यास लेखकोंमें हम बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्तका लिखना पसन्द करते हैं। वह उपन्यास लिखते समय अपने धर्म और समाजकी मर्यादा भूल नहीं जाते हैं • •।"—भारतमित्र, १२ अगस्त १८०४ ई० ।

बाबू गंगाप्रसादकी लिखी सब पुस्तकें भारतजीवन प्रेस काशीमें मिल सकती हैं। स्थानाभावसे राजपूत, हिन्दी बंगवासी, श्रीहिन्दी, प्रयागसमाचार, हितवार्त्ता, गुजराती भा० जी०, समालोचक आदिकी समालोचनायें प्रकाशित नहीं की गई।

AS

A Tribute of respect for His Highness' many admirable qualities and of devoted attachment to his august person, this work is dedicated to—H. H. Maharaj Shri Bijai Chand Bahadur of Bilaspur [Simla] by his humble admirer—

Ganga Prasad Gupta—Author

क्षमाप्रार्थना।

इस पुस्तकमें यदि छापेकी भूलें रह गई हों और मात्राओंके टूटनेसे पढ़नेमें असुविधा हो तो इसके लिये पाठकगण हमें क्षमा करें।

मैनेजर भारतजीवन प्रेस।

अवध की बेगम।

प्रथम परिच्छेद।

हरिद्वार।

भारतवर्ष पर नादिरशाहके चढाई करनेके बादसे धीरे धीरे मुगल बा.शाहोंकी ताकत घटने लगी। सारे हिन्दुस्थानमें घोर अराजकता छा गई और इसके साथही जगह जगह लडाईकी आग भी भड़क उठी। दिल्लीके बादशाहोंमें राज्यके सम्हालनेकी क्षमता न रही। रहती कैसे? केवल दुष्टता और अत्याचारसे क्या कोई कभी राज्यशासन कर सकता है? प्रजाही राजाको राज्यका भार सौंपती है। राजा साधारण प्रजासे राज्यके चलानेकी क्षमता पाकर उसके प्रतिनिधि या कायममुकामकी तौरपर राज्यका शासन करता है। एक प्रकार राजा प्रजाका नौकर है। इसलिये प्रजाको प्रसन्न रखे बिना कोई राजा राज्यकी रक्षा नहीं कर सकता।

जिस समयकी बात हम कहते हैं उस समय भारतकी प्रजाका विश्वास मुगल बादशाहोंके ऊपरसे बिलकुल उठ गया था। यहांकी प्रजा उस समय मुगलोंके एकदम विरुद्ध हो गई थी। तात्पर्य्य यह कि मुगल राज्यके बहुत शीघ्र विलय प्राप्त होनेमें जरा भी सन्देह नहीं था।

तीन सौ वर्ष पहले अकबर हिन्दुस्थानका बादशाह था। वह

चतुराई सावधानी और कोमलतासे राज्यशासन करता था, इससे प्रजा उससे प्रसन्न थी। परन्तु अब अकबरका जमाना नहीं था। इस समय मानवी ऐशपसन्द और नालायक लोग राज्यके अधिकारी थे। वे लोग ऐसे काम नहीं करते थे या ऐसे कामोंके करनेकी चेष्टा नहीं करते थे जिनसे साधारण लोगोंके हृदयमें इनके प्रति श्रद्धा भक्ति और स्नेह उत्पन्न हो सकता। इनकी निठुरता कड़ाई और अत्याचार परायणताने गदरका सामान बना रखा था। भारतवर्षके कई प्रदेशोंके सूबेदार और सैनिक पुरुष उस समय दिल्लीकी मातहती तोड़कर अपनी अपनी रियासतमें बड़े आनन्द और उत्साहके साथ स्वाधीनताका झण्डा उड़ा रहे थे।

बनारसके राजा बलवन्तसिंह, अवधके नवाब सफदर जङ्ग, रुहेलखण्डके अलीमोहम्मद, हैदराबादके निजाम, मैसूरके हैदर अली, बङ्गालके नवाब अलीवर्दीखां आदि सभी अपनेको स्वतन्त्र अथवा खुदमुख्तार राजा समझते थे। कोई दिल्लीके बादशाहका मातहत कहलाना पसन्द नहीं करता था। और वे सब स्वाधीनता चाहनेवाले सूबेदार तथा राजे महाराजे केवल अपने राज्यके बढ़ानेहीकी चेष्टा कर रहे थे। जो कुछ पहलेसे वर्तमान है उसकी रक्षा क्योंकर होगी इस बातका किसी कोई नहीं करता था।

इस संसारमें दुराशाही मनुष्यके विनाशका कारण है, जो अभिमानाही मनुष्यको समय समय पर विपत्तिकी ओर खींचती है। भारतवर्षके ऊपर लिखे हुए प्रदेशोंके अधिकारी दिल्लीके बादशाहका बुरा समय देखकर केवल अपनेही राज्यके बढ़ानेकी

चेष्टा करने लगी। प्राय सबने अपने पड़ोसी राज्यपर चढ़ाई करनेकी तैयारियाँ आरम्भ कीं। मरहठे भी कभी मुसलमानी सल्तनत पर आक्रमण करने और कभी आपसहीमें झगड़ने लगे। उधर अवधके नवाब साहबने अपने पडोसी राज्य रुहेलखण्ड पर चढ़ाई करनेका उद्योग किया, इधर रुहेले सरदार अलीमोहम्मदने आसपासके छोटे मोटे जमींदारों पर आक्रमण करके अपने राज्यका विस्तार बढाया। मैसूरके हैदरअली निजामके लम्बे चौडे राज्यको और प्यासी दृष्टिसे देखने लगे। निजाम साहबने बेरार राज्यको अपने अधिकारमें करलेनेकी चेष्टा की। अठारहवीं शताब्दिमें एक समय भारतवर्षकी दशा ऐसीही बिगड़ गई। मानो उस समय सारा भारतवर्ष भूत प्रेत और पिशाचोंसे भर गया। प्राय सभी स्थानोंमें लडाइकी आग भड़क उठी। परिणाम यह हुआ कि लालची राजाओं तथा नवाबोंको पीछे अपने राज्यसे भी हाथ धोना पड़ा। राज्यके बढानेकी चेष्टा कर अन्तमें सभी राज्यच्युत हुए।

देशमें जगह जगह ऐसी गड़बड़ पैदा हो जानेसे साधारण प्रजाको बहुत कष्ट होने लगा। वास्तवमें जब देशकी ऐसी दुरवस्था होती है तब प्रजाको बिलकुल सुख नहीं मिलता। परन्तु मनुष्यकी प्रकृति बड़ी विचित्र होती है। कष्ट यन्त्रणा और दु:खका नाम सुनकर आदमी घबरा उठता है। दु:ख और विपत्तिकी आशङ्का मनुष्यके हृदयमें चिन्ता उत्पन्न करती है। परन्तु जब दु:ख और विपत्ति ऊपर आ पड़ती है तब वह दु:ख उतना नहीं जान पड़ता और वह विपत्ति उतना कष्ट नहीं प्रदान करती। इस

संसारमें कैसाही कष्ट और दुःख क्यों न हो मनुष्य सबको सह सकता है।

आज सौ डेढ़ सौ वर्षके बाद हमलोग समझते हैं कि अठारहवीं शताब्दिमें भारतवर्षमें बड़ी अराजकता और बेअमनी थी इसलिये उस समय हमारे बड़े बूढ़े बहुत कष्टमें रहे होंगे बल्कि शायद वे सदा चाहते होंगे कि किसी तरह दम निकले तो इन कष्टों से छुटकारा मिले। पर यह हमारी भूल है। अठारहवीं शताब्दि में ऐसी लड़ाई भिड़ाईका सामना रहते भी हमारे पूर्वपुरुष हमारीही तरह हर्ष सुख और आनन्दसे रहते थे। देशकी दशा कैसीही बिगड़ी हुई क्यों न हो पर साधारण लोग उसकी ओर बहुत कम ध्यान देते हैं। वे सब अवस्थाओंमें एकही तरह चलते फिरते और खाते पीते हैं। हां जब खास अपने ऊपर कोई विपत्ति आ पड़ती है तब कुछ दिनके लिये उनको थोड़ा कष्ट उठाना पड़ता है।

परन्तु जबसे यह सृष्टि रची गई तभीसे सब देशों और सब युगोंमें कुछ ऐसे लोग भी पाये जाते हैं जिनको संसारकी कोई बात कभी अच्छी नहीं लगती। मानो संसारके साथ इनका सनातन झगड़ा चला आता है। ऐसे लोगोंको इस संसारमें सदा सब कष्ट दुःख पापाचारके अतिरिक्त कोई दूसरी बात ही दिखाई नहीं पड़ती। इनमेंसे कुछ लोग अपने जीवन भर इन सब कष्ट आदिके मिटानेकी चेष्टा कर इस संसारसे चले जाते हैं और उनके पीछे पैदा होनेवाले लोग उनका नाम सुनकर उनको देश संस्कारक समाज संस्कारक या धर्म संस्कारक कहते

हैं। और कोई कोई संसारको एकबारही त्यागकर अकेले निर्जन बनमें जा बैठते हैं। संसारके लोगोंके साथ उनका किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं रहता।

अठारहवीं शताब्दिमें भारतवर्षमें संसार विरागी जो दो चार मनुष्य थे उनमेंसे किसीने देश सस्कारक या धर्म सस्कारकका काम नहीं किया। वे संसारसे एकबारही सम्बन्ध तोड़ कर निर्जन बनों अथवा पहाड़ी गुफाओंमें बैठे हुए रात दिन ईश्वरका भजन किया करते थे। हिमालयके आसपासके हरे भरे बन उनके रहनेके स्थान थे। ये लोग संसारसे केवल इसलिये विलग रहते थे कि जिसमें मरनेके बाद शान्ति मिले। प्राय ये लोग हरिद्वार आदि हिमालयके निकटवर्त्ती तीर्थोंमें भी घूमा करते थे।

हिमालयके नीचे जिस जगहसे श्रीगङ्गाजी निकलकर पूरब दक्खिन तरफ बहती हैं वही जगह प्राचीन समयसे हरिद्वारके नामसे प्रसिद्ध है। प्राचीन कालके लोग हरिद्वारको वैकुण्ठका द्वार समझते थे। वास्तवमें यह स्थान ऐसाही सुन्दर और सुरम्य है कि इसे वैकुण्ठका द्वार कहते बनता है।

तरह तरहके सुन्दर फूलों और फलोंसे सजी हुई हरिद्वारकी उपत्यका प्रकृति देवीकी विहार बाटिका या प्रकृति देवीके घूमने फिरने और आनन्द मनानेका बगीचा जान पड़ती है। इसी स्थानका प्राकृतिक सौन्दर्य प्राचीन आर्योंके हृदयमें कविताका रस पैदा करता था। हजारों वर्ष पहले इसी जगह गङ्गाके किनारे बैठकर महर्षि लोग तरह तरहके छन्दोंमें सामवेद गाया

करते थे। इसीसे हरिद्वार आजदिन परम पवित्र तीर्थस्थान माना जाता है और साधु महात्मा सदा यहां आकर योग की साधना किया करते हैं।

* * * * *

सन् १७७४ ईस्वीके फरवरी महीनेमें एक दिन सध्याके समय कोई आदमी हरिद्वारकी किसी टीलेपर आंखें बन्द किये बैठा ध्यान कर रहा था। उसके आगे होमका कुण्ड बना हुआ था जिसमें आग जल रही थी। ध्यान करनेवालेके दोनों गाल आंसुओंसे भीग गये थे। उसकी उमर कोई साठ सत्तर वर्षकी थी तोभी वह हृष्टपुष्ट और मजबूत था। सारे शरीरमें भस्म लगा हुआ था। कमरमें केवल एक लंगोटी थी। कभी कभी उसके मुंहसे दो एक बात भी निकल पड़ती थी पर वह बात पास खड़ा होकर भी कोई समझ नहीं सकता था। कुछ देरके बाद उसने स्पष्ट शब्दोंमें कहा—

"हा परमेश्वर। यह जीवन वृथा गया।"

कुछ देर चुप रहकर वह फिर बोला—

"शास्त्रका अध्ययन करनेसे केवल अभिमान उत्पन्न होता है। शास्त्र पढ़कर भी मनुष्य अपनेको पहचान नहीं सकता।"

फिर कुछ देरतक आंखें बन्द किये रहनेके बाद उसने कहा—

"मनुष्य मात्र इश्वरके योग्य है। इस संसारमें सभीको मैंजिल पूरा करना पड़ेगा। ईश्वरने जिस बातके लिये पैदा किया उसे त्यागकर इसमान व्यर्थ जीवन बिता रहे हैं।"

"वृथा जीवन बिता रहे हैं" यह बात समाप्त होते न होते पीछेसे कोई बोल उठा—

"वृथा जीवन बिता रहे हैं इसीसे तो ऐसे उपाय होते देख रहा हूं जिनसे संसारमें एक व्यक्ति भी जीवित न रहे।"

पहलेके कानोंतक इस दूसरे व्यक्तिकी बातें नहीं पहुंची। वह आंखें बन्द किये अपनेही ध्यानमें डूबा रहा। स्वप्नकी अवस्था में सोनेवालेके मुखसे जिस प्रकार कभी कभी दो एक बात निकल जाती है उसी प्रकार उसके मुँहसे भी ऊपर लिखी बातें निकल रही थीं।

यह दूसरा व्यक्ति गङ्गाजीके दूसरे किनारेसे नदीमें हलकर इस पार आया था। नदीमें अधिक जल नहीं था। इस पार आकर पहला व्यक्ति जिस पहाड़ पर बैठा था उसीकी ओर वह धीरे धीरे बढ़ने लगा और पहलेको यह कहते सुनकर कि "वृथा जीवन बिता रहे हैं" उसने कहा—"यह जीवन वृथा है इसीसे तो ऐसे उपाय होते देखता हूं जिनसे संसारमें एक व्यक्ति भी जीवित न रहे।"

यह दूसरा पुरुष जो अभी आया था बहुतही दुबला पतला था। इसकी हड्डियां सूखी हुई थीं। इसे चलते फिरते देखकर यह जान पड़ता था कि मानो हवाके जोरसे इसका सारा शरीर हिलता डोलता है। इसका चेहरा मनुष्यकी तरह था तोभी इसे मनुष्य नहीं मनुष्यकी छाया कहते बनता था। ऐसे लोग जो इस संसारमें भूत आदिका होना मानते हैं इसे देखकर

अवश्य प्रेत समझते होंगे। ध्यानमें डूबे हुए पहले व्यक्तिके निकट पहुंच और ज़ोरसे हंसकर इसने कहा—

"ठाकुर, अब किस बातकी चिन्ता करते हो? इस बार बड़ा भारी शुभ सम्वाद लाया हूं। बहुत बड़ी लड़ाई छिड़ी है। निश्चय है कि सब देशोंके लोग इसमें कट मरेंगे।"

प्रथम व्यक्तिका ध्यान टूट गया। सहसा नींद टूट जानेसे जिस तरह आदमी चौंकता है उसी तरह चौंक और पीछे पलट कर उसने देखा।

दूसरेने कहा—"ठाकुर, क्या सोच रहे थे? शायद अभी तक मेरी बात तुम्हारे कानों तक नहीं पहुंची। बड़ा भारी शुभ सम्वाद है। बड़ी लड़ाई होगी। इस युद्धमें भी क्या संसारके सब मनुष्य न मर मिटेंगे?"

पहला व्यक्ति अभी तक एक दृष्टिसे चुपचाप दूसरेकी ओर देख रहा था। कुछ देरके बाद बहुत धीमे स्वरसे उसने आपही आप कहा—

"हा परमेश्वर! शोक दुःख आदि सांसारिक झंझटोंके आगे मनुष्यको सदा हार मानना पड़ता है। योगाभ्यास शास्त्राध्ययन आदि किसीसे मनुष्य दुःख दरिद्रताके विषमय फन्देसे छुटकारा नहीं पा सकता।"

दूसरा। ठाकुर, मैं तुम्हारी इस सांसारिक झंझटोंकी बातें सदासे सुनता आया हूं। मैं स्वयं भी बाल्यकालमें शास्त्रोंको पढ़ा और सीखा है। मेरा नाम वामेश्वर है। यह [illegible]

द्राविड़ सब मैं जानता था। अब जरा मेरे मतलबको भी सुनलो।

इस दूसरे व्यक्तिका नाम वाणेश्वर था और उस पहले महापुरुषका श्रीनिवास। श्रीनिवास एक प्रसिद्ध महाराष्ट्र पण्डित था और वाणेश्वर बङ्गदेशमें उत्पन्न हुआ था। सात आठ वर्ष पूर्व कलकत्तेमें दोनों एक दूसरेसे मिले थे। पश्चात् साथही हरिद्वारकी ओर चले आये थे।

श्रीनिवासने वाणेश्वरसे पूछा—"इस समय कहासे आ रहे हो?"

वाणेश्वर। यह बात पीछे बताऊंगा। एक शुभ सम्वाद लाया हूँ। पहले उसे सुनलो।

श्रीनिवास। (मुस्कुराकर) कैसा शुभ सम्वाद?

वाणेश्वर। बड़ी भारी लड़ाई छिड़ी है। यदि मरहठोंने वकीलों का साथ दिया तो इस युद्धकी आग सौ वर्षमें भी नहीं बुझेगी। इसी युद्धसे मेरे मनकी बात पूरी होगी। अवश्य इस वार संसार के सब मनुष्योंका नाश होगा।

श्रीनिवास। मूर्ख, अब भी तेरे शिरसे वह भूत नहीं उतरा? इतने दिन तक कितने देशों और तीर्थोंमें भ्रमण किया तौभी चित्त ठिकाने नहीं आया?

वाणेश्वर। ठाकुर, इस बातको जाने दो। पहले यह बत लाओ कि मरहठे इस युद्धमें किसीका साथ देंगे या नहीं?

श्रीनिवास। यह मैं क्या जानूं? तुम महाराष्ट्र देशमें भी गये थे?

वाणेश्वर। क्या मैं तुम्हारी तरह एक जगह बैठा रहता हूं? कभी महाराष्ट्र देशमें, कभी मैसूरमें, कभी हैदराबादमें, कभी दे

इलोमें, कभी अवधमें—इसी तरह अनेक देशोंमें घूमा करता हूं।

श्रीनिवास। इतना क्यों घूमते हो? जरा अपनी ओर तो देखो कितने दुबले होगये हो।

वाणेश्वर। घूमनेका और कोई मतलब नहीं है। जहां जहां जाता हूं वहां वहांके राजाओंको युद्ध करनेको राय देता हूं। उनसे कहता हूं—बस! युद्ध करो, इससे तुम्हारा राज्य बढेगा। पहले मेरी बात सुनकर वे हंसते हैं, पर अन्तमें करते वही हैं जो मैं कहता हूं। देखते नहीं पिछले तेरह वर्षोंके बीच कितनी जगह लड़ाइयां हुई?

श्रीनिवास। तुम क्या समझते हो उन लोगोंने तुम्हारेही कहनेसे युद्ध प्रारम्भ किया?

वाणेश्वर। चाहे वे अपनीही इच्छासे लड़ी हों या मेरे कहनेसे इससे मतलब नहीं। मेरी मनोकामना सिद्ध होनी चाहिये। संसारके सब मनुष्योंके मर जानेहीसे मेरी आशा पूरी होगी।

श्रीनिवास। संसारके सब मनुष्योंके मर जानेसे तुम्हें क्या लाभ होगा?

वाणेश्वर। ऐसा होनेसे जगत्‌के सब प्रकारके दुःख और कष्ट दूर हो जायेंगे। एकका मरना और दूसरेका जीवित रहना अच्छा नहीं है। सारे प्राणीके एकबारही नष्ट हो जानेहीमें भलाई है। यदि ऐसा होगा तो किसीके मनमें कोई दुःख नहीं रह सकेगा।

श्रीनिवास। सारे प्राणीने लोगोंने क्या तुम्हारे साथ कोई अपराध किया है जो तुम उनकी बुराई सोचते हो?

वाणेश्वर। मनुष्यके समान भयानक जन्तु और कोई नहीं है। बाघ भालू आदि कोई जीव मनुष्यके समान निठुर नहीं होते। सर्पमें भी क्रतघ्नता पाई जाती है पर आदमीमें नहीं। आदमी बड़ा अक्रतघ्न होता है।

श्रीनिवास। यदि मनुष्य ईश्वरकी दी हुई प्रक्रतिकी रक्षा कर सके तो वह देवजीवन लाभ कर सकता है। हमारे समाजमें जो कुरीतियाँ फैली हुई हैं उन्हींसे हमलोग इतने नीच और खराब हो रहे हैं।

वाणेश्वर। मनुष्य देवजीवन लाभ कर सकता है, देवता हो सकता है, यह मैं बहुत दिनोंसे सुनता आता हूं, पर आजतक मैंने किसीको भी देवता होते नहीं देखा। मैं खूब जानता हूं कि मनुष्यके समान दुष्ट जन्तु इस संसारमें और कोई नहीं है। बाघ भालू आदि हिंसक जन्तुओंकी अपेक्षा मनुष्य सौगुना अधिक निठुर होता है। इसीसे भिन्न भिन्न देशोंके राजाओंमें लड़ाई लगाकर मैं ससारसे मनुष्योंका नामही मिटा देना चाहता हूं।

श्रीनिवास। तुम एकदम पागल हो गये हो। ये जो राजे महाराजे आपसमें लड़ रहे हैं सो क्या तुम्हारे कहनेसे? क्यों तुम पागलकी तरह देश देशकी धूल फाँकते फिरते हो? तुम कुछ दिन मेरे पास रहो, मैं तुम्हारे सिरसे यह भूत उतार देनेकी चेष्टा करूंगा।

वाणेश्वर। मैं एक घडी भी यहां नहीं रुक सकता। जहां कहीं बैठता हूं मेरा चित्त दोही चार मिनटमें वहांसे घबरा उ

ठता है। तुरन्त उठकर दूसरी जगह जानेकी इच्छा होती है। इसीसे लोग कहते हैं कि मेरे सिरपर भूत सवार है।

श्रीनिवास। मैं सच कहता हूं, तुम्हारे सिरपर अवश्य भूत सवार है। भूत और कुछ नहीं है। मनुष्यका चित्त जब एकही ओर लग जाता है, दूसरी बात उसे सूझतीही नहीं और उसके लिये वह रात दिन हैरान रहता है, तब उसपर भूत सवार होना कहा जाता है। संसारके सब लोग मर जायँ यह चिन्ता सदा तुम्हें घेरे रहती है। दूसरे किसी विषय या दूसरी किसी बातकी ओर तुम ध्यान नहीं दौड़ा सकते। एक घड़ी किसी जगह बैठ नहीं सकते। इसीलिये लोग समझते हैं कि तुम्हारे सिर पर भूत सवार है।

वागेश्वर। अच्छा तो ठाकुर, अब विदा होता हूं। अधिक नहीं ठहर सकता।

श्रीनिवास। ज़रा और ठहर जाओ। अभी दो एक बात मुझे तुमसे कहनी है।

वागेश्वर। अब नहीं रुक सकता।

श्रीनिवास। तो अब किधर जाओगे?

वागेश्वर। रुहिलखण्ड जाऊंगा।

श्रीनिवास। रुहिलखण्डमें क्या काम है?

वागेश्वर। वहीं तो लड़ाई होगी।

श्रीनिवास। रुहेले लोग किसके साथ युद्ध करेंगे?

वागेश्वर। वजीर सुजाउद्दौला और अंगरेज एक ओर हैं, रुहेले दूसरी ओर।

बाणेश्वरकी इस बातसे दुःखित होकर श्रीनिवासने आपही आप कहना आरम्भ किया—

"हा परमेश्वर, देशकी अवस्था कैसी बिगड गई है। कोई राजा या नवाब अपने राज्यको उत्तमतासे चलाने या प्रजाका दुःख दूर करनेका उपाय नहीं करता है। सभी केवल दूसरोंका राज्य छीन लेनेकी चेष्टा कर रहे हैं। ये लोग वह काम कर रहे हैं जो इनको नही करना चाहिये। अन्तमें सब अपने राज्यसे भी हाथ धोयेंगे।"

श्रीनिवासकी बात समाप्त होतेही बाणेश्वरने जोरसे हँस कर कहा—

"क्यों ठाकुर, अब तो तुम भी वही कहने लगे जो मैं कहता था। मैं तो पहलेहीसे कहता आता हू कि मनुष्य बडा दुष्ट जानवर है। ऐसा दुष्ट जीव और कोई नही। एक एक नवाब या राजाके यहा दो दो तीन तीन सौ बेगमें या रानियां हैं, तिस पर भी वह पर स्त्रीका सतीत्व नाश करनेकी चेष्टा करनेसे नहीं चूकता। एक एक नवाब या राजाके कोषमें करोडों रुपये मौजूद हैं, उसका राज्य बहुत बडा है, तौभी दूसरोंके राज्य और धनकी ओर उसकी दृष्टि सदा दौडाही करती है। नरहिंसक नासमझ भयानक जङ्गली जन्तु भी ऐसा नही करते। शेर भालू आदि जानवर अपना पेट भरनेके लिये जीवहत्या करते हैं। शेर जब एक जीवको मारकर खाने बैठता है तब दूसरेकी ओर ध्यान नहीं देता। परन्तु आवश्यकता न रहने पर भी मनुष्य दसका खून कर डालता है। शास्त्रमें कुछही क्यों न लिखा

हो पर इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य सबसे बढ़कर निठुर जीव होता है।"

श्रीनिवास। भाई, अपनी दुर्दशा देखकर दूसरोंको दोष नहीं लगाना चाहिये। हमारी तुम्हारी दुरवस्था हमारी तुम्हारी भूल या उस कामके न करनेसे हुई है जो हमको करना चाहिये। जो मनुष्य इस संसारमें अपने कर्त्तव्यका पालन करता है और न्याय तथा सत्यका रास्ता कभी नहीं त्यागता उसे दुःख और कष्ट नहीं भोगना पड़ता ।

यागेश्वर। ठाकुर, ऐसी बातें सुननेको मेरा जी नहीं चाहता । मैं अब जाता हूं। ठहर नहीं सकता । (जोरसे हंसकर) फिर परका भूत चञ्चल हो उठा है।

श्रीनिवास। रुहेलखण्ड जानेसे तुम्हें क्या लाभ होगा ?

यागेश्वर। इस लड़ाईमें कितने आदमी मरी हैं इसका हिसाब जोड़नेके लिये जाता हूं । बिना इसके जाने यह क्योंकर मालूम होगा कि यह पृथ्वी कितने दिनमें मनुष्य रहित हो जावेगी। इधर मेरी आयु भी पूरी हो चली है। सिर पर यह भूत सवार है इसीसे अभीतक चलता फिरता हूं । यदि यह न होता तो अबतक कभी इस संसारसे चला गया होता।

श्रीनिवास। मैं नहीं जानता था कि अपनी दुर्बलता का हाल तुम जानते हो। अब समझ गया।

यागेश्वर। (खूब हंसकर) ठाकुर मैं सब जानता हूं। न्याय दर्शन सब शास्त्र मैंने पढ़े हैं। परन्तु इस समय

यह कह और हाथ मलकर वाणेश्वरने दुखित स्वरमें फिर कहा—"हाय! स्त्री पुत्र कन्या कहां हैं इस समय उन्हीको चिन्ता लगी हुई है।"

इसके उपरान्त वाणेश्वर जल्दी जल्दी वहांसे चला जाने लगा। श्रीनिवासने दौडकर उसका हाथ पकड लिया और कहा—"तुम जाते हो तो तुम्हें कोई रोक नहीं सकता। पर मेरी एक बात सुनलो।'

वाणेश्वर। कौनसी बात?

श्रीनिवास। महीने दो महीनेके बाद एक बार फिर मुझसे मिलना।

"रुहेलखण्डका युद्ध समाप्त होतेही मैं यहां लौट आऊंगा।"—यह कहकर वाणेश्वर दोही चार मिनटमें श्रीनिवासकी दृष्टि से दूर निकल गया।

दूसरा परिच्छेद।

रुहेलखण्ड।

अवध और कुमाऊं पर्वतके बीच गङ्गाजीके पूर्व ओर जो लम्बा चौड़ा देश पहले कुताहारके नामसे प्रसिद्ध था वही अठारहवीं शताब्दिमें रुहेले सर्दार अलीमोहम्मदके सर्दारी पानेके साथही साथ रुहेलखण्डके नामसे पुकारा जाने लगा। रुहेलखण्डका राज्य अवधसे मिला हुआ है। वजीर सफदरजङ्ग केही समयसे अवधके नवाबोंको रुहेलखण्ड पर अधिकार करने

की इच्छा थी, पर लड़ाके रुहेलोंको लड़ाईमें परास्त करना स-
हज काम नहीं था। इसीसे वजीर साहबान अभीतक चुप थे।

जिस समयकी बात इस उपन्यासमें लिखी जाती है उस स-
मय नवाब सफदरजङ्गका लड़का वजीर शुजाउद्दौला अवधका
नवाब था। वजीर कमरुद्दीनके देहान्तके बाद अवधका नवाब
सफदरजङ्ग दिल्लीके बादशाहका वजीर नियुक्त हुआ था। इसी
समयसे अवधके नवाब लोग बराबर वजीर कहलाते आते थे।

वजीर शुजाउद्दौलाने रुहेलखण्ड पर चढ़ाई करनेकी इच्छासे
अङ्गरेजोंसे सहायता मांगी। धनके लोभसे अङ्गरेजोंने मदद करना
स्वीकार किया। सन् १७७४ ईस्वीके प्रारम्भमें अङ्गरेज सेनापति
(जेनरल चेम्पियन) ने सैन्यके साथ अवधमें आकर रुहेलखण्ड
पर चढ़ाई करनेकी चेष्टा की।

इधर अस्सी बरसके बूढ़े सर्दार हाफिज रहमतखांने भी
अपने देशकी रक्षाके लिये सेनाएं संग्रह कीं। परन्तु इस बार
रुहेलोंको अपने ऊपर भारी विपत्ति पड़नेका भय था। इस बार
अवधके नवाब साहबकी सब सेनाएं अङ्गरेजी सेनापतिसे मिलकर
एकसाथ युद्ध करनेको थीं। इस दोहरी सेनाका सामना करना
सहज काम नहीं था। इसके सिवा थोड़ेही दिन पहले रुहेलोंमें
कुछ घरेलू अनबनसी पैदा होगई थी जिससे समय पर
युद्धका पूरा पूरा सामान भी इकट्ठा नहीं हो सका। [illegible]
आपसकी फूट बड़े बड़े राज्यों और रियासतोंको बात की बात
में मटियामेट कर डालती है।

जिस कारणसे रुहेलोंमें आपसकी फूट पैदा हुई और जिस पापसे उनका राज्य नष्ट भ्रष्ट हुआ उसका हाल संक्षेपमें यहां नहीं लिखनेसे इस उपन्यासमें लिखी हुई कई प्रधान प्रधान बातें अच्छी तरह पाठकोंकी समझमें नहीं आवेंगी। इसलिये इस परिच्छेदमें वही सब इतिहाससे सम्बन्ध रखनेवाली बातें लिखी जाती हैं।

सन् १६७३ में शाहआलम और हुसेनखां नामक दो भाई कुताहार (वर्त्तमान रुहेलखण्ड) में रहा करते थे। ये दोनों अफगानी थे। कभी कभी ये लोग देहलीके बादशाहकी मातहती में सिपहगरी भी किया करते थे। इनमेंसे बडे भाई शाहआलमके दो लडके थे। बडेका नाम दाऊदखां और छोटेका हाफिज रह मतखां था। दाऊदखांने कुमाऊं राज्यकी सेनाओंकी अफसरी पाकर कई बार अपने मालिककी बडी खैरख्वाही की। पर मालिकने उसके परिश्रम और स्वामिहितैषिताका पूरा पूरा आदर नहीं किया। इस बातसे निरुत्साहित होकर दाऊदखांने नौकरीसे इस्तीफा देनेका विचार किया। इस्तीफेकी बात सुन कर मालिकने उसके दोनों हाथ पांव कटवा डाले। इस कष्टसे दाऊदखांकी मृत्यु हुई। उसका छोटा लडका अलीमोहम्मद भी पिताकी तरह लडाका और बहादुर था। उसने पक्का इरादा कर लिया कि एक न एक दिन अपने पितृवैरीका विनाश अवश्य करना चाहिये।

पिताके मरनेके बाद अलीमोहम्मदने मुरादाबादके फौज दार अजमतुल्लाखांकी मातहतीमें सिपहगरी आरम्भ की। जब

अजमतुल्लाको भी टेढ़ा हो गया तब थोड़ी सेना एकत्र करके अलीमोहम्मदने मुरादाबादके आसपासके कई स्थानों पर अधिकार कर लिया। धीरे धीरे उसके साथियोंकी गिनती बढ़ने लगी। साथियोंकी तरक्कीके साथही साथ उसके अधिकारकी भी उन्नति होती गई।

मुरादाबादके पास देहलीके बादशाहके मीरबख्शी इमदादुल मुल्ककी बहुत बड़ी जागीर थी। लोगोंके द्वारा इमदादुलमुल्कको मालूम हुआ कि उनकी जागीरका भी कुछ हिस्सा अलीमो हम्मदने अपने अधिकारमें कर लिया है। यह सुनतेही क्रुद्ध होकर अलीमोहम्मदको दमन करनेके लिये उन्होंने कुछ फौज भेज दी। इमदादुलमुल्ककी भेजी हुई सेनाके साथ अलीमोह म्मदने घोर युद्ध किया। अन्तमें जीत भी उसीकी हुई। इमदा दुलमुल्ककी ओरके प्राय सब सिपाही काट डाले गये।

इस बातसे रुष्ट होकर इमदादुलमुल्कने बादशाहको लिखा कि अलीमोहम्मद बागी है उसे उचित दण्ड मिलना चाहिये। बादशाहके कर्मचारियोंमें परस्पर शत्रुता थी। हरेक दूसरेकी बुराई सोचता था, दूसरेको नुकसान पहुंचानेकी चेष्टा करता था। अलीमोहम्मदको गिरफ्तारीके लिये सैन्य आदि भेजनेपर कमरुद्दीनने आप आड़े हुए अगु होकर कहा—"बन्दानिवाज़ मेरी एक अर्ज़ है उसे सुन लीजिये। अलीमोहम्मद गुनहगार नहीं है बल्कि इमदादुलमुल्ककी भेजी हुई फौजने उसे बिलावजह तकलीफ़ पहुंचाई इसीसे वह लड़ाई करने पर लाचार हुआ। क़ानूनन् वह गुनहगार नहीं हो सकता।"

बादशाहने वज़ीरकी बात सुनकर सेनाको रोक लिया। इधर अवसर पाकर अलीमोहम्मदने मीरबख्शी इमदादुलमुल्ककी सब जागीर अपने अधिकारमें करली। इसके बाद सैयदद्दीन नामक एक राजविद्रोहीको गिरफ्तारीके लिये बादशाहने सेना भेजी। वजीर कमरुद्दीनने अलीमोहम्मदको लिखा कि तुम भी इस सेनाके साथ शामिल होकर बागीके पकड़नेका उद्योग करो।

अलीमोहम्मदने इस पत्रके पानेके साथही बड़े आग्रहके साथ बादशाही सैन्यसे मिलकर सैयदुद्दीनको गिरफतार किया। बादशाहने अलीमोहम्मदको इस राजभक्तिसे सन्तुष्ट होकर उसे नवाबकी उपाधि और साथही बहुतसी जमीन दी।

परन्तु दिनोंदिन अलीमोहम्मदकी क्षमता और कीर्त्ति बढ़ते देखकर वजीर कमरुद्दीनके मनमें अनेक तरहकी शङ्काएँ पैदा होने लगीं। अन्तमें अपने एक विश्वासी मित्र राजा हरानन्दको मुरादाबादका सेनापति नियुक्त कर कमरुद्दीनने उनसे कहा कि आप कृपा करके अलीमोहम्मदके कामोंको सदा जांचकी दृष्टिसे देखते रहियेगा।

राजा हरानन्दने मुरादाबाद पहुंचतेही अलीमोहम्मदके जिम्मे जो बादशाही कर बाकी पड़ा था उसे तलब किया। इस बातसे धीरे धीरे दोनोंमें विवाद आरम्भ हुआ। अन्तमें अलीमोहम्मदने युद्धमें राजा साहबको परास्त किया। बेचारे राजा हरानन्दका इस युद्धमें प्राण भी गया।

राजा हरानन्द वजीर कमरुद्दीनके बड़े भारी प्रियपात्र थे।

कुमाऊंसे लौटते समय अलीमोहम्मदके साथियों और अवधके नवाब सफदरजङ्गके लोगोंमें कुछ छेड़छाड़ होगई। सफदरजङ्गके लोग कुमाऊंके पास किसी स्थानमें शालके पेड़ काट रहे थे। छेड़छाड़ होने पर इन सबको मार भगाकर अलीमोहम्मदके साथियोंने सब पेड़ोंको आप ले लिया।

नवाब सफदरजङ्गने अलीमोहम्मदके इस अन्याय व्यवहारकी बात सुनकर देहलीमें बादशाहके पास अभियोग उपस्थित किया और कहा कि अलीमोहम्मद राजविद्रोही है उसे प्राणदण्ड मिलना चाहिये। बादशाह सफदरजङ्ग पर बड़ी कृपा रखते थे। उसके अनुरोधसे उसका और सैन्यको अपने साथ लेकर वे स्वयं अलीमोहम्मदको प्राणदण्ड करनेके अभिप्रायसे मुरादाबाद प्रस्थानित हुए। इस बार वजीर कमरुद्दीन किसी तरह अलीमोहम्मदको नहीं बचा सके।

परन्तु अलीमोहम्मद बड़ा बुद्धिमान् आदमी था। वह खूब जानता था कि देहलीके बादशाह और अवधके नवाब दोनोंके साथ युद्ध करके जीतको आशा नहीं की जा सकती। इसलिये उसने इनके साथ युद्ध नहीं किया बल्कि वह बादशाहकी शरणमें चला गया। बादशाहने सन्तुष्ट होकर उसका प्राण विनाश नहीं किया परन्तु कैद करके वे उसे देहली ले गये।

सफदरजङ्गने आशा की थी कि यदि बादशाह सलामत अलीमोहम्मदके लिये प्राणदण्डकी आज्ञा दे देंगे तो हम सहजमें रुहेलखण्ड राज्य पर अधिकार कर लेंगे। परन्तु इस आशाका कोई फल नहीं हुआ।

अलीमोहम्मदके सरहिन्द पहुँचनेके कुछही दिन बाद अर्थात् १७४४ ईसवीमें अहमदशाह अब्दालीने देशपर आक्रमण किया। वजीर कमरुद्दीनने अपने लड़के मीर मन्नू तथा फजुल्ला और अब्दुल्लाको साथमें लेकर अहमदशाहके मुकाबिलेके लिये लाहौर की यात्रा की। लाहौर पहुँचनेके बादही अकस्मात् कमरुद्दीनकी मृत्यु हो गई। उसके पुत्रों तथा फैजुल्ला आदिने इस मृत्युकी बातको छिपाकर अहमदशाहके साथ युद्ध किया। तीन बार लड़ाई हुई, तीनोंही बार अहमदशाह परास्त हुआ। परन्तु अन्तिम अर्थात् चौथी बार उसकी जीत होगई। तब मीर मन्नू तथा अब्दुल्ला आदिने उसे बहुत धन रत्न देकर देश छोड़कर चले जानेपर राजी किया। अहमदशाह असंख्य धन रत्न और साथही अलीमोहम्मदके दोनों पुत्रोंको जमानतमें लेकर तुरन्त कन्दहार लौट गया।

इस घटनाके बाद सरहिन्द छोड़ और रुहेलखण्डमें आकर अलीमोहम्मदने फिर अपने राज्यका शासन करना आरम्भ किया। परन्तु अधिक परिश्रमके कारण अब वह प्राय रोगी रहा करता था। उसे इस समय इस बातकी चिन्ता होने लगी कि यदि मैं मर गया तो मेरे राज्यकी रक्षा कौन करेगा।

अलीमोहम्मद केवल लड़ाई भिड़ाई और मार काटके मामलेमेंही विशेष बुद्धिमान् नहीं था बल्कि राजनैतिक बातोंमें भी उसकी जानकारी बहुत बढ़चढ़ कर थी।

उसने सोचा कि यदि मैं अपने लड़कोंके ऊपर राज्यका भार

पद भी उसीको सौंपा। नियादतखां और सलावतखांको आय व्ययका हिसाब जाँचनेवाला बनाया और फतेहखांको घरकी रक्षाका भार सौंपा। इन कई लोगोंके अतिरिक्त इस अवसर पर सफदरखाने बख्शीका पद प्राप्त किया।

परन्तु इस बन्दोबस्तके अनुसार हाफिज रहमतखांही सबसे बड़े राज प्रतिनिधि हुए। हाफिज साहब लोगोंमें बड़े धार्मिक प्रसिद्ध थे। रुहेलखण्डके सभी लोग उनको धर्म धुरन्धर तथा पुराना आदमी समझकर उनको बहुत मानते थे।

अलीमोहम्मदकी मृत्युके बाद कई वर्षतक अच्छी रीतिसे रुहेलखण्ड राज्यका शासन होता रहा। प्रजाओंके दिन बड़े सुख और आनन्दसे कटते रहे। खेती और वाणिज्यकी भी इस बीचमें विशेष रूपसे उन्नति हुई।

किन्तु व्यक्तिविशेषकी स्वार्थपरता विश्वासघातकता और स्वयं अपना अधिकार करनेकी इच्छा सदा संसारमें दुःख कष्ट और यन्त्रणाका प्रचार करती है। जबतक मनुष्य स्वार्थपरता नहीं छोड़ेगा तबतक इस संसारसे दुःख कष्ट आदिका नाम नहीं मिटेगा। हाफिज रहमतखांकी खुदगरजीनेही सुख शान्तिसे भरे हुए रुहेले राज्यके विनाशका बीज बोया। हाफिज साहबने समय समय पर अपनेही ढङ्ग पर और अपनीही इच्छाके अनुसार राज्यप्रबन्ध करना आरम्भ किया। इस बातसे राज्यके दूसरे बड़े बड़े लोग उनसे क्रमशः असन्तुष्ट होने लगे।

कई वर्षके बाद अलीमोहम्मदके दोनों बड़े लड़के फैजुल्लाखां और अब्दुल्लाखा कन्दहारसे अपने देशको लौटे। ये दोनों बालिग

थे। पर हाफ़िज़ने इनको भी राज्यशासनका पूरा पूरा अधिकार नहीं दिया। और तो क्या—अलीमोहम्मदके वसीयतनामेके अनुसार इनको इनके हिस्सेकी जायदाद देनेके समय भी उन्होंने इनके छोटे भाइयोंका अधिक पक्षपात किया।

हाफ़िज़ रहमतखांके प्रति, दिन पर दिन, रुहेलोंकी भक्ति विश्वास और श्रद्धा कम होती गई। सो हाफ़िज़की अदूरदर्शिताने रुहेलोंकी जातीय एकताकी जड़ काटी।

इस समय मरहठे सिपाही भारतवर्षके भिन्न भिन्न प्रदेशोंपर आक्रमण कर रहे थे। हाफ़िज़ रहमतखांने सुना कि मरहठा सेना बहुत शीघ्र रुहेलखण्ड पर भी आक्रमण करनेवाली है। इस समाचारके सुननेसे उनके चित्तमें बहुत शङ्का उत्पन्न हुई। आख़िर अपनेको निरुपाय समझकर उन्होंने अवधके नवाब शुजा-उद्दौलासे सन्धि करली। सन्धिका शर्तनामा इस प्रकार लिखा गया कि यदि मरहठे रुहेलखण्ड पर आक्रमण करें तो नवाब साहब अपनी सेनाके द्वारा रुहेलखण्डवालोंकी सहायता करें और इसके इस सहायताके बदलेमें उन्हें चालीस लाख रुपया दें। यही सन्धि रुहेले राज्यके विनाशका दूसरा कारण हुई। प्रत्येक स्वाधीन प्रदेशको रक्षा करने अथवा उसके अत्याचारी राजाको निरोध करनेके व्यापारमें अपनेही दलके लोगोंके ऊपर भरोसा करना चाहिये। विदेशी राजाकी सहायता लेना केवल अपनी दुर्बलताका परिचय देना है।

इस सन्धिके स्थापित होनेके बादही मरहठा सेनापति रुहेलखण्ड पर आक्रमण करनेका उद्योग करने लगे। पर इसके

रुहेलखण्डमें प्रवेश करनेसे पहलेही बरसात आरम्भ होगई। मर हठे सिपाही गङ्गापार उतरकर रुहेलोंके प्रदेश पर हमला नहीं कर सके। इसलिये उस साल वे अपनेको देशको लौट गये। शुजा उद्दौलाको सेनाके द्वारा रुहेलोंको सहायता नहीं करना पडी।

लेकिन तिसपर भो शुजाउद्दौलाने हाफिज रहमतखांसे वह चालोस लाख रुपया मागा जो शर्तनामेमें लिखा था। हाफिजने रुपया देनेसे बिलकुल इनकार नहो किया किन्तु किसो दूसरे समय देनेका बहाना करके वे दिन बिताने लगे। इधर रुहेल-खण्डके दूसरे प्रधान प्रधान लोगोंने यह रुपया देना एकदम अस्वोकार किया।

दो साल तक कई बार मागने पर भो शुजाउद्दौलाको रुपया नहीं मिला। तब मनही मन उसने विचार किया कि रुहेलोंने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार रुपया नहीं दिया इसलिये युद्धमें उन को परास्त करके एकदम उनका राज्य छीन लेना चाहिये।

शुजाउद्दौला रुहेलखण्ड पर अधिकार करनेके लिये पहलेही से चेष्टा कर रहा था। इस समय उसे अपना अभिप्राय सिद्ध करनेका अच्छा सुयोग मिल गया। परन्तु दूसरेको सहायताके बिना अपने सैनिकोंके भरोसे रुहेलखण्ड पर आक्रमण करनेका साहस उसे नहीं हुआ। इसलिये उसने अङ्गरेजोंसे मदद मांगो। उस समय वारेन हेष्टिन्स साहब अङ्गरेजोंके बडे लाट थे। शुजाउ द्दौलाने उनको लिखा कि यदि आप रुहेलखण्ड राज्य पर चढा ई करनेमें सैन्य द्वारा मेरी सहायता करें तो मैं आपके सैनिकों

के खर्चके लिये दो लाख दस हजार रुपया मासिक दूंगा और यदि लड़ाईमें मेरी जीत होगी तो इनामके तौर पर चालीस लाख रुपया आपके पास भेजूंगा।

अङ्गरेज स्वभावहीसे कुछ लालची होते हैं। शुजाउद्दौलाका यह पत्र देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। पर जल्दी यह स्थिर नहीं कर सके कि क्या करना चाहिये।

महीनेमें दो लाख दस हजार और इनाममें चालीस लाख!—इतनी भारी रकमको यों ही छोड़ देना लालची अङ्गरेजोंके लिये बहुत कठिन काम पड़ा। पर रुहेलोंने उनके साथ कभी किसी तरहका अपराध नहीं किया था। इसलिये वे निश्चय नहीं कर सके कि कौनसा बहाना करके उनको युद्धमें पराजित करनेके लिये सेनायें भेजी जायें। कलकत्तेकी कौन्सिलमें इस बातकी बहस होने लगी पर दो तीन महीनेमें भी कोई बात स्थिर नहीं की जा सकी। हां, इस इनामके पानेके लिये लुटेरा बननेके सिवा कोई दूसरा उपाय नहीं था।

जब शुजाउद्दौलाने देखा कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी तमाशेमें देर कर रही है तब उसने गवर्नर-जेनरल वारेन हेस्टिंग्सको लिखा कि आप मेरी राजधानीमें आकर मुझसे मिलें। १७७३ ईस्वीके अगस्त महीनेमें हेस्टिंग्स साहब नवाब शुजाउद्दौलासे मिलनेके लिये मुगलदेशमें आये।

बनारसमें हेस्टिंग्स और शुजाउद्दौलाकी मुलाकात हुई। वहीं रुहेलखण्डपर चढ़ाई करनेके लिये वारेन हेस्टिंग्स शुजाउद्दौलाको

विशेष रूपसे उत्साहित करने लगा * । आखिर इसी जगह दोनों ने एक शर्तनामा लिखा । इतिहासमें इस शर्तनामेका नाम बनारसका शर्तनामा लिखा है । पर हेष्टिंग्स बड़ा चतुर और धूर्त्त आदमी था । इस शर्तनामेमें उसने रुहेलखण्डकी चढ़ाईका नामो निशान भी नहीं आने दिया । सन्धिपत्रमें केवल यही बात लिखी गई कि अवधके नवाब शुजाउद्दौला अपने राज्यमें कुछ अङ्गरेजी सैन्य रखना चाहते हैं । इस सेनाके खर्चके लिये वे हर महीने दो लाख दस हजार रुपया दिया करेंगे । अतएव ईष्टइण्डिया कम्पनीकी एकदल सेना उनके यहां बराबर नियुक्त रहेगी ।

हेष्टिन्सने विलायती पार्लिमेण्टमें रुहेलखण्डके युद्धकी खबर भी नहीं की । भला वे किस साहससे ऐसी वाहियात खबर विलायत भेजते ? रुहेलोंके साथ अङ्गरेजोंका कभी भी कोई झगड़ा नहीं हुआ था । अनर्थक बेचारे निरपराध लोगोंका खून करनेके लिये सैन्य भेजना लुटेरापनके सिवा और क्या कहा जा सकता है ?

किन्तु बनारसका शर्तनामा लिखे जानेके समय और भी ऐसी कई बातें तय हुई थीं जिनका उल्लेख इस स्थानपर नहीं होनेसे अगले परिच्छेदोंमें आनेवाली बहुतसी आवश्यक बातें

* "I found him (says Warren Hastings in his appeal to the Directors dated 3rd December 1774) still equally bent on the design of reducing the Rohillas *which I encouraged*, as I had done before, by dwelling on the advantages which he would derive from its success"

अच्छी तरह पाठकोंको समझमें नहीं आवेगी। इसलिये उसको भी संक्षेपमें यहां लिखे देते हैं।

इस सन्धिपत्रके द्वारा हेष्टिंग्सने इलाहाबाद और कोरा नामक दो जिलोंको पचास लाख रुपयेपर शुजाउद्दौलाके हाथ बेंचा। बनारसका राज्य उस समय राजा चेतसिंहके अधिकारमें था। नवाब शुजाउद्दौलाने इस राज्यके खरीदनेकी विशेष इच्छा प्रकाश की। पर हेष्टिंग्स साहब इस बार चेतसिंहको उनके हाथ राज्यसे वञ्चित करनेपर राजी नहीं हुए। राजा चेतसिंहसे राज्यके सम्बन्धमें पहले जो कुछ बन्दोबस्त हुआ था वही कायम रहा।

इलाहाबाद और कोरा ये दोनों जिले चेतसिंहके राज्यमें शामिल थे। ईष्टइण्डिया कम्पनीका इन दोनों जिलोंपर कभी कोई अधिकार नहीं था। परन्तु इस समय देहलीके मुगल बादशाहकी क्षमता एकदम घट गई थी। सारा हिन्दुस्तान इस समय बाजारकी मालकी तरह था। ऐसे समयमें ईष्ट इण्डिया कम्पनीके गवर्नर वारेन हेष्टिंग्स बिलकुल आजकलके दस आनेकी लौंडी शायद उनको रोकनेवाला कोई दिखाई नहीं देता।

देहलीका वर्तमान बादशाह शाहआलम ऊपर लिखे दोनों जिलोंका असल अधिकारी था। सन् १७६५ ईस्वीमें जिस समय उसने ईष्टइण्डिया कम्पनीको बिहार बङ्गाल और उड़ीसा की दीवानी प्रदान की थी उस समय इलाहाबादके अधिकारमें

यह स्थिर हुआ था कि कम्पनी हर साल शाहेआलमको छब्बीस लाख रुपया राजस्व देगी और यदि कोई आदमी इन दोनों जिलोंसे उसे बेदखल करना चाहेगा तो वह उसको (अर्थात् बादशाहको) ओरसे लड़कर उसको मार भगावेगी ।

इस सन्धिपत्रके लिखे जानेके समयसे अबतक बराबर इला हाबाद और कोराका कर बादशाहको मिलता रहा । पर इधर मरहठोंने उसे अपने पक्षका अवलम्बन करनेपर लाचार किया । शाहेआलममें स्वयं कुछ करनेकी क्षमता तो थोड़ी नहीं इसलिये लाचार होकर उसे मरहठोंके हाथकी कठपुतली बनना पड़ा । मरहठोंने उसे देहलीके सिंहासन पर बैठाकर इलाहाबाद कोरा तथा और कई प्रदेशोंका कर अपने लिये लिखवा लिया ।

इस बातसे ईष्ट इण्डिया कम्पनीको बादशाहसे इलाहाबाद और कोराका अधिकार ले लेनेका अच्छा सुयोग मिल गया । बाद शाहने मरहठोंका साथ क्यों दिया, इसी बहानेसे कम्पनीने बङ्ग, बिहार और उड़ीसाका छब्बीस लाख रुपया वार्षिक कर एकदम बन्द कर दिया । इधर वारेन हेष्टिंग्सने इलाहाबाद और कोराको पचास लाख रुपयेपर नवाब शुजाउद्दौलाके हाथ बेच डाला ।

हेष्टिंग्स साहब इस प्रकार शुजाउद्दौलाके साथ सब बन्दोबस्त करके कलकत्ते लौट गये । यहां पहुँचनेके साथही रुहेलखण्डकी चढ़ाईके लिये जेनरल चेम्पियनको सेनापतिके पदपर नियुक्त कर उन्होंने सेनाके सहित अवधमें भेजा । इधर कौन्सिलके दूसरे मेम्बरोंसे कहा कि नवाब शुजाउद्दौलासे बहुतसी प्राइवेट बातें करनी हैं इसलिये उनके पास अपना एक विश्वासी आदमी

रसीडएटके तौरपर रहना चाहिये। कौन्सिलके मेम्बरोंने इस प्रस्तावको स्वीकार किया। मिडल्टन साहब अवधके रसीडण्ट नियुक्त हुए। इस समय कलकत्तेकी कौन्सिलके और भी चार मेम्बर थे। रेगुलेटिंग आईन (*Regulating Act*) के अनुसार जेनरल क्लेवरिङ्ग कर्नल मानसन और फिलिप फ्रान्सिस ये तीन मेम्बर अभीतक कलकत्तेमें नहीं पहुँचे थे। यदि वे वहां पहुँच गये होते तो शायद हेष्टिंग्स साहबको रुहेलोंके साथ युद्ध करनेके लिये शुजाउद्दौलाके पास सैन्य भेजनेकी ताकत नहीं रहती।

तीसरा परिच्छेद।

युद्ध-प्रसङ्ग।

युद्धका नाम सुनतेही बहुतसे सीधे स्वभावके लोगोंके मनमें घृणा उत्पन्न होती है। पर इस घृणाके साथ उनका स्वाभाविक सीधापन भी मिला रहता है। ऐसे लोगोंके मतके अनुसार शान्ति लाभ करनाही मनुष्यके जीवनका एकमात्र उद्देश्य है। इसलिये जिसमें कि संसारसे लड़ाई झगड़ा और अशान्ति सदा दूर रहे ऐसाही उपदेश वे लोगोंको किया करते हैं।

परन्तु क्या युद्ध संसारमें सदा अशान्तिकाही बीज रोपण करता है? क्या उस अशान्तिसे कभी शान्त फल पैदा नहीं होता? हमारे समझमें तो युद्धकी आग अशान्ति दुर्नीति अत्याचार और स्वार्थपरताको भस्मीभूत कर संसारके नैतिक वायु और भी साफ तथा शुद्ध करती है। यदि इस जगत्में समय समय पर

गदर न मचता, विद्रोहकी आग न भड़क उठती, तो मनुष्यको क्षण भरके लिये भी जरा चैन न मिलता।

यह संसार जब कभी दुर्नीति और अत्याचारसे भर जाता है तभी लड़ाईकी आग भड़ककर इन सबको भस्म कर डालती है। सब मनुष्योंकी स्वाधीनताकी रक्षाके लिये तथा जगत्‌को दासत्व शृङ्खलसे मुक्त करनेके लिये जो युद्ध होते हैं उनसे लाभके सिवा कभी हानि नहीं होती।

परन्तु जो लोग धन अथवा और किसी बातके लोभसे युद्ध करते हैं—लोगोंकी स्वाधीनता छीननेके लिये संसारमें लड़ाईकी आग भड़का देते हैं—वे सचमुचही लुटेरे होते हैं। ऐसी लड़ाइयोंको यदि लोग घृणाकी दृष्टिसे देखें तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।

सच्चे वीर पुरुष युद्धक्षेत्रमें कभी न्यायका पथ नहीं छोड़ते। प्राचीन समयमें भारतके योद्धे शत्रुको खाली हाथ देखकर कभी उसपर आक्रमण नहीं करते थे। शत्रु यदि शरणमें आकर उनसे क्षमा मांगता था तो वे उसपर तलवार नहीं उठाते थे। परन्तु पहिले युद्धमें देशी तथा विलायती वीरोंने हारे और भागे हुए शत्रुओंकी स्त्री कन्याओं तकको दण्ड देनेमें त्रुटि नहीं की। इन लोगोंने वीररसमें मस्त होकर क्या वृद्ध, क्या युवती, क्या बालिका, क्या कुलवधू, सबके आगे अपने युद्धकौशलका परिचय दिया। शायद इनमें कुछ अधिक वीरता थी नहीं तो इनकी समाम तृष्णा इतनी प्रबल क्यों होती?

प्राचीन समयमें भारतवर्षके सच्चे वीर पुरुषोंमें आपसमें जहां जहां लड़ाइयां हुई थी वे सब जगहें आजकल पुण्यक्षेत्र कही जाती हैं। समामक्षेत्रमें प्रत्येक योद्धा अपने अपने हृदयकी स्वार्थपरता और विषयासक्तिको भूलकर केवल अत्याचार और अन्याय व्यवहारके रोकनेके लिये प्राण देनेको तैयार होता था। उसकी मानसिक अवस्था उस समय उसको देवताके तुल्य बना देती थी। इसीसे उन सब देशहितैषी युद्धार्थियोंके मिलनेकी जगहें आजदिन परम पवित्र तीर्थस्थान माने जाते हैं। इस संसारमें मनुष्यकी प्रकृतिका देवत्व समामक्षेत्रमेंही दिखाई देता है। समाम क्षेत्रमें मनुष्य अपने आपको भूलकर सच्चे कर्मयोगी के समान पवित्र जीवन लाभ कर सकता है।

परन्तु क्या रुहेले युद्धके इतिहासमें भी मनुष्यकी प्रकृतिका यही देवभाव दिखाई देता है? जब रुहेलोंको मालूम हुआ कि नवाब शुजाउद्दौलाने अङ्गरेजोंकी सहायता ली है और अङ्गरेज सेनापति जेनरल चेम्पियन अवधमें पहुंच गये हैं तब वे बहुत भयभीत हुए। इससे पहले उनमें जो आपसकी फूट थी वह इस नई विपत्तिको देखकर मिट गई। सबने परस्पर एकता करली और चालीस लाख रुपया चन्दा करके हाफिज रहमत खांको दिया। हाफिजने नवाबको शरणमें जाकर उससे क्षमा मांगी और प्रतिज्ञाके अनुसार चालीस लाख रुपया देना चाहा। पर नवाब शुजाउद्दौलाने रुपया लेनेसे इनकार किया। रुपयेका लेना बहानाही बहाना था। उनका असल मतलब तो रुहेलों को हटाकर उनके राज्यको अपने अधिकारमें लेलेनेका था।

हाफिज रहमतखाने देखा कि शुजाउद्दौला किसी तरह युद्धको नहीं टालना चाहता। तब उन्होंने बड़े यत्न और परिश्रमसे चार हजार लड़ने भिड़नेवाले आदमी सग्रह किये। और भी बहुतसे बूढ़े जवान तथा बालक अपने देशकी रक्षाके लिये प्राण देनेपर तैयार हुए।

१७७४ ईस्वीकी १७ वीं अप्रैलको हाफिज रहमत और फैजु ल्लाखांने सेनाके सहित यात्रा की। बगा नदीके पश्चिम किनारे पर कटार नामक कसबेमें सेनाएँ इकट्ठी हुई। २२ वीं अप्रैलको अङ्गरेज सेनापति जेनरल चेम्पियन भी शाहजहांपुर पहुँच गये। परन्तु २३ वींसे पहले लड़ाई नहीं आरम्भ हुई।

२३ वीं अप्रैलको दोनों ओरकी सेनाओंका सामना हुआ। हाफिज रहमत और फैजुल्लाने इस युद्धमें बड़ी बहादुरी दिखाई। रुहेलोंमें लड़ने मरनेवाले चार हजारसे अधिक आदमी नहीं थे, परन्तु उनके शत्रुओंकी संख्या उनसे चौगुनी थी। अपनी ओरके लोगोंकी गिनती कम होनेके कारण जिसमें कि रुहेले सिपाहियोंका उत्साह कम न होने पावे इसलिये हाफिज रहमत और फैजुल्लाखां हाथियोंकी पीठसे उतरकर सबके आगे होके लड़ने लगे। रुहेले सिपाही इनकी बहादुरीसे बहुत उत्साहित हुए और बड़े जोर शोरसे साथ अपने शत्रुओंका संहार करने लगे। इधर जेनरल चेम्पियन इनकी वीरता देखकर बहुत विस्मित हुए। यह सोचकर कि थोड़ीही देरमें उन्हें बड़ी भारी विपत्तिका सामना करना पड़ेगा उनके मनमें बहुत चिन्ता उत्पन्न हुई।

परन्तु कुछही देरमें रुहेलोंको बारूद गोली प्रायः समाप्त हो गई। तलवार चलानेमें वे बड़े निपुण थे। उनके पास अधिक तोपें बन्दूकें आदि आग उगलनेवाले हथियार नहीं थे। विशेष कर समय कम होनेके कारण वे इन सब चीजोंको अच्छी तरह इकट्ठा नहीं कर सके थे। इधर अङ्गरेजोंकी ओर गोले बारूदकी कोई कमी नहीं थी।

हाफिज रहमतखाने देखा कि घोर विपद पड़ना चाहती है। उन्होंने फैजुल्लासे सलाह करके अङ्गरेजोंसे दक्षिण ओर हो कर आक्रमण करनेका विचार किया। अभीतक अङ्गरेजी सेना पश्चिम तरफ होकर लड़ रही थी। रुहेली सेना पूर्वकी ओर थी। हाफिज रहमतने आधे मिनटमें अपनी सेनाको कुछ द क्षिण हटाकर फिर पूरब तरफ किया। तब रुहेले सिपाहियोंको अङ्गरेजोंके बाईं ओर होकर उनपर अच्छी तरह आक्रमण करने का अवसर मिल गया। इधर दूसरी ओरके सैनिक पश्चिममुख थे। यह सुयोग पाकर रुहेला सेना एकबारही अङ्गरेजी सेनाके बीचमें प्रवेशकर तलवार बरसाने लगी। अङ्गरेजोंको तोपोंके काममें लानेका बिलकुल समय नहीं मिला।

पांच मिनटमें भी जेनरल चेम्पियन अपने तोपवाले सिपाहियों को दक्षिणमुख नहीं कर सके। इस अवसरमें हाफिज रहमत और फैजुल्लाखां ने मस्त हाथियोंकी तरह अङ्गरेजी सेनामें घुसकर बहुतोंको दमन किया। हाफिज रहमतने सोचा था कि अङ्गरेजी सेनामें प्रवेश करनेसे शत्रुओंको तोप चलानेका अवसर

नहीं मिलेगा, लाचार वे तलवार उठावेंगे। हुआ भी ऐसाही।

परन्तु नवाब शुजाउद्दौलाकी कुछ सेना थोड़ी दूरपर ठहरी हुई थी। अङ्गरेजोंको एकबारही सुस्त होते देखकर उसने पीछे से आकर रुहेली सेनापर आक्रमण किया। इस समय फैजुल्ला और उसके साथी मुहब्बतखाने कुछ सेना दक्षिणमुख करके नवाब के सिपाहियोंको रोका। किन्तु इस अवसरमें जेनरल चेम्पियनने भी अपनी तोपोंको दुरुस्त कर लिया।

रुहेले सिपाही अब भी अल्लाह अल्लाह करके दोनों ओरकी सेनाओंसे घोर युद्ध कर रहे थे। केवल रुहेले युवक मुहब्बतखानेही घोड़ेपर सवार होकर अकेले नवाबके दो सौ सैनिकोंको काट डाला। पर इसी समय एक बड़ी भारी खराबी उपस्थित हुई। अकस्मात् हाफिज रहमतखांकी छातीमें तोपका एक गोला आकर लगा। बेचारे हाफिज वह चोट खाकर घोड़ेसे नीचे गिर पड़े। सेनापतिको गिरते देखकर सैनिक घबरा उठे। सैनिकोंको सम्हालनेके लिये फैजुल्लाने फिर अल्लाह अल्लाह करके अङ्गरेजी सैन्यमें प्रवेश किया।

अभीतक हाफिजकी मृत्यु नहीं हुई थी। उन्होंने फैजुल्लाको पुकार कर कहा—"अब उम्मीद नहीं है। मैदान छोड़कर औरतोंकी इज्जत बचानेकी कोशिश करो।"

इतना कहनेके साथही हाफिजकी बोली बन्द हो गई। उन की छातीके उस हिस्सेसे जहां गोला आकर लगी थी लगातार खून बहने लगा।

बहादुर फजुल्ला इतने पर भी निराश नहीं हुआ। हाफिज को बातों पर ध्यान न देकर और उनके दूसरे और तीसरे पुत्रों तथा मुहब्बतखांको साथमें लेकर उसने फिर अल्लाह अल्लाह करके अङ्गरेजी सेना पर आक्रमण किया।

प्राय पचास अङ्गरेजोंने इकट्ठा होकर हाफिजके दूसरे पुत्र को पकड़ लिया। इधर एक गोली आकर मुहब्बतखांकी छाती में घुस गई। तब भी फैजुल्लाने अल्लाह अल्लाह करके अपने सैनिकोंको उत्साहित करना चाहा। पर इस समय रुहेलोंकी गिनती घटते घटते बहुतही कम होगई थी। उसके पीछे केवल दो सौ आदमियोंने अल्लाह अल्लाह कहा। लाचार होकर इस बार फैजुल्लाको भी निराश होना पड़ा। अपने पास खड़े हुए हाफिज रहमतखांके सबसे छोटे लड़केसे उसने कहा "अब चलिये, किसी तरह औरतोंकी इज्जत बचानेकी कोशिश करें।"

यह कहकर फैजुल्लाने पहले अपने सिपाहियोंके लिये रास्ता साफ किया, फिर वह आप भी हाफिजके पुत्रोंको साथमें लिये हुए घोड़े पर सवार होकर लड़ाईके मैदानसे निकल गया।

अङ्गरेज और शुजाउद्दौलाके साथियोंकी जीत हुई। उन्होंने बड़े जोरसे चिल्लाकर जयध्वनि की।

चौथा परिच्छेद।

स्त्रीकी वीरता।

रुहेली स्त्रियां समझती थीं कि उनके पुरुषोंको कोई कभी

युद्धमें परास्त नहीं कर सकता । उन स्त्रियोंमें जातीयता पाई जाती थी और वे अपनेको वीरबाला वीरपत्नी तथा वीर जननी मानती थीं ।

रुहेलखण्डकी स्त्रियां पति पुत्र आदिके लड़ाई पर चले जानेके बाद बड़े आराम और निश्चिन्तताके साथ रहने लगीं । उनको किसी बातका डर या खटका नहीं था । रहताही क्यों ? —उनको तो दृढ़ विश्वास था कि उनके पति पुत्र युद्धमें शत्रुओं को अवश्यही परास्त करके घर लौटेंगे ।

कोई माता अपने रोते हुए बच्चेको धीरज धराती हुई कह रही थी—"बेटा न रोओ । आज शाम तक तुम्हारे अब्बाजान जरूर लौट आवेंगे ।" कहीं चार पांच स्त्रियां बैठी आपसमें तरह तरह की बातें करके जी बहला रही थीं । एक बूढ़ी औरत अपनी साथवाली स्त्रियोंसे कहती थी – "जब अंग्रेजोंके बादशाहने अली मोहम्मदको पकड़ कर अपने यहां कैद कर रखा था उस वक्त मेरे खाविंद बहुत बड़ी फौज लेकर उसको कैदसे रिहा करने गये थे ।"

मुहब्बतखांकी मा बड़े उत्साहके साथ कहती थी—"इस बार हाफिजको मालूम होगा कि मेरा 'मुहब्बत' कैसा बहादुर लड़का है ।"

इसी मुहब्बतखांके साथ हाफिज रहमतखांकी लड़कीका विवाह होना स्थिर हुआ था । परन्तु लड़ाई आरम्भ हो जानेके कारण यह सम्बन्ध रुक गया था ।

किसी घरमें एक बूढ़ी स्त्री और उसकी सोलह वर्षकी जवान लड़की बैठी कुरान पढ़ रही थी। यही दोनों हाफिज रहमतखाकी स्त्री तथा कन्या थीं। ये दोनों बैठी युद्धमें शामिल होनेवालोंकी मङ्गल कामना कर रही थीं। हाफिज कुमारीने कुरानमेंसे एक जगह यह टुकड़ा पढ़ा —"खुदा सबका मालिक, राजिक और मालिक है। जो उसको पहचानते और मानते हैं उनके वह हमेशा साथ रहता है। दुनियाके लाखों आदमी मिलकर भी उनका कुछ नहीं बना सकते जिनपर खुदाकी मेहरबानी रहती है।"

जब हाफिजकी लड़कीने यह टुकड़ा पढ़कर सुनाया तब उसकी मा बहुत प्रसन्न हुई। उसने हंसते हुए कहा—

"तुम्हारे अब्बा बड़े परहेजगार शख्स हैं। खुदा जरूर उनके साथ है और वह बिलाशक उनकी मदद करेगा।"

इस समय हाफिज कुमारीने अपनी मासे कुछ पूछना चाहा किन्तु लज्जाके कारण वह उस बातको मुंहसे बाहर नहीं निकाल सकी। लाचार होकर कुछ देरके लिये वह चुप होरही।

पर वह मारे शरमके [illegible] भी [illegible] कुल हो रहा था। आखिर उसी बात [illegible] —

"अम्मा, लड़ाईमें जितने लोग [illegible] पाक परवरदिगारके [illegible] हैं। [illegible]

माताने य[illegible]

सभी नेक और [illegible]

ज्यादातर पाई जाती हैं। उनमें जरा भी कोना व बुग्ज़ नहीं है। फैजुल्लाने चालीसके बदले अस्सी लाख रुपया देकर भी यह झगड़ा मिटाना चाहा था, मगर तुम्हारे अब्बाने यह राह पसन्द नहीं की। उन्होंने कहा, "फैजुल्ला, किसी बातका डर नहीं है। खुदा हमारी मदद करेगा।"

लड़कीको अपनी माके जवाबसे सन्तोष नहीं हुआ। उसके मनमें जिस बातकी इच्छा थी वह पूरी नहीं हुई। आखिर लज्जा के मारे सिर झुकाये हुए डरते डरते उसे अपना मतलब साफ साफ कहना पड़ा। उसने कहा—

"क्यों अम्माजान, क्या मुहब्बतखां साफदिल और नेक आदमी नहीं है?"

कन्याका प्रश्न सुनकर माता मुस्कुरा उठी। जिस मतलबसे बेटीने ये सवालात किये थे वह अब उसकी समझमें आगया। बड़े प्यारके साथ उसने कहा — "बेटी! मुहब्बतका दिल सच्चा और पाक मुहब्बतसे भरा हुआ है। जिसके दिलमें मुहब्बत होती है खुदा हमेशा उसके साथ रहता है।"

इसी प्रकार घर घरमें रुहेली स्त्रियाँ तरह तरहकी बातें कर रही थीं। इधर दिन बीत चला था। सन्ध्याके समय घायल सैनिकोंके साथ फैजुल्लाने कसबेमें प्रवेश किया।

परम माननीय हद हाफिज रहमतखां अपने ज्येष्ठ पुत्रके सहित संग्राममें मारे गये—रुहेले लोग युद्धमें परास्त हुए—यह भयानक सम्वाद पहुँचतेही रुहेलखण्डके घरघरमें हाहाकार ध्वनि गूंज उठी। मानो बिना मेघके अकस्मात् सबके सिरपर वज्र गिर पड़ा।

हाफिज रहमतखांकी स्त्री—स्वामी और पुत्रके शोकमें पागल हो गई। परन्तु कन्याको अधिक दुःखित देखकर उसने अपनेको सम्हाला और उसे धीरज धराना आरम्भ किया।

फैजुल्ला अभीतक हाफिजके मकान तक नहीं पहुँचा था। हाफिजकी स्त्रीने समझा कि वह शायद मेरे स्वामी और पुत्रकी लाशोंको अपने साथ लेता आवेगा। यही सोच और बच्चोंको कोठरीमें जाकर उसने हाफिजके अच्छे अच्छे कपड़ोंको बाहर निकालना आरम्भ किया। उसने अपने पतिकी प्यारी तलवारको भी बाहर निकाला। उसका विचार इन सब चीजोंको बहुमूल्य बर्तनोंमें रखकर हाफिजकी लाशके साथ कबरमें दफन करनेका था।

इसी समय हाफिजके छोटे लड़केको साथमें लिये हुए फैजुल्ला आ पहुँचा। हाफिजकी स्त्री स्वामीका शरीर आलिङ्गन करनेके लिये जल्दी जल्दी मकानके बाहर आई। पतिकी प्यारी तलवार अभीतक उसके हाथमें थी।

पर हाफिजका मृतशरीर न देखकर क्रोधके साथ बिगड़कर उसने फैजुल्लासे कहा—" काम्बख्त, तू अपने प्यारे बापको बिलकुल भूल गया? क्या उनकी किस्मतमें यही लिखा था कि उनकी लाशको जङ्गलके जानवर और चील खावें खायें? अफसोस—सद अफसोस।"

मारे लज्जा और अपमानके फैजुल्लाने सिर नीचा कर लिया। उसकी दोनों आंखोंसे आंसू बहने लगे। आखिर रुंधे हुए गलेसे उसने कहा—" अम्मा, इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं। अपा साथ

बने खुदही फर्माया था कि यहांसे जाकर औरतोंकी इज्जत बचाओ वर्ना मेरी तो यही ख्वाहिश थी कि ताजोस्त अपने मुल्कके लिये लड़कर अखीरमें उनका साथ देता। सिर्फ तुम सबकी इज्जत-काही खयाल था जिससे यह काबिल नफरत जिन्दगी रखनी पड़ी। खैर माफ करो।"

फैजुल्लाकी इस बातसे हाफिजकी स्त्रीका क्रोध और भी बढ़ गया। उसने तड़पकर कहा—"क्या रुहेली औरतें भागकर अपनी इज्जत बचावेंगी? नहीं नहीं,—बहादुर रुहेले लड़ाईमें मारे गये हैं पर उनको तलवारें अभीतक उनके मकानोंमें मौजूद हैं। देख यह तलवार—यह चमकीली तलवार—क्या रुहेली औरतोंकी इज्जत बचानेके काबिल नहीं है? जिसने बहादुर रुहेलोंके हाथमें रहकर दुश्मनोंका सर काटा और अभीतक हमारी इज्जतका बचाव किया है वह क्या आज इन कम्बख्तोंके हाथसे हमें नापाकीज होने देगी—तकलीफ उठाने देगी? भागनेका क्या काम है? तेज तलवारोंकी मददसे हमलोग अभी अपने मालिकों और बच्चोंसे जा मिलेंगे। तू इनसान नहीं है, हैवान है। लड़ाईके मैदानसे पीठ दिखाकर तूने बहादुर अलीमोहम्मदके नाममें धब्बा लगाया है। अभी फिर वहां जा और वजीरका सर काटकर इस धब्बेकी गन्दगीको दूर कर।"

"अलीमोहम्मदके नाममें धब्बा लगाया" यह बात हाफिजकी स्त्रीके मुँहसे निकलनेके साथही फैजल्लाने अपनी कमरसे तलवार निकालकर आत्महत्या करनी चाही। यह देखकर पीछेसे हा

फिजके छोटे लड़केने और आगेसे हाफिजकी स्त्रीने उसे दोनों हाथोंसे पकड़ लिया।

फैजुलाको इस तरह आत्महत्या करनेके लिये तैयार देख हाफिजपत्नीके हृदयमें मातृस्नेह उत्पन्न हुआ। उसने अपनी बातोंका ढङ्ग बदल दिया और खींचकर उसे गोदमें बैठा लिया। इस समय दोनोंहीकी आखोंसे आँसू बह रहे थे।

दिनभर संग्रामक्षेत्रमें युद्ध जारी रहनेके कारण फैजुल्लाका चेहरा सूख गया था। हाफिजकी लड़कीने अपने भाई और फैजुल्ला को बढ़िया शर्बत पिलाया और अपने हाथोंसे उनके खूनमें रंगे हुए शरीरको साफ किया।

युद्धमें जो सब रुहेले वीर मारे गये थे उनका नाम लेनेके समय हाफिज रहमतकी लड़कीने मुहब्बतखांका भी नाम लिया। मुहब्बतकी मृत्युकी बात सुननेसे स्वर्णप्रतिमा हाफिज कुमारीके मुखपर दुःख और कष्टके चिन्ह दिखाई देने लगे।

कुछ देरके बाद फैजुल्लाने कसबेकी सब स्त्रियोंसे भागनेके लिये तैयार होनेको कहा। बहुतसी औरतें भागनेका उद्योग करने लगीं पर हाफिजकी स्त्रीने स्वामीकी क्रिया समाप्त किये बिना रुहेलखण्ड छोड़नेसे बिलकुल इनकार किया। तब फैजुल्ला लाचार होकर हजारों दूसरी औरतोंके साथ रुहेलखण्डसे भाग कर पहाड़ोंमें चला गया। हाफिजकी स्त्रीको पहाड़पर जानेके लिये उसके छोटे लड़केको वहीं छोड़ता गया। माताकी आज्ञाके अनुसार हाफिजका कनिष्ठ पुत्र पिताकी लाश लानेके लिये

युद्धक्षेत्रकी ओर चला। पर रास्तेमें शुजाउद्दौलाके साथियोंने उसे पकड़ लिया। सो, हाफिजकी लाश वहीं संग्रामक्षेत्रमें ही पड़ी रही।

पांचवां परिच्छेद।

लुटेरापन।

युद्ध समाप्त होनेके बाद नवाब शुजाउद्दौलाने अङ्गरेजोंको रुहेलखण्डके सब गावोंके लूट लेनेको आज्ञा दी। एक एक दल सेना एक एक गावमें पहुँचकर क्या वणिक क्या कृषक, क्या जमींदार, क्या रोजगारी, सबके मकानोंको लूटने लगी। गांवकी औरतोंके कान नाककी बालियां छीनकर उनके गहने कपड़े उतरवाने लगी। बहुतसी लज्जावती गृहस्थ स्त्रियां बिलकुल नङ्गी करके नवाबके खेमेतक पहुँचाई गईं। संसारके इतिहासमें ऐसा क्रूर आचरण बहुत कम देखनेमें आता है। लगातार चार पांच दिनतक अपने सिपाहियोंको ऐसाही बुरा व्यवहार करते देखकर जेनरल चेम्पियनके हृदयमें भी दया आई। उन्होंने यह वाहियात काम रोकनेके लिये वारेन हेष्टिन्सके पास पत्र लिखकर उनसे अनुमति मांगी। परन्तु वारेन हेष्टिन्सने उनके पत्रके उत्तरमें यह लिखा कि "अङ्गरेजी सेनाको नवाब शुजाउद्दौलाकी आज्ञाके अनुसारही काम करना होगा। शुजाउद्दौला जो कुछ करनेको कहें वह उसको अवश्य करना पड़ेगा। तुमको इस विषयमें रोकटोक करनेका कोई अधिकार नहीं है।"

जेनरल चेम्पियन हेष्टिन्सका यह पत्र पाकर चुप हो रहे।

इधर अङ्गरेजी सिपाही युद्धके बाद प्राय एक मासतक गांवोंको लूटते रहे। सैकड़ों स्त्रियोंका सतीत्व नष्ट हुआ। असंख्य रईसोंकी रमणियोंने छातीमें खञ्जर मारकर आपही अपनी जान देदी।

लोगोंके द्वारा शुजाउद्दौलाने सुना कि हाफिज रहमतकी स्त्री और कन्या अभीतक अपने मकानमेंही ठहरी हुई है। सो उसने तुरन्त उनको पकड़ लानेके लिये एक दल सेना भेज दी।

जो सब अङ्गरेज और देशी सिपाही गांवोंके लूटनेके लिये भेजे गये थे उनमें अमरसिंह नामक भी एक आदमी था। रिसालेके लोग कहते थे कि अमरसिंह सूबेदार निहालसिंहका लड़का है। निहालसिंहने बहुत दिनों तक अङ्गरेजोंके अधीन सूबेदारी करके बक्सरकी लड़ाईमें अपना प्राण गँवाया था। जब वह जीवित था तभी अमरसिंहने योद्धाओंमें शामिल होकर बक्सरके युद्धमें बड़ी बहादुरी दिखाई थी। रेजिमेंट (अर्थात् रिसाले) के प्राय सभी लोग अमरसिंहको बहुत मानते थे।

गांव लूटनेके समय जिस जिस गांवमें अमरसिंह उपस्थित था उन सब गांवोंकी स्त्रियोंके भागनेका सुभीता उसने कर दिया था। वह प्राण देनेके लिये तैयार हो जाता पर अपने सामने किसी सिपाहीको किसी औरतका शरीर नहीं छूने देता। परन्तु जिन गांवोंको लूटनेके लिये अङ्गरेज और दूसरे देशी सिपाही भेजे गये थे उन्होंने वहांकी निर्बल असहाय स्त्रियोंके ऊपर बड़ा अत्याचार किया।

हाफिज रहमतखांकी स्त्री और कन्याकी गिरफ्तारीके लिये

जो कई एक सैनिक पुरुष भेजे गये थे उनमें लेफटेनैण्ट टामसन और इनसाइन मैलविल आदि चार पांच अङ्गरेज तथा अमरसिंह वगैरह पचास देशी सिपाही थे। यहांपर अमरसिंहने हाफिजकी स्त्री और कन्याके भगानेका सुयोग नहीं पाया। एक तो स्वयं नवाब ने उनकी गिरफ्तारीके लिये स्पष्ट आज्ञा दी थी दूसरे इनसाइन मैलविल और लेफटेनैण्ट टामसनके ऊपर इस यात्राका सब भार डाला गया था। फिर यह कब सम्भव था कि वे अमरसिंह जैसे एक हिन्दुस्थानीकी बात मानकर उनको भाग जाने देते?

सिपाहियोंने हाफिजके मकानपर पहुँचकर देखा कि बाहरके हिस्से बिलकुल खाली पड़े हैं। क्योंकि जनाने महलके जो दो चार नौकर अभीतक रुके हुए थे वे भी फौजके आनेकी खबर सुनकर भाग गये थे। सिपाहियोंने दर्वाजा तोड़कर अन्दर घुसना आरम्भ किया। हाफिजकी स्त्रीने सिपाहियोंको अन्दर आते देखकर समझ लिया कि ये सब हमो दोनोंके पकड़नेके लिये यहां आये हैं। सो भीतरके आगेवाले दो तीन कमरोंका दर्वाजा बन्द करके वह सबके पीछेकी कोठरीमें अपनी कन्याको गोदमें लिये हुए जा बैठी। माता और कन्या दोनोंकी आँखोंसे आँसू बह रहे थे। थोड़ी देरके बाद हाफिजकी स्त्री एक दूसरी कोठरीमें गई और वहांसे दो तेज छूरियाँ लेकर फिर इस कमरेमें लौट आई। इन छूरियोंमेंसे एकको उसने अपने वामोंमें रखा और दूसरीको सुन्दरी हाफिज कुमारीको जुल्फे सियहफामके अन्दर छिपाया। माका मतलब लड़कीकी समझमें नहीं आया। उसने सिसकती हुए पूछा—

"अम्माजान, बालोंके अन्दर छुरियाँ क्यों छिपाती हो?" हाफिजकी स्त्रीने कहा "बेटी यही मेरी आखिरी वसीयत है।"

अब भी माका अभिप्राय हाफिज कुमारीकी समझमें नहीं आया। यद्यपि उसकी उमर सोलह वर्षसे कम नहीं थी तौभी विपद किसे कहती हैं यह वह नहीं जानती थी। इसलिये चुप होकर वह माके मुखकी ओर देखने लगी।

उस समय हाफिजकी स्त्रीने अपने उमड़ते हुए शोकके वेगको रोककर कहा—"बेटा, हर वक्त एकसा नहीं बीतता। एक वह वक्त था जब तुम्हारी यह कम्बख्त मा छाती पर सुलाके तुम्हें दूध पिलाती थी, तुम्हें देख देखकर खुश होती थी और तुम्हारी बलायें लेती थी। मगर आज तुम्हारी वही मा तुमसे खुदकुशी कराना चाहती है। बेटा घबराओ नहीं। यही जहरीली छुरी तुम्हारी इज्जत बचायेगी। यही तुम्हारी अम्माकी आखिरी वसीयत है, आखिरी मदद है। जाओ खुदा हाफिज।"

कन्याने कहा—"तो अम्मा, आओ अभी हमलोग छुरी मारकर अपनी जान देदें। बालोंके अन्दर छिपा रखनेकी क्या ज़रूरत है?"

हाफिजकी स्त्री। यहीं क्यों जान देंगी? क्या हमलोग इनसान नहीं हैं? इनसानकी तरह जान देंगे। हाफिजकी औरत कभी बिल्लियोंकी मौत नहीं मरना चाहती। इस जहरीली छुरीसे पहले दुश्मनोंका खून करना होगा। बगैर दुश्मनका खून किये इस दुनियासे चला जाना ठीक नहीं। चाहे तुम्हारे हाथसे हो या

मेरे हाथसे—उस नालायक वजीरको मौत जरूर होगी। खबरदार, नवाब शुजाउद्दौलाको मलिकुलमौतके सुपुर्द किये बगैर भूलकर भी खुदकुशी न करना।

कन्या। दुश्मनकी जिन्दगीका खातमा क्योंकर किया जायगा?

हफिजकी स्त्री। जिस वक्त वह नालायक जाहिरी मुहब्बत दिखाकर प्यारी बेटीकी इज्जत बिगाड़ना चाहेगा उसी वक्त यह जहरीली छुरी नागिन बनकर उसके दिलमें डस लेगी। बेटा, याद रखना—जान देकर भी इज्जतका बचाव करना होगा। भूलना नहीं—तुम हाफिजकी लड़की हो, हाफिजके पाक खून की बनी हो।

यह कहकर माताने बारम्बार कन्याका मुख चूमना आरम्भ किया। कन्या माकी देख देखकर रोने लगी। माने फिर साहसपूर्वक कहा—

"डर किस बातका है? तुम्हारे वालिद्ने अपनी रिआया और अल्तनतके लिये जान दी है। वे जरूर बिहिश्तमें जायेंगे और बड़ा ऐशो आराम पायेंगे। जबतको हूरें उन्हें अपना जलवा दिखादिखाकर खुश करेंगी। हम सब भी दो चार दिनमें यह दुनियवी बखेड़ा पाक करके उनसे जा मिलेंगे। तुम बेखौफ-"

हाफिजपत्नीकी बात समाप्त होते न होतेही सिपाहियोंने द्वार तोड़कर अन्दर प्रवेश किया। हाथमें तलवार लिये हुए हाफिजकी स्त्रीने उन सबको पुकारकर कहा—"खबरदार, हमारे

बदनसे हाथ न लगाना। अगर हमारे लेनेको आये हो तो हम अभी तुम्हारे साथ चलनेको तैयार हैं।"

हाफिजको स्त्रीने रुहेली भाषामें ये बातें कही थीं। इसमा इन मेलविल और लेफटेनेण्ट टामसनने बिलकुल उसका मतलब नहीं समझा।

उस जगह अमरसिंह और जमादार आबिदअली भी उपस्थित थे। इनमें आबिदअलीने अच्छी तरह उन बातोंको समझ लिया और अमरसिंहने भी कुछ कुछ समझा। आखिर आबिदने हाफिजकी स्त्रीका मतलब अपने अङ्गरेज अफसरोंको समझा दिया।

लेफटेनेण्ट टामसनने आबिदअलीकी बातोंकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया। उसने अपने साथी मेलविलसे कहा—

"Dear Melville, this old woman is setting her cap for you She is a pretty old girl You may accept her offer if you please"—

प्रिय मेलविल, तुम्हारे ऊपर इस बुढ्ढीकी दृष्टि पड़ी है। यह बड़ी खूबसूरत बुढ़िया है। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम इसे अपने लिये ले सकते हो।"

टामसनकी बात सुनकर मेलविलने आपही आप कहा—"टामसन बड़ा दुष्ट आदमी है। शायद मुझे इस बुढ्ढीको सुपुर्द कर आप इस सुन्दरी युवतीको लेगा। पर उसकी यह आशा वृथा है। नवाब साहबने स्पष्ट आज्ञा दी है कि हाफिज रहमतको और कन्याको एक दूसरेके सामने उपस्थित करना होगा।

इसके सिवा हुक्म हुआ है कि इनको पाल्कीके अन्दर बिठाकर लाना। शायद नवाब साहब स्वय इनको रखेंगे।"—मनही मन यह सब सोचकर उसने टामसनसे कहा—

"Dear Thompson, these prizes are not for us, they are intended for the Nawab himself"

प्रिय टामसन, यह पुरस्कार हमलोगोंके लिये नहीं है। स्वय नवाब साहब इनको अपने पास रखेंगे।

टामसन। Nawab has already in his seraglio three thousands and three hundred women Does he want more? नवाबके महलके अन्दर इस समय तीन हजार तीन सौ स्त्रिया हैं। क्या वे और चाहते हैं?

मैलविल। Thompson, what a fool you must be? The Qoran, the religious book of the Nawab, says that a man must have as many women as there are stars in the sky टामसन, तुम कैसे नासमझ हो। नवाबकी धर्मपुस्तक कुरान में लिखा है कि आकाशमें जितने सितारे है पुरुषको उतनी स्त्रियोंके साथ अवश्य विवाह करना चाहिये।

टामसन। "But the exact number of stars has not yet been ascertained The best astronomer of our days have failed to ascertain it How is the Nawab to know the exact number he requires according to the Qoran? किन्तु आकाशमें कितने तारे हैं इसका अभी तक निश्चय नहीं हुआ है। वर्त्तमान समयके बड़े बड़े ज्योतिषी पण्डित इस बातका निर्णय

नहीं कर सके है। फिर नवाबको यह क्योंकर मालूम होगा कि अपनी धर्म्म पुस्तक कुरानके अनुसार उन्हें कितनी स्त्रियां रखनी पड़ेंगी ?

मेलविल। So the best Persian scholar, our Governor Warren Hastings, has not yet been able to ascertain the exact number of women whom Nawab MeerJaffer had kept in his seraglio In both the cases the number must be without end हमारे गवर्नर वारेन हेष्टिंग्स बड़े भारी फार सीदां हैं। पर नवाब मीर जाफरकी कितनी बेगमें थीं इसका वे पास तक निर्णय नहीं कर सके। आकाशके सितारोंकी संख्या कोई नहीं जान सका है। नवाबोंकी बेगमोंकी गिनतीका पता भी कोई नहीं पा सकेगा।

टामसन। Dear Melville, I do not believe what you say is written in the Qoran You have never read the Qoran, Have you ? प्यारे मेलविल, मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम जो कुछ कहते हो वह कुरानमें लिखा है। तुमने तो कभी कुरानको पढ़ाही नहीं। या पढ़ा है ?

मेलविल। That drummer boy, Hassanali Khansama's son, told me it is written in the Qoran that a man must have as many women as there are stars in the sky My Khansama Hassanali must be a great Arabic scholar He says his namaz six times a day, and his son, the drummer boy, must have given a very faithful account of the Qoran

मेरे खानसामा हसनअलीके लड़के अर्थात् उस ताशेवाले छोकरे ने मुझसे कहा था "कुरानमें लिखा है कि आसमानमें जितने सितारे हैं मर्दको उतनी औरतोंके साथ निकाह पढ़वाना चाहिये।" हसनअली अवश्य बड़ा भारी अरबीदां होगा। उसके लड़केने भी जरूरही कुरानकी सभी बातें मुझसे कहीं होंगी।

टामसन। Does that drummer boy teach you the Qoran? Do you often read it with him? वह छोकरा क्या तुम्हें कुरान पढ़ाता है? क्या तुम उसके साथ बैठकर कुरान पढ़ा करती हो?

मेलविल। I never bother my head with the Qoran Yesterday when we captured nearly thirty Rohilla women and dragged them naked to the Nawab' scamp sthe Nawab made them over to the soldiers, saying that that he has already kept one hundred women, and at present he wanted no more Out of those thirty women three were brought to me by that drummer boy I told him I would not keep more than one The boy entreated me to keep all the three, and said, "Huzoor, keep them all It is written in the Qoran that a man must have as many women as there are stars in the sky"—मैं कभी कुरान नहीं पढ़ता। यह सब मुझे अच्छा नहीं लगता। कलकी बात है कि हमलोग तीस रुहेली औरतोंको पकड़ कर बिलकुल नङ्गी नवाबके हुजूरमें लेगये। नवाब साहबने फर्माया कि "मेरे पास एकसौ बेगमें मौजूद हैं इस वक्त मैं और नहीं चाहता।" यह

कह कर उन्होंने उन तीसों स्त्रियोंको सिपाहियोंके सुपर्द कर दिया। उन स्त्रियोंमेंसे तीनको वह तांगेवाला छोकरा मेरे पास लाया था। मैंने उससे कहा कि मैं एकसे अधिक नहीं रखूंगा। तब वह बोला—"हुजूर, तीनोंहीको रख लिजिये। कुरानमें लिखा है कि आसमानमें जितने सितारे हैं सबको उतनी ही स्त्रोंके साथ ब्याह करना चाहिये"।

टामसन। Then the Quran must be an excellent book an extraordinary book Fling away the Bible Down with the Bible In this hot climate we must all follow the Quran to its very letter—तब तो कुरान बहुत अच्छी पुस्तक होगी। दूर हो बाइबल। चूल्हेमें जाय बाइबल। इस गर्म देशमें हम सबको कुरानमें लिखे हुए धर्मको मानना चाहिये।

जिस समय टामसन और मैतविनमें ऊपर लिखी बातें हो रही थीं उस समय दूसरी ओर कुछ दूसराही दृश्य दिखाई दे रहा था। यहां दूसरोंही तरहकी बातें हो रही थीं।

जिस कमरेमें हाकिमको यो और कन्या बैठी थीं उसके अन्दर लेफटेनेण्ट टामसन, इनसाइन मैतविन आदिवको सरदार और असरसिंह, यही चार आदमी घुसे थे। येफटे लेण्ट टामलिन और इन्फानपलो आदि दस बारह आदमी बाहर बाहरको चौपमूठ रहे थे। इनके सिवा और और सिपाही यानी सम्राक भी रहे थे यह इधर उधर मदानमें टहल रहे थे।

जमादार आबिदअली भी हाफिजको खोके कमरेमें प्रवेश कर बहुत देर तक यहां नहीं रहा। लेफटेनेण्ट टामसनको आज्ञा पाकर वह पालकी और कहार लेनेके लिये बाहर चला गया। लेफटेनेण्ट टामसन, मेलविल और अमरसिंहही उस जगह ठहरे रहे।

हम पहलेही लिख चुके हैं कि किसीको स्त्रियोंके ऊपर अत्याचार करते देखकर अमरसिंह बहुत दु खित होता था। जब उसने हाफिजकी खोके कमरेमें प्रवेश किया तब उसकी कन्याके सरल और पवित्र मुखको देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। वह बहुत देर तक चुपचाप कठपुतलीको तरह एक दृष्टिसे उसको ओर देखता रहा। फिर मनही मन सोचने लगा— "जान पडता है कि ऐसी सुन्दरी युवती इस संसारमें और कहीं नहीं होगी।" पर साथही थोडीही देरके बाद उसपर पडने वाली विपत्तिका ध्यान आजानेसे उसे बहुत दु ख हुआ। ऐसी पवित्र मूर्त्ति नालायक कामी नवाब शुजाउद्दौलाके हाथोंमें प डेगी, यह चिन्ता उसे एकबारही असहनीय जान पडी। उस समय अमरसिंह बारम्बार आपही प्रश्न करने लगा।—"सच मुचही क्या संसारमें परमेश्वर नहीं है? यह क्योंकर कहा जाय कि है? यदि वह होता तो ऐसी कोमलाङ्गी सुन्दरीको इतनी बुरी अवस्थामें न छोडता। इसका पवित्र मुख देखनेसे मनुष्यके हृदयमें इसके प्रति स्नेह और दयाका सञ्चार होता है, इसे नरपि शाचोंके अपवित्र स्पर्शसे बचानेके लिये प्राण देनेको इच्छा होती है। फिर ईश्वरने दयावान् होकर भी इसे इस तरह क्यों छोड

दिया ? शायद इस संसारमें ईश्वर है पर वह दयावान् नहीं। वह सर्वशक्तिमान् अवश्य है। यदि उसमें सब कामोंके करने की शक्ति न होती तो वह ऐसी देवीके तुल्य रूपवतीको कभी न बना सकता। पर क्या वह बहुत निठुर है ? शास्त्रकारोंने तो उसे बहुत दयावान् कहा है। तो क्या शास्त्र झूठा है ? नहीं, शास्त्र कभी झूठा नहीं हो सकता। व्यासनिवास पण्डितने जो कुछ कहा है वह बहुत ठीक है। मनुष्य मनुष्यकी रक्षा करें इस अभिप्रायसे ईश्वरने हरएक मनुष्यके हृदयमें दया और प्रेम उत्पन्न किया है। विपत्तिसे मनुष्यके बचानेका उपाय उसने उसने पहलेहीसे स्थिर कर रखा है। फिर उसे दोष क्यों दें ? जो परमेश्वर बच्चा पैदा होनेसे पहलेही माताके स्तनमें दूध दे देता है वह निठुर कैसे कहा जा सकता है ? मनुष्य विपत्तिमें पड़े तो उसके साथी उसका उद्धार करें यही ईश्वरका उद्देश्य है। परन्तु इस संसारमें मनुष्य एक दूसरेकी सहायता प्राय नहीं करते। प्राय सभी अपने कर्तव्यका पालन करनेसे चूकते हैं इसलिये अन्तमें उनको अपने किये हुए कर्मोंका फल भोगना पड़ता है।"

अमरसिंह एकबारही आपेसे बाहर होकर ये सब बातें सोच रहा था। लेफटेनेण्ट टामसन और मिलविल उसी तरह ज़ुबानकी बातें कर रहे थे। कभी कभी जोशमें आकर वे विचित्र शब्द करने लगते और बड़े जोरसे बोल उठते थे। हाकिमकी लड़की टामसन और मिलविलको ज़ोर ज़ोरसे बातें करते देखकर कुछ डरी। वे अङ्गरेजीमें बातें करते थे इसलिये उनकी बातोंका मतलब

समझनेकी शक्ति तो उसमें नहीं थी, पर उनके चेहरे मोहरे और जोश खरोशको देखकर वह कांपने लगी और सरककर अपनी माके बहुत पास चली गई। हाफिजकी स्त्री बिलकुल निडर थी। कन्याको कांपते देखकर उसने धीरेसे कहा—"डर किस बात का है। मौत सब तरद्दुदातको रफा कर देगी। बहुत जल्द हम लोग इन तकलीफोंसे रिहा होंगे। मौतकी दवा तो हमलोगोंके पास मौजूदही है।"

बुढ़ियाकी यह बात टामसन या मेलविल किसीने नहीं सुनी। पर अमरसिंहके कानोंतक दो चार शब्द पहुँच गये। अमरसिंहका जन्म ऐसे देशमें हुआ था जहांकी भाषा बहुत सीधी सादी थी। इसीलिये वह रुहेलखण्डकी बोलचाल खूब अच्छी तरह नहीं समझता था। पर हाफिजकी स्त्रीके मुँहसे निकली हुई बातका कुछ अंश अनायासही उसकी समझमें आ गया।

"मौत सब तरद्दुदातको रफा कर देगी"—इस बातसे अमर सिंहकी चिन्ता टूट गई। उसका चित्त जो कहांका कहां दौड़ गया था ठिकाने पर आ गया।

उस समय वह आपही आप सोचने लगा—"यह बात ठीक है। मृत्यु संसारके सब कष्टों सब यन्त्रणाओंको दूर कर सकती है। फिर मैं क्यों न मर जाऊ? इस अनित्य शरीरको मैं इस स्वर्गीया सुन्दरी हाफिज कुमारीके उद्धारके लिये क्यों न देदूं? यदि ऐसा हो तो मृत्यु मेरे सब कष्टों और सब यन्त्रणाओंको दूर कर देगी। इसके सिवा जो अनित्य शरीर रोगी होकर अभी अभी मुर्दा हो सकता है, जिसको क्षण भरके लिये भी

रक्षा करने शक्ति मुझमें नहीं है, उसी सुद्र देहके बदलेमें एक बड़ा उपकारी काम हो जायगा। मैं इन राक्षसोंके हाथसे इन बेचारी स्त्रियोंकी जान अवश्य बचाऊंगा। प्रतिज्ञा करता हूं कि इनके लिये अपना प्राण अवश्य दूंगा।

"मेरे इस जीवनके रखनेका कोई फल नहीं है। मेरा हृदय रात दिन शोकसे जला करता है। इस संसारमें राज्यपद पाकर भी मैं सुखी नहीं हो सकता। पिता माता का शोक, स्त्रीका शोक, बहिनका शोक—सदा मुझे दुःख दिया करता है। सिवा इसके, जिसने पिताके समान बनकर मेरे जीवनकी रक्षा की—यहां तक बड़ा आदरके साथ मेरा पालन किया, जिसके यहां रहकर मैंने तलवार पकड़ना सीखा, वह भी उस साल बकसरके युद्धमें मारा गया। ऐसी अवस्थामें मेरा यह जीवन रखना वृथा है। किसी अच्छे काममें इसे उत्सर्ग कर देनेसे अन्तमें सद्गति मिलेगी। हाय—हाय! ऐसा कौन दिन होगा जब मुझे अपनी प्यारी माताके दर्शन प्राप्त होंगे? यदि एकबार भी उसे देख पाता तो पांव पकड़ कर कहता मा, मेरे इस अभागी पुत्रने डरके मारे उन दुष्टोंके हाथोंसे तेरी रक्षा करनेकी भी चेष्टा नहीं की!" मनही मन इन बातोंको सोचता सोचता अमरसिंह पागलकी तरह एकबारही 'मा—मा' चिल्ला उठा।

हाफिजकी स्त्रीने सिर उठाकर आश्चर्यके साथ उसकी ओर देखा। चारों चार होतेही दोनोंके हृदयमें एक दूसरेके प्रति भाव उत्पन्न हुआ। हाफिजकी स्त्रीके मनमें यह बात जम गई कि अमरसिंह शत्रु नहीं मित्र हैं।

अमरसिंह फिर अपने तईं सम्हालकर सोचने लगा—"ठीक है, केवल मृत्युही मुझे सुखी कर सकती है। विशेषकर इन निराश्रया स्त्रियोंके बचावके निमित्त प्राण देनेसे मृत्यु मेरे लिये स्वर्गका द्वार अवश्य खोल देगी। इससे मेरे पुराने पापका भी प्रायश्चित्त हो जायगा।

"पर इनको क्योंकर बचाऊं? पचास आदमी इनके पकड़नेके लिये यहां आये हैं। इनमेंसे मेरे सिवा सभी इनको नवाब शुजाउद्दौलाके पास ले जानकी चेष्टा करेंगे। उनचास आदमियोंसे लड़कर भी क्या मैं इनका बचाव कर सकूंगा? क्यों नहीं? पितासे जैसी शिक्षा प्राप्त की है उससे इन दो चार अङ्गरेजोंको मैं बातकी बातमें टुकड़े टुकड़े करके फेंक दे सकता हूं। परन्तु ऐसा करके भी इनको नहीं बचा सकूंगा। ये स्त्रियाँ हैं और अच्छे कुलकी हैं। मेरे साथ साथ पैदल नहीं चल सकेंगी। इस समय देशमें जगह जगह नवाबी और अङ्गरेजी सेनाएं घूम रही हैं। इन पचास सिपाहियोंको परास्त करने पर भी कोई लाभ नहीं होगा। बन्दूकों और तोपोंकी सहायतासे दस बारह आदमी अनायासही मुझे मार डालेंगे और इनको पकड़ लेंगे। तोपें और बन्दूकेंही अङ्गरेजोंकी एकमात्र ताकत और सहायक हैं। यदि ये लोग तलवारों या बर्छियोंके भरोसे लड़ते तो एकबार अवश्य इनका सामना करता।

"पर यहां ऐसी चेष्टा करना वृथा है। इससे केवल मेरा प्राण जायगा, इन स्त्रियोंका कोई उपकार नहीं हो सकेगा। उनचास आदमियोंके हाथसे अकेले इनको बचाकर निकल जाना

मुझसे चलतचला करेगा? मेरा रहस्य खोलकर क्या वह मेरे प्राणके विनाश करनेकी चेष्टा करेगा? छत्रसिंह लालची नहीं है। वह कभी मुझसे बेवफा नहीं होगा।'

यह सोच और कमरेसे बाहर आकर अमरसिंह छत्रसिंहको तलाश करने लगा। जो सिपाही उसके साथ आये थे वे इस समय हाफिजका मकान लूटनेमें लगे हुए थे। दूसरी किसी बातकी सुधि उनको नहीं थी। पर छत्रसिंह जिसकी बात अमरसिंह ऊपर कह चुका है वास्तवमें लोभी नहीं था। उसमें एक बुरी आदत अवश्य थी वह यह कि वह जरा गांजा पीनेका आदी होगया था। इस समय भी मकानके बाहर एक किनारे बैठकर वह गांजेका दम लगा रहा था। बहुत देरके बाद गांजा मिलने से वह इस समय बहुत प्रसन्न था।

अमरसिंहने छत्रसिंहके पीछे जाकर धीरेसे उसकी पीठ पर हाथ रखा। छत्रसिंह गांजेके नशेमें चूर था। चौंककर उसने देखा कि अमरसिंह उसकी पीठपर हाथ रखे खड़ा है। अमरसिंहको छत्रसिंह अपने प्राणसे भी अधिक चाहता था, उसे अपना छोटा भाई समझता था।

अमरसिंहने कहा—"भाई साहब, तुमसे कोई खास बात कहनेके लिये इस समय तुम्हारे पास आया हूं। पर कसम खाओ कि यह बात किसीसे कहोगे तो नहीं?"

छत्रसिंह। भाई तुमसे भी मुझे प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी? तुमने एकबार मेरी जान बचाई है। मैं तुम्हारे लिये प्राण तक दे सकता हूं।

अमरसिंह। खैर, तुमने हाफिज रहमतखांकी स्त्री और कन्या को देखा है या नहीं? अन्दर वे सब बन्द हैं। लेफटेनेण्ट टामसन और मेकविल उनके पास बैठे हैं।

छत्रसिंह। छेट पहरमें एकबार भी गांजा नहीं मिला था। फिर क्या इसको छोड़कर मैं उन बुड्ढोंको देखने जाता? तुम तो विचित्र आदमी हो। मैं क्यों वहां जाता?

अमरसिंह। हाफिजकी लड़कीकी तरह सुन्दरी मैंने आज तक कहीं नहीं देखी। उसका मुख मानो धर्म भावसे भरा है। उसे देखनेसे जान पड़ता है कि उसकी आत्मा बहुत अच्छी और उसका हृदय बहुत पवित्र होगा।

छत्रसिंह। नवाबकी बेगमें और नवाबजादियां सुबह शाम दोनों वक्त गर्म जलसे स्नान करती हैं। फिर इतने पर भी वे पवित्र न होंगी?

अमरसिंह। भाई हाफिजकी लड़कीको देखकर उसको मा कह कर पुकारनेकी मेरी इच्छा होती है। उसका कन्याका हृदय भी दया और धर्मभावसे भरा है।

रूपसिंह। बड़े लोगोंकी लड़कियोंके पास बहुत रुपया पैसा रहता है। वे अभावग्रस्तों पर दया रखती हैं।

अमरसिंह। भाई साहब, हाफिजकी लड़कीको अनसूया देवकन्या कहना बनता है। पहलीही बार उसे देखकर मेरे हृदय में उसके प्रति भाई बहिनका प्रेम उदय हुआ। किन्तु साहबलोग ऐसी रूपवती बालाको कामी नरपिशाच शुजाउद्दौलाके हाथोंमें सौंपेंगे? इसको नवाबके हाथसे बचानेका क्या कोई उपाय नहीं है?

छत्रसिंह। ऐसी बात कभी मुंहसे भी न निकालना नहीं तो तुम्हारा जीना भी कठिन हो जायगा। एक तो पहलेहीसे तुम्हारी बदनामी हो रही है। साले इरफान अलीऔर मोहम्मद इकरामने नवाबके पास जाकर कहा है कि तुमने रुपया लेकर बहुतसी रुहेली स्त्रियोंको छोड़ दिया और बहुतोंके भागनेका सुभीता कर दिया है। नवाब साहब तुमको पहचानते नहीं इसीसे तुम बचे हो, पर उन्होंने जेनरल चेम्पियनको तुमको बरखास्त कर देनेका हुक्म दे दिया है। तुम निहालसिंहके पुत्र हो। तुम्हारी जैसी बहादुरी है उससे तुम कभी सूबेदार होगये होते, पर अपनी चालसे खराब हो रहे हो।

अमरसिंह। मैं सूबेदारी नहीं चाहता। यदि मेरा नाम काट दिया जायगा तो मैं अभी चला जाऊंगा, पर तुमको इस समय मेरा एक काम अवश्य करना पड़ेगा।

छत्रसिंहने जोरसे गांजेका एक दम खींचकर कहा—"भाई, तुम्हारा एक काम क्यों दस काम करूंगा। यह प्राण तुम्हारे लिये दूंगा। जो थोड़ी बहुत पूंजी है वह भी मरनेके समय तुम्हें दे जाऊंगा। तुमको छोड़ इस जगत्में मेरा और कौन है?—

"नहीं है उज्र कुछ करनेमें मुझको।
अहे तनसे जुदा सर भी कराओ॥"

अमरसिंह। भाई साहब, मैं हाकिनकी स्त्री और कन्यासे साथ बातें करना चाहता हूं। पर वे मेरी बोली अच्छी तरह नहीं समझ सकती। मैं भी उनकी बातचीत भली भांति नहीं समझ सकूंगा। मैं चाहता हूं कि मैं जो कुछ कहूं वह तुम उनको समझा दो और वे मेरी बातके जवाबमें जो कहें वह मुझे बतला दो।

रूपसिंह। तुम उनके साथ किस विषयकी बातें करनी चाहते हो?

अमरसिंह। यहां उनके भागनेका सुभीता कर देनेका कोई उपाय नहीं है। फैजाबादमें नवाबके पास उनको उपस्थित करा देनेके बाद किसी तरह उनके भागनेका उपाय कर दिया जा सकेगा। तुमको यही सब बातें उनको समझानी होंगी।

रूपसिंह। भई, तुम अभी नासमझ नहीं हो। ऐसे दुःसाहस के काममें पड़कर अपनी जान गँवाओगे। चुप रहो, ऐसे कामों में हाथ नहीं डालना चाहिये।

अमरसिंह। मैं अपना प्राण देकर भी उनके साथ उपकार करूंगा। जैसे होगा उनके धर्मकी रक्षा करनेकी चेष्टा करूंगा। यदि शुजाउद्दौला उनका धर्म नष्ट करना चाहेगा तो मैं अवश्य उसकी जान लूंगा।

रूपसिंह। तुम पागल होगये हो, धर्म धर्म चिल्लाते हो। कहीं मुसलमानोंमें भी धर्मका विचार होता है? एक एक जो सात सात बार निकाह करते हैं। फिर उनमें धर्म कैसा? ये दोनों नवाबके पास बांदी बेगम बन जायँगी। नवाब यदि इन दोनोंके साथ निकाह न करेंगे तो पुत्रोंकी खुर्दमहलमें * भेज देंगे और उनकी लड़कियोंको कुछ दिन अपने पास रखकर पीछे उन्हें भी कहींको रस्ता दिखायेंगे।

अमरसिंह। भाई, सब मुसलमान एक समान नहीं होते।

* नवाबोंकी उपपत्नियां जिस महलमें रहती हैं उसे खुर्द महल कहते हैं।

मुसलमानोंके नामसे तुम्हें चिढ़ है पर मैं निश्चय करके कहता हू कि यदि नवाब साहब इनका धर्म्म बिगाड़ना चाहेंगे तो ये दोनों आत्महत्या कर डालेंगीं। मुझे ठीक तौरसे यह बात मालूम हुई है।

छत्रसिंह। यह हो सकता है। शायद यहांकी औरतें वैसीही होंगी जैसी हमारी हिन्दू स्त्रियां होती हैं। उस दिन जो तीस औरतें पकड़ी गई थीं उनमेंसे भी दस बारहने आत्महत्या कर डाली थी। मेलविल साहबके यहां जो तीन स्त्रियां रखी गई थीं उन्होंने भी अपने पेटमें छुरी मारली।

अमरसिंह। तुम मेरा यह काम कर दोगे या नहीं?

छत्रसिंह। छिपकर बातें करनेका सुयोग मिलनेसे मुझे इस कामके कर देनेमें कोई आपत्ति नहीं है। पर यदि इरफानअली आदिको इसकी खबर हो जायगी तो हमलोगोंका कहीं ठिकाना न रहेगा। ये सब दूसरोंकी बुराई इसीलिये करते हैं कि जिसमें जल्दी इनको सूबेदारी मिले। इन दुष्टोंको बहादुरी दिखाकर दर्जा पानेकी ताकत तो है नहीं, इसलिये ऐसा करते हैं। केवल लोगोंको बदनाम करके जनैल साहबको प्रसन्न करना चाहते हैं।

अमरसिंह। छिपकर बातें करनेका एक उपाय है। नवाबने इनको पाल्कीमें बिठाकर लानेका हुक्म दिया है। हम दोनों इनकी पाल्कीके साथ रहेंगे और जब जब पाल्की रखकर कहार आराम करेंगे तब तब अपनी इच्छाके अनुसार इनसे साथ बातें कर लेंगे।

तलवार खेंचली। इधर पीछेसे मिलचिमने भी उसे पकड़ कर कहा—"What are you doing ? What are you doing ? The Nawab will certainly put us to death He has given us strict orders not to touch the body of any of these ladies' तुम क्या कर रहे हो—क्या कर रहे हो ? नवाब साहब निश्चय हमलोगोंको मरवा डालेंगे। उन्होंने ताकीद करदी है कि इन स्त्रियोंका शरीर कोई भी न छूने पावे।

इसके बाद नादिरअलीने हाफिजकी स्त्री कन्या और तीन चार दूसरी स्त्रियोंको पालकीके अन्दर बठनेको कहा। * रास्ते में महलोंके साथ बातें करनेका अवसर मिलेगा यह सोचकर हाफिजकी स्त्री और कन्या एकही पालकीमें बैठीं। प्रायः सभी सिपाही पालकियोंके आगे आगे चलते थे। केवल अमरसिंह और छत्रसिंह उस पालकीके साथ साथ थे जिसमें दोनों मा बेटियां बैठी थीं। लेफटेनेण्ट टामसन पालकीके पीछे पीछे चलते थे। सो जिस बातकी अमरसिंहने आशा की थी वही पेश आई।

* पक्षपाती अङ्गरेज इतिहास लेखक कहते हैं कि रुहेलखण्डके युद्धके बाद रुहेली स्त्रियों पर कोई अत्याचार नहीं किया गया। हाफिजकी स्त्री और कन्या पालकीमें बिठाई गई थीं। पर हारे हुए शत्रुकी स्त्री कन्याओंको पकड़ना क्या अत्याचार नहीं है ? इसके सिवा, रुहेलखण्डकी और बहुतसी स्त्रियां नज़्र करके नवाब शुजाउद्दौलाके पास पहुंचाई गई थीं यह क्या झूठ बात है ?

ऐसा कहते थे। परन्तु इस संसारमें जिसकी जैसी आदतें होती हैं वह दूसरोंको उसी भावसे देखता है। चोर समझता है कि संसारके सभी लोग चोर हैं। सरल स्वभावके लोग समझते हैं कि जगत्‌के सभी प्राणी सीधे सादे और भले हैं। इरफानअली जैसा आदमी था उसके मनके भाव भी वैसेही थे। इससे हम उसे इस बातमें दोषी नहीं कह सकते।

अमरसिंह वास्तवमें कौन था यह बात पाठकोंको आगे चल कर मालूम होगी। इस जगह उस बातका उल्लेख करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। हाफिजकी कोठी साथ रास्तेमें उसने क्या क्या बातें कीं यही सब वृत्तान्त इस परिच्छेदमें लिखा जाता है।

सिपाही आगे आगे चल रहे थे। हाफिजके परिवारकी आठ नौ स्त्रियां पाल्कीमें उनके पीछे पीछे थीं। छत्रसिंह और अमरसिंह पाल्कियोंके साथ साथ थे। तीसरे पहर ये लोग हाफिजके मकानके बाहर निकले थे। इस समय दिन बीत चला था। सायंकालकी अंधियारी धीरे धीरे पूर्व दिशामें अपने पांव फैलाने लगी थी। रात भरके लिये इनको किसी जगह ठहरना पड़ता इसलिये ये ग्रामहीमें ठहरनेके लिये जगह तलाश करने लगे। ग्राम होनेके बादही इनकी मण्डली एक बाजारके पास आ पहुंची।

लेफटेनेण्ट टामसनने कहा—"अभी बहुत समय है। यह बाजार छोड़कर अगले पड़ाव पर चलकर ठहरेंगे।"

पाल्कीके अन्दरसे छत्रसिंहको बातका कोई उत्तर नहीं मिला। केवल एक लम्बी सांस खेंचनेका शब्द सुनाई दिया।

अमरसिंहके बतलानेके अनुसार छत्रसिंहने फिर कहा—"मा, हमारे साथ यह जो एक दूसरा सिपाही है इसका नाम अमरसिंह है। गांव लूटनेके समय इसने बहुतसी कहेली स्त्रियों के निकल भागनेका सुभीता कर दिया था। आपलोगोंको किसी प्रकारका कष्ट देनेकी हमारी इच्छा नहीं है। हमलोग नौकर हैं, मालिककी आज्ञासे आपको लिये जाते हैं। यदि हमलोगों के द्वारा आपको किसी तरहकी सहायता मिल सके तो हम जानपर खेलकर भी उसके करनेकी चेष्टा करेंगे।"

अङ्गरेजी फौजके एक सिपाहीने गांव लूटनेके समय बहुतेरी कहेली स्त्रियोंके बचावका बन्दोबस्त कर दिया था यह बात इस फिलको स्त्री पहलेही लोगोंके मुखसे सुन चुकी थी। सो अमरसिंहका नाम सुनतेही उसने पाल्कीका पर्दा जरा हटाकर देखा कि उसकी गिरफ्तारीके समय जो सिपाही उसकी कोठरीमें बैठा आंसू बहा रहा था और जो एक बार अचेतावस्थामें "मा—मा" चिल्ला उठा था उसीको छत्रसिंह अमरसिंह कहकर बतला रहा है। इससे उसे कुछ बातें करनेका साहस हुआ। छत्रसिंहकी बातोंके जवाबमें उसने कहा—"जो मजलूमों की मदद करते हैं खुदा उनका भला करेगा"

छत्रसिंहने पहलेकी तरह फिर अमरसिंहकी शिक्षाके अनुसार कहा—"मा, हमलोग सचमुच आपको अपनी माताके

समान समझते हैं। जालिम गुलामहोनाके बदले प्राण देकर भी आपका और आपकी कन्याकी रक्षा करनेकी हम चेष्टा करेंगे। इस समय आप यह बतलाय कि आपके यहांसे बाहर निकल जानेके लिये कौनसी तरकीब की जाये।"

रूपसिंहकी यह बात सुनकर हाफिजकी बीबीने पालकीका द्वार और भी खोल दिया और इनको अपना परम मित्र समझ कर इनसे अच्छी तरह बातें करना आरम्भ किया। कहार और दूसरे सिपाही खाने पीनेका बन्दोबस्त कर रहे थे। चारों ओर सन्नाटा था। पालकीके पास रूपसिंह और अमरसिंहके सिवा तीसरा कोई नहीं था।

हाफिजकी बीबीने कहा—"हमलोग भाग नहीं सकतीं। तमाम मुल्कमें दुश्मन फैले हुए हैं। भागनेकी कोशिश करनेसे शायद अभी हमें गिरफ्तार होना पड़ेगा।"

रूपसिंह। (अमरसिंहकी शिक्षाके अनुसार) तो क्या आप लोगोंके छुटकारेका कोई उपाय नहीं है? आपकी रक्षा और उद्धारके लिये जो कुछ करना हो हम करेंगे। हमलोग जान देकर भी आपकी इज्जतकी रक्षा करनेके लिये चेष्टा करने को तैयार हैं।

हाफिजकी बीबीने इस बात पर आकाशकी ओर दोनों हाथ उठाकर कहा—"ऐ मुसीबतजदोंकी राहत बख्शनेवाले मैं तेरी कुदरतके निसार होती हूं। तूने इस वक्त गोया अपना फरिश्ता भेजकर मुझ आफतकी मारीके दिलको ढाढ़स बंधाया।"

इसके बाद रूपसिंहकी ओर देखकर उसने कहा—"बेटा तुमने इस मुसीबतके वक्तमें हमलोगोंके साथ जो हमदर्दी दिखाई इसका बदला खुदासे तुम्हें जरूर मिलेगा। मगर फिल हाल मौतके सिवा हमारे छुटकारेको कोई दूसरी तरकीब नहीं दिखाई देती। तुमलोग हमारे लिये बेफायदा क्यों तकलीफ उठाओगे? मौतकी दवा हमारे पास पहलेहीसे मौजूद है। अगर शुजाउद्दौला हमारी इज्जत बिगाड़ना चाहेगा तो हमलोग जान देकर भी अपना बचाव करेंगे।'

रूपसिंह बोला—"आपलोग निराश न हों। मेरा साथी अमरसिंह कहता है कि यदि वज़ीर आपलोगोंका धर्म्म नष्ट करना चाहेगा तो वह अवश्य उसका प्राण नाश कर डालेगा। शुजाउद्दौलाके अत्याचारोंने इसे एकदम आपेसे बाहर कर दिया है।"

इस बार हाफिजकी स्त्रीके मुख पर कुछ प्रसन्नता दिखाई दी। इससे पहलेही यदि उसकी इच्छा होती तो वह फैजुल्लाके साथ भागकर पहाड़में छिप सकती थी। पर उसने निश्चय किया था कि जहांतक सम्भव होगा स्वामीकी क्रिया किये बिना रुहेलखण्डके बाहर नहीं जाऊंगी। इसीसे वह उस समय नहीं भागी। इसके बाद उसका पुत्र नवाबके सैनिकोंके द्वारा पकड़ा गया। ऐसी अवस्थामें आत्महत्या करके वह सब दुःखों और कष्टोंसे सदाके लिये अपना छुटकारा कर सकती थी, पर इस कामके करनेमें भी उसे रुकना पड़ा। उसने प्रतिज्ञा की कि स्वामीके शत्रुका विनाश करनेके बाद आत्मघात करूंगी।

किन्तु इस जीवनमें उसकी प्रतिज्ञाका पूरा होना कठिन था। परमेश्वरकी कृपासे आज उसने एक सहायक पाया। आज उसकी मुरझाई हुई आशालता फिरसे हरी होगई। उसने छत्रसिंहके साथ पूछा—"बेटा, तुम क्योंकर वज़ीरका खून करोगे?"

छत्रसिंह। (अमरसिंहकी ओर उंगली दिखाकर) ये कहते हैं कि क्योंकर शुजाउद्दौलाका प्राणनाश किया जायगा इसका निश्चय अभी नहीं किया जा सकता। समय पर जैसा अवसर मिलेगा वैसाही उपाय होगा।

हाफिजकी मांने भी मनही मन कहा—"ठीक है। पहलेसे कोई बात ठीक तौरसे नहीं कही जा सकती। जैसा मौका होगा वैसा किया जायगा।"

छत्रसिंह। आप इस अमरसिंहको पहचान रखें। इसका चेहरा भूलें नहीं। यह छिप छिपकर समय समय पर आपसे मिलता रहेगा और बराबर आपके काममें आपकी सहायता पहुंचानेकी चेष्टा करता रहेगा।

ऊपर लिखी बातचीतके बाद कहार पालकियोंको उठाकर बाज़ारके एक मकानमें लेगये। रातभर विश्राम करनेके लिये लेफटेनेण्ट टामसनने यही मकान ठीक कर दिया था। हाफिजकी मांके साथकी दूसरी स्त्रियोंने भी इसीमें प्रवेश किया।

इति प्रथम भाग।

दूसरा भाग।

२१०

॥ अवध की बेगम ॥

गंगाप्रसाद गुप्त।

मूल्य ।-)

दूसरा एडिशन— मूल्य चार आना।

हवाईनाव।

हवाईनाव—आजकल सायंसकी जो उन्नति हो रही है उसीका एक बहुत उत्तम खयाली नमूना दिखानेके लिये यह पुस्तक लिखी गई है बाबू गंगाप्रसाद गुप्तने यह पोथी अंग रेजीसे लिखी है। " भारतमित्र। २४ १० ०३

"यह एक कल्पित कहानी है। एक घण्टा दिल बहलानेके लिये अच्छी है पुस्तक पढ़नेमें जी लगता है। इस उपन्यासके पढ़नेसे कुछ ऐतिहासिक बातें भी मालूम होती हैं यह और भी विशेषता है। जैसे उपन्यासोंका आजकल हिन्दीमें प्रचार है उनकी अपेक्षा "हवाईनाव" के सदृश उपन्यासोंको हम अच्छा समझते हैं " सरस्वती। जनवरी,०४

" कहानी अच्छी है। सरल भाषामें कही गई है। तिलस्मकी निर्जीव कथाओंके पढ़नेकी अपेक्षा इन विचित्र उप न्यासोंके पाठसे, यूरोपीय जातियोंका साहस उत्साह अन्वेषण प्रभृति जाननेसे, हमारे मृत समाजकी नसोंमें नई शक्ति प्रविष्ट हो सकती है " समालोचक। अक्तूबर,०३

" इस पुस्तक से यही सिद्ध होता है कि यूरोपियन लोग अपने प्राणकी किञ्चित् भी परवाह न करके नई बातोंके आवि ष्कारमें अपना समय लगाते और जो बात आज असम्भव दिखलाई देती है उसे कल सम्भव सिद्ध करनेका कोशिश करते

हैं। साहसी यूरोपियनोंसे भारतवासी उनका साहस, अध्यव-
उद्योग, उनकी स्वदेशप्रीति सीखनेके बदले मद्यपानादि दोष
सीखते हैं और यही बात देशियोंको विपत्सागरमें ढकेल रही
है। हमारे उपन्यास-लेखक जो अङ्गरेजी उपन्यासोंका भावा-
नुवाद करते हैं वे ऐसे ऐसे बढ़िया उपन्यासों को, जिनसे देशि-
योंको उनके साहस पराक्रमकी शिक्षा मिले छोड़कर इनके
रैनाल्डके भ्रष्ट उपन्यासों से समाज को कलङ्कित करते हैं और
जो दोष औरोंका है उसे अपना बतलाकर पवित्र हिन्दू चरित्र
माथे थोपते हैं। ऐसे समयमें उसी कलमसे जहां दो चार अच्छी
पुस्तकें निकल चुकी हैं, यह चौथी प्रकाशित होते देखकर बड़ा
हर्ष हुआ है।" श्रीवेङ्कटेश्वर स०। १२।११।०१

"इस कहानीसे यह शिक्षा मिलती है कि अमेरिका वाले
पूर्ण साहसी और उद्योगी होते हैं। पुस्तक की भाषा सरल
है—"राजपूत।" भाषा बहुतही अच्छी स्वच्छ और सरल है।
आश्चर्यमयी घटनाका विवरण बड़ा रोचक है—"मोहिनी।"
पुस्तक की भाषा ठेठ, वर्णनशैली, पदयोजना और वाक्यविन्यास
सब अच्छा है—"प्रयाग स०।"

अवध की बेगम ।

दूसरा भाग ।

प्रथम परिच्छेद ।

छत्रसिंह और अमरसिंह बाजारके एक दूसरे मकानमें पहुँच कर भोजनादिका प्रबन्ध करने लगे। छत्रसिंह क्षत्रिय था। निहालसिंह भी इसी जातिका था। इसलिये निहालसिंहके पुत्र अमरसिंह और छत्रसिंहने एकही रसोईमें भोजन किया।

भोजन करनेके बाद छत्रसिंहने अमरसिंहसे कहा—

"क्यों भाई, क्या तुमने सचमुच वजीरके प्राण लेनेका निश्चय कर लिया है? यह पागलपन तुम्हारे सिरपर कैसे सवार होगया?"

अमरसिंह। वजीरने सैकड़ों सहेली स्त्रियोंके ऊपर घोर अत्याचार किया है। मैंने परमेश्वरको साक्षी करके कसम खाई है कि उसका प्राण नाश कर मैं अपने पूर्व पापका प्रायश्चित्त करूंगा—लोगोंको उसके अत्याचारोंसे पीड़ित होनेसे बचाऊंगा।

छत्रसिंह। तुमने कौनसा पाप किया है जो उसका प्रायश्चित्त करोगे। तुम तो अपने पिताकी तरह धार्म्मिक हो। निहालसिंहने कभी किसीकी बुराई नहीं की। तुम भी कभी ऐसा नहीं करते। फिर तुमने कौनसा पाप किया है?

अमरसिंह। बुरे तो पाप करतेही हैं पर भले लोग भी पापमें रत रहते हैं। इस संसारके सभी लोग अर्थात् हम तुम सब पापी हैं। पर इस समय इन बातोंपर बहस करनेकी आवश्यकता नहीं है। तुमसे जो कुछ मैं कहता हूं वह सुनो। वजीरका खून करके मुझे भी अपने प्राणोंसे अवश्यही हाथ धोना पड़ेगा। कल या परसों तक हमलोग दिल्ली पहुंच जायेंगे और शायद दिल्ली पहुंचनेके बादही मुझे अपनी इच्छाके अनुसार कारवाई करनी पड़ेगी। इसलिये अब बहुत दिनोंतक इस संसारमें मेरा रहना नहीं हो सकेगा। तुमसे जो कुछ मुझे कहना है वह मैं अभी इसी समय कहे देता हूं। तुम्हें मेरी मृत्युके बाद यह सब काम कर देना पड़ेगा।

जयसिंह। तुम सचमुच पागल हो गये हो। तुम क्यों अपना प्राण दोगे? यदि तुम इस संसारमें न रहोगे तो तुम्हारी विधवा बहिनका पालन कौन करेगा? क्या तुम भूल गये कि मरनेके समय निहालसिंह उसको तुम्हारे हाथ सौंप गया था?

अमरसिंह। उन्होंके बारेमें तुमसे कुछ बातें कहनी हैं। मैंने निश्चय कर लिया है कि यह प्राण देकर मैं अपने पूर्वके किये हुए पापोंका प्रायश्चित्त करूंगा। इसमें तुम जरा भी सन्देह न समझना।

जयसिंह। मुझे तुम्हारी बातों पर हंसी आती है। बताओ तो तुमने क्या पाप किया है?

अमरसिंह। भाई, तुम यह जानतेही होगे कि मैं निहाल

सिंहका पुत्र हूं। पर वास्तवमें निहालसिंह मेरा पिता नहीं था। उसने मेरी जान अवश्य बचाई थी। इसलिये यह कहना कोई झूठ बात न होगी कि वह एक प्रकारसे मेरा जीवनदाता था। जिस समय मेरी उमर सतरह वर्षकी थी उस समय आत्म हत्या करनेके अभिप्रायसे मैं एक बार गङ्गाजीमें कूद पड़ा था। निहालसिंहने बेहोशीकी अवस्थामें मुझे नदीसे निकाल कर मेरी जान बचाई। बाद पुत्रकी तरह मेरा लालन पालन किया और अस्त्रविद्या सिखा मुझे वीर बनाना चाहा। वही अस्त्र विद्या सीखकर मैं आज आदमी बना हूं। मरनेके अभिप्रायसे गङ्गाजीमें कूदनेसे पहले मैंने न्याय दर्शन आदि सभी शास्त्रोंका अध्ययन किया था। परन्तु उनसे मेरा कोई उपकार नहीं हुआ। वह सब केवल व्यर्थ परिश्रम है। शास्त्र अध्ययन करके मैं मनुष्यत्व नहीं लाभ कर सका। नवाब मीरजाफरके पुत्र दुष्ट मीरनके चार पांच आदमी आकर मेरी माता स्त्री और बहिनको जबरदस्ती पकड़ ले गये। मैं उस समय उसी जगह खड़ा था। मुझे इतना भी साहस नहीं हुआ कि उन चारों पांचों आदमियोंसे लड़कर अपनी माता स्त्री और बहिन को बचा लेता। उस समय अपनेही प्राणोंके भयसे मैं घबरा उठा। मेरी माने रोते हुए उन पकड़नेवाले लोगोंके पांवों पर गिरकर कहा "बेटा, हमलोग हिन्दूके घरकी औरतें हैं। हमारी जाति मत नष्ट करो।" किन्तु इतने पर भी मैंने आगे बढ़कर उन पकड़नेवाले दुष्टोंका सामना करनेकी चेष्टा नहीं की। डर और घबराहटके कारण मेरा सारा शरीर बेकाम होगया। धिक्कार

दूसरोंके साथ भलाई करो। पर काम पड़ने पर मैंने स्वयं क्या किया? दूसरोंके साथ उपकार करनेकी बात तो दूर रहे— जिसने दस महीने दस दिन तक अपने गर्भमें मुझे धारण किया था, जिसके स्तनके दूधसे यह शरीर इतना बड़ा हुआ, जो अपने प्राणसे भी अधिक मुझे चाहती और प्यार करती थी, हाय उसी प्यारी माके ऊपर जिस समय उन दुष्टोंने अत्याचार करना आरम्भ किया उस समय एक पग भी मुझसे आगे नहीं बढ़ा गया। ज़रा समझ कर अत्याचारियोंको रोकनेका भी मुझे साहस नहीं हुआ। उस समय भागकर अपनाही बचाव करनेकी धुन मेरे सिर पर सवार होगई। धिक्कार है इस जीवनको! लानत है इस मनुष्य पर।"

यह कहकर अमरसिंह खड़ा होगया और कमरसे तलवार निकाल तथा उसे सिरके ऊपर तानकर जोरसे बोला— "जननी! तेरे जिस कुपुत्रने अपने प्राणके डरसे दुष्टोंके हाथसे तेरी रक्षा नहीं की वह भोली भाली सीधी और पाकदिल हाफिज़ कुमारीके बचावमें अपना प्राण देकर अपने पुराने पापका प्रायश्चित्त करेगा।"

अमरसिंहकी यह अवस्था देख छत्रसिंह बिलकुल चुप हो कर उसके मुखकी ओर देखने लगा। अमरसिंह भी कुछ देर तक चुप रहा।

थोड़ी देरके बाद छत्रसिंहने पूछा—"निहालसिंहसे तुम्हारी मुलाकात कैसे हुई?"

अमरसिंह। भाई उन बातोंको याद करनेसे बहुत दुःख

और पछतावा होता है। माके रोनेकी आवाज सुनकर मछुओंसे मुड़कर उसके बचानेकी इच्छा नहीं हुई। इस घटनाके दूसरे दिन मैंने मेरे पिताने और मेरे बहनोईने विचार किया कि गङ्गामें डूबकर जान दे देना चाहिये ताकि लोग बदनाम न करें। टोलेके लोग हमको जाति बाहर कर देंगे—हमारी हँसी उड़ायेंगे—इसी डरसे हम तीनोंको गङ्गामें डूब मरने पर लाचार किया। हाय धिक्कार है हमारी इस नामर्दी पर। भाई, कहते लज्जा आती है, हम लोगों आत्महत्या करनेके अभिप्रायसे गङ्गाजीमें कूद पड़े। निहालसिंहसे मुझसे सुना है कि वे गङ्गा स्नान करने गये थे वहीं किनारे पर मेरी और मेरे बहनोईकी लाशें उनको पड़ी मिली थीं। मेरे बहनोईका प्राणपखेरू एक बारही तन पिञ्जरसे निकल गया था। बहुत चेष्टा करके भी निहालसिंह उसे नहीं बचा सके। मैं भी मुर्देकी तरह पड़ा था। निहालसिंहके बड़े यत्न और परिश्रमके बाद मैंने जीवन पाया। होशमें आकर मैंने देखा कि मेरे चारों ओर निहालसिंह और दो चार दूसरे लोग चुपचाप खड़े हैं। उस समय मेरे बहनोईकी लाश मेरे पासही पड़ी थी।

हरसिंह। तुम्हारे पिताका भी कुछ समाचार मिला?

अमरसिंह। शायद उनकी भी मृत्यु होगई क्योंकि उनकी लाश कहीं नहीं पाई गई।

हरसिंह। फिर इसके बाद तुमने कुछ पता भी लगा कि तुम्हारी मा बहिन और भाँजीकी क्या दशा हुई?

अमरसिंह। जान पड़ता है कि उन्होंने भी आत्महत्या करली। मेरे पिताने नवाब साहबकी एक बांदीको कुछ देकर उसके द्वारा मेरी मा बहिन और स्त्रीके पास यह सदेसा भिजवा दिया था कि वे आत्महत्या करलें।

छत्रसिंह। इसके बाद क्या निहालसिंह तुमको अपने साथ अपने मकान पर ले गया ?

अमरसिंह। निहालसिंह अंगरेजोंकी कासिम-बाजारवाली कोठीमें रहते थे। पर सरकारी आज्ञा पाकर वे अपने रिसालेके * साथ नावकी सवारी पर कलकत्ते जा रहे थे। इसी अवसरमें स्नान करते समय उन्होंने मुझे नदी किनारे पड़ा पाया। मैं भी उनके साथही साथ कलकत्ते गया।

छत्रसिंह। तुम्हारा जन्म किस स्थानमें हुआ था ?

अमरसिंह। हमलोग विक्रमपुरके रहनेवाले हैं। मेरे पिता बड़े धार्मिक थे और पढ़ने लिखनेमें उनका जी बहुत लगता था इसीसे उनके क्षत्रिय होने पर भी और उनका असली नाम ठाकुर नरेन्द्रसिंह रहने पर भी उस गांवके बंगाली उनको यागेश्वर पण्डित कहा करते थे। एक दिन हमलोग औरतोंके साथ गङ्गा स्नान करने जा रहे थे, लौटते समय रास्तेमें यह घटना हो गई।

छत्रसिंह। तो तुमने अवश्यही शुजाउद्दौलाका खून करनेकी चेष्टा करनेका विचार किया है ?

अमरसिंह। विचार नहीं—शुजाउद्दौलाका खून करनेका

* एक एक सूबेदारके अधीन जो सेना रहती है उसे 'रिसाला' कहते हैं।

मैंने 'निश्चय' किया है और मैं अवश्य ऐसा करनेका उद्योग करूंगा। हाकिमकी लड़कीका चेहरा मेरी प्यारी बहिनके चेहरेसे मिलता जुलता है। उसे पहली ही बार देखकर मैंने निश्चय कर लिया है कि उसकी सतीत्वका बचाव करूंगा। यदि प्राण देनेकी आवश्यकता होगी तो मैं यह भी करनेसे नहीं चूकूंगा। इस बातसे मुझे कोई नहीं रोक सकता। मेरीप्रतिज्ञा अचल और अटल है। पर मैं यह सोच रहा हूं कि मेरे मरनेके बाद बहिन चन्द्रकुमारीका क्या हाल होगा? निहालसिंह मृत्युके समय उसे मेरे हाथ सौंप गया है। जब मैं उस घरमें रहता था तो वह माकी तरह मेरे पास बैठकर मुझे भोजन कराती थी, बहिनकी तरह सदा मुझपर स्नेहकी दृष्टि रखती थी। मेरे मर जानेसे उसे मेरे लिये बहुत दुःख होगा। उसकी तथा उसके पुत्रके प्राण बचानेका कोई उपाय नहीं रहेगा।

उदयसिंह। रणवीरसिंहकी मृत्युके बाद उसकी भी चन्द्रकुमारीके भरणपोषणके लिये क्या ईस्ट-इण्डिया कम्पनीने कुछ नहीं दिया?

अमरसिंह। आह, उन बातोंको याद करनेसे रग फड़कने लगती और सचमुच ईस्ट-इण्डिया कम्पनीकी नौकरी करनेकी इच्छा नहीं होती। यदि कम्पनीका कोई फिरङ्गी अफसर मारा जाता है तो वह उसकी स्त्री और पुत्रोंके भरणपोषणका बन्दोबस्त जन्म भरके लिये कर देता है। पर यदि कोई देशी सिपाही उसके लिये लड़ाईमें कट मरता है तो वह उसके परिवारवालोंके पालन पोषणके लिये दस पांच रुपये भी मुश्किलसे देता है। इसपर

सिंहको मैंने देखा नहीं है। पर तुम लोगोंके मुँहसे सुनता हूं कि पलासीके युद्धमें उन्होंने बड़ी बहादुरी दिखाई थी।

छत्रसिंह। पलासीकी लड़ाईमें मैंभी मौजूद था। मैने सब घटनाओंको अपनी आँखोंसे देखा है। उस दिन यदि रणवीर-सिंह न होता तो बड़ी विपद् उपस्थित होती। रणवीरसिंहकेही हाथसे मीरमदनकी मृत्यु हुई और ज्योंही मीरमदन गिरा त्योंही सिराजद्दौलाने सेनाको लौटनेकी आज्ञा दी। परन्तु इससे पहलेही नवाबके सेनापति मोहनलालके हाथों रणवीर मारा जा चुका था। यह बड़े अन्यायकी बात है कि ईष्ट इण्डिया कम्पनीने उसके बालबच्चोंके लिये कुछ नहीं किया।

अमरसिंह। भाइ, मेरे पास कोई दो तीन हजार रुपये होंगे। लखनऊ पहुँचतेही मै उन रुपयोंको तुम्हारे हवाले करूगा। मेरी मृत्युके बाद प्रयाग जाकर तुम उन रुपयों और मेरे एक पत्रको बहिन चन्द्रकुमारीके हाथ देदेना और उसके पुत्र महावीर सिंहको अपने साथ रखकर युद्धविद्या सिखलाना। चन्द्रकुमारी अपने पुत्रको बहुतही अधिक प्यार करती है इसीसे वह बहुत बिगड़ गया है। लड़ाईके मैदानमेंही पतिकी मृत्यु हुई— यह सोच वह उसे अपने जीते जी युद्धक्षेत्रमें नहीं भेजना चाहती। रणवीरसिंहका जब शरीरान्त हुआ था उस समय महावीरकी अवस्था केवल दो महीनेकी थी। इसके दो तीन वर्ष बाद मैं निहालसिंहके घरमें रहने लगा। एक दिन निहालसिंहने मुझसे कहा 'भैया, तुमने बहुतसे ग्रन्थ पढे हैं मेरे पोतेका कोई अच्छा नाम चुनकर रख दो।" उसी समय मैने रणवीरसिंहके लड़केका

कर किसीकी भलाईमें अपने प्राण दे सकता है ? लड़ाईके मैदान में प्रवेश किये बिना मनुष्य कभी सचमुच मनुष्य नहीं कहला सकता। 'यह अनित्य देह अकिञ्चित्कर पदार्थ है—परोपकारार्थ इसे विसर्जन करना मनुष्यका कर्त्तव्य है"—शास्त्रकी इन बातोंके पढ़नेसे हमलोग एक नये ही सोच डूब जाते हैं। उस समय हमारी दृष्टि केवल दूसरों ही पर पड़ती है, अपने ऊपर नहीं। हम उस समय यह सोचने लगते हैं कि संसारके लोग शास्त्रकी आज्ञा क्यों नहीं मानते ? क्यों नहीं वे दूसरोंके साथ भलाई करने में अपनी जान दे देते ? उनके स्वार्थ रहित न होनेका क्या कारण है ?—इत्यादि। परन्तु स्वयं हमलोगोंमें प्राण देनेकी सामर्थ्य नहीं है यह हम नहीं सोचते। यदि युद्धक्षेत्रमें दो तीन बार प्राण विसर्जन करनेका काम पड़ जाय तो मनुष्य अवश्य सीख सकता है कि परोपकारके लिये प्राण क्योंकर विसर्जन किया जा सकता है।

छत्रसिंह। तो तुम्हारा मतलब यह है कि महावीरसिंह पूरा सिपाही बन जाय ?

अमरसिंह। मेरी मृत्युके बाद मेरे एक पत्र और रुपयोंको लेकर तुम प्रयाग जाना और वहां मेरी बहिन चन्द्रकुमारीसे मिलना। उससे मेरे मरनेकी खबर करना। बाकी बातें मैं स्वयं पत्रमें लिख दूंगा। और एक बात याद रखना—वह यह कि शुजाउद्दौलाको मारकर यदि मैं किसी तरह अपनेको बचा सका तो निश्चय यह देश छोड़कर मरहठोंकी सेनामें जा मिलूंगा। फिर मैं इस प्रान्तमें न आ सकूंगा। उस समय तुम चन्द्रकुमारी

यह कहकर छत्रसिंह चिलम ठीक करके दम लगाने लगा। इधर अमरसिंहने चिरागके पास जाकर ज्येष्ठ भगिनी सहशो निहालसिंहकी कन्या चन्द्रकुमारीको पत्र लिखना आरम्भ किया। कोई एक घण्टेमें पत्र समाप्त हुआ। उस समय छत्रसिंहने कहा-"पत्रमें क्या लिखा ?"

इसपर अमरसिंह पत्रको यों पढ़ने लगा,—

"बहिन, इस संसारमें तुम्हारे और तुम्हारे पुत्र महावीरके सिवा मेरा प्यारा और कोई नहीं है। मैं जिनसे स्नेह करता था वे सब शायद परलोकको चले गये। वहां जानेहोसे उनसे मुलाकात होगी। उनसे मिलनेके लिये जी सदा छटपटाया करता है। परन्तु अबतक आत्महत्याके अतिरिक्त परलोक जानेका कोई दूसरा उपाय नहीं था। नासमझोसे एकबार आत्महत्या करने की चेष्टा कर चुका हू। तुम्हारे पिताने मेरी जान बचाई। अब मैं खूब समझता हू कि आत्महत्यासे बढकर पापकर्म संसारमें और कोई नहीं है। अतएव अब इस विषयका ध्यान भी नहीं करता। इस समय परलोक जानेका एक बहुत अच्छा सुयोग मिल गया है। मैं इस अवसरको हाथसे नहीं निकलने दूगा।

'मैंने एक निस्सहाया नवाबकन्याको नरपिशाचोंके हाथसे बचानेका प्रण किया है। मैं समझता हू कि इस काममें मुझे अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ेगा। और यदि मैं किसी तरह बच सका तो बहुत शीघ्र तुमसे मिलकर तुम्हारे चरणोंका दर्शन करूगा। परन्तु यदि मेरी मृत्यु होगई तो तुम इन दो हजार रुपयोंसे जिनको मैं इस पत्रके साथ तुम्हारे पास भेजता हू कुछ दिनों

कोई आवश्यकता नहीं है कि किस तरह प्राणकी रक्षा करना चाहिये । क्या बालक क्या वृद्ध सभीको अपने प्राणकी चिन्ता सदा लगी रहती है। पिता माताको चाहिये कि वे सन्तानको सर्वदा अच्छे कामोंमें प्राण विसर्जन करनेको शिक्षा दिया करें। अधिक नहीं थोड़ेमें कहता हूं—कि सन्तानको बचनेकी नहीं मरनेकी शिक्षा देना चाहिये।

"यह संसार छोड़नेके बाद जब परलोक जाऊंगा तब यदि देखूंगा कि सुमित्राकी तरह तुम महावीरको खुशी खुशी कर्त्तव्य पालनार्थ प्राण विसर्जन करनेके लिये अपनेसे पृथक् कर रही हो तो मैं बड़ाही आनन्दित होऊंगा। तुम सुमित्रा देवीकी उस बातोंको कभी मत भूलना।

'मैं परमेश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि प्रत्येक माता सुमित्राके उस वाक्यको सदा याद रखे। तुम्हारे स्मरणके लिये रामायणसे उन कई श्लोकोंको मैं यहांपर लिखे देता हूं। तुम इन श्लोकोंको सदा जपा करना।—

सृष्टस्त्वं वनवासाय स्वनुरक्तः सुहृज्जने।
रामे प्रमादं माकार्षीः पुत्र भ्रातरि गच्छति ॥ ० ०
इदं हि वृत्तमुचितं कुलस्यास्य सनातनम्।
दानं दीक्षा च यज्ञेषु तनुत्यागो मृधेषु हि ॥
रामं दशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजाम्।
अयोध्यामटवीं विद्धि गच्छ तात यथासुखम् ॥

"बहिन, अब मुझे बिदा करो। यदि कर्त्तव्यका साधन करनेमें प्राणोंसे हाथ धोने पड़ें तो खैर जन्म भरके लिये बिदा

हुआ। और यदि कर्त्तव्य साधनके बाद भी जीवित रहा—तो बहुत शीघ्र तुम्हारे चरण कमलोंको प्रणाम कर इस शोकसन्तप्त हृदयको शीतल करूंगा।

सेवक—अमरसिंह।"

तब अमरसिंह पत्र पढ़कर सुना चुका तब रूपसिंह बोला—"भाई एक बात मेरी भी इस पत्रमें लिख दो।"

अमरसिंह। कौन बात?

रूपसिंह। मेरे पास चार हजार रुपये हैं। पहले मैंने सोचा था कि मरनेके समय इन रुपयोंको मैं तुम्हें देता जाऊंगा। परन्तु तुम मुझसे भी पहले मरने चले। अस्तु, मेरा कोई भाई बन्धु नहीं है। फिर अपने पास इतने इतने रुपये रखकर मैं क्या करूंगा? तुम चन्द्रकुमारीको लिख दो कि वह इन चार हजार रुपयोंके लेनेसे भी इनकार न करे। मैं यह सब रुपया चन्द्रकुमारी और उसके पुत्रको इसी बार देता जाऊंगा।

तब अमरसिंहने उस पत्रके नीचे लिखा—

"बहिन, इस पत्रके ले जानेवाले रूपसिंह, पिता निहालसिंहके एक पुराने मित्र हैं। ये मुझको बहुत चाहते हैं। इनके परिवारमें अब कोई जीवित नहीं है। बहुत दिनोंतक ईष्टइण्डिया कम्पनीकी नौकरी करके इन्होंने ४ हजार रुपये इकट्ठे किये हैं। इनकी इच्छा इन रुपयोंको मरते समय मुझे दे जानेकी थी; किन्तु शायद इनको मृत्युसे पहलेही मैं इस संसारसे बिदा हो जाऊंगा। इसलिये अब इन्होंने अपने ४ हजार रुपयोंको तुम्हारे राजावीरको देना स्थिर किया है। इनसे रुपयोंको लेनेमें

तुम इनकार मत करना। कारण, यह तुमको अपनी कन्याके समान समझते हैं।"

इस पत्र के लिखनेके कुछ देर बाद सुबह हुई। जिस घरमें हाफिजकी स्त्री थी उस घरके द्वार पर कहार लोग पाल्कियोंके साथ आ पहुँचे। लेफटनेण्ट टामसन, इनबाइन मेलविल और टामकिन आदि अगरेज अपने अपने घोड़ोंपर सवार हुए। सबने कूचकी तैयारी करली। अमरसिंह और छत्रसिंह पहले दिन की तरह हाफिजकी स्त्रीकी पाल्कीके साथ साथ चलने लगे। जब जब कहार लोग रास्तेमें पाल्की रखकर विश्राम करते तब तब वे (अमरसिंह और छत्रसिंह) हाफिजकी स्त्रीके निकट जाकर बातें करने लगते। अब हाफिजकी पत्नीको पूरी तरह विश्वास हो गया था ये लोग हमारे हितैषी हैं, इसलिये अब वह इनके साथ खूब खुलकर बातें करने लगी थी।

सूरज डूबनेसे पहलेही सैनिकगण हाफिजके परिवारके साथ बिसूली पहुँच गये। अमरसिंह आदि समझे हुए थे कि हाफिजके घरवालोंको नवाबकी आज्ञाके अनुसार फैजाबाद ले जाना होगा। किन्तु नवाबने इनको वहां भेजनेकी आज्ञा नहीं दी।

शुजाउद्दौला जिस समय स्वयं सेनाके सहित रुहेलखण्डके अन्तर्गत आँवला नामक स्थानमें था उसी समय लोग हाफिजके घरवालोंको पकड़नेके * लिये भेजे गये थे। इस समय नवाब

* The family of Hafiz Rahmut with a torpid apathy which is not easy to be accounted for took no measure either for flight, but continued to remain quietly in the fort of Peeleabete —

C Hamilton's Rohilla Afghans

बिसूलीमें था। जब सैन्यगण जनानी पालकियां लेकर बिसूली पहुँचे उस समय उससे उनकी मुलाकात हुई। नवाबने बिसूलीसे दुन्दीखां नामक एक और सरदारके पुत्र कन्या और स्त्रीको पकड़नेके लिये सेना भेजी थी। दुन्दीखांकी स्त्री पुत्र कन्याके बिसूली पहुँचने पर उसने अपने बहनोई नवाब सालारजङ्ग बहादुरको साथ करके उनको तथा (हाफिज रहमतकी कन्याको छोड़) बाकी सब रुहेली औरतोंको कैदी † बनाकर इलाहाबाद भेज दिया। केवल हाफिजकी लड़की दो चार सिपाहियों और कुछ दास दासियोंके साथ फैजाबादमें नवाबकी रानी बेगम साहिबाके पास भेज दी गई। अनूपसिंह और रूपसिंहको भी नवाब सालारजङ्गके साथ इलाहाबाद जानेकी आज्ञा हुई।

बेचारी हाफिजकी लड़कीको इस समय अपनी प्यारी माताकी गोदसे भी जुदा होना पड़ा। आँखोंमें आँसू भरे हुए उसने जन्म भरके लिये मासे बिदाई ली। माने तीन चार बार उसका मुंह चूमकर कहा—"बेटी, अब वाजिदके दुश्मनोंके बस पड़ी

† Shortly after his arrival at Bissoulee the Vizier sent off the sons of Doondee Khan, their wives and children, together with the family and immediate retainers of Hafiz Rahmut, and numbers of the Afghan inhabitants of Bareilly, Owlah, Bissoulee and other places to Allahabad under the conduct of his brother in law, the Nawab Salar Jung Bahadur

C. Hamilton's Rohilla Afghans

जानेका बिलकुल भार तुम्हारे ऊपर पड़ा । यह मौका रञ्ज गर हुज़ और तकलीफ जाहिर करनेका नहीं है । जाओ दुश्मनोंको दुरुस्त पहुँचानेमें खुदायन्द करीम तुम्हारी मदद करे ।

यह कहकर वह बहादुर औरत अपनी कन्यासे बिदा हुई ‡। बेचारी लड़कीकी आँखोंमें आँसू बहने लगे, सोलह वर्षकी युवती बहुत यत्न करने पर भी आँसुओंको धारा न रोक सकी । किन्तु माके नेत्रोंसे एक बूंद जल भी नहीं गिरा । वीरदर्पसे अपनी पालकीमें बैठकर वह नवाबी सैन्यके साथ इलाहाबादको चली गई ।

दूसरा परिच्छेद ।

जगदम्बा बेगम ।

जेठका महीना है । सन्ध्या होनेमें अधिक देरी नहीं है । थोड़ा थोड़ा पानी बरस है । फैजाबादमें वजीरी महलसे कोइ एक कोसकी दूरी पर एक टूटे फूटे सुनसान मकानमें बैठे दो आदमी आपसमें कुछ बातें कर रहे हैं ।

---

‡ Mr Charles Hamilton in his history of Rohilla Afghans does not make any mention of Hafiz Rahmut's daughter But that she was taken into the harem of Vizier is a fact no one can deny —

G P Gupta

रात उसने कहा था कि आज अधिक रात बीतने पर शाही म हलके पासवाले तालाबकी बगलकी अमराईमें मुझसे मिलना।

छत्रसिंह। क्या उस बांदीने तुमसे कहा है कि वह छिपा कर तुम्हें शाही महलके अन्दर ले जा सकेगी?

अमरसिंह। उसकी किसी बात पर मैं ठीक ठीक विश्वास नहीं कर सकता। उसके मनमें जब जो आता है वह कह देती है। कभी मुझे अनायास महलके अन्दर पहुँचा देनेकी प्र तिज्ञा करती है, कभी कहती है कि मुझसे यह कठिन काम कभी नहीं होगा। जान पड़ता है कि इस बांदीकी चाल चलन बहुत खराब है। वह देखनेमें जैसी बुरी है उसका चरित्र भी वैसाही है। मुझसे बातें करनेके समय वह जैसा रंगढंग बनाती है उसे स्वप्नमें देखनेकी भी मेरी इच्छा नहीं होती। केवल उसकी सहायतासे हाफिजकी लड़कीका छुटकारा होनेकी आशासे मुझे प्रतिदिन उससे मिलना पड़ता है।

छत्रसिंह। तो हाफिज कुमारीको फैजाबादमें लाकर बड़े महलमें स्वय बेगम साहबाके पास रखा है? उसे खुर्दमहलमें नहीं भेजा?

अमरसिंह। हां बेगमकेही पास उसे रखा है। किन्तु सुनता हू वजीरकी प्रधान बेगम हाफिज कुमारीकी बहुत खोज ख बर नहीं रखती। महलके अन्दर जगदम्बा बेगम नामी एक बूढ़ी स्त्री रहती हैं वे शायद हाफिजकी लड़कीको बहुत दया भावसे देखती और प्यार करती हैं, समय समय पर धीरज धराने वाली बातें कहकर उसको सन्तोष दिलानेका उद्योग किया करती

छत्रसिंह। मीरजाफरकी बेगम यहां क्योंकर आई?

अमरसिंह। भई इस बातके समझानेमें और बहुतसी बातें कहनी पड़ेंगी। मीरजाफरकी बेगमके यहां आनेका हाल मुझे पहलेसे मालूम था। खैर, वह क्योंकर यहां आई सो सुनो—"नवाब शुजाउद्दौलाके बक्सरकी लड़ाईमें हार जानेपर देहलीके बादशाह और राजा बलवन्तसिंह दोनों उसको छोड़कर अंगरेजोंकी शरणमें चले गये। तब शुजाउद्दौला और नवाब मीरकासिम भागकर लखनऊकी ओर आये। अंगरेजी सैनिकोंने उनको पकड़नेके लिये उनका पीछा किया। इसके बादही मैं, मेजर कर्नक (Major Carnac) के अधीन सिपाहियोंके साथ, इस प्रान्तमें आया।

"अंगरेजोंने उस समय यह आशा की थी कि इलाहाबाद और कोराके सिवा शुजाउद्दौलाको राज्यच्युत करके अवध भी देहलीके बादशाहको दे देंगे। परन्तु विलायतमें यह प्रस्ताव स्वीकृत नहीं हुआ।

"इधर शुजाउद्दौलाने सोचा कि मीरकासिमकी सहायता करनेसेही मुझपर यह विपद् आ पड़ी है। अतएव नवाबको वह घोर शत्रुताकी दृष्टिसे देखने लगा और फैजाबादमें पहुंचकर जो कुछ धन सम्पत्ति और मणि मुक्तादि चीजें उसके पास थीं उनको उससे जबर्दस्ती उसने छीन लिया, इतनाही नहीं बल्कि उसें अपने राज्यसे भी बाहर निकलवा दिया। उस समय मीरकासिम अपने परिवारके सहित बरेलीमें जाकर बड़ी दीन दरिद्र अवस्थामें रहने लगा। उसके साथ उसकी स्त्री औरबास भी थी।

"कुछ दिनोंके बाद सेना इकट्ठा करनेके अभिप्रायसे मीर-

कासिम वरैलीसे नेपाल चला गया। उसकी साथ और जो थे लोगोंको ठहरने रहीं।

"इधर अंगरेजी सेना धीरे धीरे आगे बढ़कर अवधपर आक्रमण करनेका उद्योग करने लगी। लाचार होकर उस समय नवाब शुजाउद्दौलाको भी अपने परिवारके लोगोंको फैजाबादसे बरेली भेजना और अंगरेजोंके साथ सन्धि स्थापन करनेका प्रस्ताव उठाना पड़ा। अंगरेजोंने देखा कि शुजाउद्दौलाको युद्धमें पराजय कर सकने पर भी अवधमें राज्य करना सहज काम नहीं है। इस लिये सन्धि स्थापन करनेमें वे सब राजी हो गये।

"इस सन्धिके स्थापित हो जानेके बाद शुजाउद्दौलाकी अम्मा सैयदुन्निसा बेगम और स्त्री बेगम साहबा बरेलीसे अपने देशको लौटते समय मीरकासिमकी पत्नी और साथको भी फैजाबादमें लेती आईं। मीरकासिमकी सासजी नवाब मीरजाफरकी स्त्री हैं। अपनी कन्याके साथ सबसे वे यहीं रहती हैं। उन्हींको नवाबी महलके लोग जगदम्बा बेगम कहकर पुकारा करते हैं। परन्तु क्योंकर उनका ऐसा नाम पड़ा यह मैं नहीं जानता।"

अमरसिंहके चुप हो जानेपर इन्द्रसिंहने पूछा,—"मीरजाफरकी स्त्री पतिको छोड़कर दामादके साथ क्यों यहां आई?"

अमरसिंहने कहा, "सुनता हूं पतिसे उनसे बहुत दिनोंसे झगड़ा चला आता है *। वे पहलेहीसे पतिको त्याग कर अपनी कन्या और दामादके साथ रहती थीं।"

* नवाब मीरजाफरके साथ उनकी प्रधान स्त्री मीरनकी माताका बहुत दिनोंसे झगड़ा था इस बातका प्रमाण अनेक इति

बातों ही बातोंमें रात्रि आरम्भ हो गई। उस समय अमर-सिंह तूफानो बांदीसे मिलनेके लिये नवाबी महलकी ओर चला। छत्रसिंह उसी मकानमें ठहरकर भोजनादिका प्रबन्ध करने लगा।

तीसरा परिच्छेद।

प्रेमिकाकी बातें।

हम पहले लिख आये हैं कि अमरसिंह और छत्रसिंह शुजाउद्दौलाके आज्ञानुसार नवाब सालारजङ्ग तथा अन्यान्य सैनिकोंके साथ इलाहाबाद जा रहे थे। कुछ दूर जानेके बाद शारीरिक पीड़ाका बहाना करके दोनों फैजाबाद चले आये।

आज चार दिन हुए कि ये लोग फैजाबादमें पहुँच गये हैं। यहां आतेही अमरसिंह इस बातकी तलाश करने लगा कि इा

हायोंसे मिलता है। मीर जाफरके सिंहासनच्युत होकर कलकत्ते जानेपर कप्तान कलियडने वान्सिटार्ट साहबके पास जो पत्र लिखा था उस पत्रमें इस विषयमें निम्नलिखित बातें लिखी थीं—

"His legitimate wife called the Begum, the mother of the deceased Chota Nawab and of Kasimali's wife, refused to accompany the old Nawab, with whom, she says, she has not been in good harmony, for long time past, that she is very glad the Government is put into such good hands, and she should live much happier with her daughter and son in law"

किसकी लड़की कहां है और किस अवस्थामें है, इत्यादि। पहले दिन तो उसे कुछ ठीक ठीक पता नहीं मिला, किन्तु आज तीन रोज हुए वजीरी महलके पासवाले तालाबके निकट एक औरतसे उसकी मुलाकात हुई। अमरसिंह खूब जानता था कि महलकी किसी बांदीको मिलाये बिना हाफिज कुमारीका कोई हाल नहीं मिल सकता। अतएव महलके पासवाले तालाबके निकट एक सांवली स्त्रीको देख आगे बढ़कर उसने उससे पूछा—

"क्या नवाबी महलसे आपका कोई सम्बन्ध है? आप क्या जनानखानेके अन्दरही रहती हैं?"

यह स्त्री अमरसिंहका प्रश्न सुनकर एकटक उसकी ओर देखती हुई हँसने लगी। मानो उस हँसीका यह मतलब था कि मैं बेगमकी प्रधान बांदियोंमेंसे हूं और यह व्यक्ति मुझको पहचानता नहीं? इस संसारमें क्या ऐसा कोई मनुष्य है जो मुझको न पहचानता हो? मैं तुफेहबिसा खातून हूं।

उस हँसीको देखकर अमरसिंहने और भी विनीत भावसे पूछा—"क्या आप महलकी किसी बांदीसे जान पहचान रखती हैं?"

यह प्रश्न सुन वह औरत और भी जोरसे हँसने लगी। अमरसिंहने उसको इस तरह हँसती देखकर एकदम चुप्पी साधी।

कुछ देरके बाद अपना परिचय देती हुई उसने गर्व कहा—"मैं जनाबआलिया मुअज्जमेसल्तनत बेगम साहिबा अवधकी खास बांदी हूं।"

इसके अनन्तर उसने और कई बातें कहीं, जिनका तात्पर्य यह था कि महलके अन्दर सैकड़ोंही बांदियोंको उसके अधीन

काम करना पड़ता है। सब बेगम साहबा भी बिना उसकी सलाहके कोई काम नहीं करतीं। उसकी समझमें इस जगत्‌में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो उसको न पहचानता हो। इत्यादि।

अब उसके हँसनेका कारण अच्छी तरह अमरसिंहकी सम झमें आगया। इसलिये इस बार अधिक नम्रतासे उसने कहा— "तब तो आप अवश्यही महलके अन्दरका सब हाल जानती होंगी।"

वह औरत। मैं नहीं जानूंगी तो महलके अन्दरका पूरा पूरा हाल और कौन जानेगा? खैर, तुम चाहते क्या हो?

अमरसिंह। जो, मैं कुछ चाहता नहीं। उस दिन सुना था कि नवाब साहब एक नई बेगम लाये हैं। उसे प्रधान बेगम बनाकर महलके अन्दर रखेंगे और प्रधान बेगमको खुर्दमहलमें भेज देंगे।

औरत। (जोरसे हँसकर) बेगमको खुर्दमहलमें भेज देंगे। यह कब मुमकिन है? हजार नई बेगमें आवें मगर खास महल में बड़ी बेगमही रहेंगी। रुपया पैसा सभी चीजें बेगमके हाथमें रहती हैं। बेगमके कब्जेमें लाखोंकी जायदाद और जागीर है। नवाबके पास हैही क्या? वह तो बेगमके गुलाम हैं गुलाम।

अमरसिंह। सुनता हूं यह नई बेगम बहुत हसीन है।

औरत। सुबहान अल्लाह, इतनी हसीन कि जिसका बयान नहीं हो सकता। अजी हजरत, उसके बदनमें गोश्ततक भी नहीं है, सूखकर काटा हो गई है, तमाम हड्डियां नजर आती हैं। नवाब और अमीर उमरा हमारी जैसी मोटी ताजी और खुब

मिजाज औरतोंको पसन्द करेंगे (!) या ऐसी नाजुकबदन बा तूतीको ? हां, यह हाफ़िज़ रहमतकी लड़की है। बजोर ला इसको लाये हैं तब कुछ दिनों महलके अन्दर रक्खेंगे, मगर बादको जरूरही खुद महलमें भिजवा देंगे।

अमरसिंह। नई बेगम तो यहां आकर बहुत प्रसन्न और हर्षित होगी ?

औरत। कहांकी खुशी और कैसा दिलबहलाव। वह तो शबोरोज़ आंखोंसे आंसूकी बूंदें टपकाया करती है। किसीसे दो बातें नहीं करती। खाना खातीही नहीं। वह भला क्या च कोरके दिलको अपने कब्जेमें कर सकेगी ? हरगिज़ नहीं।

अमरसिंह। तो तो शायद बड़ी बेगम इसको बहुत दुःखित देखकर इसपर विशेष दयादृष्टि रखती होगी ?

औरत। बेगमको क्या और कोई काम नहीं है जो इसकी फ़िक्रमें गलता पेचा होंगी ? बेगम तो उससे एक लफ़्ज़ भी नहीं कहतीं। उनको गरज़ही क्या पड़ी है ? वे नवाबको प्राण ईश्वर हैं। ऐसी झटली औरतोंसे वे क्यों बातें करने लगीं ? अलबत्ता बूढ़ी जगदम्बा बेगमको इसपर ज्यादा तवज्जह रहती है और वह इसीसे इसको खुश रखनेकी कोशिश भी किया करती है।

पाठकोंको याद होगा—पिछले परिच्छेदमें हम लिख आये हैं कि अमरसिंह जगदम्बा बेगमका नाम सुनकर बहुत घबरा उठा था। परन्तु अनेक प्रश्न करनेके पश्चात् उसे मालूम हुआ कि जगदम्बा बेगम बङ्गालेके नवाब मीरजाफ़रकी स्त्री है। इस विषयमें सब बातें जान लेनेसे उसे कुछ सन्तोष हुआ।

पहले दिन तूफानीके साथ अमरसिंहने इससे अधिक कोई बात नहीं की। इस बातचीतके बाद एक दूसरेसे विदा होते समय अमरसिंहने कहा—"मैं एकबार आपसे फिर मिलना चाहता हूं। क्या आप कृपा करके कल भी यहां आ सकती हैं?"

तूफानी अमरसिंहकी इस बात पर कुछ मुस्कुराई, उसने समझा कि अमरसिंह मेरा रूप देखकर मुझपर एकदम मोहित होगया है। इतना सोचनेके साथही वह मनही मन बहुत प्रसन्न हुई। हँसते हँसते बोली—"कल जरा देर करके मैं इसी जगह तुमसे मिल सकूंगी। अब ज्यादा देर नहीं कर सकती। बेगमके गुसलका वक्त नजदीक है।"

इतना कहकर तूफानी वहांसे चली गई। स्नानके समय उसे बेगमका शरीर मल मलकर धोना पड़ता था। अमरसिंह उसी टूटे हुए मकानमें आकर रूपसिंहके साथ रहने लगा।

दूसरे दिन फिर उसी तालाबके किनारेपर तूफानी और अमरसिंह एक दूसरेसे मिले। तूफानी अमरसिंहसे मिलनेकी आशासे प्राय एक घण्टा पहलेही वहां आ गई थी। घण्टे भरके बाद अमरसिंह भी वहां आ पहुंचा।

आज तूफानी अमरसिंहसे बातें करनेके समय अनेक प्रकारके कुत्सित भाव दिखाती और मुस्कुराती थी। इससे अमरसिंहको बहुत दुःख हुआ। परन्तु उसकी सहायतासे हाफिज कुमारीका छुटकारा होनेकी आशा पाकर अमरसिंहको अपना दुःख और क्रोध छिपा रखना पड़ा।

बहुतसी बातें हो जानेके बाद अमरसिंहने कहा—"क्या तुम मुझे छिपाकर किसी दिन महलके अन्दर ले चल सकोगी?"

तूफानी एकबार बोली—"क्यों नहीं ले चल सकूंगी।" फिर कुछ देरके बाद सोच विचार कर उसने कहा—"पकड़े जानेसे हम दोनोंकी गर्दन मारी जायेगी। ऐसे काम लोगोंका काम मेरे जरियेसे होना निहायत मुश्किल है।"

अमरसिंह एक सुन्दर पुरुष था और युवक था। तूफानीकी इच्छा हुई कि वह "मजहब इसलाम कुबूल करके" उसके साथ निकाह करे। परन्तु स्त्रियां भी कुचरित्रा होनेपर भी एकबारगी साफ शब्दोंमें पुरुषके आगे ऐसी बातें कहनेमें लज्जा समझती हैं। अतएव तूफानी मुस्कुराकर, बदन ऐंठकर, आँखें आदि मटका कर तथा अनेक भावभङ्गी दिखाकर अपने मनकी बात प्रकाश करनेका उद्योग करने लगी।

अमरसिंह तूफानीकी उन भावभङ्गीका मतलब समझकर भी नासमझ बनता जाता। वह केवल बारंबार किलेदार का किले मुलाकातोंके विषयमें तरह तरहके प्रश्न करता। थोड़ी देर बाद तूफानी बोली—"आज अब नहीं ठहर सकती। बेगमके गुसलका वक्त हो गया है। गुसलके बाद वे नमाज पढ़ेंगी। अब परेशान यहां न आकर तुम आज बगीचेमें आकर रातके वक्त आना। उस वक्त देर तक बातें करनेका मौका रहेगा।"

अमरसिंह तूफानीकी यह बात सुनकर चला आया। थोड़ी देरमें अमीरोंके गमनके समान आगरेके फाटकके अन्दर प्रवेश किया।

आज वही तीसरा दिन है । अमरसिंह रातको रूपसिंहसे विदा होकर तूफानीसे मिलनेके लिये उसी तालाबके किनारे आकर टहलने लगा।

इधर तूफानी आज एक पहर दिन रहतेही महलके एक विशेष भागमें अपनी कोठरीमें जा और दर्पण फुलेल आदि सामान सामने रखकर अपने चेहरेकी सजावट चुनावट करने लगी। उसके शिरमें अधिक बाल नहीं थे, किन्तु बालोंके सँवारनेमें उसने कोई त्रुटि नहीं की। बाल गूँथ चूकने पर उसने बेगमकी दी हुई एक बहुत बढ़िया साड़ी पहनी। तूफानी समझती थी बल्कि उसको पक्का विश्वास था कि वह अत्यन्त रूपवती है। शायद बहुतेरी स्त्रियोंका खयाल अपने विषयमें तूफानीहीकी तरह होता होगा। किन्तु चाहे वह स्त्री हो या पुरुष—जिस किसीको ऐसी समझ हो उसको हम दोष नहीं दे सकते । परमेश्वरने मनुष्योंको दो आँखें दी हैं परन्तु उनको ऐसी जगह रखा है कि वह दूसरोंका मुख देख लेता हैं किन्तु अपना मुख देखनेमें वह असमर्थ है। अतएव दूसरोंके मुखड़ेमें जो दोष रहते हैं केवल वेही उसे दिखाई देते हैं। अपनी आकृतिके दोष उसे नहीं देख पड़ते।

तूफानी बनठन और कपड़े लत्ते सँवार सिङ्गारकर अकेली पलंगकी बगलमें बैठ गई और आपही आप सोचने लगी—"वह शख्स बड़ा कमअकल है। अगर कमअकल नहीं तो मेरे साथ निकाह करनेकी बात क्यों नहीं छेड़ता? अगर एकबार भी वह मुझसे इस बारेमें कुछ कहे तो मैं फौरन राजी हो जाऊं। भला

सिर्फ एक बात कहूंगी, अगर उसने उसे माना तो ठीक, न माना तोभी कोई हर्ज नहीं। उसके लिये बराबर तीन रोजसे तालाब पर जाना पड़ता है। अगर निकाहसे उसने इनकार किया तो उसके जिस्मपर थूककर चली आऊंगी। सुबहानअल्लाह, कैसा पाकबाज बनता है! जरा नजदीक जाकर बातें शुरू करते ही दूर हट कर खड़ा होता है!

"कल जो मैंने कहा कि तेरे लिये मुरगीका कबाब बनाकर ले आऊंगी तो थू थू करने लगा। दाल रोटीका खानेवाले भला कबाबका मजा क्या जाने? उसके फरिश्तोंने भी कभी मुरगी न खाई होगी—मगर एकबार उसका जायका चखकर क्या वह कभी छोड़ सकता है?"

तूफानी अपने कमरेका द्वार बन्द किये हुए इसी प्रकार चिन्ता कर रही थी। अकस्मात् एक दूसरी बांदी जिसका नाम इरफानी था आकर दरवाजेपर धक्के लगाने लगी। तूफानीने चौंककर पूछा—"कौन, कौन?"

इरफानी बोली—"बेगमके गुसलका वक्त हो गया। तुझे बार बार पुकार रही हैं और तू लापता है। तलाश करते करते मेरे नाकों दम आगये।"

तूफानी यह बात सुनतेही जल्दी जल्दी दरवाजा खोलकर बाहर निकली। उसे बनीठनी देखकर इरफानी बोली—"आज यह सजधज और बनावट चुनावट किस लिये?"

तूफानी। आज अपने शौहरके पास जाऊंगी।

की कोई सूरत नजर नहीं आती।" अतएव प्राय दो घण्टेतक वार्त्तालाप करनेके बाद उसने कहा—

"कल रातको ग्यारह बजे तुम यहीं मुझसे मिलना। मै तुम्हें जनानी पोशाक पहनाकर महलके अन्दर ले चलूगी। कल नवाब साहब जनानखानेमें तशरीफ लावेंगे। सभी नाच रंग और खु-शीमें मस्त होंगे। कल जैसा मौका मिलेगा वैसा मौका फिर नहीं मिलनेका।"

अमरसिंह इस बातसे अत्यन्त प्रसन्न हुआ। अबतक यदि तू-फानी उसके निकट जाकर बातें करती तो वह कुछ सरक जाता। कारण, बातें करते समय तूफानीके मुंहसे थूकको खूब वर्षा होती। परन्तु जब उसने प्रतिज्ञा की कि वह छिपाकर उसे महलके अन्दर पहुँचा देगी तब उसे सन्तुष्ट करनेके लिये वह उसके बहुत पास खड़ा रहा, दूर नहीं हटा। तूफानी समझी कि आज अमर सिंहने प्रेमकी एक और मञ्जिल तै की। परन्तु अमरसिंहने लौ टते समय सरयूजीमें स्नान कर लेनेका पहलेहीसे निश्चय कर लिया था।

बहुतसी बातें करनेके बाद दोनों एक दूसरेसे विदा होकर अपने अपने घर गये। अमरसिंहने रास्तेमें सरयूमें स्नान करके अपना शरीर शुद्ध कर लिया और मकान पर पहुँचकर छत्रसिंह से सब हाल कह सुनाया।

चौथा परिच्छेद।

प्रेमिका नहीं नायिका।

आज हम हिन्दीके उपन्यास पढ़नेवालोंसे कुछ कहना चाहते हैं, आशा है कि वे हमारी धृष्टताको क्षमा करेंगे। हम हिन्दीके उपन्यासलेखकोंके विषयमें भी कुछ कहेंगे। उनको विश्वास है कि वे भी हमारे कथनके औचित्य और अनौचित्य पर ध्यान देकर तब कुछ परिणाम निकालेंगे—अपनी कोई दूसरी बात न समझने लग जायेंगे।

जिस हिन्दी-उपन्यासमें किसी प्रकार प्रेमिक नायक और उत्तम प्रेमिका नायिकाका हाल नहीं रहता वह उपन्यास हिन्दीके उपन्यास पढ़नेवालोंको पसन्द आता है या नहीं यह हम नहीं कह सकते। हिन्दीके सुविज्ञ ग्रन्थकारोंकी लेखनीसे आजतक जितने उपन्यास निकले हैं उनमेंसे प्रायः सभीमें प्रेमिक नायक और प्रेमिका नायिकाका होना दिखाया गया है। परन्तु हमारे इस उपन्यासमें कोई नायक नहीं है। अवश्यही इसकी बेगम नायिका कहकर पाठकोंके आगे उपस्थित की गई है। किन्तु वह भी प्रेमिका नहीं है। उपन्यासमें कहीं कोई नायक नहीं इसलिये यदि यह अनुचित समझा जाय तो पाठकगण लेखकको उसकी इस त्रुटिके लिये क्षमा करें।

सुविज्ञ हिन्दी ग्रन्थकारोंके लिखे हुए उपन्यासोंमें, चाहे वह उपन्यास तिलस्मी हो या जासूसी अथवा और किसी विषय का हो, नायक प्रायः एक प्रेमिक युवक होता है और नायिका कोई

प्रेमिका युवती। ये दोनों एक दूसरेसे मिलनेके लिये पागलके स मान हो जाते हैं। इधर देशाचार सामाजिक और राजनैतिक अवस्था आदि बातें इनके परस्पर सम्मिलनमें बाधा डालती हैं। तब प्रेमी नायक और प्रेमिका नायिका दोनों बड़ी वीरताके साथ इन देशाचार आदि बाधाओं और विघ्नोंसे लड़नेके लिये तैयार होते हैं। लड़ाईमें विघ्नरूपी सब शत्रुओंको पराजित करके युवक नायक युवती नायिकासे सम्मिलन लाभ करता है। कुछ दिनों के बाद उनके बाल बच्चे पैदा होते हैं और फिर वे पुत्र पौत्रादि को देखते हुए सुखसे जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसीही बातें प्राय हिन्दीके उपन्यासोंमें देख पड़ती हैं। हिन्दीकेही उपन्यासोंमें नहीं बरच बङ्गला और उर्दूके उपन्यासोंमें भी। परन्तु हिन्दी और बङ्गलाके उपन्यासोंमें ये बातें कुछ अधिकतासे पाई जाती हैं। हां गुजराती और मरहठी भाषाके औपन्यासिक ग्रन्थोंमें ऐसे आलेख्य कुछ कम चित्रित किये जाते हैं।

सो ऐसेही प्रेम सम्बन्धी उपन्यासोंको हिन्दीके अधिकांश पा ठक अधिक पसन्द करते हैं। परन्तु इस उपन्यासलेखकको हि न्दीके अन्य उपन्यासलेखकोंकी तरह प्रेमराज्यमें प्रवेश करनेका उतना अधिकार नहीं है। अतएव इसके द्वारा प्रिया प्रीतमकी मनोरञ्जक कहानिया पानेकी पाठकोंको बहुत कम आशा रखना चाहिये।

ठढी हवाके चलनेहीसे प्रेमका उदय होता है, चमकीले च न्द्रकी चादनीका स्पर्श होनेहीसे प्रेमका आविर्भाव होता है, आ

इस प्रश्नके उत्तरमें हम केवल इतना कह सकते हैं कि "स हाजनो येन गत स पन्था।"—हिन्दीके अन्य उपन्यासलेखकों के लिखे हुए प्रेमसम्बन्धी उपन्यासोंमें जिन लोगोंका वृत्तान्त लिखा जाता है उनमें जिस युवक और जिस युवतीमें अधिक प्रेम रहता है उसी युवक और उसी युवतीका नायक तथा नायिकाके नामसे परिचय दिया जाता है।

इन्हीं ग्रन्थकारोंके दृष्टान्तका अनुकरण कर इस पुस्तकका लेखक भी अवधकी बेगमको पाठकोंके आगे नायिका' नामसे उपस्थित करता है। इस उपन्यासमें जिन लोगोंके नाम आये हैं उनमें उसीको अपने कर्त्तव्यमें सबसे अधिक त्रुटि करनेके कारण सबसे अधिक कष्ट उठाना पड़ा। सो जब प्रेमके उपन्यासोंमें जिस युवतीके हृदयमें अधिक प्रेम उत्पन्न होता है वह युवती नायिका कही जा सकती है, तब कर्त्तव्यलङ्घन और अनुताप विषयक उपन्यासमें उल्लिखित व्यक्तियोंमें जिसे अधिक कर्त्तव्यलङ्घनके कारण सबसे अधिक कष्ट उठाना पड़ा हो उसे नायक या नायिका कैसे नही कहेंगे? अतएव अवधकी बेगमको इस पुस्तकमें 'नायिका' नामसे उपस्थित करनेसे लेखक पर विशेष अपराध नहीं लगाया जा सकता।

हम इस अवसर पर हिन्दीके समाचारपत्रोंके सुयोग्य सम्पादकों तथा विचारशील समालोचकोंके प्रति भी कुछ निवेदन कर देना उचित समझते हैं। हिन्दीमें प्रेम सम्बन्धी उपन्यासही अधिकतर प्रकाशित होते हैं। समाचारपत्रोंके सम्पादकोंको प्राय

हासिक उपन्यासमें वह झूठी बात कैसे लिखता ? अतएव ला चार होकर उसे तूफ़ानोहोको प्रेमविभागमें सबसे ऊंचा आसन देना पड़ा।

नायिकाके सम्बन्धमें और अधिक भूमिका बाधनेकी आव श्यकता नहीं है। भूमिका लिखते समय इच्छा न होनेपर भी वह आपही आप बढ जाती है। अब हम पाठकोंके आगे उपन्यास को नायिकाको उपस्थित करते हैं।

इस उपन्यासकी नायिका अवधके वज़ीर शुजाउद्दौलाको प्र धान स्त्री "बेगम साहबा" हैं। ये देहलीके एक बहुत बड़े रईसको लड़की हैं। इनके साथ विवाह करनेके समय वज़ीरको इनके नाम दो ढाई करोड़ रुपयेका जहेज लिख देना पड़ा था। ये अच्छे घरको होनेपर भी इतना रुपया पानेके योग्य नहीं थीं। परन्तु बात यह थी कि शुजाउद्दौलाके बाप सफदरजङ्गने भी सैयदुन्निसाके साथ शादी करते समय उसके नाम चार करोड़ रुपये लिखे थे। उसी तरह बेगमके पिताने भी शुजाउद्दौलासे अपनी स्त्रीके नाम दो ढाई करोड़ रुपये लिखनेको कहा।

वज़ीर सफदरजङ्ग और उसके पुत्र वर्त्तमान वज़ीर शुजाउ द्दौलाने विवाहके समय इतने रुपये खर्च कर दिये इस कारण अवधका राजकोष एकदम खाली होगया। नक़द जितना रुपया था वह सब बेगमोंके पास चला गया, तिसपर भी पूरा देन न पटा। अतएव पिता पुत्रने अपने अपने विवाहके समय बहुतसी बड़ी बड़ी जागीरें भी अपनी बेगमोंके नाम लिख दीं।

अवधमें दो प्रकारकी जागीरें थीं। एक वे जिनपर कर नहीं

हासिक उपन्यासमें वह झूठी बात कैसे लिखता ? अतएव ला चार होकर उसे तूफानोद्दीको प्रेमविभागमें सबसे ऊंचा आसन देना पड़ा।

नायिकाके सम्बन्धमें और अधिक भूमिका बांधनेकी आव श्यकता नहीं है। भूमिका लिखते समय इच्छा न होनेपर भी वह आपही आप बढ़ जाती है। अब हम पाठकोंके आगे उपन्यास की नायिकाको उपस्थित करते हैं।

इस उपन्यासकी नायिका अवधके वजीर शुजाउद्दौलाकी प्र- धान स्त्री "बेगम साहबा' हैं। ये देहलीके एक बहुत बड़े रईसकी लड़की हैं। इनके साथ विवाह करनेके समय वजीरको इनके नाम दो ढाई करोड़ रुपयेका जहेज लिख देना पड़ा था। ये अच्छे वंशकी होनेपर भी इतना रुपया पानेके योग्य नहीं थीं। परन्तु बात यह थी कि शुजाउद्दौलाके बाप सफदरजङ्गने भी सैयदुन्निसाके साथ शादी करते समय उसके नाम चार करोड़ रुपये लिखे थे। उसी तरह बेगमके पिताने भी शुजाउद्दौलासे अपनी स्त्रीके नाम दो ढ़ाई करोड़ रुपये लिखनेको कहा।

वजीर सफदरजङ्ग और उसके पुत्र वर्त्तमान वजीर शुजाउ द्दौलाने विवाहके समय इतने रुपये खर्च कर दिये इस कारण अवधका राजकोष एकदम खाली होगया। नकद जितना रुपया था वह सब बेगमोंके पास चला गया, तिसपर भी पूरा देन न पटा। अतएव पिता पुत्रने अपने अपने विवाहके समय बहुतसी बड़ी बड़ी जागीरें भी अपनी बेगमोंके नाम लिख दीं।

अवधमें दो प्रकारकी जागीरें थीं। एक वे जिनपर कर नहीं

लगता था, दूसरी वे जो खिराजी थीं। जो जागीरें बेगमोंके नाम थीं वे निष्कर थीं—खिराजी नहीं। उनकी वार्षिक आमदनी कमसे कम २५—३० लाख रुपयेके लगभग थी।

वजीरके खजानेमें अधिक रुपये नहीं थे, यहांतक कि कभी कभी उसे अपनी मा और बीबीसे कर्ज भी लेना पड़ता। परन्तु कर्जके रुपयोंको वह पीछे चुका देता।

नवाब शुजाउद्दौला बड़ा ऐयाश आदमी था। वह सदा व्यभिचारादि बुरे कामोंमें लगा रहता। बेगम को इस विषयमें उससे कुछ कहने अथवा मना करनेका कोई अधिकार नहीं था। पर नवाब उनसे इसलिये कुछ अवश्य दबता कि वे उसको अवसर समय पर कर्ज देतीं।

हम पहलेही कह चुके हैं कि बेगम साहबा प्रेमिका नहीं हैं। वे अपने स्वामीसे केवल इसीलिये प्रेम करतीं कि उनसे उनको रुपयेका लाभ होता। धन सम्पत्तिसेही वे सुख मानतीं। पतिको एकदम अपने वशमें करनेकी चेष्टा भी न करतीं।

इस संसारमें अर्थ सम्पत्तिका लोभ ही मनुष्यको मोहरूपी घोर अन्धकारमें ले जाता है और अन्तमें उसके विनाशका कारण होता है। अवधकी बेगमको लोभरूपी घोर अन्धकारने बुरी तरहसे घेर लिया था। धीरे धीरे उनको [illegible] किन्तु उनकी और [illegible] थीं। परन्तु इस बातको [illegible] उनको ध्यान नहीं। वे आमदनीके बाद अपनी इच्छानुसार खर्च न करतीं।

रुहेलायुद्ध समाप्त हो गया है। इस युद्धमें नवाबने जय पाई है। अनेकानेक रुहेले सरदारोंकी जागीरें उसे प्राप्त हुई हैं। बेगम सोचती हैं—अब नवाबसे रुहेलखण्डकी भी कुछ बड़ी बड़ी जागीरें मांग लूंगी। इसलिये बड़े आग्रहसे वे नवाबके आनेकी बाट जोह रही हैं। इधर नवाब साहब सैन्य सहित अपने राज्यमें लौट आये। फैजाबादमें खबर आई कि कल दोपहर बाद नवाब राजधानीमें आ पहुंचेंगे।

पांचवां परिच्छेद।

स्वप्न-प्रसंग।

आज सवेरा होतेही फैजाबाद नगर, लोगोंके कोलाहलसे, भर उठा। नगरके सभी लोग क्या सौदागर क्या दूकानदार अपने अपने मकानों और दूकानोंको सजाने लगे। हरेक दरवाजे पर केलेके पेड़ लगे हुए थे। नगरके बालकगण हाथोंमें झण्डियां लिये झुण्डके झुण्ड इधर उधर घूम रहे थे। रह रहकर वे चिल्ला उठते—"वह नवाब साहबकी सवारी आई, वह आई, वह आई"—इत्यादि। इनकी चिल्लाहट सुन दूकानदार और व्यापारी हाथका काम छोड़ छोड़ दूकानसे बाहर निकल आते। कोई कोई इस तरह धोखा दिये जानेके कारण उन बालकोंको बद माश बदजात पाजी झूठा आदि अनेक गालियां देते।

नवाबके महलमें भी आज अधिक धूमधाम थी। सवेरेहीसे गाने नाचनेवालों तथा वेश्याओंका तांता बंधगया था। गवै

रही थी। जगदम्बा बेगम जानती थीं कि जबसे यह यहां आई है तबसे कभी इसे ऐसी नींद नहीं आई। इसलिये उसे जगाना अनुचित समझकर धीरे धीरे उसके सिरहाने जा खड़ी हुई। एकटक उसके सरल और पवित्र मुखड़ेको कुछ समयतक देखती रहीं। वह सोई हुई सुन्दर हाफिजबाला उस समय सचमुचही जगदम्बा बेगमको देवकन्या जान पड़ी। एकबार उसके मुख कमलको चूम लेनेकी उनको बड़ी इच्छा हुई। परन्तु इस भयसे कि कहीं वह जाग न उठे उन्होंने ऐसा नहीं किया, केवल चुप चाप उसकी ओर देखती रहीं।

नींदके आवेशमें पहले हाफिज कुमारीके मुखका रंग कुछ बदला। फिर स्वप्नमें वह बोल उठी—"प्यारे अब्बा मुझे अपने साथ लेते चलो। अब्बा अब्बा, ठहरो—मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।"

बस इतनी बात मुंहसे निकलनेके साथही उसकी निद्रा टूट गई। आंखें खोलतेही उसने देखा कि जगदम्बा बेगम सिरहाने खड़ी हैं।

पहलेही कहा जा चुका है कि फैजाबादमें आनेके बाद पांच छः दिनतक हाफिजकुमारीने किसीसे बातचीत नहीं की। इसके बाद उसने जगदम्बा बेगम और उनकी कन्यासे दो चार बातें करना आरम्भ किया। आज दो दिनसे वह जगदम्बा को "अम्मा" और उनकी कन्याको "हमशीर (बहिन)" के नामसे पुकारती है।

आंखें खोलतेही जगदम्बाको सिरहाने देखकर वह उठ बैठी और अम्मा अम्मा कहकर उनके गलेसे लिपट गई, फिर आंसू भर

देखा। तुम्हारी पैदाइशमें बहुत रोज पेश्तरही इनकी वफात होगई थी। ये मेरे बड़े भाईके लायक व फायक फर्जन्द अलीमोहम्मद हैं। इन्होंने रुहेलखण्डकी सलतनत कायम की।

"वालिदके चुप होतेही उस शख्सने अपना दाहिना हाथ उठा कर आसमानकी तरफ देखा और बायें हाथसे मेरा हाथ पकड़ कर कहा—'ऐ पाक परवरदिगार, जिस खयालने मेरे दिलको इस कदर पुरजोश किया कि मैंने अपना मामूली रोजगार छोड़ कर लड़ाई और खूरेजी पर कमर बांधी, और जिस बदला लेनेके खयालमें मेरा दिल हमेशा भरा रहता, वह खयाल—वालिदके दुश्मनोंको सजा पहुँचानेका वह खयाल—मेरे जिस्मसे बाहर निकलकर इस पाकीजा लड़कीके जिस्ममें पैठ जावे'।

"मैं उस शख्सकी बातोंका कुछ भी मतलब नहीं समझी। सिर्फ चुपचाप वालिदके चेहरेकी तरफ देखती रही।

"तब अब्बाने मुझसे पूछा, 'बेटा, तुमने अपने चचाजान दाऊदखांका नाम कभी सुना है?'

"मैं बोली—'आपहीकी जबानी दो एक दफा सुन चुकी हूं।'

"वालिदने फिर कहना शुरू किया—'कुमाऊंके सरदारने मेरे उन्हीं बड़े भाई दाऊदखांकी जान गैरवाजबी तौरपर हलाक की, यही वजह है कि अलीमोहम्मदने अपने वालिदके दुश्मनोंको सजा पहुँचानेके लिये लड़ाई और खूरेजीकी जिन्दगी अख्तियार की। दाऊदखांकी वफातके बाद इनके दिलमें अजहद जोश पैदा हुआ। इन्हीं अलीमोहम्मदने सलतनत रुहेलखण्डकी नींव डाली। रुहेलखण्डके सभी लोग इनको बतलाई हुई राहपर चलते हैं।

कर रुँधे हुए गलेसे बोली—"अम्मा, अभीतक ख्वाबकी हालत में अब्बाजानसे बातें कर रही थी। अफसोस, वे मुझे छोड़कर चले गये।"

जगदम्बाने हाफिजकुमारीको धीरज धराना आरम्भ किया। कुछ देरके बाद आँसू पोंछकर वह फिर बोली—

"प्यारी अम्मा, मैं आज सारी रात तरह तरहके ख्वाब देखती रही। शुरू शुरू मैंने देखा कि एक शैतानसा आदमी मुझे निगल जानेके लिये मेरी तरफ दौड़ा चला आता है। मैं उस वक्त खौफके मारे चिल्ला उठी। मगर उस शैतानके मेरे नजदीक आतेही पुश्तकी जानिबसे मेरे वालिद और एक दूसरे बहादुर शख्सने आकर उसे पकड़ लिया। वही बहादुर शख्स उस शैतानको पटककर उसकी छाती पर सवार होगया। तब मेरे वालिदने उसके हाथमें एक छुरी दी। बहादुर शख्सने उस छुरीको शैतानके कलेजेमें घुसेड़ दिया। बादअजां फटफटा फटफटाकर शैतानकी रूह उसके कालिबसे निकलकर दोजखको रवाना हुई।

"यह ख्वाब देखकर एक दफा मैं जाग उठी। जागने पर उस शैतानकी खौफनाक सूरतका ख्याल था जागनेमें सिरसे पाँवोंतक थरथरा उठी। कुछ देर पलंग पर बैठी रही। फिर सोनेकी कोशिश करने लगी। थोड़ी देरमें नींदने आ घेरा और ख्वाबोंका सिलसिला शुरू हुआ। देखती क्या हूं कि मेरे वालिद उस बहादुर शख्सको जिसने शैतानका खून किया था अपने साथ लेकर मेरे पास आये हैं और उस शख्सकी तरफ इशारा करके कहते हैं—बेटी, आजसे पहले तुमने इसको कभी नहीं,

देखा। तुम्हारी पैदाइशके बहुत रोज पेश्तरही इनकी वफात होगई थी। ये मेरे बड़े भाईके लायक व फायक फर्जन्द अलीमोहम्मद हैं। इन्होंने रुहेलखण्डकी सल्तनत कायम की।

"वालिदके चुप होतेही उस शख्सने अपना दाहिना हाथ उठा कर आसमानकी तरफ देखा और बायें हाथसे मेरा हाथ पकड़ कर कहा—'ऐ पाक परवरदिगार, जिस खयालने मेरे दिलको इस कदर पुरजोश किया कि मैंने अपना मामूली रोजगार छोड़ कर लड़ाई और खूरेजी पर कमर बांधी, और जिस बदला लेनेके खयालसे मेरा दिल हमेशा भरा रहता, वह खयाल—वालिदके दुश्मनोंको सजा पहुँचानेका वह खयाल—मेरे जिस्मसे बाहर निकलकर इस पाकीजा लड़कीके जिस्ममें पैठ जावे'।

"मैं उस शख्सकी बातोंका कुछ भी मतलब नहीं समझी। सिर्फ चुपचाप वालिदके चेहरेकी तरफ देखती रही।

"तब अब्बाने मुझसे पूछा, 'बेटा, तुमने अपने चचाजान दाऊदखांका नाम कभी सुना है?'

"मैं बोली—'आपहीकी जबानी दो एक दफा सुन चुकी हूं।'

"वालिदने फिर कहना शुरू किया—'कुमाऊंके सरदारने मेरे उन्हीं बड़े भाई दाऊदखांकी जान गैरवाजबी तौरपर हलाक की, यही वजह है कि अलीमोहम्मदने अपने वालिदके दुश्मनोंको सजा पहुँचानेके लिये लड़ाई और खूरेजीकी जिन्दगी अख्तियार की। दाऊदखांकी वफातके बाद इनके दिलमें बेहद जोश पैदा हुआ। इन्हीं अलीमोहम्मदने सल्तनत रुहेलखण्डकी नींव डाली। रुहेलखण्डके सभी लोग इनको बतलाई हुई राहपर चलते हैं।'

"इतना कहकर मेरे वालिद और वह शख्स गायब होगये। मैं ख्वाबे-गफलतमें चिल्ला उठी—"अब्बाजान, अब्बाजान, मुझे भी अपने साथ लेते चलो। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।"

जगदम्बा बेगमको यह स्वप्नवृत्तान्त सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उनको विश्वास था कि मरे हुए आत्मीय सम्बन्धी स्वप्नमें आकर समय समय पर अपने अन्य सम्बन्धियोंसे मुलाकात कर जाते हैं। किन्तु इस समय हाफिजकी कन्याको रोते देखकर उन्होंने उसे ढाढस देना आरम्भ किया। स्वप्नकी बातोंकी ओर अधिक ध्यान नहीं दिया।

छठा परिच्छेद।

बुरे लक्षण।

जगदम्बा बेगम हाफिजकुमारीके कमरेमें बैठी उसे धीरज धरा रही हैं। कुछ देरके बाद उनकी कन्या (मीरकासिमकी पत्नी) कुरान हाथमें लिये हुए वहीं आ पहुंची। उसे देखतेही हाफिजकी पुत्रीने कहा—

"बहिन, आज एक दफा मेरे पास बैठकर कुरान पढ़ो। मुझे ऐसा मालूम होता है कि गोया गैबसे मुझसे कोई कह रहा है कि ऐश छूटो, बेदार हो, तुझे अब इस दुनियासे रुखसत होना पड़ेगा"।

मीरकासिमकी बीबीने कुरान खोलकर पढ़ना आरम्भ किया। पहला आयत यह था—"सूरजकी तरह गर्म हो और चांदके मुखालिफ पाक न साफ।"

इतना सुनतेही हाफिजकुमारी बोल उठी—'बहिन, सूरज की तरह गर्म होनेकी क्या जरूरत है? मेरो समझमें सिर्फ चाद जैसा पाक साफ व ठण्डा होनाही अच्छा है। चादको देखकर सभीके दिलमें खुशी होती है मगर सूरजकी तरफ कोई निगाहें भी नहीं डाल सकता।"

मोरकासिमको स्त्रीने जवाब दिया, "प्यारी हमशोर, आफताबे आलमतावकी गर्मी, जिसका मतलब एकबालमन्दीसे है, दुनियाके तमाम जुल्मों और गुनाहोंको जलाकर खाको स्याह कर डालती है। एलावाअज़ीं चादको ठण्डो रोशनी गन्दगोको दूर करनेवाली और सफाई व पाकोजगीका एक मखजन है। पस, चाद व सूरज दोनोंका होना बहुत जरूरी है। अगर आफताब अपनी एकबालमन्दीसे तमाम जुल्मों और गुनाहोंको दूर न कर देवे तो चांद दुनियाको क्योंकर पाक व साफ करेगा? खुदावन्द तालाने इसी गरजसे दोनोंको बनाया है। और हमारे पैगम्ब रोंने इनसानको इन्हीं दोनोंको चाल चलनेकी हिदायत की है।"

हाफिजकी लड़की। मगर बहिन, मैं चादकी तरह पाक व साफ रहना पसन्द करती हूं, आफताब जैसी एकबालमन्दी मुझे नहीं चाहिये। क़ुरानकी इस हिस्सेको अब्बाजानसे मैं बहुत दफा सुन चुकी हूं। मैं अपने वालिदकी सबसे छोटी लड़की हूं। उनकी ६५ सालकी उमरमें मेरी पैदाइश हुई थी। बचपनमें वे हरवक्त मुझे अपनी गोदमें लिये रहते। जब मैं बड़ी हुई तब भी हमेशा उनके साथ रहती। वे अकसर कहते—"चांदसा होना छोटी उमरमें वाजिब है, मगर काम पड़नेपर सूरजके जैसे तीखे

पनको जरूरत पड़ती है"। मैं तुमसे पूछती हूं बुआ, क्या यह बात सही है? सिर्फ बचपनमें चांदकी तरह होना चाहिये और बड़े होनेपर सूरजकी तरह? कितने मासकी उमर होनेपर चाद साथ जैसा तीखापन इनसानके शिक्षामें आ जाता है? मैं अभी सोलह मास की हुई हूं।

मोरक्काबिमला बोली। तुम आज इस कदर उलझनीसे ऐसे सवालात क्यों कररही हो? तुम्हारी बातचीत और रंग ढंगसे मुझे आज बनिस्बत और दिनोंके कुछ ज्यादा फर्क मालूम होता है। क्या तुम इन गैरमामूल बातोंकी वजह मुझे बतलाओगी?

हाफिजकी लड़की। आज पिछली रातसे मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि गोया वालिद जहां गये हैं वहां मुझे भी बुला रहे हैं। उनको मैंने आजकी रात दो मरतबा ख्वाबमें देखा। मुझे इस बातका शुबहा हो रहा है कि शायद मुझे आजही यहांसे चला जाना पड़ेगा।

हाफिजकुमारीकी इन बातोंको सुनकर जगदम्बाका मन बहुत उत्कण्ठित हुआ। उनको पक्का विश्वास था कि हरेक काम ईश्वरकी इच्छासे होता है। स्वभावसेही उनका मन धार्मिकतासे खूब भरा हुआ था। वे जानती थीं कि संसारकी सभी घटनाओं और कामोंका एक एक न एक कारण है। परन्तु जब किसी बातका कारण उनको ढूंढ़नेपर भी नहीं मिलता तब वे यह परिणाम निकालतीं कि ईश्वरकी गहन लीलासे यह काम हुआ है। वे सदा कहा करतीं कि, "इनसान अपनी हालतसे मजबूर है। उसकी ख्वाहिशके बगैर दुनियाका कोई काम नहीं होता।"

सवेरेही हाफिजपुत्रीके स्वप्नकी बात सुनकर जगदम्बा बेगमका मस्तिष्क तरह तरहकी चिन्ताओंसे भरा हुआ था। तिसपर उसकी इन सब बातोंको सुनकर उनको ऐसा सन्देह होने लगा कि आज इस बालिकाका अवश्य कुछ अमङ्गल होगा। उन्होंने अपने मनमें कहा—"वजीर शुजाउद्दौला आज यहां आवेगा। गालिबन उसीके जरिये इस मासूम लड़कीको कुछ तकलीफ पहुँचाई जायगी।"

इस प्रकार चिन्ता करके जगदम्बा बेगम नवाबकी मा सैयदुन्निसा बेगम और स्त्री बेगम साहबासे मिलने चली गई। इधर मीरकासिमकी स्त्री हाफिजकुमारीके कमरेमें बैठी उसीसे बातें करती रही।

सयदुन्निसा बेगम और बेगम साहबा दोनों बहुतसी बांदियोंको जनानखानेके भिन्न भिन्न कमरोंकी सजावट करनेकी आज्ञा दे रही थीं। हमारे पाठकों की पूर्व परिचिता तूफानी और दरफानी भी इन्ही दस बारह लौंडियोंके साथ काममें लगी हुई थी।

बांदियोंमें कोई कोई तो रंग बिरंगे बहुमूल्य झाड़ फानूस फूलदान इत्रदान आदि सजा रही थी—और कोई कोई भांति भांतिकी विलासिताकी चीजें यथास्थान रख रही थीं।

जगदम्बाके वहां पहुँचने पर सैयदुन्निसा और बेगम साहबाने आगे बढ़कर बड़े आदरसे उनको बैठनेको कहा। बैठनेके बाद उन्होंने कहा—"मैं आपलोगोंकी खिदमतमें कुछ अर्ज करनेके लिये इस वक्त हाजिर हुई हूं। क्या आप मेरी एक अर्ज कबूल करेंगी?"

सैयदुन्निसा बेगम बहुत भले घरानेकी औरत थीं। वे जगदम्बा बेगमका इसलिये बहुत सम्मान करतीं कि वे अपना राज छोड़कर यहां आई थीं। उनके प्रश्नके उत्तरमें उन्होंने कहा—"जो कुछ आप फर्मायेंगी मैं उसकी तामीलीकी हत्तलमक़दूर ज़रूर कोशिश करूंगी।"

इसपर जगदम्बाने कहा—"आज नवाब शुजाउद्दौला यहां तशरीफ़ लायेंगे। मुझे ऐसा ख़याल होता है कि शायद किसी बुरी नीयतसे उन्होंने हाफ़िज़ रहमतकी लड़कीको यहां बुलवाया है। अगर वे सिर्फ़ बेटीकी तरह उसे रखना चाहते तो यहांसे उसे उसकी मांके साथ एहतियातन रवाना कर देते। मैं सिर्फ़ इतना चाहती हूं कि नवाबके आनेसे पेश्तर आपलोग इसे कहीं छिपा दें। मुझे शुबहा होता है कि यहां रहनेमें आज उसकी जानका ख़तरा है। आज सुबहसे मुझे कुछ ऐसेही आसार नज़र आ रहे हैं।"

सैयदुन्निसा। इतना तो मुझे भी यक़ीन है कि शुजाउद्दौलाने निकाहके लिये इसे यहां भेजा है, वर्ना मांको साथ बुला कर यहां लानेकी दूसरी क्या ज़रूरत थी!

जगदम्बा। मगर यह निकाह करनेपर कभी राज़ी नहीं होगी।

सैयदुन्निसा। भला औरतोंके राज़ी होने या न होनेसे क्या हो सकता है? जब वह शुजाके क़ब्ज़ेमें आ चुकी है तब उसके साथ जैसा चाहें वैसा बरताव कर सकता है।

जगदम्बा। आप हाफिजकी लड़कीको मामूली औरत न समझें। अगर शुजा उसके साथ जबर्दस्ती करनेकी कोशिश करेगा तो वह जरूर खुदकुशी कर लेगी।

सैयदुन्निसा। मेरे दिलमें यह बात नहीं बैठती कि वह खुदकुशी करेगी। खैर कुछ भी हो मगर हमलोग इस मामलेमें क्या कर सकते हैं? क्या मैं इस जरासी बातके लिये अपने लड़केसे लड़ने जाऊंगी?

जगदम्बा। औरतोंके लिये सामने बढ़कर अस्मत है। आपलोगोंको इस यतीम लड़कीको अस्मत बचाना मुनासिब है। बेहतर होगा कि आप इसे अभी अभी किसी दूसरी जगह छिपा देनेका इन्तजाम करें।

सैयदुन्निसा। अगर बगैर शुजाको इस बातकी इत्तिला दिये हमलोग इसे किसी दूसरी जगह भेज देंगी तो वह बहुत नाराज होगा।

जगदम्बा। अगर वे कुछ नाराज होंगे भी तो उससे क्या? आपलोगोंकी जान तो लेही नहीं लेंगे।

सैयदुन्निसा। शुजाके नाराज करनेमें हम लोगोंकी हर तरह से खराबी है। इसी वक्त वह हमारी सब जायदाद और रुपया पैसा जबर्दस्ती छीन लेगा। फिर हमलोग किसी कामके न रहेंगी।

जगदम्बा। इस दुनियामें किसी चीजका भरोसा नहीं है। रुपया पैसा दौलत हशमत सब रातको बातमें जा सकते हैं। सिर्फ रुपये और जागीरोंके लालचमें आकर आप ऐसी गलती न करें। औरत होकर अगर आपलोग इस यतीम लड़कीकी मदद

आजतक नहीं हुआ। उसने अपने दरबारमें एक काफिर पण्डित नौकर रखा था और सब कामोंको वह उसीकी सलाहसे करता था। मुर्शिदाबादके नवाबोंमें एक अलीवर्दीही ऐसा था जिसने एकही औरत पर कनाअत की। उसको सिर्फ एकही बेगम थी, दूसरी कोई नहीं। नवाब अलीवर्दीके उसी बूढ़े पण्डितसे बहुत बचपनमें मैंने तीन बातें सुनी थीं। वे तीनों बातें उस वक्तसे आज तक मेरे दिलके अन्दर मौजूद हैं और मैं उम्मीद करती हूं कि ता जीस्त मैं इन बातोंको नहीं भूलूंगी। अगर नवाब वगैर किसी ख खंशेके अपनी सल्तनत चलाना चाहें—अगर नवाबोंकी बेगमें उस चालसे जैसे पाकबाज औरतोंको मुनासिब है रहना चाहें—और अपने लड़कोंको लायक व फाजिल बनानेकी ख्वाहिश हो—तो वे हमेशा उस काफिर पण्डितकी तीनों नसीहतोंके मुताबिक बरताव करें। जो नवाब और बादशाह समझदार होते हैं वे हिन्दुओंको काफिर कहकर कभी अपनी नजरोंसे गिरा नहीं देते। अकबर और अलीवर्दी इनकी लियाकत व काबिलियतको खूब अच्छी तरह जान गये थे।

ज्योंही जगदम्बा बेगम इतना कहकर चुप हुई कि सैयदु न्निसा और बेगम साहब दोनोंने बड़े कौतुकके साथ उनसे पूछा— "उस काफिर पण्डितने कौनसी तीन नसीहतें की थीं?"

जगदम्बा। उस पण्डितकी नसीहतोंका हाल कहनेके लिये मुझे अपनी जिन्दगीका तमाम अहवाल अज सर तापा बयान करना पड़ेगा। उसने जो तीन बातें कही थीं वे खुद मेरेही ऊपर गुजरी हैं।

रसीद पण्डित और अलोवर्दी हम चारोंको अपने नजदीक बुला कर मीठी मीठी बातोंको खुश करनेवाली बहुतेरी बातें कहते। पण्डित भी हम सबसे मुहब्बत करता। वह बड़ा लायक और पाक व साफ शख्स था मगर उसकी जबानसे हमेशा मजाकके अलफाज निकला करते। इससे उसकी खुशतबई और पाक बाजी जाहिर होती।

"एक रोजका जिक्र है कि उस पण्डितने हम चारोंको अपने इर्द गिर्द बैठा कर कहा,—'तुम सब मेरे साथ निकाह करोगी?'

"हम चारों उसकी बातपर हँसने लगे। मगर असोगी बेगम बचपन हीसे बोलनेमें बड़ी तेज थी। उसने जवाब दिया, 'हमारे साथ निकाह करनेसे आपका हिन्दूपन जाता रहेगा।'

पडितने फिर मजाकके साथ कहा, 'तुम सभीका सिर मुड़ाकर वैष्णवी बना लूंगा।'

"अलोवर्दी।—'मेरी लड़की "वैष्णवी" क्यों होगी?'

"पडित।—'उसे वैष्णवी नहीं बरन् वेश्या बनना पड़ेगा। वैष्णवी और वेश्याका प्राय एकही प्रकारका धर्म होता है। हा वैष्णवी बननेसे समाजमें कोई अपमान नहीं होता। इसलिये मैंने यह प्रस्ताव किया कि जिसमें आपका उपकार हो।'

"अलोवर्दी। – (हँसते हँसते) मेरी लड़की 'वेश्या" या तवायफ भी क्यों होने लगी! ये सब नवाबोंकी बेगमें बनेंगी।'

"पडित— नवाबोंकी बेगमोंको भी मैं तवायफोंहीके तुल्य समझता हूं। यह गुण केवल आपहीकी बेगममें है कि यह सीधर्म पालन करनेमें समर्थ हुई है।'

"पण्डितजी इस बातने भी मेरे दिलमें जगह पाई। बाद अजा कुछ रोज बाद एक मौक़े पर नवाबोंकि जुल्मोंका जिक्र करते हुए पण्डित साहब बोले—'देशके राजा पर यदि प्रजा भक्ति और श्रद्धा न रखे और राजाको अपने पद प्रभुत्वको रखाके लिये यदि सदा सेना रखना पड़े, तो वह राजा वास्तवमें राजा नहीं है, वह लुटेरा है।

"पण्डितजी ऊपर कही हुई तीनों ही बातें मेरे दिलमें खूब नक्श होकर रह गई। मैं अकसर आपही आप कहा करती—'जो औरत अपने खाविन्दका दिल अपने कब्जेमें नहीं कर सकती, वह जोजए जायज नहीं, वह तब यफ है। जिसकी रैयत खुश न हो वह राजा नहीं लुटेरा है। जो फर्जन्द अपने वालदैन की नसीहतों पर अमल नहीं करता वह पेशाबके बराबर है, क्योंकि पेशाब और फर्जन्दकी जड़ एकही चीज है।' सोते वक्त भी ये तीनों बातें मेरे दमागके अन्दर नाचा करती। अलीवर्दी की लड़कियां घसीटी बेगम वगैरहने भी पण्डितजी ये बातें सुनी थीं, मगर उस वक्त इनको सुनकर वे हँसने लगी थीं। मेरी तरह उनके दिलपर इसका कोई असर नहीं पड़ा।

"कुछ दिनोंके बाद नवाब अलीवर्दीके भतीजे अहमदजङ्गके साथ घसीटीकी शादी हुई। अहमदजङ्गका दूसरा नाम नवाजिश मुहम्मद था। शादीके चन्द रोज बाद वे ढाकेके नवाब मुकर्रर हुए। घसीटी बेगमकी शादीके बाद उसकी दोनों बहिनें भी ब्याही गई। जब मेरी शादीकी बात चली तब मेरा दिल बहुत घबराया और रञ्जीदा हुआ। पण्डितजी नसीहत याद आनेसे मुझे

गया है। अस, अलीलोने मेरी बातोंको मेरा खामखयालोका न तीजा बतलाकर यह सब हाल अपने खाविन्दसे कह दिया। उस का शौहर अहमदजङ्ग इस मजमून पर अपने साथियों और हमसुहबतोंमें दिल्लगियाँ उड़ाने लगा। रफ़ा रफ़ा यह बात अली- वर्दी और उसकी बेगमके कानोंतक पहुँची। अपने दिलकी बात जाहिर कर मैं बहुत पशेमान हुई और शर्माई। जनानखानेमें सभी कोई मुझसे मजाक करने लगा। लोगोंके खयालमें मैं पा- गल तसौवर की जाने लगी।

"मगर नवाब अलीवर्दीके मुकाबिलेका कोई नवाब आज तक मुर्शिदाबादके तख्त पर नहीं बैठा। जिस वक्त दूसरोंको मजाककी सूझता उस वक्त वे मेरा तारीफें करते। एक रोज उ न्होंने मेरे बारेमें अपनी बेगमसे कहा—'अगर इस लडकीकी ख़ाहिश नहीं है तो इसकी शादी मीरजाफरके साथ करदेना गैर-मुनासिब होगा।'

"मेरा असल नाम मेहरुन्निसा था। अलीवर्दी मुहब्बतसे सिर्फ मेहर कहकर मुझे पुकारते।

"उसी रोज अहमदजङ्गको बुलाकर उन्होंने कहा 'मेहर मीरजाफरके साथ शादी करने पर राजी नहीं है। इसलिये उ सके साथ इसकी शादी न होगी।'

"मीरजाफर और अहमदजङ्गमें दिली दोस्ती थी। अस, अह मदजङ्गने जवाब दिया, 'मीरजाफरके साथ शादी करने पर वह क्यों नहीं राजी है? इन ऐसी मजाककी बातोंको क्या आपने सच समझ लिया?'

अक्ल नहीं रहती।' छ महीनेके अन्दरही अन्दर मैं पिछली बातें भूल गई। अब लोगोंको बहुतसी शादियां करते देख मुझे नफरत न होती। ऐसी हालतमें जब कभी घसीटी बेगमसे मुझसे मुलाकात होती तब वह मजाकके साथ कहती, 'ऐ बुआ, सो रूआफरने तो बहुतसी शादियां नहीं कीं। चलो अच्छा हुआ तुम तवायफ होनेसे बची।' घसीटीकी बातों पर मैं हँसी न रोक सकती। सोचती कि लड़कपनमें सचमुच मेरे दिलमें पागलपन समा गया था।

"मेरी शादीके कोई १६-१७ साल बाद नवाब अलीवर्दीने इन्तकाल किया। सिराजद्दौलाने मुर्शिदाबादकी गद्दी पाई। मगर उसके तख्तनशीन होनेके एक बरस बाद एक रोज शामके वक्त एक पाल्की जो कपड़ोंसे ढँकी थी आकर मेरे दरवाजे पर खड़ी हुई। पाल्की देखकर मैंने खयाल किया कि शायद नवाबके यहांकी कोई औरत मुझसे मुलाकात करने आई है। यह समझकर मैं ऊपरसे नीचे उतर आई। दरवाजे पर मेरा वही नालायक लड़का मोहन खड़ा था। मगर उसी वक्त मैंने देखा कि एक लम्बी दाढ़ीवाला बदसूरत अंगरेज † पाल्कीसे उतर रहा है। उसे दे

† It still remained necessary that Meer Jaffer should take an oath to observe the treaties Mr Watts therefore proposed an interview, which Jaffer wished likewise * * * Mr Watts relying on the fidelity of his own domestic, and on the manners of the country, went in the afternoon from his house in covered palanquin, such as carry woman of distinction, and passed without inter

श्रतेही मैं अन्दी नज़रो ऊपर लोट गई। लोरनका नज़र सुनान पड़ सको। एक अंगरेज़को महलके अन्दर आते देखकर मुझे बहुत ताज्जुब हुआ और इसकी कोई वजह मेरी समझमें नहीं आई। लोरन और मेरे शौहर (मीरजाफ़र) उस अंगरेज़को साथ लेकर महलके एक सुनसान कमरेमें घुसे। मैं भी छिपकर बग़लवाले कमरेमें जा पहुँची ताकि उनकी बातें मैं बखूबी सुन सकूँ। इनकी बातें समझना आसान काम नहीं था। सब बातोंका मतलब भी मैं नहीं समझ सकी। हाँ, इतना मैंने खुद आँखोंसे जानते देखा कि मेरे शौहरने कुरान हाथमें लेकर किसी बातके लिये क़सम खाई। इनकी बातोंके ढंगसे मुझे मालूम हो गया कि सिराजुद्दौलाको तख़्तसे उतारनेकी तजवीज़ हो रही है।

"उस ज़मानेमें मेरे खाविन्द सिराजुद्दौलाकी फ़ौजके बड़े आला अफ़सर थे। नौकर होकर मालिकके साथ ऐसी नमकहरामी करनेसे बढ़कर और कौन गुनाह हो सकता है? इनकी ऐसी बुरी कारवाईसे रोकनेके लिये मैंने लोरनको पुकारकर कहा, लोरन, मैं तुमलोगोंकी सब तजवीज़ोंका हाल जान चुकी हूँ। या तो तुमलोग इस कारवाईसे बाज़ आओ नहीं मैं यह बातें ज़ाहिर कर दूंगी।'

"ज्यों ही यह बात सुन मेरे खाविन्द मीरजाफ़रने उस वक्त मुझे क़त्ल कर डालनेका इरादा किया। मगर इतने बाद अंगरेज़ने

[illegible] to Jaffier's palace, who with his son Meeran received him in the women's apartments of the Seraglio [illegible]
Orme, History of Indostan, Vol II, p. [illegible]

चाहे वह कैसाही क्यों न हो मारे कुछ न कुछ मुहब्बत जरूर होती है। गोकि मीरन मेरे खाविन्दसे कहीं ज्यादा सङ्गदिल था मगर मेरे कत्लकी तजवीज उसने बिलकुल नापसन्द की। इतना जरूर हुआ कि बाप बेटे दोनोंने मुझे धमकाना शुरू किया कि 'अगर तू राज फाश करेगी तो उसी वक्त तेरा सिर तनसे जुदा कर दिया जायगा।'

मैंने भी दिलमें खयाल किया कि अगर सिराजुद्दौलाके कानों तक ये बातें पहुँचेंगी तो वह फौरन इन दोनोंको कत्ल करा डालेगा। अगर सिराजमें कोई बात बर्दाश्त करनेकी ताकत होती और जो कुछ मैं कहती उसे वह मानलेता या। मेरे कहनेसे मेरे बेटे और शौहरकी जान छोड़ देता तो जरूर था कि मैं मीरन और अपने शौहरकी सब कार्रवाइयोंकी इत्तिला उसके कानों तक पहुँचा देती और इस तौरसे वह तख्‌से उतारे जानेसे अपना बचाव कर सकता। मगर इस दुनियामें जो लोग लफज् 'माफ़' को रवा नहीं समझते और किसीकी कड़वी बात बर्दाश्त नहीं कर सकते वे पूरे बदबख़्त होते हैं। ऐसे लोग दूसरोंको भी जो उनकी मदद पहुँचाना चाहते हैं इस बातका मौका नहीं देते।

"खूब सोच समझ लेनेके बाद मैं इस मामलेमें चुप हो रही। इस वक्‌एके दो तीन महीने बाद सिराजुद्दौलाको तख्‌से उतार दिया गया। मेरे शौहर बङ्गालेके नवाब हुए।

"मगर बादशाह नवाब या सल्तनतका बड़ा अफसर होकर जो शख्स अपनी रियायाकी खुश नहीं रख सकता उससे बढ़कर बदबख़्त इस दुनियामें कोई नहीं। जो भूखा गरीब मंगन दिन

डाला। दूसरे अहशी मीरकाजिम † मेरे मामू लगते थे। उनके ऊपर भी मीरजाफर और मीरनकी कुछ शुबहा हुआ। खाना खानेके लिये बुलाकर धोखेमें उनकी भी जान ली गई।

"इसके चन्द रोज बाद इमारतोंके दारोगा ‡ यार मुहम्मद खां और एक दूसरे लायक शख्स अब्दुल वहाबखांकी § भी जान ली गई।

"ज्यादा क्या कहूं। रोज बरोज यह खूरेजी तरक्कीही करती गई। मुझे अपने शोहर और बेटेसे रफ्ता रफ्ता नफरत मालूम होने लगी। मैंने आपही आप कहा कि बचपनमें नवाब अली वर्दीके जईफ पण्डितने जो तीन बातें कही थीं वे मेरेही सिर पर गुजरीं। ऐसा वकूआ पेश आनेको था शायद इसीलिये पहलेहीसे ये बातें मेरे दिलमें जम गई। अलीवर्दीकी तीनों लड़कियोंने भी

† Meer Cazim, the second Buxy, invited by the Chota Nawab to his house and, after having received from him unusual marks of affection, assassinated at the gates of the palace —*Original Papers Relative to the Disturbances in Bengal Vol I page 63*

‡ Yar Mohammed, formarly *in great favor with the* Nawab Sirajahdowlah, and since Darogah of the Emarut, (was) slain in the presence of the Chhota Nawab — Original Papers Relative to the Disturbances in Bengal

§ Abdul Wahab Cawn murdered at the Rumna, by some of the harcaras belonging to Checon, (who was a favourite of Meer Jaffer) —Original Papers Relative to the Disturbances in Bengal Vol I, page 63

मीरको बङ्गालेका सूबेदार बनाने पर राजी नहीं हैं, उन्होंने सिराजुद्दौलाके छोटे भाईके बेटे, एक बरसके बच्चे, मिर्जामेंहदी हसनको सूबेदारी अता की है और रायदुर्लभको उसका दीवान मुकर्रर किया है। इस खबरके मुर्शिदाबाद शहरमें पहुँचतेही उस दिन मीरनने कई लुटेरोंको उस एक सालके मासूम बच्चे मिर्जा मेंहदीकी जान लेनेके लिये भेजा। मिर्जामेंहदीकी परवरिश सिराजुद्दौलाकी मा आमना बेगम करती थीं। उस वक्त आमना बेगम अपनी वालिदा (अलीवर्दीकी बेगम) के साथ मुर्शिदाबादमें रहती थी।

"मीरनके भेजे हुए लोगोंने नवाब अलीवर्दीके जनाने महलमें घुसकर उस मासूम बच्चे मिर्जामेंहदीको मार डाला और नवाब की बेगम व आमना बेगमको कत्ल करनेके लिये पकड़ लाकर मीरनके मकानमें कैद कर दिया।

"अलीवर्दीकी बेगमने माकी तरह बचपनहीसे मेरी परवरिश की थी। उनको दुख्तर आमना बेगमको मैं हमेशा छोटी बहिन के मानिन्द प्यार करती। मेरे नालायक बेटेने इन दोनोंको कत्ल

On the 10th in the morning the whole city was in consternation, and the troops in the different quarters in tumult. A band of ruffians, sent by Meerun, had in the night entered the palace of Alliverdy's widow, with whom lived the widow of Tamdee Harmed (?) and her infant grandson Mirza Mendi They murdered the child and gave out, they had likewise slain the two mothers Ormes' History of Indoostan, Vol II., page 272

दारोंके लिये मीरनको खूब मलामत की। अंगरेज गोकि भोलेभाले और लालची होते हैं मगर फिर भी मीरनसे कम। मीरनने गुस्सेमें आकर उस अंगरेजसे कहा—'मैं तुमसे ज्यादा बात करना नहीं चाहता। वह बूढ़ी औरत हर रोज पालकीमें सवार हो जमादारोंके मकानों पर जा जाकर उनको उभारती थी। इसीको मैं क्यों छोड़ देता ?'

"कई माह बाद मीरनको मालूम हुआ कि अलीवर्दीको बेगम और आमना बेगम मेरी मन्दसे भागकर ढाकेमें आराम कर रही हैं। यह सुन फौरन उसने वहांके नायब नवाब जसारत हुसेनके पास इनके कत्लका परवाना भेजा। जसारत हुसेनखां इस बातपर राजी नहीं हुए। * उस वक्त मीरनके आखिरने घसीटी बेगम, आमना बेगम, घसीटी बेगमके परवर्दा मुरादुद्दौला, सिरा

Meer in, who, amongst other vindications, still preserving a secret, said "Why shall not I kill an old women, who goes about in her doly to stir up the Jamautdars against *my father?*" A few days after it was discovered that the two women had not been murdered, but had been *taken* out of the palace, and put into boats which set off immediately for Dacca —*Ormes' History of Indoostan* Vol II, page 272

* A pervana was sent to Jesarut Cawn, the Nawab of Dacca, to put to death all the survivors of the family of Nawab Aliverdy Cawn, Shahamut Jung and Serajhdowlah but upon his declining to obey so cruel an order the messenger who had private instructions to

नोंकी कारस्वाइयोंसे अपनी खराबी पैदा कर लेता है। मैं आप ही आप कहती,—वकीलोंसे इस नतीजेकी भी यही वजह हो सकती है।

"अक्सर मैं खुदही यह भी कहती कि लड़कपनमें जो ख़याल दिलमें पैदा होता है वह पाक होता है। बड़ी उमरमें दिल सख्त हो जाता है। मैंने छोटी उमरमें इस बातका अहद किया था कि उस नवाब या उमराके साथ मैं अकद नहीं करूंगी जो कई शादियां पसन्द करता होगा। अगर इस ख़यालसे मैं न हटती तो गालिबन इतनी तकलीफ न उठाती।"

इतना कहकर जगदम्बा बेगम थोड़ी देरके लिये चुप होगई।

दूसरा भाग समाप्त।

चन्द्रावली	/'	छाती का छुरा	-)
जवाहरात की पेटी	-)	नया उपन्यास	॥)
जादूगर ४ भाग	१॥)	ठगवृत्तान्तमाला	३॥
डाकू	-)	तारा ३ हिस्सों में	१॥
तिलस्मी सीसमहल	।-	तांतियाभील	/)
तूफान	-)॥	दलितकुसुम	/
दीपनिर्वाण	॥।)	दीनानाथ या गदहचरित	।-)
दुर्गेशनन्दिनी २ भाग	॥)	नरपिशाच ४ भाग	३)
नरेन्द्रमोहिनी २ भाग	१)	नूरजहां उपन्यास	।)
निराला नकाबपोश	।/)	प्रमीला	॥/)
परीक्षागुरु	॥।)	पुष्पवती	।/)
पुलिसवृत्तान्तमाला	॥)	पूना में हलचल	।/)
प्रेममयी	/)	बसन्तमालती	।/)
वंगविजेता	१)	बीरपत्नी	।-)
बीरजयमल	॥)	भयानक भ्रमण	॥।)
भूतों का मकान	॥)	भूला भटका	-)
मदनमोहिनी वा—		मधुमालती	॥।'
मायामहल	॥)	मनोरमा जादूगरनी	॥)
महेन्द्रकुमार दो भाग	१।)	मरता क्या न करता	/
मायावी	१॥)	मायाविनी	।)
मायाविलास ४ भाग	१)	मस्तानी	।)
रजीया बेगम	॥/)	रंगमहल	॥।)

भारतका उपहार।

चन्द्रकुमारी.

बाबू झाबरमल दारूका.

है इस समय श्री प्रसाद भी इसी जगह आ पहुचा है। श्रीप्रसादने बगीचेको देखकर मनमें सोचा कि आज इसी जगह विश्राम लेना चाहिये यह सोच बगीचेमें प्रवेश किया। बगीचे प्रवेश करनेपर श्री प्रसादने जो उसमें देखा तो उससे उसके हृद ख-आनन्द, और विस्मयका एक अ वचनीय भाव पैदा हो गये। उसने क्या देखा कि एक नौजवान स्त्री तालावके किनारे बैठ २ कुछ सोच रही है। श्रीप्रसाद उस नौजवानके सम्मुख जाय खड़ा होगया। उस नौजवानने उसको देखकर कातर स्वरसे कहा—"हे पथिक! तुझको देखकर मुझे अपनी प्राणाधिक सहोदराकी कथा स्मरण आतीहै" यह कह वह युवती जोर २ से रोने लग गई।

श्रीप्रसादने युवतीको रोती देखकर मनमें बहुत दुखित होकर कहा तुम्हारा नाम क्या है? आपकी जाति चाहे जो हो मैं आपको अपनी सगी बहिन स्वीकार करताहू। परन्तु यहा तुम किस लिये बैठी और क्या सोचती थी आदि सब वृतान्त कुछ आपत्ति नहो तो कह दीजिये।

युवती—इस अभागिनीका नाम कमला है और मेरी कथा कहना यद्यपि मुझे अस्वीकार नहीं है परन्तु इस समय कहनेमें बहुत देर लगेगी। हे पथिक! तुम बतलावो कि इस भयानक जगहमें क्यों आये हो।

श्रीप्रसाद—किसी कामके लिये।

कमला—! आज रात्रिको यहा ठहरना तुमको उचित है।

श्रीप्रसाद अच्छा बहिन मे यहा ठहर जाऊगा परन्तु यह बतलाओ कि तुमने किसी ब्राह्मणको देखाया।

कमला—कौन ब्राह्मण? मैने किसीको नहीं देखा?

यह कहकर कमला श्रीप्रसाद को टकटकी लगाकर देखने लगी।

श्रीप्रसाद—तुम अब जाओ मैं कुछ देरके बाद मिलूंगा।"

दूसरा बयान।

कमला धीरे २ पश्चिमकी तरफ जा रही है, परन्तु उठना पड़ाहै। नहीं बढते हैं। बहुत दिनोंके बाद अपने स्वदेशीय मनु उसे जैसा आनन्द हुआ उसका वर्णन करना कठिन है जाता हूं। इच्छा यहथी कि निरन्तर श्रीप्रसादके पास रहकर उसके मधुर व सुना करूं। पहिले

पाठक! इस मजमूनका मतलब आप समझे हो या न समझे परन्तु जो विदेश रहा है वही इसका तात्पर्य्य भली भान्ति समझा है। स्वदेशकी महिमा विदेशमें रहनेवालेहीको जान पड़ती है।

जब तक कमला दीखती रही तब तक श्रीप्रसाद उसको एक टक-टकी लगाकर देखते रहे और जब वह आखोंसे गायब होगई तब श्रीप्रसाद अपना कार्य्य करनेको चले।

कुछ भी दूर बगीचेसे नहीं गये होंगे कि रास्तेमें एक जगह कुछ खून और एक कपड़ा देखकर श्रीप्रसादकी भयसे देह कांपने लगी। इस समय क्या करना चाहिये यह कुछ भी स्थिर नहीं करसके उसके कुछ आगे पर एक आदमीका सिर पड़ा हुआ था उसको देखकर बाकी के होश भी गुम होगये। देहमें सन्नाटा छागया। उसके पास जाकर सोचने लगे कि ऐसा कौन निर्दयी मनुष्य था जिसका मनुष्य को मारते समयभी कठोर हृदय नहीं पिघला किसी मेरे ऐसे पथिकने ही यहां आकर प्राण गमाया जान पड़ताहै।

मेरा मन न जाने क्यों व्याकुल हुआ जाता है इस समय मेरा पिता कहां है? क्या वह भी इन पिशाचोंके हाथसे मारा गया? और यदि यह सच है तो मुझे भी अधिक कष्ट देना नहीं चाहिये, मुझे शीघ्र मेरे पिताके पास पहुंचा देना चाहिये"

कुछ देरके बाद कहा—क्या वह ब्राह्मण तुह्मारे साथ आयाथा ? "

श्रीप्रसाद—नहीं, वह मेरे साथ नहीं आया परन्तु मेरे पहिले आयाथा । उसीके लिये मुझे इतना कष्ट उठना पडाहै । उसके बिना देखे मैं बहुत चिन्तित हूं ।

अब मैं ज्यादा देरतक यहा नहीं ठहर सकता । अब मैं जाता हू । देख बहिन मुझे भाईके समान समझना ।

कमला—भाई ! रात्रिको जाना ठीक नहीं कल सुबहको चलेजाना ।

श्रीप्रसाद—नहीं बहिन ! मेरा मन बहुत चचल होरहा है । मैं अभी कुछ देर घूम आता हू तुम मेरी प्रतीक्षा करती रहना ।

कमला—अच्छा तुम जाते हो तो जावो परन्तु अधिक विलम्ब न करना अभी शीघ्र लौट आना । मै तुम्हारी प्रतीक्षा करती हू ।

श्रीप्रसाद फिर अपने पिताका पता लगानके लिये रवाना हुआ । परन्तु कुछही दूर गये थे दे । कि चार आदमी विकराल मूर्त्ति धारण किये हाथमें तलवार लिये उसीको लक्ष कर आरहे हैं । श्रीप्रसाद ज्ञान शून्य होकर कमलाकी तरफ जल्द २ बढा परन्तु उनको अपने पीछेही आते देखकर बेहोश होकर गिर पडा । जब कुछ देरके बाद होश आया तो क्या देखता है कि उसके पास और कोई नहीं है केवल उसकी स्नेह मई बहिन पासमें बैठी शुश्रुषा कर रही है । उससे कहा—वह राक्षस कहा गये ।

कमला—मुझको देखने मात्रसे वे चले गये ।

श्रीप्रसाद बैठा होकर सोचने लगा कि यदि उन राक्षसोंसे मेरी मृत्यु हो जाती तो ससारमें मुझे दुःख भोगने नहीं होत ।

फिर कमलासे कहा—हे बहिन तुमने जो आजमेरा उपकार किया है उसको मै कभी नहीं भूल सकता । तुमारे इस उपकार के लिये मैं

आचरण नीच जातिका होता है अच्छा क्या तुम अकेली हो ?

कमला—मैं तुमको पहिलेही कह चुकी हूँ कि यहां हम दो स्त्री हैं

श्री प्रसाद—दूसरी स्त्री— । दोनोंमें इस तरह बात चीत हो रही थी कि देखा एक सुन्दर स्त्री हाथमें कुछ लिये हुए अपनी तरफ आती है । उसका सौन्दर्य इस तरह कपडोंमेंसे दिखलाई देता था जिस तरह बिजली मेघमें छिपी नहीं रह सक्ती ।

पाठक आप समझ गये होंगे कि इसी सुन्दरीकी वह मधुर आवाज श्रीप्रसादको सुनाई दीथी । वह कुमारी एक भोजन परिपूर्ण पात्र एक चौकी पर रखकर वापिस चली गई । कमलाने उसको वापिस जाते देख "चन्द्र" 'चन्द्र" कहके पुकारा परन्तु उत्तर नहीं मिला । कुछ देरके बाद जब कमलाने देखा तो क्या कि वह युवती किवाडोंके छेदोंमेंसे पथिकको देख रही है और मंद २ हसी हसती है । कमलाने उसको हसते २ कहा—"चन्द्रा यह पथिक तो घरहीका है इससे लज्जा करनेका कुछ कारण नहीं है । " यह सुन हसते २ चन्द्रकुमारी कमलाके निकट आकर बैठ गई ।

पाठक इस समय सब मनमें खुशी है । कमला अपने देशके आदमी को देखकर खुशी है । श्रीप्रसाद अपनी बहिन समान कमलाको देखकर खुशी है । इसके खुश होनेका एक और भी कारण है वह यह कि इसके मनमें चन्द्रकुमारीकी चन्द्र प्रतिमा विराज रही है । चन्द्रकुमारीके खुशी होनेका एक मात्र कारण श्रीप्रसाद है । चन्द्रकुमारी श्रीप्रसादको देखकर कभी हसती है और कभी लज्जासे सिर नीचा करलेती है । और मनही मनमें अलौकिक सुख अनुभव कर रही है । श्रीप्रसाद जब देखता है तब चन्द्रकुमारी हसमुख दिखलाई देती है ।

पाठक इस समयका प्रेम आपमें कभी ऐसी कभी गुजरी होगी जबहीं मालूम होसकता है । इस समय प्रेम दोनोंको एक दूसरेकी तरफ खेंचरहा है ।

तीसरा बयान।

कमला इस समय बहुत खुश है। वह चन्द्रकुमारीके सुखसे सुखी है। जब चन्द्रकुमारी सात वर्षकी थी तबसे दोनों एक साथ रहने लग गई थीं। कमलाने चन्द्रकुमारीको छोटी बहिनके समान जानकर लालन पालन किया। इस समय चन्द्रकुमारीकी उम्र लगभग पन्द्रह वर्ष की है किसी अच्छे घरानेके आदमीसे शादी करना यह कमलाकी इच्छा है। चन्द्रकुमारीको कमला अपने प्राणोंसे बढ़कर समझती है। चन्द्रकुमारीका शान्त नम्र स्वभाव है। चन्द्रकुमारी भी कमलाको बड़ा बहिनके सदृश समझती है और बिना कमलाकी आज्ञा कोई काम नहीं करती है। इस समय चन्द्रकुमारीके मनमें क्या है यह कमला नहीं जानती और इसी लिये उसने कहा—चन्द्र! क्या तुमको नींद आती है? चन्द्रकुमारीने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया केवल नीचेको देखती रही। कमलाने फिर कहा—चुप कैसे होगई? यदि नींद आती है तो सोनेके लिये यह पलंग रखा है।" यह कहकर कमला हसने लग गई इसको देख चन्द्रकुमारी भी हसी औ श्रीप्रसाद भी हसा।

चन्द्रकुमारी—तुम कहां सोवोगी? कमला—मैं भी यहां सोऊंगी। चन्द्रकुमारीने लज्जासे सिर नीचा कर लिया और कहा—नहीं अभी मुझे नींद नहीं आती।

कमला—मैं भी समझती हूं कि आज तुमको नींद नहीं आवेगी।

चन्द्रकुमारीको विशेष कुछ कहते नहीं बना लज्जासे सिर नीचा किये रही। कमलाने चन्द्रकुमारीका मुख चुम्बन करके कहा—अहा? चन्द्र! हम लोगोंके भाग्यमें क्या लिखा है? यह कहकर उसने श्रीप्रसादके पास जाकर उसके कानमें कुछ कहा जिससे वह बहुत खुश हुआ। और हसने लग गया। कमलाने क्या कहा सो चन्द्रकुमारीको कुछ नहीं जान पड़ा किन्तु श्रीप्रसादको हँसते देखकर अनुमान कर लिया,

कि बात कुछ खराब नहीं है

कमलाने श्रीप्रसादसे कहा—भाई पथिक ! मेरी चन्द्र बहुतही सरल और नम्र है। मैं इसके विवाहके लिये बहुतही चिंतित हूं। कैदमें रहनेसे कुछ भी नहीं कर सकती।" कमला जिस समय यह कह रही थी उस समय चन्द्रकुमारी उसको ऊगलियोंके इशारोंसे मना करती थी।

कमला उसका इशारा देखकर हसी और कहा—चन्द्र ! क्या तुम सदा इसी तरह रहोगी ?

चन्द्रकुमारीने धीरे २ कहा—मैं सदा इसी तरह रहूगी तो इसमें हानि क्या है ?"

कमला-तुम इस तरह रहो तो मेरी इसमें कुछ हानि नहीं परन्तु इस तरह नहीं रह सकोगी। तुम अभी लडकी हो इससे नहीं समझती परन्तु हम लोग कैदी हैं, इससे हम लोगोंका सतीत्व रहना कठिन है। यह कहकर चुप होगई और फिर श्रीप्रसादसे कहा—पथिक ! क्या तुम्हारा विवाह होगया ?

श्री प्रसाद—अभी नहीं हुआ है।

कमला-मेरी इच्छा है कि तुम्हारे ऐसे किसी सुपात्रके साथ मेरी चन्द्रका विवाह करू।

इसको सुनकर चन्द्रकुमारी कुछ हसी।पाठक ! इस हसनेसे स्पष्ट जाना जाता है कि इस बातको वह भी स्वीकार करती है।

इसी प्रकार बातें करते २ रात्रि अधिक व्यतीत होगई। नींदसे सबकी आंखे फिलमिलाने लग गई। परन्तु चन्द्रकुमारीकी आखोंमें नींदका नाम निशान तक नहीं है।

कमलाने देखकर कहा—चन्द्र ! तुम यहाही रहो मुझे नींद आती है मैं सोऊगी।

चन्द्रकुमारी—क्या मैं यहां रहना चाहतीहू ?

कमला—चाहना और किस तरह होताहै। रोज तुम सन्ध्याहीको सो जाती थीं और आज तुमको इतनी रात्रिगये तक नींद नहीं आतीहै।

चन्द्रकुमारी—नींद नहीं आती तो इसमें मैं क्या करू।

कमला—मैंने पहिले ही से कह दियाथा कि आज तुमको नींद नहीं आवेगी।

यह कहती हुई कमला हसते २ श्रीप्रसाद से इजाजत लेकर जाने लगी। चन्द्रकुमारी भी उसके पीछे २ जानेलगी। जातीहै परंतु जाने की इच्छा नहीं। आखे श्रीप्रसादकी तरफ, इसी तरह धीरे २ दोनों अपने सोने के घरमें चलीगई। वहां यद्यपि श्रीप्रसाद नहीं दिखलाई देताहै तथापि उसका रूप आखों के सामने से नहीं हटता। कमला सोते ही तुरन्त निद्रित होगई किन्तु चन्द्रकुमारी अभी जागतीहै। इस तरफ श्रीप्रसाद कोभी नींद नहीं आतीहै। इसको नींद कैसे आवे कारण चन्द्रकुमारीको जो सोचहै वही इसकोहै। चन्द्रकुमारी जो चाहतीहै वही यह चाहताहै। इससमय यह अपने पिताको भूल गयाहै। इस प्रेमकी महिमा भी बड़ी ही विचित्रहै इसके वशमें होकर बड़े २ मुनियोंने अपने चिर अर्जित तपको त्याग दिया।

श्रीप्रसादको सकल्प विकल्प करते हुए निद्राने आदबाया और सब सोचविचार छूट गये। इस निद्राकी भी एक कविने लगाई है कि "मौत बिन काल"। जोहो, श्री प्रसादके चेहरे पर प्रफुल्लता अभी तक बनी हुई है इससे स्पष्ट जाना जाता है कि यह चन्द्रकुमारीको स्वप्नमें भी नहीं भूला है। इसलिये पाठक जरा यह सुनिये देखें क्या कहता है। श्रीप्रसाद स्वप्नमें कह रहा है—हा! जगदीश्वर! पिता कहां हैं? हे माता मालूम होता है कि अब पितासे पुन भेट न होगी इतनेहीमें फिर कहता है—प्रिय चन्द्र मैं जाता हू अपने दिलमें धैर्य रखना।"

इसी तरह कभी कहता है—यह गान कौन करता है? आहा! क्या ही मधुर गीत है। मालूम होता है अप्सरा गान करती है मैं क्या सोया

हुआहू क्या यह स्व । है ?नहीं, यह मेरा अनुमान ठीक है कि कोई गान करता है।"मैं जिसको चाहताहू क्या वह मुझे नहीं चाहती।" इस तरह श्री प्रसाद कहता २ पलग पर बैठ गया। चारों तरफ देखा परन्तु कुछ नहीं दिखलाई दिया। जब कुछ मन स्थिर हुआ तो सुना मानों कोई गान कर रहा है फिर गौरसे सुनने लगा मालूम कोई मधुर स्वर से गान करतीहै। जब अच्छी तरह सुनातो जान पड़ा कि चन्द्रकुमारी गान कर रहीहै पाठक! यही गान श्रीप्रसाद स्वप्नावस्थामें सुनताथा।

चौथा बयान।

रात्रि व्यतीत होजानेपर प्रातःकाल का समय आया। पक्षीगण चुह चुह करते इधर उधर फिर रहेहैं। चकवा चकई अपने २ प्यारेके पास आग येहै। ओह! इन बिचारों ने बड़ी कठिनतामें रात्रि व्यतीत की। यह समय उन के लिये कैसा सुहावनाहै यह आप नहीं अनुभव करसकते कारण विरही इनके दु:खको जानताहै। सूर्यदेव अपनी लाल २ पताकाओंको फहराते हुये धीरे २ जगतमें आरहे हैं। पाठक चन्द्रकुमारी और श्रीप्रसाद को भी आजका दिन बड़ाही दुःख मयहै कारण चन्द्रकुमारीके दृढ प्रेम में आबद्ध होकर आज श्रीप्रसाद यहा से विदा होंगे। जिसघर में श्रीप्रसाद सो रहाथा कमला वहा आई। श्रीप्रसाद जागृत अवस्था में कुछ सोच रहाथा। कमला उसके सन्मुख जा कर बोली—भाई तुम इस समय क्या सोच रहेहो?

श्रीप्रसाद यह सुन चमक उठा। देखताहै कि उसके सन्मुख उसकी स्नेह मई बहिन कमला खड़ीहै। तब वह बहुत ही विनीत भावसे बोला—मैं बहुत ही अभागाहू और मेरे चिन्ता करनेके बहुत कारण हैं। मैं अनुमान करता हू कि मेरे ऐसा अभागा दुनियामें शायद दूसरा कोई नहीं है। इस प्रकार कहते २ श्री प्रसाद रोने

लग गया। क्रमशः अश्रु भरा आंखोंसे उसको धीरज देने लगा- भाई सोच करनेसे कुछ नहीं होता। धैर्य रखो उन सब बातोंको स्मरण करना व्यर्थ है। मैं बहुतही दुःखिनी एवं हतभागिनीहूं इस समय तुमही मेरे बन्धु हो। भाई ईश्वर सब कुछ अच्छा करेगा।

श्री प्रसादने कुछ काल चुप रहकर कहा- बहिन तुम्हीने मेरे प्राण बचाये हैं। मैं तुम्हारा यह उपकार कभी नहीं भूल सकता। मुझे अपने भाईके सदृश समझकर याद रखना इस समय मैं जाताहूं।"

कमला-भाइ! तुमको देखकर मैं सदा प्रफुल्ल रहती हूं, तुम्हारे देखनेसे मेरे बहुत क्लेश छूट गये हैं। मैं अभागी हूं, मेरी चन्द्र जन्म दुःखिनी है। यह कहते कहते कमला अचानक चुप होगई और टकटकी लगाकर कुछ देखने लगी। उसने देखा कि चन्द्रकुमारी किवाड़के छिद्रोंमेंसे श्रीप्रसादको देखती है और नेत्रोंसे जल धारा बह रही है। "चन्द्रकुमारीने अपना दिल एक अच्छेपुरुषको दिया है।"

यह सोचकर कमला दिलमें बहुत खुश हुई। फिर वह सोचने लगी श्रीप्रसाद अनजानहै यह इसका दिल लेकर चला जायगा तो। चन्द्रकुमारीके दुःख जन्मभर नहीं मिटेंगे। यह सोच कर उसका मुख मलीन होगया। कमला इसी तरह सकल्प विकल्प सोचती हुई चन्द्रकुमारी के पास जाकर उसका हाथ पकड़कर फिर श्रीप्रसाद के पास आई। वहां बैठकर चन्द्रकुमारी को प्यार करने लगी और चन्द्र का हाथ पकड़े हुए कहा-भाई! तुम घरजानेके लिये कहते हो इसी लिये बोध होताहै कि हमारी चन्द्र उदासहै तुमको एक दिन और यहां रहना होगा।

श्रीप्रसाद-मैं अब नहीं ठहर सकता कारण मेरा दिल अब यहां नहीं लगता। अपना मनोरथ सिद्ध होने पर फिर मिलूंगा। मेरा मनोरथ यदि सिद्ध न होगा तो यहीं मेरी अंतिम भेंट जानना यह कह कर श्रीप्रसाद सिर नीचा कर आंखोंसे जल गिराने लगा।

कमला–भाई तुम्हारा मन बहुत चचल हुआ देखतीहू इस लिये जाईये परन्तु मुझ कारावासिनी की सुध न भूल जाना । तुम चन्द्र की तरफ खयालकरना, मेरी चन्द्र जन्म दुःखनीहै फिर देखने से सुखी होगी । जावो तुम्हारा ईश्वर ? और ज्यादा कमला नहीं कहसकी, चुप होकर केवल रोने लगी श्रीप्रसाद उनसे विदा मागकर बाहर हुये और सजल आखोंसे रवानाहुये । श्रीप्रसादने एक वेर सोचा कि चन्द्रसे कुछ वात चीत करनी चाहिये परन्तु कुछही देरमें और कुछ वात विचारकर आगे बढे चन्द्रकुमारी भी इधर जब तक श्री प्रसाद दिखलाई देते रहे उसकी तरफ देखती रही जब बिल्कुल आंखोंसे गायब होगये तब हताश होकर दीर्घ स्वास लेने लगी ।

पाठक ! जरा कमलाको भी तो देखिये क्या करती है । वह देखिये कमला कुछ सोचती हुई आखोंसे जल विसर्जन कर रही है इसके दुःखका अनुभव उन्हींको हो सकता है जिन्होंको कभी भाईका वियोग हुआ है । कमला इस समय श्रीप्रसादके भाषण और मूर्तिका चिन्त बनकर रही है इसी बीचमें सहसा उसको चन्द्रकुमारीका दुःख स्मरण हो आया इससे रोने लगी कमला चन्द्रकुमारीके निकट आई कमलाके स्तन अश्रुजलसे भीगे हुए हैं आख लाल होगई हैं चन्द्रकुमारीको गान करते देख एकदमसे कमला आनन्दित हो उठी ।–

यद्यपि चन्द्रकुमारी गान कररहीहै परन्तु उसके नेत्रोंसे अनर्गल अश्रुधारा बह रहीहै । उस को इस समय इतना ज्ञान भी नहींहै कि सम्मुख कमला खडीहै । चन्द्रको देख कमला के भी नेत्रोंमें जल भर आया उसने उसकी तरफ से मुह फेर लिया । और कुछ देर चुप रही परन्तु जियादा देर चुप नहीं रहा गया अन्तमें कहा "चन्द्र" इसका कोई भी उत्तर जब नहीं मिला तब फिर कहा–"चन्द्रकुमारी" इसपर भी जब उत्तर नहीं मिला तो कमला चुप होगई और चन्द्रकुमारीकी ऐसी दशा देख-पत्थर की मूर्ति समान खडी होकर सोचने लगी । सहसा कमलाके

मुखसे निकला-"कहा जाऊ ?" निठुर पथिक ने सर्वस्व अपहरण करलिया "पथिक" शब्द सुनते ही चन्द्रकुमारी अचानक चमकी कुछ गौर लगाकर देखा तो उसकी सहोदरा कमला सन्मुख खड़ीहै, उसके देखते ही चन्द्रकुमारी लज्जित होगई। कमला चन्द्रकुमारीके पास जाकर उसको धीरज बधाने लगी और बारबार मुख चुम्बन करने लगी। चन्द्रकुमारीके नेत्रोंसे इतना जल निकलताथा कि रोकने परभी नहीं रुक सका।

कमला अपनी साड़ीसे उसके नेत्रोंके जलको पोछने लगी और कहने लगी-चन्द्र! अधिक चिन्ता करना व्यर्थ है। तुम्हारी आंखोंमें जल देखकर मेरा हृदय विदार्ण हुआ जाता है।"

चन्द्रकुमारीने उसका कुछभी उत्तर नहीं दिया तब कमलाने फिर कहा-अब क्यों चिन्ता करती है, चिन्ता करनेसे क्या होगा पथिक यह कह गया है कि वह फिर लौटकर आवेगा।

"फिर लौटकर आवेगा" यह सुनतेही चन्द्रकुमारीके आनन्दका वारा पार न रहा। उसने धीरे धीरे कहा-क्या मैं पथिकके लिये चिन्ता करती हूं?"

कमला-तब किसके लिये?

इसका कुछ उत्तर न दे चन्द्रकुमारी कुछ सोचने लगी।

फिर कमलाने कहा-चन्द्र क्या कुछ पथिकके विषयमें सोचती है? तुम बालिका हो अभीसे दूसरेको दिल अर्पण करना तुमको उचित नहीं "दूसरा" यह शब्द चन्द्रकुमारीके हृदयमें वज्र तुल्य लगा। परन्तु एक वाक्य भी मुखसे नहीं निकला।

कमला-चन्द्र जो तुम इस अमूल्य प्रेमके वश होगई हो तो अवश्य पथिक से मिलना होगा परन्तु चिन्ता करनेसे हानिके सिवाय और कुछ नहीं मिलेगा दिन २ तन क्षीण होता जाताहै यह कह कमला चन्द्रको साथले अपने घरमें चलीगई।

पांचवा बयान।

मध्यान कालका समय सूर्य्य भगवान अपनी पूर्ण शक्तीसे तप रहे है। वायु बडी तेजीसे चल रहीहै इस समय मुसाफिरों को जाने आनेमें बडी कठिनता होतीहै कारण प्रथम तो ऊपरसे सूर्य्य भगवानका प्रकोप दूसरे नीचेसे पृथ्वीका जलना। पाठक इस समय देखिये वह एक पथिक अपने मनमें कुछ सोचता हुआ देवग्रामकी तरफ जा रहाहै। वह अपने मनही मनमें सोचताहै—यदि देवग्राममें पिताजीसे भेट न हुई तो मैं अपने निज ग्रामको चला जाऊगा परन्तु मेरी चन्द्र की मेरे विना क्या दशा होगी।

फिर सोचताहै—नहीं, अपने ग्राम जानेके समय जयदेवपुर चन्द्रकुमारीसे मिलने अवश्य जाऊगा।

इसी तरह सोचता हुआ चला जाताहै परन्तु उसको यह खबर नहींहै कि कितनी दूर चला आयाथा कितना समयहै। उसने अचानक इधर उधर देखा पश्चात् निश्चय किया कि इस समय लगभग दो बजे हैं। परन्तु यह मालूम नहीं कि देवग्राम कितनी दूर है यह जानकर श्रीप्रसाद सोच करने लग गया कि अब कहां जाऊं। और कहा भोजन करूगा। रास्तेमें इस समय दूसरा कोई पुरुष दिखलाई भी नहीं देता और न कोई झोपडी ही दिखाई देती। इसी तरह चिन्ता करता हुआ चला जाताथा कि अचानक एक झोपडी दिखलाई दी और कुछ मनुष्यभी आते जाते दृष्टि गोचर हुये उनमेंसे एक मनुष्य ने श्रीप्रसाद से कहा महाशय आप कहा जाइयेगा! श्रीप्रसाद उसको केवल देखने लगा। श्रीप्रसाद की यह अवस्था देखकर आने वाले ने फिर कहा—महाशय! उत्तर क्यों नहीं देते? आप निडर होकर मुझसे कहिये कहा जाइयेगा इसके बाद श्रीप्रसादने अपने दिलमें कुछ साहस करके कहा—महाशय!

मे देवग्राम जाऊंगा । यह बतलाइये देवग्राम कितनी दूर है आनेवाला—आप देवग्राम जावेंगे । देवग्राम जानेमें एक दिन लगेगा । इस लिये सुबह जानेसे सन्ध्याको पहुचेंगे अच्छा कहिये आप कहासे आते हैं ? आपका मुह देखनेसे मालूम होताहै कि आपने अभीतक कुछभी नहीं खाया है । श्रीप्रसाद—हां ! साहब, आपका अनुमान ठीक है । यहां यदि कोई भोजनका स्थानहो तो बतलाइये ?

आनेवाला—आपके सामने जो यह झोपड़ी दिखलाई देतीहै उसीमें आपका मनोरथ सिद्ध होगा ।

श्रीप्रसाद—महाशय यदि आपको कुछ कष्ट नहो तो आप मेरे साथ चलिये ।

आनेवाला—मुझे इसमें कुछ हानि नहीं मैं आपके साथ चलूंगा ।

इस तरह बातें करके श्रीप्रसाद आनेवालेके साथ २ जाने लगा कुछ दूर जाने पर आनेवालेसे कहा—क्यों साहब आपका नाम क्याहै ?

आनेवाला—मेरा नाम गोपालसिंहहै ।

श्रीप्रसाद—आपका रहना कहांहै ?

आनेवाला—यहांही इस सरायसे कुछ दूरपर ।

इसी प्रकार बातें करते २ सरायके पास पहुच गये । गोपालसिंह ने सरायके दरवाजेके पास जाकर पुकारा हरीसिंह ! हरीसिंह ! ! इस के उत्तरमें अन्दरसे आवाज आई- कौनहै गोपालसिंह ! इस समय क्या खबरहै ?

गोपाल—खबर अच्छीहै आप बाहर आइये ।

सरायके अन्दर से एक ब्राह्मण बाहर आया और श्रीप्रसादको देखकर बोला—यह कौन है ? गोपाल—इससे तुमको क्या मतलब, यदि भोजन तैयार है तो लाइये ।

हरीसिंह—भोजन तैयार है परन्तु .

गोपाल—परन्तु क्या ? अच्छे आदमी हैं, विदेशी है कैहा जगह ठहरनेको नहीं मिला तब यहां आये हैं।

यह कहकर गोपालसिंह हरीसिंहको कुछ देने लगा। श्रीप्रसादने यह देखकर कहा आप रहने दीजिये। जो कहैं सो मैं दे दूगा। मेरे पास कुछ रुपये पैसे भी है इस लिये रातभर यहां मैं ठहरूगा।

हरीसिंह-आप यहां ठहरिये परन्तु आपको किराया देना होगा।

श्रीप्रसाद—अच्छा आपही कहिये मैं उतनाही दूगा।

हरीसिंह—आपको पहिले देना न होगा। परन्तु कितना देना होगा यह ठीक करना उचित है।

श्रीप्रसाद—इसीलिये मैं कहताहूं आप बतलाइये कितना देना होगा।

हरीसिंह—ज्यादा कुछ नहीं दो बेरके खानेका एक रुपैया और रातभर ठहरनेका एक रुपैया कुल मिलाकर दो रुपये देने होंगे।

श्रीप्रसाद-अच्छा मैं इतनाही दूगा किन्तु मैं स्नान करके आताहू।

हरीसिंह-आपका नाम क्याहै ?

श्रीप्रसाद-मेरानाम—श्रीप्रसाद।

यह कहकर हरिसिंहने श्रीप्रसादके स्नान करने के लिए आवश्यकीय वस्तु लादी। स्नान ध्यानसे निवृत होने पर भोजन करवाया पश्चात सोनेके लिए चारपाई बतलादी। श्रीप्रसाद उस चारपाई पर जालेटा–फिर गौरसे देखाकी कपाटोंकी सांकल नहींहै। यह देखकर उसके जीमें कुछ भय हुआ। और पूर्व परिचित गोपालसिंह (जोकि इनको यहां लायाथा) की कथा याद करने लगे। आइए पाठक ! आपको गोपालसिंहका परिचयदें। वह गोपालसिंह एक डाकू दलका नेताहै और जो उसके साथ मनुष्य थे वे सब डाकूथे। गोपालसिंह प्रति दिन ७ बजे समयमें भोजन करनेके लिए अपने दलबल सहित

मे देवग्राम जाऊंगा। यह बतलाइये देवग्राम कितनी दूर है आनेवाला—आप देवग्राम जावेंगे। देवग्राम जानेमें एक दिन लगेगा। इस लिये सुबह जानेसे सन्ध्याको पहुचेंगे अच्छा कहिये आप कहासे आते हैं? आपका मुह देखनेसे मालूम होताहै कि आपने अभीतक कुछभी नहीं खाया है। श्रीप्रसाद—हां! साहब, आपका अनुमान ठीक है। यहां यदि कोई भोजनका स्थानहो तो बतलाइये?

आनेवाला—आपके सामने जो वह झोपड़ी दिखलाई देतीहै उसीमें आपका मनोरथ सिद्ध होगा।

श्रीप्रसाद—महाशय यदि आपको कुछ कष्ट नहो तो आप मेरे साथ चलिये।

आनेवाला—मुझे इसमें कुछ हानि नहीं मैं आपके साथ चलूंगा।

इस तरह बातें करके श्रीप्रसाद आनेवालेके साथ २ जाने लगा कुछ दूर जाने पर आनेवालेसे कहा—क्यों साहब आपका नाम क्याहै?

आनेवाला—मेरा नाम गोपालसिंहहै।

श्रीप्रसाद—आपका रहना कहांहै?

आनेवाला—यहांही इस सरायसे कुछ दूरपर।

इसी प्रकार बातें करते २ सरायके पास पहुच गये। गोपालसिंह ने सरायके दरवाजेके पास आकर पुकारा हरीसिंह! हरीसिंह!! इस के उत्तरमें अन्दरसे आवाज आई-कौनहै गोपालसिंह! इस समय क्या खबरहै?

गोपाल—खबर अच्छीहै आप बाहर आइये।

सरायके अन्दर से एक ब्राह्मण बाहर आया और श्रीप्रसादको देखकर बोला—यह कौन है? गोपाल—इससे तुमको क्या मतलब, यदि भोजन तैयार है तो लाइये।

हरीसिंह—भोजन तैयार है परन्तु

गोपाल—परन्तु क्या ? अच्छे आदमी हैं, विदेशीहैं कहीं जगह ठहरनेको नहीं मिला तब यहां आये हैं ।

यह कहकर गोपालसिंह हरीसिंहको कुछ देने लगा । श्रीप्रसादने यह देखकर कहा आप रहने दीजिये । जो कहै सो मैं दे दूगा । मेरे पास कुछ रुपेय पैसे भी हैं इस लिये रातभर यहां मैं ठहरूगा ।

हरीसिंह–आप यहां ठहरिये परन्तु आपको किराया देना होगा ।

श्रीप्रसाद—अच्छा आपही कहिये मैं उतनाही दूगा ।

हरीसिंह—आपको पहिले देना न होगा । परन्तु कितना देना होगा यह ठीक करना उचित है ।

श्रीप्रसाद—इसीलिये मैं कहताहू आप बतलाइये कितना देना होगा ।

हरीसिंह—ज्यादा कुछ नहीं दो वेरके खानेका एक रुपैया और रातभर ठहरनेका एक रुपैया कुल मिलाकर दो रुपैये देने होंगे ।

श्रीप्रसाद–अच्छा मैं इतनाही दूगा किन्तु मैं स्नान करके आताहू ।

हरीसिंह–आपका नाम क्याहै ?

श्रीप्रसाद–मेरानाम—श्रीप्रसाद ।

यह कहकर हरीसिंहने श्रीप्रसादके स्नान करने के लिए आवश्यकीय वस्तु लादी । स्नान ध्यानसे निवृत होने पर भोजन करवाया पश्चात् सोनेके लिए चारपाई बतलादी । श्रीप्रसाद उस चारपाई पर जालेटा–फिर गौरसे देखाकी कपाटोंकी सांकल नहींहै । यह देखकर उसके जीमें कुछ भय हुआ । और पूर्व परिचित गोपालसिंह (जोकि इनको यहां लायाथा) की कथा याद करने लगे । आइए पाठक ! आपको गोपालसिंहका परिचयदें । वह गोपालसिंह एक डाकू दलका नेताहै और जो उसके साथ मनुष्य थे वे सब डाकूथे । गोपालसिंह प्रति दिन ? बजे सरायमें भोजन करनेके लिए अपने दलबल सहित

आया करतेहैं और हरीसिंहसे पूछा करतेहैं कि कोई चिड़िया जालमेंआई"

पाठक ! उपर्युक्त मकानमें जो साकल नहींहै उसका कारण यह गोपालसिंह ही है । अस्तु,

इधर श्रीप्रसादको पाकर गोपालसिंहके आनंदकी सीमा नहीं रही । वह मनही मन सोच रहाहै कि "आजका दिन भलेही हुआ धन्य है आजका सूर्य । भाई मैंनेभी आज किसी अच्छे पुरुषके दर्शन किये"

उधर हरीसिंहके जीमें और ही घोड़े दौड़ रहे हैं । वह सोचता है कि "श्रीप्रसाद के पास जो मालमाल है वह मैं उड़ालू क्योंकि उसके पास रहनेसे गोपालसिंह छीनलेगा तो हिस्साही हाथलगेगा । इस लिए अच्छातो यही है कि मैंही समूची ग्यारस करजाउगा और फिर हाथ लगी सिकार क्यों छोड़े ?" यह प्रतिज्ञाकर जहां श्रीप्रसाद सोताथा वहां आया और उससे कहनेलगाकि—"महाशय आपसे मैं एक बात कहना चाहताहू, और वह बात कहना परमावश्यक है क्योंकि आप मेरे पास ठहरे हुए हैं।

श्रीप्रसाद—आप निशंक होकर कहिए ।

हरीसिंह—आपके पासजो रुपये पैसे हैं वह मुझे दे दीजिए । फिर मैं आपको जाते समय देदूगा ।

श्रीप्रसाद—क्यों ? यहां क्या डाकुओंका भय है ?

हरीसिंह—हां ! मैंभी इसी लिए कहताहू प्रथमतो डाकुओंका भय दूसरे घरका द्वार खुला है आपअच्छे आदमी दिखाई देते हैं इसलिए आपके पास जरूर रुपये होंगे । अतएव मैं भी यहां समझकर आया हूं

हरीसिंहकी ऐसी बातें सुनकर रुपये पैसे सब देदिए और आप बेधड़क सोगया । जोहो,

कुछ रात्रि जानेके बाद एक तरफ भयानक शब्द हुआ इससे श्रीप्रसादकी निद्रा पवन वेग होगई है आइए पाठक ! यह भयानक शब्द

किस जगह हुआ आप न डरें आपको ता यहीं बैठे २ सब दिखला देते हैं। जरा ध्यानसे कलेजा बांधकर पढ़िए। सच कहतेहैं आपको कुछ भय नहींहै अस्तु, भयानक शब्दके सुनतेही श्रीप्रसाद की आंखें तो खुलही गईथी-क्या देखता है कि -उसकी चारपाईके पास गोपालसिंह अपने साथियों सहित शस्त्र सजे हुए भयानकरूप धारण किये खड़ा हुआ है उसको ऐसे बेमौकेमें आया देखकर श्रीप्रसादने कहा क्यों गोपाल सिंह इस समय क्या कोई प्रयोजन है ?

वाचक पुंज। इससमय गोपालसिंह पहिलेवाला नहीं है अब वह अपनी असल मूर्ति धारण किए हुए है।

" चुप इससमय बोलनेकी कोई जरूरत नहीं, जो तुम्हारे पास इस समय रुपये हैं वे सब देदो नहींतो यह देखो "
यह कह गोपालसिंहने श्रीप्रसाद को छुरा दिखलाया।

श्रीप्रसादके मुखसे सिवाय आहके दूसरी बात नहीं निकली वह उसके मुँहकी तरफ ताकता रहा कुछ देरके पश्चात् कहा " क्यों! गोपालसिंह इसतरह क्यों बोलतेहो ? यदि आपको रुपये की चाह होवे तो सुबह देदूगा किन्तु इस समय मेरे पास एक पैसा नहीं है। सबके सब हरीसिंहको देदिए।"

गोपाल सिंह—अरे ! ओ !! हरीसिंहके बच्चे !!! मुझे इस समय कुछ दो नहीं देखो इसी समय तुम मेरे हाथसे मारे ग

श्रीप्रसाद भयभीतहो कांपने लगा और कहा "मैं सच कहताहू और शपथ खाताहू कि इस समय मेरे पास कुछ नहीं है।

" फिर वही बात ले ठहर , "

यह कह गोपालसिंहने छुरा दिखाकर कहा और रस्सीसे बांधने लगा श्रीप्रसादने अपनी जान आफतमें देख रोकर कहने लगा " आप मुझे न मारो मेरे पास यह केवल एक अंगुठी है चाहे इसे लेलें।

गोपाल सिंहने "भागते चोरकी दाढ़ीही अच्छी" (हाथ लगे सोही अच्छा) यह सोचकर अगुठी ले नौ दो ग्यारह हुआ। अस्तु श्रीप्रसादने वह काल रात्रि किसी तरह व्यतीतकी। प्रात काल उठतेही हरीसिंहसे अपने दिये हुए रुपये मांगे। हरीसिंह विस्मित होकर कहने लगा—"क्या आपने मुझे रुपये दिये थे जो मांगते हैं।

श्रीप्रसाद—साहब! यह हंसी करनेका मौका नहीं। क्योंकि मुझे दूर जाना है हरीसिंह (आश्चर्य्यसे)—हसी!! कौन हसी करता है। क्या मै?

श्रीप्रसाद (मनही मन) क्या मैं फसता हू? नहीं। (प्रकटमें) क्या मैंने आपके पास रुपये नहीं रक्खे?

हरीसिंह—नहीं।

हरीसिंहकी नियत में फरक देख श्रीप्रसादने वहांसे चलनाही उचित समझा और उससे बोला—

"अच्छा, तब मैं यहांसे विदा होताहू यह सुनकर हरीसिंहने कहा अच्छा आप जाते हैं तो जाइये परन्तु मेरा किराया दे दीजिये।"

यह सुन श्रीप्रसाद मनमें आश्चर्य करने लगगया—सब रुपये तो पाहिले लेलिये अब और मांगता है। अब कहांसे दू।

हरीसिंह—क्यों साहब चुप कैसे होगये। देखनेमें अच्छे मालूम होते हो परन्तु तुम बड़े चालाक हो। कभी कहते हो तुम्हारे पास रुपया रखा है कभी कुछ और कभी कुछ, क्या रुपैया देनेमें रह होरहा है, क्या तुम्हारे दादेका माल था। अच्छा तुम्हारे पास इस समय नहीं है तो फिर कभी इस रास्तेसे आवें तब देजाना।

श्रीप्रसाद—बहुत अच्छा। यह कहकर वहांसे विदा हुआ।

छठा बयान।

पाठक! जानते होंगे कि कमला और चन्द्रकुमारी नगरदेवपुरके महाराज वीरसिंहकी कैद हैं। अस्तु,

इस समय हमको वीरसिंहके विषयमें कुछ कहना है ।

वीरसिंहके ऐसा निर्दयी राजा कोई विरलाही होगा । उसको पिशाच कहनेसे भी अत्युक्ति नहीं होगी । क्योंकि नरहत्या करना इसका धर्म है और दूसरेका सर्वनाश करनाही उसका गौरव है । जयदेवपुरके सब आदमी डाकुओंका काम करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं । उन सबका सरदार वीरसिंह है । डाकू जन समूह पासके वनमें छिप जाते है । जब किसी पथिकको देखते हैं तब उसको मार डालते हैं एव उसे बाधकर धन छीन लेते हैं । तथाच कैद भी कर लेते हैं । इसी तरह सहस्रों मनुष्य डाकुओंके चगुलोंमें फंसकर जान खो बैठते हैं । ऐसेही कमला और चन्द्रकुमारी भी कैद कीहुई है । परन्तु इतना अन्तर अवश्य है कि इनको कहीं जाने आनेकी मनाई नहीं है तथापि यह रास्ता नहीं जानती जो अपनी जान छुडाकर भाग जाए ।

इस समय डाकू राज अपने गृहमें बैठा है । उसके सामने एक सुकुमार युवती बैठी हुई है । वीरसिंहकी आखें लाल होरही हैं और वह सिर नीचा किये हुए कुछ मनहीमन सोच रहा है । उसके समीप बैठी हुई युवती भी अपने गुलाबी गालोंपर करकमलोंको रक्खे गम्भीर चितामें मग्न है ।

कुछ देर चुप रहकर उस वीरसिंहने युवतीसे कहा ।

" तुम वारवार मुझको वे सब बातें न कहा करो " ।

" और किसको कहूँ " यह युवतीने कहा ।

वीर—किसीको मत कहो । मैंभी तुम्हारी दो बातें याद करके मना किया करताहू ।

युव—आप समझकर मना करिये ।

वीर —मैं समझकर मना करताहू । और मेरी इच्छा ।

युव—नाथ! आपकी ऐसी कठोर इच्छा क्यों हुई?

वीर—क्यों हुई? अच्छा! तुमही कहो कि इन दो कैदियों (स्त्रियों) के लियेही तुम इतनी व्याकुल क्यों हो?

युव—इसका एक खास कारण है कि यह जो इसमें बैठी हैं। यह विशेष दिनके नहीं हैं। धीरे २ सब कालके ग्रास होजावेंगे। नाथ! कैदियोंके छुडानेके लिये क्या आपसे मैंने अनुरोध करनेमें कुछ त्रुटि रक्खी है। परन्तु आप इस दासीकी एकभी नहीं सुनते अब केवल एक अनुरोध है। यदि आप उसे पूर्ण करें तो और मुझे कुछ नहीं चाहिये।

वीर—यह अनुरोध दूसरे दो मनुष्यों [कैदियों] के लिये करो।

युव—प्राणनाथ! मैं भी दूसरेके लिये नहीं कहती। क्योंकि इन असंख्य कैदियोंके बीचमें मैं और किसका उपकार करूं? हां मैंने जिसका उपकार करनेका संकल्प किया है, यदि उसका उपकार मुझसे बनेगा तो करूंगी। जिनकी दुर्दशा देखकर सबके नेत्रोंमें जल भरआता है। उनका उपकार करनेमें आप क्यों हिचकते हैं? मैं उनको छोड़नेके लिए कितने दिनसे अनुरोध करती हूं। किन्तु आप कुछ नहीं सुनते इस समय जो अनुरोध किया है यदि उसे आप पालन नकरें तो एक अनुरोध और है कि आप दूसरे कैदियोंकी तरह इसको भी भोजन न दीजिये। आपके घरमें दो निर्दोष स्त्रियोंकी हत्या हो तो कुछ नवीन बात नहीं है। परन्तु महाराज! सावधान!! दो सती स्त्रियोंकी

यह सुनतेही डाकूराज वीरसिंह क्रोधसे कांपने लगा और उसकी आंखोंसे अग्निकी सी झल निकलने लगी। एक बड़े जोरसे बोला—मैं स्त्रीकी बात नहीं सुनता जो स्त्रियोंकी बात सुनते हैं वे पेटिस्मना जोरूके मजूर हैं। मेरी जो इच्छा होगी सो करूंगा। तुम ठीक याद रक्खो कि ऐसी बात निकालनेसे तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा।

युव—अच्छा नहीं होगा! महाराज! इस दण्डसे मुझे प्राणदण्ड दुगा

श्रेयस्कर होगा। परन्तु मेरे जीते हुए आपको ऐसे कुत्सित कार्य्य नहीं करने दूगी

वीर—क्या पापिनी 'कुत्सित कार्य्य' सावधान हो!! मैं तुम्हारे अनुरोधसे इतने दिन तक शान्त था किन्तु अब अधिक नहीं रहसक्ता अब मैं अधीर होगया हू। उस कमला और चन्द्रकुमारीको आजही इस ससारसे विदा करता हू।

युव—महाराज! सावधान होकर एक बेर सोचिये कि आप प्रति दिन कितना कुकर्म्म करते हैं। आपके निठुर व्यवहारसे कितनोंही की जननी अपने पुत्र के लिए बिलखाती होगी। क्या आप यह सोचते है' कि अपना किस लिये सर्वनाश कर रहाह। दोसाध्वी रमणियोंका सर्वनाश किये बिना क्या आप नहीं रह सकते? कमला और चन्द्रकुमारी दोनोंही विशुद्ध चरित्रा हैं उनके शापसे आपकी यह डाकू नगरी समग्र भस्म होजावेगी। प्राणनाथ मै आपसे विनीत भावसे कहती हूं कि, मेरे अनुरोधकी रक्षा कीजिए।

इस प्रकार कहते २ युवती अपने स्वामीके चरणोंमें अपना मस्तक रखकर रोने लगी! कितु डाकूराजका इतना कठोर हृदय है कि, उसका असर उसके हृदयपर कुछ नही हुआ। और उसने खडे होकर कहा—

"राक्षशी! पिशाचिनी!! क्या तू मेरे अमङ्गलकी इच्छा करती है?" यह कहकर उस कोमलाङ्गीके मस्तकपर अपने वज्ररूपी पद्क प्रहार कर वहांसे चलागया।

वह बेचारी उस आघातको न सहसकी एव मूर्छित होगई उसको यह नही मालूमकि, मैं कितनी देर इस अवस्था में रही।

मूर्छा दूर होनेपर वह सोचने लगी कि, अब वह डाकूराज उन बेचारियों पर अत्याचार करेगा इसलिए उनको पहिलेसे सावधान

करना उचित है कि, वे इस नगरको त्याग कर अपनी जान बाचले। यह विचार कर कमला चन्द्रकुमारीकी ओर चली।

सातवां बयान ।

इस समय रात्रि प्रायः दो प्रहर है। चारों तरफ अन्धकार छाया हुआ है। चन्द्रकुमारी एक घरम हाथपर मस्तक रखे खडी हुई कुछ सोच रही है। "उसकी बहिन कमला इस समय कहा है" यही वह सोच रही है। इसी तरह चन्द्रकुमारी खडी २ चिन्ताकर रही है। पाठक! चलिये आप कमलाके पास चलिये।

ओह! पाठक कहां आगये यह तो रग ढग से कैद खाना जान पडता है क्योंकि यह देखिये एक २ घरमें एक २ दीपक जल रहा है और एक २ आदमी उनमें कैद है। एक घर के पास यह देखिये कमलाभी खडी हुई है। कमलाकी तरफ वह देखिये एक आदमी चला आरहा है उसको देखकर कमला पहिले तो कुछ भयभीत हुई परन्तु पीछे कहा—कौन, दयासिंह? आनेवालेने मस्तक नवाकर कहा जी हा। दयासिंह इस तरफ चले आओ यह कह कमला एक तरफ रवाना हुई और दयासिंह भी उसके पीछे २ जाने लगा। कमला मंदिर भी ते करके एक अंधकार मय घरमें पहुची। कमलाने धीरे धीरे चन्द्रकुमारीको पुकारा। कमला की आवाज पहिचानकर चन्द्रकुमारीने उत्तर दिया कौन है बहिन कमला?

कमला—हा, इसी तरफ चली आओ।

चन्द्रकुमारी एक दिपक लिये धीरे २ उसके पास आई और दयासिंहको देखकर भयभीत हुई। कमला दीपकको देखकर कहा दीपकको बुझाओ? चन्द्रकुमारीने ऐसाही किया। फिर कमलाने कहा मेरे पीछे २ चली आओ।

चन्द्रकुमारी—बहिन किस तरफ आओगी?

कमला—म इसी तरफ जाऊगी।

आगे २ दयासिंह और उसके पीछे कमला और सबके पीछे चन्द्रकुमारी जाने लगी। कुछ दूर इसी तरह रास्ता तै करने पर सब एक वनमें पहुचे। कमलाने कहा–दयासिंह! अब ज्यादा दूर जानेका मयोजन नहीं है। यह सुन दयासिंह लौट आया।

कुछ दूर तक दोनों उस भयानक वनमें चुप चाप जारहींथी! अचानक कमलाके नेत्रोंमें जलभर आया। कमलाकी यह अवस्था देखकर चन्द्रकुमारी ने कहा वहिन, यह क्या बात है? उसके उत्तरमें कमला कुछभी नही बोली. कमलाके उत्तर न देनेसे चन्द्रकुमारी भी भयसे रोने लगी। कमला चन्द्रकुमारीका हाथ अपने हाथसे पकड्कर बोली वहिन! हम लोगोंके समान हतभागिनी और कोई नही हैं तब भला क्यों नही रोवें कारण रोनेहीके लिये ईश्वरने हम लोगोंको रचा है चन्द्रकुमारी कहनेलगी वहिन यह सब स्वमवत् मुझे जान पडताहै क्यों कि इस समय इस भयानक वनमें हम लोग क्यों आई हैं। और हम लोगोंके साथ था वह कौन था और हम लोग कहा जा रहीं हैं।

कमला—हम लोग क्यों यहा आई हैं यह क्या तुम अभी तक नही समझी हो। क्या उस नर घातक डाकूराजको आजतक नहीं पहिचाना?

चन्द्रकुमारी—वहिन! उसको मैं जानती हू उसका बडाही सरल स्वभाव था उसके कैद खाने में हम लोग इतने दिन तक रहीं परन्तु हम लोगोंपर कोईभी विपद् नहीं आई।

कमला—यद्यपि हम लोगोंपर एक भी विपद् नहीं आई तथापि पद पद पर विपद् आने की आशंका थी। और डाकूराजकी स्त्रीका स्वभाव बड़ा अच्छा है उसीके यत्नसे हम लोगोंपर आजतक कोई विपद नहीं आई। उसीने आज हमको खबर दी कि डाकूराजका मिजाज आज गर्म होगयाहै सो तुम अपने आत्मरक्षाका उपाय करो।

यही कारण है कि हम लोग यहां आई हैं।

चन्द्रकुमारी—अब मैं समझ गई कि आज हमने एक घोर विद्‌ से छुटकारा पाया है। परन्तु यह और कहो कि हम लोगों के साथ आनेवाला पुरुष कौन था।

कमला—जब मैं श्वशुरालयमें थी उस समय एक हम लोगोंके पासका युवा डाकूओंके हाथमें पड़गयाथा। डाकू उसको घायल करके छोड़ गये। मेरे प्राणनाथने उसको लाकर चिकित्सा करवाई जिससे वह आरोग्य होगया। पीछे वह बहुत दिन तक वहां रहा इससे हम लोगोंको अच्छी तरह जानने लगगया। अब जब मैं कैदी हुई तब देखाकी वही युवा वीरसिंहका प्रधानाध्यक्ष है। आज उसी उपकारको स्मरण करके उसने हम लोगोंका छुटकारा किया है और उसीका नाम दयासिंह है।

चन्द्रकुमारी—बहिन! छुटकारा होनेकी तो अभी भी सम्भावना नहीं जान पड़ती क्योंकि यदि वीरसिंह घुड़सवार हम लोगोंके पीछे भेजे तो हम जल्द हाथ आ सकती हैं।

कमला—अब बहिन डरनेका कुछ कारण नहीं है क्योंकि सिपाही सब दयासिंहके आधीन हैं सो जब वीरसिंह हम लोगोंको खोजनेके लिये भेजेगा तो दयासिंह इस तरफ किसीको नहीं आने देगा

यह सुन चन्द्रकुमारीका मुख प्रफुल्लित हो आया। इसी तरह कुछ रास्ता तै करनेपर एक गावके समीप पहुंची इस समय रात्रिमाय तीन प्रहर बीतगई है आकाश अन्धकार मय है इस समय दोनोंको निद्रा देवीने आ घेरा इससे एक वृक्षके नीचे दोनों बैठ गईं। और मन्द २ शीतल हवाके झकोरोंसे दोनोंको गाढ़ निद्रा आगई।

प्रातःकाल दोनों वहांसे चलकर स्नान करके रवाना हुईं कुछ दूर चलनेपर एक नगर दिखलाई दिया। उसको देखकर कमलाने कहा बहिन हम लोगोंके ठहरनेका स्थान यही है।

आठवा बयान।

सायकालका समय है । शीतल मन्द सुगन्ध हवा चल रही है सूर्यभगवानका तेज धीरे २ मन्द होता चला जा रहा है । इस भयानक जगहमें मनुष्योंके बोलनेका शब्द कहींभी सुनाई नही देता है हा, जगली जीवोंके बोलनेकी आवाज अवश्य सुनाई देती है । जरा पाठक दृष्टि पसार कर देखिये वह सामने एक तालाव है । उसके चारों तरफ वृक्ष लगे हुये हैं । जिनमें भाति भाति के पक्षी अपनी सुरीली आवाज सुनने वालोंका मन मुग्धकर रहे है । जलचर प्राणी आनन्द क्रीडा कर रहे हैं । तालावका स्वच्छ पानी लहरें ले रहा है । इस तालावके दक्षिण तरफ एक रहनेका सुन्दर स्थान बना है और भी मुसाफिरों के लिये स्थान बने हुये हैं । इस जगहपर एक पहाडभी है इससे यह स्थान और भी भयानक बन गया है । पाठक ! वह देखिये दो युवती न जाने यहा क्यों आरहीं हैं। दोनोंके चेहरे से मालूम होताहै कि इनको पीछेका कुछ भय है । दोनों स्त्रियोंने पहाडकी एक कन्दरामें प्रवेश किया । वहां एक महात्मा आंखें बन्द किये योगाभ्यास कर रहे हैं पृथ्वीतक लटकती हुई श्वेतजटा और श्वेत केशावृत्त वक्षस्थलके देखने मे महात्माका तेज स्पष्ट मालूम होता है।

गलेमें रुद्राक्षकी माला और हाथमें जपमाला है । कुछ देरमें महात्माकी आंखें खुलीं तो क्या देखता है कि दो स्त्रीया सामने खडी हैं । कुछ विस्मयके साथ महात्माने कहा—हे वत्से ! आज तुम इस भेप में यहा क्यों आई हो ?

स्त्री—पिता ! हम डाकूराज के भयसे, जयदेवपुर से आई हैं ।

महात्मा— मैंभी यही सोचताथा क्यों कि उस पापात्माके पास रहने से क्षणक्षण में विपत्तियोंकी आशका थी ।

कुछ देर चुप रहे पश्चात् स्त्रीके नेत्रोंमें जल देखकर महात्माने

कहा—"तुम्हारा मुख देखनेसे ज्ञात होता है कि तुम कुछ बोलना चाहतीहो।"

स्त्री—मैं और कुछ नहीं बोलना चाहती केवल यही कहना चाहती हूं कि मेरी वह पूर्व कथित आशा पूरी होगी या नहीं।

महात्मा—मैंने उसको खोजनेकी बहुत चेष्टाकी परन्तु सब निष्फल हुई। अब फिर अपने शिष्यको भेजा हूं।

स्त्री—प्रभो! तब जानपड़ता है कि इस जन्ममें सुख मुझे नहीं बदा है जब मेरे पतिने प्राण त्याग कर दिया तब मेरा जीना वृथा है। आपके शिष्यके आनेहीकी आशासे मैं इतने दिन तक जीवित थी। अब वह आशा भी टूट गई इस लिये आपके सन्मुखही प्राण त्याग करती हूं। परन्तु मेरी चन्द्रको अच्छी तरह रखना; मैं इसके लियेही इतना कहते ही स्त्रीके नेत्रोंमें जलभर आया और अधिक बोला नहीं गया।

पाठक! उपर्युक्त बातों से आप भली भांति जान गये होंगे कि ये दोनों स्त्रियां कौन हैं एक कमला है और दूसरी चन्द्रकुमारी है। अब से हम दोनोंको नामसे लिखेंगे।

अन्तु महात्माने कमलाकी यह अवस्था देखकर कहा—हे पुत्री! धैर्यको त्यागना ठीक नहीं है और धैर्यके त्यागनेसे कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। इससे इस समय फिर खोजना चाहिये। तुम्हारे प्राणत्याग करनेसे वह माता पिता विहीन चन्द्रकुमारी भी तुम्हाराही अनुकरण करेगी चन्द्रकुमारी तुम्हारे सिवाय किसीको नहीं जानतीहै क्यों कि बाल्यावस्थासे तुम्हींने इसका लालन पालन किया है। अतएव मेरे कथनानुसार तुम अपने पतिकी खोज करो और मैंभी करताहूं।" इस तरह महात्माने जब कमलाको धीरज बंधाई तब कमलाको कुछ धैर्य हुआ। कमला और चन्द्रकुमारी एक तरफ घूमने लगीं और महात्मा पहिलेकी भांति आंखें मूंद कर ध्यान करने लगगये भर पाठक

इस जगह इस महात्माके विषयमें कुछ कहना अत्यावश्यक है ।

यह बहुत दिनोंसे यहां रहते हैं । तपस्या करना इनका मुख्य कर्तव्य है । चारों तरफके मनुष्य इनको अच्छी तरह जानते हैं । यह कभी २ पासके गावोंमें जातेभी है । जबसे यहां रहने लगे हैं तबसे आदर पूर्वक यहा ही पुजते हैं । एक दिन जब यह जयदेवपुरमें घूम रहेथे उस समय इनकी ठाकूराज वीरसिंहसे भेट हुईथी । ठाकूराजे इनका तेज देखकर प्रणामकी और अपने निवासस्थानमें ले गया । उसी दिनसे यह वीरसिंहके पास जाने आने लगगये । इसी तरह जयदेवपुरमें भ्रमण करने के समय कमलासे परिचय हुआ कमला इनको भक्तिसे मानने लगी और यहभी जाने आने लगे । कमलाने यह प्रणकर लिया कि कोईभी कार्य्य महात्माकी आज्ञाविना नहीं करुंगी अबभी कमला अपनी बहिन सहित कैदसे मुक्त होकर चली आई है परन्तु महात्माकी आज्ञा विना और कहीं नहीं जावेगी अस्तु अब पाठक देखिये देखें चन्द्रकुमारी क्या कर रही है ? वह देखिये कमला एक शिलापर बैठी हुई कुछ सोचरही है और चन्द्रकुमारी पासके बगीचेमें फूल चुन रही है । उसका मुह प्रफुल्हो रहा है परन्तु पाठक चन्द्रकुमारी फुलोंको लेकर क्या करेगी ? क्या आप बतला सकते हैं । हमारी बुद्धि तो इसमें कुछ भी काम नहीं देती । अच्छा कुछ देर और खडे रहिये आपही मालूम हो जायगा ।

अब देखिये फूल चुनकर एक शिलापर बैठकर माल्ला गूथती है ओर शृगार करती है । शृगार कर चुकने पर तालावके किनारे जाकर अपनी प्रतिछांया देखतीहै । इसी बीचमें न जाने एक ऐसा अविर्भाव हुआ कि मुह मलीन होगया नेत्रोंम जल भर आया और मालाओंको खड २ करके पृथ्वीपर फेंक दिया । सहसा चन्द्रकुमारी के मुहसे निकला—क्या इस समय प्राणनाथ नहीं है ? तब मैं किसके

कहा—"तुम्हरा मुख देखनेसे ज्ञात होता है कि तुम कुछ बोलना चाहतीहो।"

स्त्री—मैं और कुछ नहीं बोलना चाहती केवल यही कहना चाहती हूं कि मेरी वह पूर्व कथित आशा पूरी होगी या नहीं।

महात्मा—मैंने उसको खोजनेकी बहुत चेष्टाकी परन्तु सब निष्फल हुई। अब फिर अपने शिष्यको भेजा हूं।

स्त्री—प्रभो! तब जानपडता है कि इस जन्ममें सुख मुझे नहीं बदा है जब मेरे पतिने प्राण त्याग कर दिया तब मेरा जीना वृथा है। आपके शिष्यके आनेहीकी आशासे मैं इतने दिन तक जीवित थी। अब वह आशा भी टूट गई इस लिये आपके सन्मुखही प्राण त्याग करती हूं। परन्तु मेरी चन्द्रको अच्छी तरह रखना, मैं इसके लियेही इतना कहते ही स्त्रीके नेत्रोंमें जलभर आया और अधिक बोला नहीं गया।

पाठक! उपर्युक्त बातों से आप भली भांति जान गये होंगे कि वे दोनों स्त्रियां कौन हैं एक कमला है और दूसरी चन्द्रकुमारी है। अब से हम दोनोंको नामसे लिखेंगे।

अस्तु महात्माने कमलाकी यह अवस्था देखकर कहा—हे पुत्री! धैर्यको त्यागना ठीक नहीं है और धैर्यको त्यागनेसे कोई कार्य्य सिद्ध नहीं होता। इससे इस समय फिर खोजना चाहिये। तुम्हारे प्राणत्याग करनेसे यह माता पिता विहीन चन्द्रकुमारी भी तुम्हारानी अनुकरण करेगी चन्द्रकुमारी तुम्हारे सिवाय किसीको नहीं जानतीहै क्यों कि बाल्यावस्थासे तुम्हीने इसका लालन पालन किया है। अतएव मेरे कथनानुसार तुम अपने पतिकी खोज करो और मैंभी करताहूं।" इस तरह महात्माने जब कमलाको धीरज बधाई तब कमलाको कुछ धैर्य हुआ। कमला और चन्द्रकुमारी एक तरफ घूमने लगगई और महात्मा पहिलेकी भांति आंखें मूंद कर जप करने लगगये अब पाठक

इस जगह इस महात्माके विषयमें कुछ कहना अत्यावश्यक है ।

यह बहुत दिनोंसे यहां रहते है । तपस्या करना इनका मुख्य कर्तव्य है । चारों तरफके मनुष्य इनको अच्छी तरह जानते हैं । यह कभी २ पासके गावोंमें जातेभी है । जबसे यहां रहने लगे हैं तबसे आदर पूर्वक यहा ही पुजते हैं । एक दिन जब यह जयदेवपुरमें घूम रहेथे उस समय इनकी डाकूराज वीरसिंहसे भेट हुईथी । डाकूराजे इनका तेज देखकर प्रणामकी और अपने निवासस्थानमें ले गया । उसी दिनसे यह वीरसिंहके पास जाने आने लगगये । इसी तरह जयदेवपुरमें भ्रमण करने के समय कमलासे परिचय हुआ कमला इनको भक्तिसे मानने लगी और यहभी जाने आने लगे । कमलाने यह प्रणकर लिया कि कोईभी कार्य्य महात्माकी आज्ञाविना नहीं करुगी अबभी कमला अपनी वहिन सहित कैदसे मुक्त होकर चली आई है परन्तु महात्माकी आज्ञा विना और कहीं नहीं जावेगी अस्तु अब पाठक देखिये देखें चन्द्रकुमारी क्या कर रही है ? वह देखिये कमला एक शिलापर बैठी हुई कुछ सोचरही है और चन्द्रकुमारी पासके बगीचेमें फूल चुन रही है । उसका मुह प्रफुल्हो रहा है परन्तु पाठक चन्द्रकुमारी फुलोंको लेकर क्या करेगी ? क्या आप बतला सकते है । हमारी बुद्धि तो इसमें कुछ भी काम नहीं देती । अच्छा कुछ देर और खड़े रहिये आपही मालूम हो जायगा ।

अब देखिये फूल चुनकर एक शिलापर बैठकर माला गूथती है ओर शृगार करती है । शृगार कर चुकने पर तालावके किनारे जाकर अपनी प्रतिछाया देखतीहै । इसी बीचमें न जाने एक ऐसा अविर्भाव हुआ कि मुह मलीन होगया नेत्रोंमे जल भर आया और मालाओंको खड २ करके पृथ्वीपर फेंक दिया । सहसा चन्द्रकुमारी के मुहसे निकला-क्या इस समय प्राणनाथ नहीं है ? तब मैं किसके

लिये शृंगार करती हू । क्या ही लज्जाका विषय है? क्या मैं पागल होगई हू? यदि महात्मा और बहिनको मालूम होगा तो क्या कहेंगे। कुछ देर चुप रहकर चन्द्रकुमारी कमलाके पास आई तो क्या देखती है कि कमला पुतली की तरह हाथपर कपोल रखे हुये है । और नेत्रोंसे अश्रु गिरा रही है । चन्द्रकुमारीके आनेकी कुछभी खबर नहीं कमलाकी यह दशा देखकर चन्द्रकुमारी अपनी साड़ीसे उसका मुख पोछने लगी । इससे कुछ होश हुआ और कहा–बहिन! क्या मैं रोती थी ।" इसके उत्तर में चन्द्रकुमारी केवल देखती रही पीछे कमलाको सुख देखकर कहा–बहिन! यहा रहना ठीक नहीं । और कहीं चलना चाहिये ।

कमला—तुम्हारी जहां इच्छा हो तहा चलें क्यों कि पृथ्वी भरमें हम लोगोंके रहनेका स्थान नहीं है सब जगह हम लोगोंके समान हैं ।

चन्द्रकुमारी—मेरी समझमें देवग्राम चलना ठीक है । वहां पथिकसे भेट होनेपर हम लोगोंके कार्य्यकी सिद्धि होनेकी सम्भावनाहै। पथिकके कथनसे जाना जाताहै कि वह वहा अवश्य मिलेगा ।

कमला—बहिन ! मैं भी यही सोचती थी । कलही देवग्राम को चलेंगी । पथिकही इस समय हमारा एकमात्र बन्धु है । उससे भेंट होनेसेही हमारे प्राणनाथ और देशका पता लगेगा ।

यह सुनकर चन्द्रकुमारीका मुह प्रफुल्ल हो आया । क्योंकि वह यही चाहती थी । पाठक ! इस तालावका नामहै योगसरोवर यह कहना हम भूल गये थे ।

नया बयान ।

गंगासे प्रायः आध कोसकी दूरीपर बजीरपुर नामका नगरहै । पाठक ! वह जो इसमें बड़ा ऊचा मकान दिखलाई देताहै और जिसके तीन तरफ बगीचा है और सामने पापनाशिनी गंगा मंद २ बह रहीहै

वह वृहत मकान उक्त ग्रामके राजा विजयसिंहका है। विजयसिंह एक नम्र और परोपकारी नृपति हैं।

इस समय महाराज विजयसिंह अपनी सभामें अपने बन्धु बान्धवों और मन्त्रियोंके सहित विराज रहेहैं। गंगाकी शीतल पवन आ रहीहै। गंगामें नौका इधर उधर घूम रहींहैं। गंगा कल कल मधुर शब्दसे मन्द २ बह रहीहै। महाराज विजयसिंहकी दृष्टि इस समय इधर ही है। अतएव कुछ देरमें एक नौका दिखलाई दी जो इनकी तरफ आ रही थी धीरे २ वह नौका घाटपर आकर खडी होगई और अन्दरसे एक मनुष्य बाहर घाटपर उतर कर बोला—माझी नौका ले जाओ। माझी यह सुनकर गान करता हुआ नौकाको छोड दी। नौकासे जो मनुष्य उतरा था वह महाराज विजयसिंहके पास आकर खडा होगया। सभाके सब आदमी उसको देखने लगे। आया हुआ मनुष्य एक वृद्ध ब्राह्मण है, उसके वस्त्र बहुत मलीन हैं। उसके चेहरेको देखनेसे जान पडताहै कि यह बहुत दिनोंसे कष्ट पा रहा होगा। उसको ऐसे भेषमें देखकर किस कठोर हृदय मनुष्यको दया उत्पन्न नहीं होती। वह वृद्ध महाराजके सम्मुख उपस्थित होतेही अशीर्वाद दी पीछे धीरेसे कुछ कहा जो किसीको सुनाई नहीं दी। इसके बाद कुछ देर तक चुप रहा पीछे फिर रोने लगा। यह अवस्था ब्राह्मणकी देखकर भी महाराज कुछ नहीं बोले। तब तो ब्राह्मणके नेत्र लाल हो आये और नेत्रोंसे अग्निकी ज्वालासी निकलने लगीं। ओष्ट कांपने लगे और सब शरीर थर्राने लगा मानों क्रोधने पूरे तौरसे ब्राह्मणको अपने वश कर लिया है ब्राह्मणकी कुछ देरतक यही व्यवस्था रही पश्चात वह बोला—हे पापी! क्या ऐसेही राजा होते हैं? राजाका क्या यह व्यवहार है? मैं दरिद्र ब्राह्मणहूं मेरा उपकार करना क्या तुम्हारा कर्तव्य नहीं है? जो तू दरिद्र ब्राह्मणोंका उपकार नहीं कर सकता

तो राजा क्यों बना है। यह तलवार क्या केवल हाथकी शोभा ही के लिये है? यह कह ब्राह्मण रोता हुआ जाने लगा। ब्राह्मणको जाते हुये देख महाराज विजयसिंहसे अधिक नहीं रहा गया और खड़ा होकर तलवारको पृथ्वीपर रखकर बोल्या—हे ब्राह्मण देवता! मैं उसी दिन इस तलवारको ग्रहण करूंगा जब तुम्हारा दुख दूर हो जावेगा। यह सुन ब्राह्मणका मुख प्रफुल्ल हो आया और विनीत भावसे कहा—महाराज! गुरुदेव आपकी मनोकामना पूर्ण करें। पीछे अपनी सब कथा सुनाई जो समय २ पर मालूम हो जावेगी। लौटकर आनेके लिये कह कर ब्राह्मण चलागया।

ब्राह्मणके चल जानेपर महाराज कुछ देर तक चुप बैठ रहे पश्चात् कलम दवात लानेकी आज्ञादी। कलम दावात के आजानेपर एक पत्र लिखने लगे। पत्र लिखकर उसको फिर आदिसे अन्त तक पढा और उपर श्रीनामा करके एक दूतको देदिया और कहा—दूत! यह पत्र जयदेवपुरके ठाकुराजको देकर कल शीघ्र चले आवना विलम्ब नहीं करना। दूत जो आज्ञा कहकर रवाना हुआ।

पाठक! इधर वीरसिंह अपनी सभामें बैठा हुआ है मुखकी कान्ति फीकी पडी हुई है। अनुमान होता है कि किसी गूढ़ चिन्तामें चिन्तित है। सामने एक दीर्घ कायका मनुष्य खडा है उसीको ठाकुराज देख रहाहै। राजसभाके दूसरे सब आदमी चुप है। कुछ देरके बाद वीरसिंह बोला—दयासिंह! क्या खबर है!

दयासिंह हाथ जोडकर बोला—महाराज आपकी आज्ञानुसार उनके खोजनेके लिये बहुत सेना भेजी परन्तु दुःखका विषय है कि सब लौट आये किसीको कुछ पता नहीं मिला।

ठाकुराज कुछ देर चुप रहकर बोला-अच्छा तुम अपना कार्य्य करो उसके खोजनेकी अब कुछ आवश्यकता नहीं है। इसमें तुम्हारा

क्या दोष है यह कार्य्य मेरे दोषसेही हुआ है उनके निकट प्रहरी नहीं था और न कोई उनको जानेकी मनाई थी तबभला इतनी स्वतत्रता पाकर कैदी कैसे रह सकते है। मैंने सोचाथाकि स्त्री हैं परन्तु यह मेरी भूल हुई यद्यपि वह स्त्री है तथापि वह चतुर हैं।

डाकूराज यह कहरहा था कि एक मनुष्य आकर एक पत्र डाकूराजको दिया। पाठक इस मनुष्यको आप जान गये होंगे यह विजयसिंहका दूत है। डाकूराज पत्र खोलकर पढने लगा। हमारे पाठकोंको इस पत्रके सुननेकी उत्कंठा होगी इस लिये हम इसको वैसेका वैसे नीचे लिख देते है।

डाकूराज! क्या आप राजपूत हैं अनुमान होताहै कि आप राजपूत किसी तरह नहीं हैं। क्योंकि राजपूत ऐसा नीच कार्य्य कभी नहीं करते। आप राजपूत कुलके कलंक हैं आप डाकू हैं और नरघाती पिशाच हैं। नरहत्या करना आपकी जीविका है। परन्तु मैं उपदेश देताहू कि डाकू वृत्तिको त्याग दीजिये और जितने कैदी आपकी कैदहैं उनको मनुष्य व्यवहारकी तरह अपने २ घर भेज दीजिये। मेरे उपदेशानुसार कार्य्य करनेसे आपका मगल है और नहीं तो युद्ध करनेको तय्यार हो जाइये।"

डाकूराज उक्त पत्रको पढकर क्रोधसे कांपने लग गया। पत्रके टुकडे २ करके पृथ्वीपर फेंक दिये। और कहने लगा—हे मूढ! क्या इतना घमंड होगया? क्या मृत्युकी इच्छाहै? "राजपूत कुलका कलंक" बस अब सहा नहीं जाता तू कहा है। तुम्हारे लोहूको पान किये विना अब मेरी तृपा शान्ति नहीं होगी। आगे लिखताहै "नरहत्या" परन्तु तू याद रख कि जिस दिन तेरे लोहूमें यह तल्वार भीगेगी उसी दिन तुझे मालूम होगा कि "नरहत्या" किसको कहते हैं। क्या कैदियोंको तेरे उपदेशसे मुक्त करदू? रे दुष्ट पहिले तुझको इस समारसे मुक्त

करदूंगा तब पीछे उनको करूंगा। और वीरसिंह क्या प्राण रहते दूसरेका उपदेश कभी मान सकताहै ? कभी नहीं। -ाग जावे परन्तु प्रण कभी नहीं जा सकताहै यह कह चुप होगया पीछे देखा कि दूत सामने खड़ाहै तब उसको कहा–दूत ! तुम जावो और अपने राजासे कहना कि राजपूत वीरसिंह तुम्हारी युद्ध घोषणासे नहीं डराहै। प्राणोंकी अपेक्षा मान उसको अधिक अदरणीय है। वह कैदियोंको नहीं छोड़ेगा। और हे दूत ! तुम्हारे राजासे कहना कि जो वह दूसरोंके दुःखसे इतना दुखितहै तो दूसरोंके लिये प्राण देनेसे नहीं डरे। अपनी फौज सजाकर जयदेवपुर पर चढ आवे परन्तु उसको कहना कि जयदेवपुरका राजा वीरसिंह उससे युद्ध करनेके लिये आजानेपर लौट कर नहीं जाना होगा।"

डाकूराज यह कह चुप होगया और जो आज्ञा कहकर दूत चला आया।

दसवां बयान।

प्रातःकालका समय है सूर्य्य भगवान अपनी लाल २ पताकाओं सहित आ रहेहैं। शीतल मन्द २ हवा चल रहीहै पक्षी कोलाहल करते इधर उधर उड रहेहैं। धर्म्मात्मा पुरुष सूर्य्यके उदय होनेके पहिलेसे हरि भजन कर रहेहैं। इस समय आइये पाठक जयदेवपुरमें देखें क्या हो रहाहै। ओह ! यह क्या यहा युद्धके भेषमें सिपाही खड़े हुये हैं। परन्तु सब पत्थरकी मूर्तिकी तरह खडे वजीरपुरकी राहकी तरफ टकटकी लगाये हुये हैं। इससे बोध होताहै कि किसीके आनेकी प्रतिक्षा कर रहेहैं। इसीसे सबका मुह मलीन हो रहाहै। परन्तु वह देखिये उस घोडेके सवारको आता हुआ देखकर सबका मुह प्रफुल्ल हो आया। घोडेके सवारके पास आतेही सबने प्रणाम की। पाठक ! यह वही आपके पूर्व परिचित वजीरपुरके महाराज विजयसिंह हैं।

महाराजने सेनापतिसे कहा—अब विलम्ब करनेका प्रयोजन नहीं है। मैं यहा रहताहू, तुम सबको लेकर गांवमें जावा। उस पापिष्ट वीरसिंहका पता लगाकर मुझे खबर देना परन्तु यह अवश्य स्मरण रखना कि किसी दरिद्र असहायको दुःख न देना।

डाकूनगरीमें इस समय भयकर कोलाहल हो रहाहै। डाकूराज इस समय भी अपने आनन्दमें बैठा हुआहै। और अपने मनके घोडे इधर उधर दौडा रहा था कि अचानक एक भयानक शब्द सुनाई दिया और साथही साथ एक घायल आदमी आकर सन्मुख खडा हो गया। आनेवालेने कहा—महाराज! विजयसिंह अपनी बहुतसी सेना सहित नग्रपर आक्रमण कियाहै। हम लोग यथाशक्ति उनका सामना करते रहे परन्तु हम लोगोंसे वे अधिक थे इसलिये अधिक नहीं ठहर सके। यह देखिये इस समय भी—मेरे शरीरसे लोहू जारी हो रहाहै महाराज "

यह कहते २ पृथिवीपर गिर पडा और मर गया। आनेवालेका यह हाल देखकर डाकूराज पत्थरकी मूर्तिकी तरह बैठा रहा और क्या क्या करना चाहिये यह कुछभी स्थिर नहीं कर सका। क्योंकि युद्ध के लिये पहिले से सावधान न था इसलिये डाकूराज आत्मरक्षा का उपाय सोचनेलगा विजय सिंह की जयध्वनि सुनकर और अधिक देर नही बैठा रहसका घोडेपर सवार होकर "आरै प्राणजाय तो जाय परन्तु युद्ध अवश्य करूगा" यह कहताहुआ विजयसिंह के पास आया। जहा विजयसिंह घोडेपर सवार इधर उधर घूम रहाथा और हाथमें शत्रुओं को संहार करने वाली तलवार झम झम कर रही यह वीरसिंह विजयसिंह को देखकर गर्वित वचनोंसे बोला हे विजयसिंह! अब तुम्हारी मृत्यु निकट आगई है। तुम अपने राज्यको छोडकर यहां प्राण देनेको क्यो आये हो?

विजयसिंह —मेरी मृत्यु निकट है इससे मुये कुछ हानि नहीं।

परन्तु डाकूराज इस समय भी तुमको उपदेश देताहू कि कैदियोंको छोड दीजिये नहीं अवहीं डाकूनगरी को ध्वशकर देताहू ।

वीरसिंह । अब ज्यादा बातें करनेकी कुछ जरूरत नहीं है । इस रणस्थलमें खडे हुये हैं अब किसमें अधिक बल हैं यह स्वयही मालूम हो जावेगा । परन्तु मेरी एकबात "

विजयसिंह—क्या बात है सो कह दीजिये ।

वीरसिंह—विजयसिंह ! तुम क्षत्रीहो और क्षत्रियोंका यहधर्म भी नहीं है कि युद्धमें पीठ दिखावें । परन्तु मैं युद्धके लिये पहिलेसे सावधान नहींथा इसलिये सेनासहित युद्ध नहीं करसकता । जोहो ! मैं भी क्षत्री हू युद्ध करताहू जयपराजय ईश्वर के हाथ हैं ।

यहकह वीरसिंह और उत्तरकी अपेक्षा न करके तलवार निकालकर विजयसिंह पर वार किया क्षत्रराज विजयसिंह युद्धसे नहीं डरता । यह कहता हुआ विजयसिंह आत्मरक्षा करने लगा । दोनोंकी तलवारोंसे आग्निकी चिनगारिया निकलने लगीं । वीरसिंह यथा शक्ति विजयसिंह पर वार करता है परन्तु विजयसिंह अब भी कवल अपनी आत्मरक्षा ही करता है । वीरसिंह के वारसे विजयसिंह के शरीरसे रुधिर निकलने लगगया कांति मलीन होगई । विजयसिंह की सेना खडी हुई है और विजयसिंह की आज्ञाकी प्रतीक्षा करती है । कुछ देरमें दोनोंमें युद्ध होता रहा और कुछ देरबाद अचानक एक शब्द हुआ और वियजसिंहको मूर्छा आगई । " दुष्ट अपने कर्मोंका फल भोगकर यह कह वीरसिंह विजयसिंह पर तलवारका वार करनाही चाहताथा कि एक तरफसे आवाज आई " धर्म की जयहो " इस आवाजका ऐसा असर हुआकि डाकूराजके हाथसे तलवार पृथ्वीपर गिर पडी और यह कहता हुआ वियजसिंह खडा होगयाकि दुष्ट ! धर्मकी अवश्य जय होगी " ।

खडे होकर विजयसिंहने तलवारका एक भरपूर हाथ मारा जिस

वीरसिंह पृथ्वीपर गिरपड़ा। इस समय भी वीरसिंहके मुहसे गर्वित वचन निकल रहेहैं। वह कह रहाहै हे दुराचार मैं घायल हुआ तुझारी मनोकामना सफल हुई। ओह! क्या मैं इतने दिनतक राज्य तेरे हाथसे मारे जानेके लियेही करताथा। कैसा कालियुग है जिस सन्यासीको मैंने इतने दिनतक आश्रय दिया उसीने मुझे शापदिया। खैर "
यह कहते २ वीरसिंह का आंखे बन्द होगई और उसके प्राण पखेरू उडगये। कुछ देरके वाद वीरसिंहकी स्त्री वहा आकर अपने पतिकी लाश लेकर रोनेलगी। और विजयसिंहसे बोली— महाराज अब मैं क्या करू।

विजयसिंह—यह राज्य मैं लेना नहीं चाहता यह तुझारे लडकेको देताहू। जबतक यह तुझारा लडका वालक रहै तबतक तुम कहो जिसको राज्य कार्य्य सौंप दिया जावे।

वीरसिंहकी स्त्री—दयासिंहको सौंप दीजिये।
यह सुन राज्यभार दयासिंहको दे विजयसिंह वहासे रवाना हुवे

ग्यारहवा बयान।

महाराज विजयसिंह डाकूराज के लडकेको राज्य तिलक देकर यहासे चले आयेथे। यह वात पहिले लिख आयेहैं। अत: वहासे चलकर महाराज अपनी सेना सहित योग सरोवरमें आये जहा कमला और चन्द्रकुमारीके आनेकी वात हम पहिले किसी बयानमें लिख आये हैं। अस्तु। जहा महात्मा तपमें मग्न नेत्र मूदे हुयेथे वहां जाकर खड़ होगये और महात्माको टकटकी लगाकर देखने लगे। कुछ देर के वाद महात्माकी आंखें खुलीं तो महात्माने अपने सामने महाराज विजयसिंह को देखकर कहा—तुमकौन हो?"

विजयसिंह—पिता मैं वसीरपुरका राजा विजयसिंह हू। मैं आपका

दर्शन करने आया हू। वीरसिंह बहुत अन्याय करताथा इससे उसको कैदियोंके छोडनेके लिये लिखाथा परन्तु उसने मेरी वातका कुछ भी ख्याल नहीं किया इसलिये उसको मारकर उसके लडके को राज्य देदिया है और सब कैदियोंको छोड दिया हैं। आज आप जैसे डाकूराजपर कृपा रखते थे उसी तरह मेरेपरभी कृपा बनाइ रखें।

महात्मा—हे राजन! तुम्हारेपर खुश हूं नरघातकों को मारना श्रेष्ट जनोका कर्तव्य है। तुमलोगों के युद्ध करनेके समय मैंनेही दया क्षेत्रमे जाकर " धर्मकी जय"कहीथी अब तुम अपने घर जावो तुम्हारी मनोकामना सफल हुई।"

यह कह कर महात्मा फिर जपकरने लग गया विजयसिंह पासमे एक वृद्ध ब्राम्हण खडाथा उससे वातचीत करने लगगये। पाठक इस ब्राम्हणको आप जानते अवश्य होंगे इसीके उपकारार्थ विजयसिंहने वीरसिंहको वधकिया है। अस्तुः इसतरह राज और ब्राम्हणमें बात होने लगी।

विजयसिंह—हे पूज्यवर! मैंने जो २ प्रतिज्ञा कीथी वह सब पूर्ण करदी हैं अब आपकी और क्या आज्ञा है वह कहिये।

ब्राह्मण—इश्वर आपका कल्याण करें। आपने मेरेलिये बहुत कष्ट भोगे। इससमय आज्ञादीजिये कि मैं अपने घर जाऊं।

यह कहकर वह वृद्ध ब्राह्मण रोनेलगा। जिसको देखकर विजयसिंह नेकहा—यह क्याबातहै आपमुझसे कहिये रोते क्योंहैं जिसतरह आपके कष्ट दूर होंगे उसका उपाय और करूंगा।

ब्राह्मण—मेरे कष्ट दूर नहीं हो सकते क्योंकि जान पडताहै कि इश्वरने मुझे कष्ट उठानेके लियेही उत्पन्न कियाहै

विजयसिंह—मेरे पर कृपा करके कहिये कि आपके रोनेका क्या कारणहै ?

ब्राह्मण—महाराज मेरे दुःखकी बात सुनिये । मेरे एक मात्र पुत्र और एकमात्र पुत्रीथी । जबमेरी लड़की की उम्र छ वर्षकी हुई तब उसकी तेजपुरके एक अच्छे सज्जन पुरुष के साथ शादी करदीथी । शादी होने के बादसे वह सदा अपने श्वशुरालमें रही। बीच २ में कभी २ आदमी भेजकर मैं मेरी लडकी ओर दामादका शुभ समाचार मगवा लेताथा । शादीके बाद से अपने श्वशुर के यहां क्योंरही? इसका कारण यहथाकि तेजपुरके रास्तेमें डाकुओंका भयथा । कितनेही दिनके बाद एक रोज मेरी स्त्रीने कहा किमै अपनी लडकीको देखना चाहतीहू सो उसको बुलवा दीजिये । इसलिये मैने अपने दामादको पत्र लिखाकि तुमदोनों चले आवो इसके उत्तर मे उसने लिखा—"हमलोग आजयहासे रवानाहुयें" परन्तु दुःखका विषय है कि आज चार वर्ष बीत गये मैं उनके खोजमे फिरतारहा परन्तु कहींभी पता नही लगताहै । अन्तमें सुनाकि जयदेव पुरके डाकूराज वीरसिंहने मेरी लडकी और दामादको कैद कर रखाहै । इसीलिये आपसे अनुरोध कियाथा और आपने पालन भी किया परन्तु खेद है कि मैने वीरसिंहके कैदखानेको अच्छी तरह देख लिया परन्तु मेरे दामाद और लडकीका कुछ भी पता नहीं लगा । इसलिये अब क्या करू अपने घर जाताहू । इस तरह कहकर ब्राह्मण अपने प्रारब्धको धिकारता हुआ अपने घरका रास्ता लिया और विजयसिंहने अपनी राजधानीका । पाठक! अब यहां कुछ श्रीप्रसादके विषयमें लिखना उचित समझते हैं । बहुत दिनतक श्रीप्रसाद अपने पिताका पता लगानेके लिये घूमता रहा अन्तमें अपने घर लौट आया । कुछ दिनके बाद वहाही सूर्यप्रसाद भी आगया और कमला और चन्द्रकुमारीको साथ लिये हुये वह महात्मा भी आगया । पाठक! जिसके साथ कमला और चन्द्रकुमारी आई है. और जो योगसरोवरमें रहता था उस महात्माका परिचय देकर अब मैं इस उपन्यासको समाप्त करताहू । महात्माहीके मुहसे सुनिये उसने अपना परिचय यों दिया । मैं, चन्द्रकुमारीका

पिता भरतसिंह हू । एक रोज बाहरसे आकर मैंने देखा कि मेरी स्त्री म
हुई पड़ीहै । और मेरी एक मात्र कन्या चन्द्रकुमारीभी नं
ईं है । यह घरकी अवस्था देखकर मारे दु:खके मैंने भी सन्यास
ग्रहण करलिया और योगसरोवर में रहने लगा । आगेका हाल स
जानते ही हैं । कमलाको भी यह नहीं मालूमथा कि श्रीप्रसाद मेरा भाई
है वह अबतक स्वदेशी मनुष्य जानकर भाई कहतीथी परन्तु अब खुद
भाइ होनेसे और भी प्रफुल्लित हुई । अस्तु. चन्द्रकुमारीका श्रीप्रसाद के
साथ शुभ दिन देखकर विवाह कर दिया । चन्द्रकुमारीका पि
भरतसिंह पुन. योगसरोवरमे चलागया । क्योंकि जिनको भगव
प्रेमामृतका स्वाद मालूम होजाताहै वे पीछे इस अनित्य सुखको अच्छा
नहीं समझते । सूर्यप्रसाद अपने पुत्र श्रीप्रसाद और अपनी पुत्री
कमला और अपनी स्त्री और श्रीप्रसादकी स्त्री चन्द्रकुमारी सहित फिर
पहिलेकी तरह आनन्द भोग करने लगे । इति ।
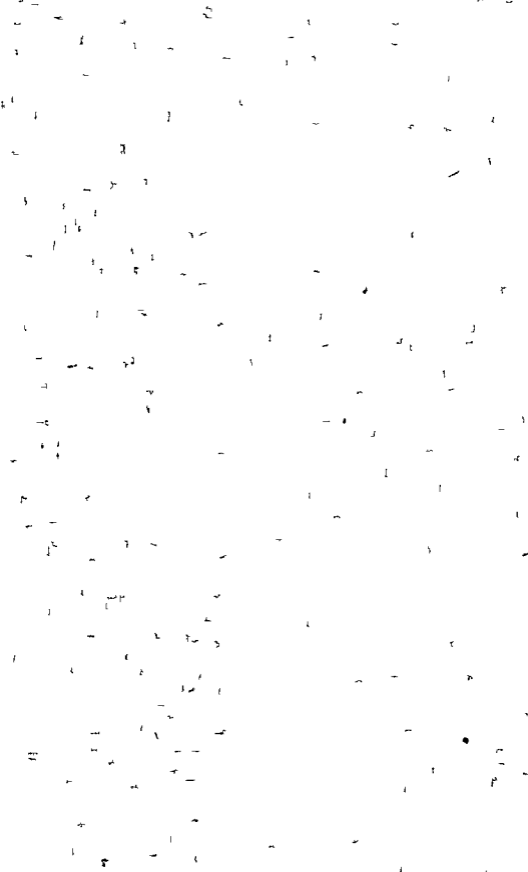
श्रीहरिः।

बिगड़ेका सुधार।

अथवा

सती सुखदेवी।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम्-प्रेस,
बंबई.
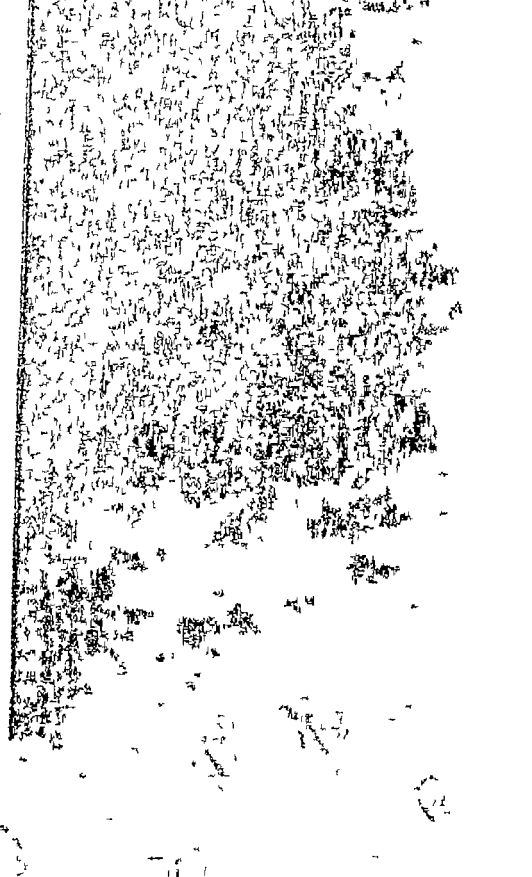
श्रीहरिः।

बिगड़ेका सुधार।

अथवा

सती सुखदेवी।

जिसमें

एक दुराचारी पति सतीपत्नीके सतीत्वसे सदाचारी बनगयाहै।

जिसे

"श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचार" के भूतपूर्वसंपादक, अनेकग्रंथोंके रचयिता, बूँदी (राजपूताना) निवासी महता प० लज्जाराम शर्मासे रचना कराय,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय बंबई में मुद्रितकर प्रकाशित किया।

संवत् १९६४, सन् १९०७
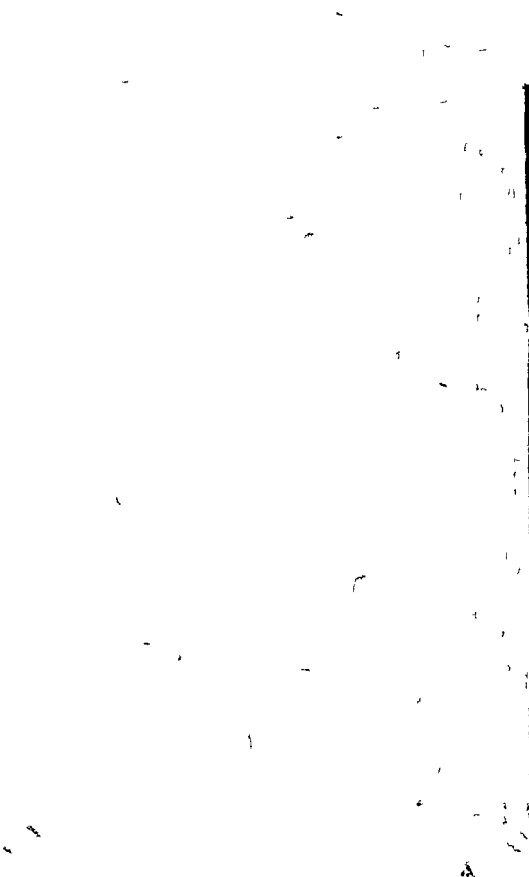
भूमिका।

हमारे पूर्वजोंने हिन्दूशास्त्रोंको तीन भागोंमें बांटाहै । एक राजासम्मित, दूसरे पितासम्मित और तीसरे कान्तासम्मित । राजासम्मित शास्त्रोंमें श्रुतियां और स्मृतियां, पितासम्मित शास्त्रोंमें इतिहास, पुराण और कान्तासम्मित शास्त्रोंमें काव्यहैं । जैसे मनुष्यको राजाकी आज्ञा आनाकानी विना माननी होतीहै, जैसे राजाकी आज्ञा न माननेवाला तुरतही आज्ञाभंगका दंड पाताहै वैसेही वेद और स्मृतियोंकी आज्ञाका उल्लंघन करनेसे मनुष्यको इसलोक वा परलोकमें अवश्य दंड मिलता है दंड अवश्य मिलताहै और इसीके भयसे आदमी नाना पातकों, नाना कुकर्मोंसे बचताहै परन्तु उन आदमियोंपर भयके साथ श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न किये विना मनुष्यके हृदयपर उनका पूरा असर नहीं होसकता इसलिये वेदों और स्मृतियोंकी वेही आज्ञायें पुराणोंमे उदाहरणरूपसे दिखलाई गई हैं। जैसे पिता अपनी संतानको बुरे कामोंसे बचाकर भले कामोंमें प्रवृत्त करनेके लिये शिक्षा देताहै, कभी नर्मी और कभी गर्मी दिखलाकर उन्हें समझाताहै, कभी धमकाकर उन्हें सुमार्गपर लगानेके लिये विवश करताहै और कभी पुचकारकर प्यारके साथ उन्हें बुरेकामोंसे रोकताहै वैसेही पुराणोंमें अथसे इतितक शिक्षा भरी हुईहै । बस इन्हीं कारणोंसे पुराण पितासम्मित शास्त्रहैं । अवश्य ऐसाहीहै परन्तु पिताकी शिक्षामें आज्ञाका अंश अधिक रहताहै, जैसे मनुष्यको राजाकी धर्मशास्त्रोंकी आज्ञा सर्वथा माथे चढानी होतीहै वैसेही पिताकी आज्ञाभी है । केवल पिताकी आज्ञाका पालन करनेकेही लिये मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामचंद्रजीने राज्याधिकार छोडकर चौदहवर्ष वनमें वास कियाथा ऐसी दशामें भोग विलासके समय मनुष्यको मनोविनोदके साथ २ शिक्षा देनाभी आवश्यकहै क्योंकि उस समय न तो राजाकी आज्ञाकीही आवश्यकता है और न पिताका उपदेशही पहुँच सकताहै । इसी प्रयोजनको सिद्ध करनेके लिये काव्योंकी रचना हुईहै और इसीलिये वे कान्तासम्मित शास्त्र कहलाते हैं । कान्ता-

सम्मित शास्त्र धर्मकी अवधिके भीतर मनुष्यको आनद देकर आमोद मोदके व्याजसे चरित्रशोधनकी शिक्षा देनेवालेहैं। इसीके दृश्य और श्राव्य दोभागोंमेंसे "उपन्यास" श्राव्यका एक अगहै।

मैंने अबतक जितने उपन्यास लिखेहैं वे सब इसी उद्देशसे लिखे हैं और हर्षहै कि सर्वसाधारणने उन्हें पसन्दभी कियाहै। जिन सुलेखकोंको अपने उपन्यासोकी रोचकताका अधिक गर्वहै वे यदि ऐयारी तिलस्म और जासूसी रचनाके साथ २ इसओर ढल पडें तो मेरी समझमें हिन्दूसमाजका अधिक उपकार करसकते हैं क्योंकि लोगोंने ऐसे२ उपन्यासोंकी रचनाद्वारा पाठकोंकी अरुचि छुडाकर पोथिया पढनेका चटरस उनके मनमें पैदा करदिया है।

"आदर्शदम्पती" मे पतिका पत्नीके प्रति और पत्नीका पतिपर असीम प्रेम दिखलाया गयाथा, इसलिये उसके पाठक कहसकतेहैं कि पंडित मधुसूदनकी जब सुन्दरीपर असाधारण प्रीति थी तबही तो उसने मरणतुल्य कष्ट सहने परभी अपना पातिव्रत नहीं छोडा इस पोथीमें पतिका अत्याचार सहकरभी पत्नीने अपने प्राणनाथको परमेश्वर मानाहै उसने पतिको कुमार्गसे छुडाकर सुमार्गमें प्रवृत्त किया है। यदि इस पुस्तकसे पाठकोंको कुछभी शिक्षा मिलेगी तो मैं अपना सौभाग्य समझूगा।

बूँदी–राजपूताना, वैशाख कृष्ण७ सवत् १९६४	हिन्दीका एक लघुसेवक– लज्जाराम शर्म्मा

॥ श्री ॥

बिगडेका सुधार।

अथवा।

सती सुखदेवी।

प्रकरण १

बाबूकी नास्तिकता।

वनमाली बाबू भारतवर्षके एक विश्वविद्यालयके एम् ए थे। वह जि समय पास हुए कोटियों छात्रोंमें उनका नम्बर प्रथम आयाथा। उ समय उनके पास होनेकी समाचारपत्रोंमें बडी धूम मचगई पास होने बादभी उन्होंने पढने लिखनेमें बडा नाम निकाला। जो हिसाबके सवा बडे २ अंगरेजोंसे हलहोने कठिन थे उन्हें वनमालीबाबू आननफान निकालकर फैंक दिया करते थे। साइन्समें बालकी खाल निकालक विद्वानोंको चकित करदेनेमेंभी आप बडे नामी निकले। उनकी वि बुद्धि देखकर सरकारने उन्हें बढिया नौकरी दी। उनके कामोंसे प्रस होकर हाकिमोंने उनकी बहुत कुछ उन्नति की और इस तरह वनमाली बाबू नामके साथ २ दामभी खूबही कमाने लगे।

इतना होनेपरभी आप सुखी नहींथे। वननाली बाबू जब कामकाज नौकरी चाकरीसे, पढने लिखनेसे छुट्टी पातेथे तब सांपिनी चिन्त आकर उन्हें डसने लगती थी। बाबू साहब जैसे पढे लिखे आदमं छोटीमोटी चिन्तासे घबडानेवाले न थे परतु उनकी चिन्ता बडीभारी थ इतनी भारी थी जिससे जन्मभर छुटकारा पानेका उनके पास कोई उपाय था। वह चिन्ता यही थी कि सुखदेवी एम ए पास नहीं थी। एम ए

और बी ए भाड चूल्हेमें जाय यदि वह मिडलचीभी होती तो वनमाली बाबूके लिये शिरमारनेका ठिकाना होजाता परंतु अँगरेजीके नामपर उनकी स्त्रीके लिये काला अक्षर भैंस बराबर था। वह अवश्यही हिन्दी पढ़ना लिखना अच्छीतरह जानतीथी और कुछ २ संस्कृतभी समझलेती थी परंतु वनमाली बाबूको इनपर भीतरसे घृणा थी। वह हिन्दीको गन्दी बतलाकर सदा दुतकारा करते थे और संस्कृत जैसी मुर्दाभाषाकी ओर कभी आंख उठाकरभी नहीं देखते थे। उन्हें दुनियामें यदि कुछ पसंद था तो भाषा अंगरेजी, भोजन अंगरेजी, भाव अंगरेजी और भेष अंगरेजी।

वनमाली बाबूको स्त्रीकी ओरसे बहुत दुःख था। वह उसपर इतने चिढगये थे कि सुखदेवीको "प्यारी" और "प्राणप्यारी" कहनेमेंभी उनका जी घबडाता था। ऐसी कुपढ स्त्रीको अपनी गृहिणी बनानेमें वनमाली बाबूको यदि लज्जा आतीहो तो आश्चर्यही क्याहै ? सुखदेवीमें केवल अंगरेजी न पढनेकाही दोष नहीं है वरन् बाबूजीकी हजार इच्छा होनेपरभी उसे मेमोंकी तरह गौन पहनना पसंद नहीं है, वह पियानो और हार्मोनियम बजाना नहीं जानतीहै, उसे पतिके हाथमें हाथ रखकर सभा सोसाइटीमें जाना स्वीकार नहीहै, वह उनके साथ अंगरेजी बालमें जाकर पर पुरुषसे कमर मिलाये नाचनेमें जीचुराती है, वह पतिके साथ बिस्कुट और डबल रोटी खानेमें और ब्राडी, शेम्पियन, पोर्टवाइन, और ह्विस्की पीनेमें सामिल होना नहीं चाहती और इसतरह वह वनमाली बाबूकी आखोंसे बिलकुल उतर गईहै।

ये हुई सुखदेवीके बाहरी दोषोंकी बातें ! यदि सुखदेवीके माता पिताको पहलेसे मालूम होजाता कि इन गुणोंके बिना वह अपने पतिके प्रेमकी अधिकारिणी न बनेगी और उन्हें वनमाली बाबूकोही अपनी लडकी देनेकी हजार गरज होती तो वे झकमारकर उसे ये बातें सिखा सकते थे परंतु जब वनमाली बाबूका जलता हुआ कलेजा भूरी आखोंकी गोरी मेम बिना ठंढा नहीं होसकता है तब सुखदेवीके माता पिता उसके गेहुएँ रंगपर खडिया पोतकर किसतरह उसे गोरी करसकते हैं ?

परिणाम यह हुआ कि वनमाली वाबूको सुखदेवी किसीतरह पसद न आई। यदि विवाहके समय उन्हें इन बातोंका कुछभी विचार होता तो वह ऐसी वेहूदी औरतको जोरू बनानेके वदले फ्रान्स जाकर स्वर्गकी अप्सराओंके चरणोंमें जा लोटते परतु उससमय बीसवर्षके होनेपरभी इन बातोंमें नादान थे। उससमय प्रथमतो उनके बूढे मा बापके आगे उनकी कुछ चलती चलाती न थी. और इसके सिवाय एकबात यह भी थी कि सुखदेवीके पुत्रहीन माबापसे असख्यधन, सम्पत्ति मिलनेके लालचने उनकी मति गति खोडाली थी। धन अवश्य मिलगया परतु सुखदेवी जैसी स्त्री पाकर वाबूसाहवको सुख न हुआ।

प्रमाणके लिये एकदिनकी घटना लिखदेनेसे पाठकोंको इस बातकी सचाई मालूम हो जायगी। एकदिन रातके बारह बजकर सैंतालीस मिनट जाचुकेथे वनमाली बाबू मेजपर कितावें उलटपुलटकर इसबातका निश्चय कररहे थे कि "खुदा नहींहै और जो लोग उसका होना बतलातेहैं वे झूठेहैं"—उन्होंने साइन्सकी किताबोंसे यह बात साबित करली थी, और दूसरेही दिन उन्हें इसविपयमें लेक्चर देना था। इसकारण वह प्रमाणदेनेको किताबें देखते, कभी मनहीमन मुसकुराते कभी त्योरिया चढाते और कभी चिन्तामें पडकर मोछोंके बाल दातोंसे काटते थे। जिस समय वह इस तरहकी गहरी उधेडबुनमें लगकर समाजमें तालियां पिटवानेके मनमोदक बाय रहेथे सुखदेवी पाजेवोंको छमाछम बजाती उनके पास आकर खडी हुई। जब आधे घटेके लगभग खडी रहनेपरभी पतिने उसकी ओर आख उठाकर न देखा तब सुखदेवीसे न रहा गया वह मुसकुराकर मीठे स्वरसे धीरेसे बोली'—

"प्राणनाथ, आज यह क्या? आज किस असमजसमें पडेहैं? रात बहुत जाचुकीहै एक बज गया है। दिनरात पढनेही पढनेसे आपकी आखें कमजोर पडगई हैं अब जरा आराम कीजिये। बहुत जागनेसे आपका शिर दखने लगैगा।"

"हैं तू ! हैं तू ! अभी कहासे आ मरी तूजा ! मैं अभी नही सोऊगा । इस सोनेसे मेरा पेट खूब भरगया । हाय ! अफसोस ! अगर यह अंगरेजी पढी होती तो मेरे काममें गडबड डालनेके बदले मुझे मदद देती । हिन्दुस्थानी, औरतें बिलकुल गवाँर होती हैं ।"

"मैं गवांर और मेरी सातपीढी गवार परतु प्राणनाथ ! मुझे बतलाइये तो सही मेरा क्या अपरावहै ? "

"तेरा बहुत बडा कसूरहै । तेरे पाजेबोंकी छमाछमसे एक बढिया सुबूत खयालसे जाता रहा । वह ऐसा अच्छा सुबूतथा जो अभीतक खुदाको न माननेवाले बडेसे बडे फिलोसोफरके ध्यानमें भी नहीं आया था । अगर वह याद रहता तो म कलके लेक्चरसे बहुतभारी नाम और इनाम पाता । अफसोस !"

"नाथ मुझसे अपराव हुआ क्षमा कीजिये परतु यह तो बतलाइये कि क्या आप परमेश्वरको नहीं मानते हैं ? राम ! राम ! यदि आप न मानते हों तो बडा अनर्थ हुआ !"

"हा ! हां !! मैं नहीं मानताहू । (जरा आखें चढाकर) बोल तेरा खुदा कहा है ?"

"प्राणनाथ, मुझे आपकी सब बातें स्वीकार हैं मैं आपकी दासीहू इसलिये आपकी बातका उत्तर देना मेरा धर्म नही है परतु मेरे सामने फिर कभी न कहिये, मेरे क्या किसीके सामने फिर कभी न कहिये-कभी चित्तपरभी न लाइये कि परमेश्वर नहीं है ।"

"तू निपट गवारहै । तू क्या जानै इन बातोंको । अगर तूभी मेरीतरह पढी लिखी होती तो मैं बतला देता कि क्योंकर खुदा नहींहै, बस तू मुझसे जिद्द न कर । जाकर सो रह ।"

इसपर सुखदेवी हाथ जोड २ कर, झोलियां बिछा २ कर, पैरोंमें गिर दे २ कर कहने लगी कि-"प्राणनाथ परमेश्वरको न भूलो । उसके लिये कुछ बुरा भला कहोगे तो परिणाम अच्छा न होगा।"-सुखदेवीके कहनेका बाबूजीपर कुछ असर न हुआ । उन्होंने जब देखलिया कि स्त्री अब

किसीतरह पिंड नहीं छोडती है तब उसे समझाकर ईश्वरका न होना दिखलानेके बदले उसे झिडका, फटकारा और दो चार गालिया उसके मा बापको सुना दी। अब उसने समझ लिया कि पति इस तरह माननेवाले मनुष्य नहीं हैं और न मेरी इनसे तर्क करनेकी शक्ति है इसलिये वह उठी और उठकर मनहीमें यह कहती हुई वहांसे चली गई कि:—

"अच्छा आज आप मेरे कहनेसे परमेश्वरको नहीं मानते हैं तो न मानिये परतु याद रखिये मैं यदि आपको किसीदिन न मनवा दू तो मेरा नाम सुखिया नहीं। मैं जानती हू कि स्वामीसे वाद करना महापाप है परतु मामला ऐसाहै कि इस बातपर जोर दिये बिना किसीदिन हमारा सर्वनाश होजायगा।"

प्रकरण २.

पिताका श्राद्ध।

आज बनमाली बाबूके पिताका श्राद्धहै। सुखदेवी सवेरेहीसे बढियासे बढिया रसोई बनानेमें लगी,हुईहै।उसे हलवाईके यहाकी बनीहुई मिठाई पसद नही आतीहै इसलिये उसने अपनेही हाथसे लड्डू बनाये हैं, घेवर बनाये है, खाजा बनायेहैं, बरफी बनाईहै, पूडी बनाई है,कचौडी बनाई है,अनेकरतरकारिया बनाई हैं और सच पूछो तो सबही बढियासे बढिया सामान बनाकर तैयार कर लियाहै। उसने जो कुछ बनायाहै बडी भक्तिसे बनायाहै और रसोई बनानेके लिये घरमें मिश्रानी होतेहुएभी आज उसने इसलिये अधिक परिश्रम कियाहै कि पति उसकी कारीगरी देखकर प्रसन्न होजाय।

जब सुखदेवी रसोई बनाकर निपटी उसने रामचेरवा कहारके साथ श्राद्ध करानेके लिये पडितको बुलवाया। पडितजीके आनेपर उसने उनके कथनके अनुसार श्राद्धकी सामग्री इकट्ठी की और जब सारा मामला टिचन होगया तब सुखदेवीने बनमाली बाबूको बुलानेके लिये रामचेरवा कहार भेजा। एकबार भेजा, दोबार भेजा, चारबार भेजा और दशबार भेजा परतु बाबूसाहबको आनेकी फुरसत न मिली।

उसदिन आप किसी सरकारी काममें लगेहुए न थे । आप रविवारकी छुट्टीमें थे और छुट्टी मनानेके लियेही अपने इष्टमित्रोंके साथ क्लबमें जा बैठेथे। मित्रोंमें बैठकर आप परमेश्वर न होनेकी चर्चामें लगे हुएथे और इस कारण आपको पिताके श्राद्धमें आनेकी फुरसत न थी । जब दशवीबार आनेपर रामचेरवा मालिकके हाथकी थप्पड और गालिया खाकर लौटा तो सुखदेवीका सारा उत्साह मारा गया। वह बहुत देरतक रोई झींकी, उसने अपने नसीबको बहुतेरी गालिया दी और अतमे उसने श्राद्धकी सामग्री नदीमे फिकवाकर न्योते हुए ब्राह्मणोंको भोजन कराया। वह पहलेहीसे जानती थी कि पति परमेश्वरको नही मानते है इसलिये उसे ससुरके श्राद्ध न होनेका अधिक दु ख नही था परतु उसने मुद्दतसे कहसुनकर अपनी रसोईकी कारीगरी दिखलानेका प्रण किया था, विलायती मिठाईकी देशी मिठाईसे तुलना करनेके लिये पतिको बढिया भोजन करनेपर राजी करलिया था । उसे आशाथी कि पतिके पसद करनेपर उसका आदर होगा। वह इस आशामें मनोराज्य बना रही थी परतु अब उसका किया कराया सब मिट्टीमे मिल गया । सुखदेवीने कुढते कुढाते, आसू बहाते ब्राह्मणोंको भोजन कराया, नौकर चाकरोंको दिया, अडौस पडौसवालोंको दिया और इस तरह दे दिलाकर जब छुट्टी पाई तो पतिके और अपने लिये खाना अलग रखकर वह भूखीही चौकेसे बाहर निकल आई। मिश्रानी और रामचेरवाने उनसे बहुतेरा कहा सुना परतु पतिके आये बिना उसने जलपानभी न किया।

पति सबेरेके गये हुए ठीक रातके नौबजे आये । उन्होने क्लबमें रहकर अपने मित्रोंके साथ चायपानी पिया था,बिस्कुट खाया था और खाने और न खानेकी जो कुछ मनमें आया चीजें खाली थीं इसलिये उन्हें सुखदेवीकी मीठी सीठी मिठाईकी पर्वाहही क्यायी, परतु उसकी भूखके मारे आँतें बैठी जाती थीं । यदि अकेली सुखदेवीही भूखी होती तो कुछ बात न थी परतु वह दोजीवसे थी । उसे आठ सात महीनेका गर्भ था । जेठका महीना था। लूयें सून जोरशोरसे चल रहीं थीं । गर्मी बेठिकाने थी। ऐसे

समयमें भूखी रहनेसे सुखदेवीके गर्भमें कुछ कुपेच पडगया। उसे वमनपर वमन आरहेथे, निर्बलताके मारे आँखें बैठी जाती थी, गर्भमें असह्य वेदना थी और इस तरह सुखदेवी अवतन होरही थी। रातके साढेआठ बजजानेपरभी बाबूसाहब राजी खुशीसे न आये। स्त्रीकी भयकर बीमारीकी खबर पहुँची तब आये। आतेही स्त्रीकी भयानक दशा देखकर उन्हें दया आई। उन्होंने सुखदेवीके हजार अनुरोध करनेपरभी वैद्यके बदले डाक्टर बुलाया। डाक्टरने उसकी भयकर दशा देखकर इलाजमें हाथ डालनेकी साफ नाही करदी तब बाबूसाहबने बहुत आनाकानीके बाद वैद्य बुलाया। आयुर्वेद शास्त्रके अनुसार चिकित्सा करनेसे जब उसका कुछ जी ठिकाने बैठा, तब वैद्यने सुदेवीको कुछ दूध देनेकी सलाह दी। सुनतेही वह हाथ जोड कर घूँघटकी ओटसे बोली:—

"जबतक स्वामी भोजन न कर लेंगे मैं दूध न लूँगी। पतिके बिना दूध क्या जल लेनेमेंभी मेरा पातिव्रत भग होताहै। मैं न लूँगी।"

"अरी गवार, तैंने क्या अभीतक सुबहसे पानीभी नही पिया है ? हाय! हाय!! बडा गजब हुआ मैं इन गँवार हिन्दुस्थानी औरतोंके मारे बडा हैरान होगया। मेरा नाकमें दमहै। वैद्यजी, आपही कहिये। मैं इस जाहिलीका क्या इलाज करूं मैं बहुतेरा चाहताहू कि औरतें आजादीसे रहें मगर यह अपनी आजादी खोकर मेरी आजादीभी छीनती है। अफसोस! मुझे इसवक्त बिलकुल भूख नहींहै। तू थोडासा दूध तो लेले फिर खाना खानेके वास्ते देखा जायगा।"

वैद्यजीने बाबूजीकी बातका कुछ उत्तर न दिया। वह उत्तर प्रत्युत्तर करके अपना समय खोना नहीं चाहते थे। इस कारण इस विवादको इसतरह जडसेही तोडकर चले गये। पतिके बहुत समझाने बुझाने परभी जब सुखदेवीने न माना तब उसके बहुत आग्रहसे बनमाली बाबूने कुछ दूध लिया। उनके दो घूट लेनेबाद उसी ग्लासमें जो जूठा दूध बचाथा उसे लेकर सुखदेवीने अपना मनोरथ सफल किया अब उसे कुछ चैन हुआ। इस तरह वैद्यजीकी बताई हुई दवासे जब सुखदेवीकी दो तीन

घटेमें तबियत सभल गइ तब उसने पतिके नाहीं करने परभी उठकर वनमाली बाबूको भोजन कराया। भोजन करते समय बाबूजी कभी नहीं चाहते थे कि खानेकी कुछ प्रशंसा करते परतु सुखदेवीकी असाधारण पतिभक्तिने उनके कोरे मनपर असर डालकर उसे कुछ २ चिकना कर दिया। उनके मुखसे इसतरह अनायास निकल गया कि–"आजका खाना अच्छा बनाहै। अगर गर्म २ खायाजाता तो औरभी कुछ मजा आता।"

बस यह सुनतेही सुखदेवीने अपना परिश्रम सफल माना। अब उसकी चढबनी। उसने हाथ जोडकर बडे प्रेमभरे कटाक्षके साथ कहा:–

" नाथ बस आप यदि टटोलियेगा तो इसप्रकार सबही गुणोंमें हिन्दू रमणीको चतुर पाइयेगा। आप ध्यानही न दें तो निराली बातहै।

"बस रहनेदे इन बातोको। मैं नहीं मानता! तू क्या जाने प्रेमकी बात। हिन्दू औरतें गवार रहकर कभी पढी लिखी मेमोंका मुकाबिला करसकती हैं? हरगिज नही! कभी नही!"

"नहीं नाथ, मैं उनसे बराबरी करनेकी बात नहीं कहती परतु मैं कहती हू और छाती ठोंककर कहती हू कि गृहस्थीके योग्य जिन गुणोंकी स्त्रियोंमें आवश्यकता है वे सब हिन्दू रमणियोंमें मेमोंसे हजारदर्जे अधिक होतेहैं।"

"नहीं कभी नहीं! और अगर होभी तो औरते सिर्फ बच्चे जनने और खाना बनानेके लियेही पैदा नहीं हुईहैं। खुदाने– नही २ मैं भूलगया था। जब खुदाको मैं मानताही नही तब उसका नाम क्यों लू? नेचर * ने आदमी और औरतको बराबर पैदा कियाहै और बराबरही इनका हकहै फिर औरतें पढ लिखकर आदमियोंके बराबर मुल्ककी भलाई क्यों न करें?"

"नाथ, मैं पढने लिखनेको बुरा नहीं कहती परतु स्त्रीका पहला काम घरको सभालना है। अच्छा खैर! इस बातको अभी जाने दीजिये। पहले यह कहिये कि यदि परमेश्वर नहींहै तो आपके मुखसे अनायास कैसे निकल गया?"

---

* प्रकृति।

"यह सिर्फ भूलथी । खुदाके माननेवाले झूठे लोगोंमें दिनरात रहनेसे मेरीभी ऐसी आदत पडगई है । बचपनमें मैंभी भेडियाधसानमें पडकर उसे मानता था लेकिन साइन्सने मेरी आखें खोलदीं । अहा ! साइन्सभी कैसी बढिया चीजहै ! तू अगर पढी होती तो कभी इस वाहियात खुदा २ की चिल्लाहट न मचाती । अफसोस ! मेरा एक कुपढ औरतसे पाला पडगया । अब मैं क्या करूं ?"

"प्राणनाथ, अभी इस बातको जाने दीजिये । कभी परमेश्वर आपको सुबुद्धि देकर मुझे सुखी करेगा परतु यहतो कहिये कि स्त्रियोंको पुरुषोंके बराबर अधिकार मिलजाय और वे गर्भके कष्टोंसे बचनेके लिये विवाहही करना छोडदें तो दुनिया किस तरह चले ? क्या उस समय आपजैसे पुरुष स्त्रियोंकी तरह गर्भधारण करेंगे ?"

" नही ऐसा तो नही होसकता ! यह बात कुदरतके खिलाफ है लेकिन औरतें अगर शादीकरना न चाहें तो वे आजाद हैं । विलायतमे उनपर गँवार हिन्दुओंकी तरह कोई दबाव नही डाल सकता । वहा बहुतेरी औरतें जनमतक कुवांरी रह जातीहैं और वे इस तरह रहकर मुल्ककी भलाईके बडे २ काम कर गुजरतीहैं ।"

"अच्छा योंही सही परतु क्या वे जन्मतक कुँवारी रहनेवाली जन्मतक बिना आदमीके रह जातीहैं ? कभी नही । जिन लोगोंमें स्त्रियोंके लिये ऐसी स्वतन्तताहै उनमें बडे २ कुकर्म होतेहैं न कभी स्त्री पुरुषके बिना रहसकती है और न पुरुष स्त्रीबिना ।"

" बस ! बस !! बहुत होगया । मैं पहलेंही कहता था कि तू इन बातोंमें नहीं समझसकेगी । बस जानेदे इन बातोंको । आज तू बीमार है । बस सोजा । अब रात बहुत जाचुकीहै मैंभी सोता हू ।"

" हा नाथ प्रसन्नतासे सोइये । मुझे आपकी प्रसन्नताके सिवाय इस दुनियामें कुछ न चाहिये । मे केवल इतनाही कहती हू कि मे, आपसे वाद करना नही चाहती परतु कामसे किसी दिन दिखला दूगी कि देशी रमणियोंमें कहातक पानी होताहै ।"

प्रकरण ३.

बाबूसाहबकी पतलून ।

२५ दिसबरको ईसाइयोंके पैगंबरकी जन्मतिथी है । क्रिस्तानोंका बडाभारी त्योहार है उस दिनकी यदि ईसाईलोग कई सप्ताह पहलेसे राह तकते हों तो कुछ आश्चर्य नहीं है परंतु वह त्योहार ईसाइयोंका होनेपरभी राजाका त्योहार है । उसपर सरकारी दफ्तरोंकी छुट्टी होती है, खुशामदियोंको हाकिमोंके पास डालियां पहुचा २ कर अपना काम बनानेका अवसर मिलताहै इसलिये यहाके हिन्दू मुसलमानभी बडेदिनकी बाट देखनेके लिये कई सप्ताहसे टकटकी लगाये रहते हैं । इन राह देखनेवालोंमें हमारे बनमाली बाबूभी थे । आप छुट्टियोंके दिनोंका आनन्द लूटनेके लिये अमरपुरसे काशी जानेका विचार किया करतेथे । वह विचार अवश्य करते थे परंतु सरकारी कामकाजके मारे उन्हें २४ दिसंबरको दिनके चार बजेतक चलनेकी तैयारी करनेका अवसर न मिला । उसीदिन दफ्तर बंद होनेवाला था और उसीदिन उनके पास कामकी बहुत भीड आपडी। काम चाहे जैसा आपडा परंतु बाबूसाहब जैसे दृढ विचारके आदमीसे ऐसा थोडाही होसकता था कि बनारसी मित्रोंसे आनेका प्रण करके नियत समयपर न पहुचें । जब उन्हें अधिक देरी होती दिखाई दी तब घरजानेका विचार छोडकर आपने दफ्तरसे सीधा जानेका मनसूबा किया । दफ्तरका चपरासी घरपर भेजकर मार्गका सामान मँगाया और अपनी स्त्रीसे मिलेबिनाही सीधे स्टेशनको चल दिये । इस बातसे सुखदेवी बडी उदास हुई । बहुत रोई झीकी परंतु उस बिचारीका कुछ वश थोडाही था । बस रोझींककर रह गई । बाबूसाहब दफ्तरसे चलकर स्टेशनपर पहुँचे और सेकंड क्लासका टिकिट लेकर रातके सातबजे वहांसे रवाना हुए । रवाना अवश्य हुए परंतु अब उन्हें चिन्ता इस बातकी थी कि उनके कपडे चार पांचदिनके कामकी रगडमें मैले होगये थे । उन्हें और कपडोंका अधिक विचार न था क्योंकि वे मैलखोरे थे परंतु उनकी पतलून बहुत मैली

होगई थी। जिस समय अमरपुरसे चले उनका विचार था कि यदि दफ्तरमें कपडे बदलनेका अवकाश नहीं मिलाहै तो गाडीमें बदल लेंगे। इसी विचारसे आप मैले कपडे पहने सवार होगये थे परन्तु सेकंडक्लासकी गाडी होनेपरभी उनके हिन्दुस्थानी गवार यात्रियोंके आगे उन्हे रातके एकबजेतक पतलून बदलनेका अवसर न मिला। जब रातका डेढ बज-गया और गाडी खाली होगई तब आपने अपना ट्रंक खोलकर पतलून निकाली। वेञ्चपर नई पतलून रखकर शरीरपरसे पुरानी पतलून उतारी। इसतरह बिलकुल नंगे होकर ज्योंही नई पतलून पहनने लगे आप एका-एक घबडागये। नई पतलून देख २ कर धोबीको गालिया देने लगे। आपने अपने सारे शरीरका उसपर जोर लगा दिया परंतु कलफ और इस्तरीसे वह इतनी चिपक गई थी कि जिसका कुछ ठिकाना नही। बस इसतरह की झंझट और खैंचातानी करते२ही स्टेशन आगया। बाबूजी अब बडे संकटमें पडे। यदि अब नंगे रहतेहैं तो हँसी होतीहै और पतलून पहनतेहैं तो समय नहीं है। बस लाचार होकर आपने अपने शरीरसे कम्बल लपेटा। आप उसे खूब ओढ आढकर बैठगये और इस कष्टमें छुटकारा पानेके लिये बारबार घडी देखकर मिनट गिनने लगे। रात अधिक चलीगईथी इसलिये बाबूसाहबको आशा थी कि यहासे कोई यात्री सवार न होगा और इसलिये गाडी चलतेही पुरानी पतलून पहन लेंगे। उन्हे यदि यह आशा न होती तो गाडी के पाखानेमें घुसकरही वह पतलून पहन लेते। परंतु उनकी आशालतापर पाला पडगया। वहांसे एक साहब अपनी मेमको लियेहुए सवार हुए। इन गोरे दम्पतीकी सूरत देखकर बनमाली बाबू बहुत सिटपिटाये। आप कम्बल लपेटे सिकुडकर एक कोनेमें जा बैठे और बैठे २ कभी धोबीको और कभी अपने कर्मको गालिया देने लगे।

सवेरेके छःबजेतक कोई घटना न हुई और बाबूजीको आशा हुई कि किसी न किसी तरह यह समय योंही निकल जायगा। जब साहब उतरेंगे में

पतलून वदल लूगा। इस बीचमें उन्होंने कईवार मनसूबा किया कि पाखानेमें जाकर पतलून पहनलू वहा कपडे वदलनेकी जगह है और काचभी इसी लिये रक्खाहै परंतु सभ्यताने उनको ऐसा काम करनेसे रोका क्योंकि उन्हें डर था कि हजार कम्बल लपेटे होनेपरभी मेमसाहब मेरी खुली टागें देखकर मुझे हिन्दुस्तानी गँवार अथवा हसकी चालमें कौवा कहेंगी। वस इस सोच विचारसे बावूसाहव शरीरको चारोंओरसे ढांके पत्थरकी मूर्तिकी तरह अचल होकर वैठे रहे।

अव सूर्योदयका समय ज्यों२पास आनेलगा जाडेने जोरें पकडा। जाडेके मारे मेमसाहवके दात वोलने लगे। साहवने अपना सामान खोलकर समाला तो उसमें कम्वल नहीं। उन्होंने एक वार देखा दो वार देखा तीन वार देखा परतु तव अपने सामानमें कुछ ओढनेको न मिला तव साहवने लाचार होकर वावूसाहवसे वडी नम्रताके साथ कहाः—

"आप देखटा है कि मेमसाहव सर्डीसे घवडा गयाहै। क्या आप अपना कम्वल डेकर मिहर्वानी कर सकटा है ?"

सुनकर वनमाली वावू वडे असमजसमें पडे। अव यदि कवल देनेमें नाहीं करते हैं तो आपको हिन्दुस्तानी गँवार वनना पडता है और जो देतेहैं तो नगेपनकी फजीहती होती है। साहवने एक वार कहा, दोवार कहा, परतु वनमाली वावूसे इस वातका कुछ उत्तर देते न वना। वह उसी तरह पत्थरकी मूर्ति होकर अचल वैठे रहे। लज्जाके मारे उनका शरीर उससमय ऐसा होगया कि कहीं काटो तो खूनका नाम नहीं। यदि लज्जासे वनमाली वावूको प्राण प्यारे न होते तो आप उसीसमय गाडीमेंसे कूदकर प्राण देडालते। जव दश पन्द्रह मिनटतक वावूकी ओरसे उत्तर न मिला तव मेमसाहवने अपने पतिसे कहा'—

प्यारे,टुमने इस जगलीसे कम्वल मागकर नाहक अपना जवान खोया हिंदूस्टानी गँवार ऐसा वाटमें नहीं समझटा। ये टहजीवको क्या जानें।

लेकिन सर्दीसे मेरा डम घुटा जाटाहै। मैं अगर ओढनेके वास्टे कुछ नहीं पाऊगी टो डिन निकलटे निकलटे मेरा डम निकल जायगा।'

बस इतना सुनतेही साहबको जोश आगया। उन्होंने समझा कि जब यह गँवार मांगेसे नहीं देताहै तो किसीतरह इससे कबल छीनकर मेम साहबके प्राण बचाना चाहिये। चमारकी देवीकी जूतोंसे पूजा होतीहै। ऐसे जगली लोगोंमें सीधी अगुलियोंसे घी नहीं निकलता है। बहुत होगा तो यह नालिश करैगा परतु नालिशसे होगाही क्या? उलटा इसपर कुछ अभिशाप लगाकर इसे फँसा देंगे। यह सोचकर साहब अपनी जगहसे उठे और उन्होंने बनमाली बाबूके पास जाकर कबल पकडा उनके पास पागल बननेके सिवाय अब छुटकारेका कोई इलाज न रहा। बस इसलिये बाबूसाहब पागलोंकासा मुँह बनाकर बड-बडाते२—"हूहूहूहू" कर उटे। इसपरभी जब साहब डरे नही तब बाबूजी-ने उनको मारनके लिये सोंठा उठाया। उनके हाथमें सोटा देखतेही मेम-साहब घबडाकर अपना दु ख भूल गईं। उन्होंने पतिको मारसे बचानेके लिये साहबका हाथ पकडकर खैंचा और अपने पास बिठला लिया। अब दम्पतीको निश्चय होगया कि यह पागलहै क्योंकि वे अच्छीतरह जानते थे कि जिनके शिरमें थोडीसीभी बुद्धि है वे देशीगीदड कभी अग-रेज सिहोंका सामना करनेके लिये लकडी नही उठा सकते हैं और इस-पर तुर्रा यह कि बनमाली बाबू सूरतसे पढेलिखे जान पडते थे। फिर पढे-लिखे मिट्टीके पुतले देशियोंका इतना साहस कहा? इस तरह जब दोनोंको निश्चय होगया तब मेमसाहब बहुत घबडाईं। उनका कलेजा डरके मारे काँपने लगा और भारी जाडा पडनेपरभी उनके मुखपरसे पसीना टपक पडा। मेमसाहबकी घबडाहट देखकर साहबभी घबडाये और उन्होंने सम झा कि इस घबडाहटसे कहीं मेमसाहबको मूर्च्छा न आजाय इसलिये उ-न्होंने अपनी जेबमेंसे पिस्तोल निकालकर बनावटी पागलकी ओर तानी और जबतक स्टेशन न आगया ऐसेही बैठेरहे। बाबूसाहब अपनी सारी चौकडी भूल गये। जब साहबको इनकी चालढालसे निश्चय होगया कि

पतलून बदल लूगा । इस बीचमें उन्होंने कईवार मनसूबा किया कि पाखानेमें जाकर पतलून पहनलू वहा कपडे वदलनेकी जगह है और काचभी इसी लिये रक्खाहै परतु सभ्यताने उनको ऐसा काम करनेसे रोका क्योंकि उन्हें डर था कि हजार कम्बल लपेटे होनेपरभी मेमसाहव मेरी खुली टागें देखकर मुझे हिन्दुस्तानी गँवार अथवा इसकी चालमें कौवा कहेंगी। वस इस सोच विचारसे वावूसाहव शरीरको चारोंओरसे ढांके पत्थरकी मूर्तिकी तरह अचल होकर वैठे रहे ।

अव सूर्योदयका समय ज्यों२पास आनेलगा जाडेने जोरें प्रकडा । जाडेके मारे मेमसाहवके दान वोल्ने लगे । साहवने अपना सामान खोलकर समाला तो उसमें कम्वल नहीं। उन्होंने एक वार देखा दो वार देखा तीन वार देखा परतु तब अपने सामानमें कुछ ओढनेको न मिला तव साहवने लाचार होकर वावूसाहवसे वडी नम्रताके साथ कहाः—

"आप देखटा है कि मेमसाहव सर्डीसे घव्रडा गयाहै। क्या आप अपना कम्वल डेकर मिहर्वानी कर सकटा है ?"

सुनकर वनमाली वावू बडे असमजसमें पडे । अव यदि कम्वल देनेसे नाही करते हैं तो आपको हिन्दुस्तानी गँवार वनना पडता है और जो देतेहैं तो नगेपनकी फजीहती होती है । साहवने एक वार कहा, दोवार कहा, परतु वनमाली वावूसे इस वातका कुछ उत्तर देते न वना । वह वसी तरह पत्थरकी मूर्ति होकर अचल वैठे रहे । लज्जाके मारे उनका शरीर उससमय ऐसा होगया कि कही काटो तो खूनका नाम नहीं । यदि लज्जासे वनमाली वावूको प्राण प्यारे न होते तो आप उसीसमय गाडीमेंसे कूदकर प्राण देडालते । जब दश पद्रह मिनटतक वाबूकी ओरसे उत्तर न मिला तब मेमसाहवने अपने पतिसे कहा—

प्यारे,तुमने इस जगलीसे कम्वल मागकर नाहक अपना जवान खोया हिंदूस्टानी गँवार ऐसा वाटमें नहीं समझटा । ये टहजीवको क्या जाने ।

लेकिन सर्दीसे मेरा डम घुटा जाटाहै। मै अगर ओढनेके वास्टे कुछ नहीं पाऊगी टो डिन निकलटे निकलटे मेरा डम निकल जायगा।'

वस इतना सुनतेही साहवको जोश आगया। उन्होने समझा कि जव यह गँवार मागंसे नहीं देताहै तो किसीतरह इससे कवल छीनकर मेम साहवके प्राण वचाना चाहिये। चमारकी देवीकी जूतोंसे पूजा होतीहै। ऐसे जगली लोगोंमें सीधी अगुलियोंसे घी नहीं निकलता है। वहुत होगा तो यह नालिश करेगा परतु नालिशसे होगाही क्या? उलटा इसपर कुछ अभिशाप लगाकर इसे फँसा देंगे। यह सोचकर साहव अपनी जगहसे उठे और उन्होने वनमाली वावूके पास जाकर कवल पकडा उनके पास पागल वननेके सिवाय अव छुटकारेका कोई इलाज न रहा। वस इसलिये वावूसाहव पागलोंकासा मुँह वनाकर वड-वडातेर—"हूहूहूहू" कर उटे। इसपरभी जव साहव डरे नही तव वावूजी-ने उनको मारनके लिये सोंठा उठाया। उनके हाथमें सोंटा देखतेही मेम-साहव घवडाकर अपना दुःख भूल गई। उन्होंने पतिको मारसे वचानेके लिये साहवका हाथ पकडकर खेंचा और अपने पास विठला लिया। अव दम्पतीको निश्चय होगया कि यह पागलहै क्योंकि वे अच्छीतरह जानते थे कि जिनके शिरमे थोडीसीभी वुद्धि है वे देशीगीदड कभी अग-रेज सिंहोंका सामना करनेके लिये लकडी नही उठा सकते हैं और इस-पर तुर्रा यह कि वनमाली वावू सूरतसे पढेलिखे जान पडते थे। फिर पढे-लिखे मिट्टीके पुतले देशियोंका इतना साहस कहा? इस तरह जव दोनोंको निश्चय होगया तव मेमसाहव वहुत घवडाई। उनका कलेजा डरके मारे काँपने लगा और भारी जाडा पडनेपरभी उनके मुखपरसे पसीना टपक पडा। मेमसाहवकी घवडाहट देखकर साहवभी घवडाये और उन्होंने सम झा कि इस घवडाहटसे कही मेमसाहवको मूर्च्छा न आजाय इसलिये उ-न्होंने अपनी जेवमेंसे पिस्तोल निकालकर वनावटी पागलकी ओर तानी और जवतक स्टेशन न आगया ऐसेही वैठेरहे। वावूसाहव अपनी सारी चौकडी भूल गये। जव साहवको इनकी चालढालसे निश्चय होगया,

यह पागल है तब अपनी पतलूनका सच्चा किस्सा कहनेकाभी बनमाली बाबूके लिये समय न रहा।

इस तरह ज्यों त्यों करके जब ये लोग कर्मपुर स्टेशनपर पहुँचे तब साहबने पुलिसको बुलाया। एक जमादार और चार पाच कान्स्टेव्लोंके आतेही साहबने बाबूके पागलपनकी कथा सुनाई। कथा सुनतेही किसीने लाठी उठाई, किसीने बंदूक तानी और किसीने डंडा लेकर बाबूको जब घेर लिया तब साहब अपनी मेमको लेकर दूसरी गाडीमें जा बैठे। कुछ स्टेशनके आदमी और कुछ यात्री मिलाकर पचास साठ आदमियोंकी भीड इकट्ठी होगई। कोई कहने लगा-"लूलूहै लूलू!" किसीने कहा-"हां हा!! पागल है। हमने उस दिन इसे कपडे फाडते देखा था।"-कोई बोलाः-"बेशक पागल है। तबही तो बैठा २ बडबडा रहाहै। देखो सँभले रहो नहीं तो अभी किसी न किसीको मार बैठेगा।"-भीडमेंसे कोई बाबूपर कंकड फेंकता था, कोई गालियां देता था और कोई दहने हाथकी बिचली (मध्यमा) अंगुली हिला २ कर बाबूको चिढा-रहा था। स्टेशनभरमें हँसी ठट्ठेके मारे कहकहा मच रहाथा। किसीको इस दिल्लगीमें यह सुधि नहीं थी कि, गाडी जानेका समय निकलगया है और न किसीको गाडीमें घुसकर बाबूको निकाल लानेका साहस होता था। अंतमें जब इंजिन ड्राइवरने सीटी दी सबके कान खडे होगये। दो कान्स्टेव्लोंने कानतकके लंबे लट्ठ तानकर बाबूकी दोनो कलाइया पकडीं और इसतरह उन्हे खेंचकर बाहर निकाला। इन दोनोंकी शक्तिका सामना करनेके लिये बाबूनेभी जोर दिया। इस जोराजोरीमें बाबूका कम्बल गिरगया और आप ऐसे नंगे होगये जैसे माताकी गोदीमें बालक नंगा रहता है। अब उनको पूरा पागल समझकर दोनों उनके हाथ और दोनों पैर पकडे और इसतरह नंगे बाबूको लटकाकर चार आदमी स्टेशन मास्टरके कमरे के बाहर ले गये। बाबूने छूटनेके लिये बहुतेरी टांग पट-कार्गी, बहुतेरा पकडनेवालाके हाथोंको काटा, बहुतेरा जोर लगाया और बहुतेरी उछल कूदकी परतु किसीने उनको न छोडा। इस तरह बरते

कराते जब गाडी निकल गई तब स्टेशनमास्टरको अपने कामकाजसे छुट्टी मिली । मास्टर बाबू अपने दफ्तरसे बाहर आकर ज्योंही देखतेहैं तो वनमाली बाबूकी यह दशा ! स्टेशनमास्टर उन्हें पहचानते थे । इन दोनोंका स्कूलमें कुछदिन साथ रहा था । उन्हें देखतेही स्टेशनमास्टर भौंचकसे रहगये । उन्होंने चकित होकर कहाः—

" हैं ! हैं !! वनमाली बाबू आप कहा ? आपकी ऐसी दशा कैसे होगई ? "

आदमी को जितनी लज्जा अनजान लोगोंके सामने नही होती है उतना वह जान पहचानवालोंके सामने शर्माताहै।वनमाली बाबू अबतक अपने छुटकारेका उपाय सोचनेहीमें चौकडी भूले हुए थे परन्तु स्टेशनमास्टरको देखनेही उनपर लज्जाके मारे सौघडे पानी गिरगया । उन्होंने शर्माकर आखे नीची करलीं । उन्होंने थोडी देरतक इस प्रश्नका कुछ उत्तर न दिया और अतमे अपनी शक्ति बटोरकर वह बोलेः—

"भाई पाच मिनट मुझे इस कमरेमें अकेले छोडकर पतलून पहरलेने दो फिर मै अपना सारा दुखडा तुम्हारे सामने रोऊगा । "

लोगोंने बहुतेरा कहा कि यह पागल तारका यत्र तोड डालेगा । दावात उलटकर किताबें बिगाड डालैगा । दफ्तरमें पेशाब करके गन्दा कर देगा परन्तु स्टेशनमास्टरने उनकी बातोंपर कुछ ध्यान न देकर वनमाली बाबूके हाथ पैर छुडवाये । बाबूने अब भीतर जाकर पतलून पहनी और इसतरह अपनी निर्लज्जताको झाडझूडकर पीछे जेंटलमैन बनगये । जब इस तरह आप तैयार हुए तब कांताप्रसाद स्टेशनमास्टर उन्हें अपने घर लेगये । वहा उन्होंने खापीकर आराम किया । और जिस समय दोनों फुरसतसे बैठे उन्होंने अपनी सारी रामकहानी सुनाई । बाबू कांताप्रसाद इनकी कहानी सुनते समय कईबार मनहीमन मुसकुराये परन्तु मित्रका चित्त दुखानेके लिये उन्होंने अपनी हँसीको होठों और आखोंपर न आने दिया ।

इस तरह कुछ समयतक वहां टिककर वनमाली बाबू दूसरी ट्रेनसे काशीको विदा हुए । वहासे पांच सात दिनके बाद अपने घरको लौट

गये और फिर वही अपने पुराने ढगसे रहने लगे । इधर स्टेशनमास्टरने बहुतेरा समझाया बुझाया परतु उनकी बात सुनी अनसुनी करके उनके नायबने यह खबर एक समाचारपत्रमें *दे दी । एकसे दूसरेने,दूसरेसे तीसरेने इसकी नकलकी और इस प्रकारसे वनमाली बाबूकी खूबही फजीहती हुई । सुखदेवीकोभी अपनी सहेली तारादेवीके द्वारा जब यह बात मालूम हुई तब वह बहुत उदास हुई । उसने इसी दुःखसे एक दिन भोजन न किया परतु कभी पतिसे इस बातकी चर्चा न की ।

प्रकरण ४.

सुखदेवीका कपोतव्रत ।

सुखदेवीका सच्चा "कपोतव्रत"था पतिकी ओरसे हजार कष्ट हजार अत्याचार सहनेपरभी उसने वनमाली बाबूके सामने प्रकट न होने दिया कि मै आपके अत्याचारोंको आपके वर्तावोंको अत्याचार अन्याय मानती हूं ।

" है इत लाल कपोतव्रत, कठिन नेहकी चाल ।
मुखसों आह न भाखिहै, निज सुख करो हलाल " ॥

किसी कविके इस पद्यका सुखदेवी मूर्तिमान् उदाहरण थी ।उसने पतिसे अनादर सहा,झिडकियां सहीं,गालियां सहीं और कभी२ मारभी सही परतु कभी स्वप्नमें भी ऐसा विचार न किया कि पति बुरेहैं । उसके लिये वनमालीबाबू परमेश्वर थे । कर्मके फेरसे एक दृढ मनुष्य जिस तरह ईश्वरकी आज्ञाको सहन करता है उसी तरह सुखदेवी वनमालीबाबूके वर्तावको सहती थी । पतिकी ओरसे ज्यों २ रुखाई बढती जाती थी, ज्यों २ अनादर बढता जाता था त्योंही त्यों सुखदेवी नरम पडती जातीथी । मुलायम मोमको जैसे आदमी दबाना चाहे वैसेही दब जाताहै उसी तरह वनमाली बाबू ज्यों २ उसे दबाते थे त्योंही त्यों सुखदेवी दबती थी । इसकी

* "सरदास बाबूकी पतन्नल" के शीर्षकसे इसतरहको एक किस्सा दस बारह वर्ष पहले "विहारबंधु" में निकला था । वहपत्र मेरे पास अब नहीं परतु इसप्रकरणमें उसीकी छायाहै ।

मात्रा यहांतक वढगई कि वनमाली वावूने मौजमें पडकर घर आना कम करदिया।सरकारी कामोसे वह जब छुट्टी पाते सीधे दफ्तरसे होटेलको चले जाते,वहांसे और दफ्तर दफ्तरसे होटेल चारपाच दिनतक घरका मुखतक न देखते और जब कभी आये तो घटे आध घटेतक घरपर ठहर कर "वह गये ! वह गये !"आप खाते होटेलमें रहते होटेलमें और सोते होटेलमें । जब कभी घर आये तो केवल लोगदिखावेके लिये शर्माशर्मीसे और सोभी कभी २ और वहुत थोडीसी देरके लिये।सुखदेवी अवश्य ही घरसे खाना वनाकर पतिके लिये होटेलको भेजती परन्तु वहभी याती वैसाही लौटा दिया जाता अथवा उसमें से दो चार ग्रास वडी आनाकानी और नखरेके वाद खाये जाते। विचारी सुखदेवी अब लाचारथी । पतिके विना भूखी रहकर सोरहनेसे उसकी शरीरयात्रा नहीं चल सकती थी । इतना दुःख पाकर जीनेकी भी उसकी इच्छा न थी परन्तु भगवान्‌ने इस घोर विपत्तिमें भी कुछ (थोडासा) सुख देदिया था। वह उसीके लिये वह शरीरको भाडा देकर जीती थी। वह होटेलमें नौकर भेजकर जब रातके ग्यारह वजेतक खवर पालेती कि वावूजी खाने पीनेसे निश्चित होकर सोरहे है तव थोडा वहुत खाती और खाकर पड रहती ।

यद्यपि सुखदेवी पतिकी कमाईकी एकपाईभी कभी व्यर्थ नहीं खर्च होने देती थी। वह वहुत किफायतसे चलती, अपने लडकेके सारे कपडे और पतिके लिये कुरते कमीज आदि कपडे स्वय सीलिया करती-थी और घरका कामभी प्राय' आपही करती थीं परतु जवसे वावूजीने अपने पिताके श्राद्धमें सुखदेवीको ब्राह्मणभोजन कराते हुए देखा पतिको निश्चय होगया था कि सुखदेवी ऐसे वाहियात कामोंमें रुपया वहुत उडाया करती है। वावूजीने इस वातसे चिढकर सुखदेवीको खचदेना कम किया, कम करते करते विल्कुल देना वद किया। घरमें जो कुछ पहलेसे रक्खा था उसके सदूककी ताली वावूसाहवने अपने पास लेली । अवश्यही सुख-देवीको पिताके यहांसे जो मिलाथा उसकीभी सख्या कुछ कम न थी। यदि पूरे लाख नहीं तो पौने लाख अवश्य थे परतु जितने थे वे सनही

पहलेहीसे सुखदेवीकी प्रेरणासे पतिके नामसे बैंकमें जमा करादिये गये इसलिये उनमेंसेभी उसे एक छदामतक नही मिल सकती थी।

यदि यह बात सुखदेवीके मातापिताको मालूम होती तो वे अवश्यही उसे हजार दो हजारका सहारा देते परंतु सुखदेवी उस जैसी स्त्रीके लिये पतिके दोष प्रकट होनेमें मरनेसेभी बढकर कष्ट होता था। यदि माता पिताको किसी तरह संदेह हुआ तो उसने वैसेही टाल दिया, यदि वे कुछ देनेलगे तो उसने इस निमित्त उनसे कभी एकपाई न ली और इसतरह जैसे बना तैसे पतिके दोषोंको छिपाया। भला वह खर्चकी बात अपने माता पितासे छिपा सकतीथी, पतिके बुरे वर्तावकी खबर माता पिताके सामने प्रकट होनेसे रोक सकती थी परंतु बाबूजीका दिनरात होटेलमें रहना, वहांसे आठ २ दिनतक घर न आना उससे क्योंकर छिप सकताहै यदि संपाती और जटायूके बडे २ पक्षोंसे सूर्य छिप सका हो तो सुख-देवीभी इस बातको छिपाये रख सकती। अंतमें सुखदेवीके द्वारा नहीं, उसके नौकर चाकरोंसे नहीं परंतु बाबूजीके एक और साथीके मुखसे उनका भेद सुखदेवीके माता पिताके सामने अनानास खुल गया। सुन कर दोनों बहुत पछताये, बहुत रोये और दोनोंहीने मिलकर सुखदेवीके सामने इस बातकी चर्चा छेडी। उसने पहले स्पष्ट नाहीं करदी परंतु पिताने इस बातका जब प्रमाण दिया तब उसने लज्जासे शिर नीचा करलिया परंतु पतिके विरुद्ध भूलकरभी एक शब्द न कहा।उसकी माताने कहा कि.—

"जो यह नाहीं करती है तो करने दो परंतु तुम एकदिन बाबूजीसे मिलकर समझावो यह बात अच्छी नहींहै। और जो वह न माने तो लड-कीको अपने घर ले चलो पिताने इस बातको पसंद किया परंतु सुखदेवी सुनकर बडी उदास हुई। उसने दोनोंसे कहा कि.—

"यदि तुम एक बोलभी इस विषयमें अपने मुखसे निकालोगे तो तुम्हें मेरे शिरकी सौगंद है। मुझे मारकर खावोगे। मुझे फिर मरी समझना।

इसके सौगंद दिलानेसे माता पिता कुछदिनके लिये रुक गये। इन्होंने इच्छा उत्कट इच्छा होनेपरभी कुछ न कहा परंतु जो अपनी संतानका

दुःख देखकरभी पत्थरका कलेजा किये बैठे रहें वे मातापिताही क्या ? उनसे कहे बिना न रहा गया। उसके पिताने दिल कडा करके कहा, सुखदेवीके शपथ याद करते हुए कलेजा थामकर कहा, दफ्तरमें, अकेले मिलकर कहा, होटेलमें दश आदमियोके सामने कहा परतु फल कुछ न हुआ । वनमालीबाबू अवश्यही उत्तर देनेमे असमर्थ थे। उनके पास उत्तरके लिये शब्दही न थे। वह ससुरकी बात सुनी अनसुनी करके चुप होगये और इस लिये उन्हें लाचारीसे घर लौटना पडा। उन्होने बहुतेरा चाहा कि सुखदेवीको अपने घर लेजायँ परतु वह रचसे मच न हुई। इसतरह पिताकी आज्ञा न मानने ा अवश्यही दुःख हुआ परतु वह पतिकी निन्दा होनेके पापको पिताका आज्ञासे कही बढकर समझलीथी। इस कारण अपने सुखको लातोंसे रोदकर पिताकी आज्ञासे उनके यहा न गई। यहा जानेसे अवश्यही यह अनेक झझटोसे छूट सकती थी परतु अपने सुखके लिये सुखदेवीको पतिकी निन्दा करानेमें यह कहलाना इष्ट नहीं था कि अपने आदमीके दु'खसे घवडाकर पीहरम पडी २ सुखदेवी मावापके टुकडोंसे पेट भर रहीहै इस लिये वह न गई और न उसने ऐसे समयमें उनसे धनसवधी सहायता ली। जब पतिसे खर्च मिलना बद होगया तब उसने अपना जेवर वेचकर घरका खर्च चलाया और इस तरहसे चलाया कि किसीको मालूम न होने दिया।घरखर्चके लिये वह अपना जेवर अवश्य वेचली थी परंतु पतिसे पूछे विना ऐसा काम करनेमेंभी सुखदेवीको दुःख होता था। इस कारण जब उसे आवश्यकता पडती वह पतिके चित्रसे हाथ जोडकर प्रार्थना करनेके बाद जेवर वेचा करती थी। जब २ पति घर न आते तब २ सुखदेवी उस चित्रको भोग लगाकरही भोजन करती और फिरते डोलते, खाते पीते जब देखो तब पतिके चित्रके दर्शन किया करती थी।

सुखदेवीकी माताने एकदिन आकर वहुत आग्रहसे कहा, उसकी सहेली तारादेवीने बडे प्रेमके साथ उससे कहा कि– तेरा दु.ख बँटानेको हम यहा कुछ दिनके लिये आ रहे जिससे तेरे दिन सुखसे कट जायँ । परतु उसने

इस बातकोभी स्वीकार न किया। उसने माताको अनेक तरहके बहाने बताकर टाल दिया क्योंकि पतिकी बात उसके सामने करनेसे वह लजाती थी परंतु उसने अपनी सहेलीसे अकेली पाकर कहाः–

"बहन! तेरा कहना सत्यहै। मैभी जानती हू कि तू मेरी जन्मकी साथिन है। हम दोनों वर्षोंतक साथ खेलीहै, साथ पढीहै और साथ रही हैं। तू मेरे और मै तेरे दुःख दर्दको जानती हू। अपने मित्रसे, घरवालोंसे कहने सुननेमे दुःख कुछ हलका होताहै परंतु मै तुझे यहा रखनेका कष्टदेना नही चाहती हू।"

"सुखदेवी क्या तू बावली होगई है। भला तेरा दुःख बटानेमे मुझे दुःख हुआ तो मै सहेलीही काहेकी?"

"नहीं बहन मेरा मतलब यह नहीहै मै इस बातको जानतीहू कि विपत्ति पडनेपर जो काम आवे वही सच्चा मित्रहै परंतु तुझे अपने पास रखते हुए मै एकही कारणसे हिचकती हूं। कारण यहहै कि अभीतक तू दूसरे चौथे दिन मेरे पास आतीहै, यदि तुझे अवकाश हुआ तो नित्य आतीहै और इसतरह घंटे दो घंटे ठहरकर चली जातीहै। इस अवसरमे थोडीदेर तुझसे पतिके विषयकी बात करनेका अवसर मिलता है। फिर तू यदि दिनरात रही तो दिनभर इसी बातकी चर्चा रहेगी। तेरे मुखसे उनके दोष सुननेका अधिक समय मिलेगा और उनके दोष–रामराम! मै अपने स्वामीके साथ दोष लगातीहू (अपना कान पकडकर) उनकी चर्चा सुनते सुनते मेरा जी कहीं उनकी भक्ति कम करडाले तो बडा अनर्थ हो जाय। मै दीन दुनियाकी न रहू। भगवानसे मुझे अभीतक सहायताकी आशाहै वह जाती रहेगी। मै उसके दरबारमे दंड पाऊंगी। भला तही बतला, फिर मै ऐसा काम क्यों करू?"

"अच्छा मै स्वीकार करती हूं कि मै उनकी निन्दामे तेरे आगे एक बोलभी न करूगी। पगली, क्या मै ऐसी बावली हू जो उनकी निन्दा करके तेरा जी बिगाडूं, तुझे दुःखी करू? मै तेरे पास केवल इसीलिये

रहना चाहती हू कि मेरी वातचीतसे, हँसी दिल्लगीसे तेरा जी वहलै और तू दिनरात इसी चिन्तामें न पडी रहै।"

"हां! हा!! तू उनकी निन्दा न करैगी। मै जानतीहू तू उनकी निन्दा न करैगी परतु मुझे दुखिया वतलाकर मेरी प्रशसा तो करैगी। वस यही प्रशसा मेरे लिये विषका प्यालाहै। इसीसे मुझे घमड होगा। और इसतरह मै विगडूगी। मेरी यह तपस्या है। भगवान् मुझे तपाकर मेरी परीक्षा लेरहा है। इस तपस्यामें विघ्न होगा। रामराम! मैने तेरी इतनीसी वातोंमें तपस्या वताकर घमड करडाला। भगवान् मुझे क्षमाकर हे नाथ! मुझसे अपराध हुआ!"

"हा! अव असली वात मेरे ध्यानमें आई। तू मेरे खर्चसे वचनेके लिये मुझे अपने पास रखनेमें हिचकती है। परतु मै अपना वोझा तेरे ऊपर न डालूगी। मै अपना खर्च आपही करलूगी। तू मुझे रहने दे॥

"नही! नही!! कदापि नही! स्वप्नमेंभी नही। क्या मुझे तेरे खर्चका लोभहै? प्यारी वहन, (गले लगाकर) तेरे लिये खर्चही क्या हो सकताहै जो मुझे लोभ हो? यदि तुझ जैसी प्यारी सखीके लिये लोभ करतीहू तो मेरे गलेकी सौगद।"

"अच्छा वहन तू मेरी वात नहीं मानतीहै तो तेरी इच्छा। मेरे कहनेका काम था सो मैंने कहलिया। तू न मानैगी तो मेरा जी दुखैगा अवश्य।"

"हां! मैं जानतीहू कि तेरा जी दुखैगा। परतु मै इस वातके लिये क्षमा मागती हू।"

इस तरहकी वातचीतके वाद तारादेवी वहासे अपने घर गई। चलती वार इतना और कहगई कि-"तू मेरे यहा रहनेसे प्रसन्न नहींहै तो न सही परतु अवसे मै नित्य आया करूगी। तू मुझे धक्के देकर निकालेगी तवभी आऊगी" "नही वहन, मै धक्के देकर निकालनेवाली कौन? तेरा घरहै। तू अवश्य आइयो। तेरे आनेसे मुझे वडा सहारा रहताहै।" सुखदेवीने इस तरहका उत्तर दिया और विछुडते समय दोनोजनी आखोंमे आंसू भरकर रोदी।

प्रकरण ५.

प्रेमका साथ।

राजाको आज्ञाभग करनेवालेपर जितना क्रोध होताहै, ब्राह्मणको अनादर करनेवालेपर जितना कोप होताहै, उतनाही दुःख स्त्रीको पतिसे अलग सोनेपर होता है । राजा अपनी आज्ञाभग होनेका, ब्राह्मण अपने अनादरका और स्त्री अलग सोनेका दुःख कदाचित् मारडालनसेभी बढकर समझतीहैं । इस तरहके दु'ख देकर मारनेसे शस्त्र लेकर मार डालना अच्छा । इसी कारण कवियोंने इसे विना शस्त्रके मारना कहाहै । विचारी सुखदेवी पास न सोनेसेही दु'खी न थी उसे आठ २ दिनतक पतिके दर्शनभी न होते थे । वह खर्च करनेके लिये कौडी २ को तरसती थी और इसतरह दिनरात चिन्ताही चिन्ताम मरी जाती थी । वह मरे चाहे जिये परतु समय पाकर उसके दुःखकी मात्रा औरभी बढी। इतने दिनतक वनमाली बाबू घरमें न आनेपरभी, होटलमें खाने और सोनेपरभी और किसी तरहके कुसगमें नहीं पडेथे । अब वहाँ सुखदेवी की एक सौत पैदा होगई । होटेलकी एक नौकरनीसे बाबूसाहबकी आख लग गई । वनमालीबाबुकी दृष्टिमें जिन बातोंके लिये सुखदेवी दु'खित थी वे साथ सबही गुण इसमें विद्यमान थे । बस सरकारी नौकरी करनेके सिवाय सारासमय, साराधन, और अपना साराही सर्वस्व वनमाली बाबूने इसकी नजर करदिया । उसीके साथ खाना, उसीके साथ पीना, उसीके साथ रहना, उसीके साथ सोना और उसीके साथ सब काम करनेमें बाबूने साहबने अपने जीवनको सफल समझा।उसकी बदौलत बाबूसाहबकाघर छूटा, पढना लिखना छूटा, पढे लिखे मित्रोका साथ छूटा सभा सोसाइटियोंमें जाना छूटा और सच पूछो तो सबकुछ छूटगया । पहले बाबूसाहब आठ दश दिनमें किसी किताबके लिये घर आतेभी थे परतु अब महीने महीने की नागा होने लगी । विचारी सुखदेवीको इस बातके जाननेसे जैसा दुःख हुआ उसे भेरी लेखिनी नहीं बतला सक्तीहै, पुरुषका हृदय नहीं जानताहै ।

जानताहै एक परमेश्वर और दूसरा उस स्त्रीका हृदय जिसका पति घरके मोहनभोग छोडकर पराई जूठी पत्तलें चाटताहै।

इस स्त्रीकी सगतमें पडजानेसे सुखदेवीको तो दुःखहुआही परतु वाबूसाहवको वैसा सुख हुआ जैसा कुत्ता हड्डी चवानेमें अपनेही मुँहका लहू चाटकर आनद मानताहै। उस नई प्यारीके साथ शराव पीनेसे वावूसाहवके मद्यकी मात्रा वढकर उनके अधिक २ विलासमें पडजानेसे उनका शरीर सूखने लगा।उनकी आंखें वैठ गई,उनके गुलावी गोरे गाल पिचककर चेहरा काला पड गया, उनकी टागे कुछ मद्य अधिक पीनेसे और कुछ शक्ति घट जानेसे उन्हें सुखसे चलनेमें जवाव देने लगी। जहा वैंकके हिसावमें वनमाली वावूका हजारों रुपया लेना रहता था वहा आने और पाइया तककी नौवत आ पहुची। शिक्षित वावूका पहले जो खर्च किताबें खरीदनेमें, अखवार मगवानेमें होता था वही अव उस स्त्रीकी फर्माइशोंमें, इसके नाज नखरोंम होने लगा। और आख लडजानेपरभी यह सीधे २ ही वनमाली वावूके हाथ न आगई। इसे मिलानेमें, इसतक अपनी इच्छा पहुँचानेमे जिन स्त्रियोंने कुटनीका, जिन पुरुषोंने दलालीका काम किया उन्हें भी वावूसाहवको निहाल करना पडा।

इस स्त्रीके साथसे वनमाली वावूको चाहे हजार दुःख हुआहो परतु वह अपनेको अव सुखी मानते थे पूरा सुखी मानते थे और इसतरह खूवही आनदमें खूवही सुखमे पडकर मजे लूटते थे। जव पति इस प्रकारके मजे लूटनेमें अपना जीवन सफल किया करते थे तव सुखदेवी दुःखसागरमें डूवी जाती थी। उसकी कोई खवर लेनेवाला न था, और न वह अपनी तपस्या पूरी करनेके लिये किसीके आगे अपना दुखडा रोकर जी हलका करनेके व्याजसे अपना सताप वढाना चाहती थी। उसके पास खर्चकी तगी देखकर रामचेरवा कहार और मिश्रानीभी वैठ रहीथी। आठ सात महीनेका वेतन चढजानेपर वीसवार मागनेसेभी जव मालिकने उन्हें एक पाई न दी तव सुखदेवीको अवश्यही उन्हें अपना जेवर वेचकर चुकाना पडा परतु ऐसी दशामें पेट काटकर नौकर रखनेमभी

उसे लाभक्या ? दोनो नौकर चाकरीसे अलग होगये, और अब उसे और कामतो क्या पीसने, पोनेकीभी वेगार अपने ऊपर लेनी पडी । यदि अपने पेटके लियही यह काम करना पडे तो सुखदेवीको संतोष होसकता है परन्तु अब उसे ज्वार बाजरा खरीदनेके लियेभी मजदूरी लेकर सीने पिरोनेका काम करना पडता था ।

अपना जेवर,अपने वर्तन,अपने कपडे वेचदेनेपरभी अभीतक सुखदेवीके पास मकान अपना था।जिस मकानमे बाबूसाहब नहीं२सुखदेवी रहतीथी वह उसके पिताकी ओरसे मिलाया।सुखदेवी चाहती तो उसे वेचकर अथवा रहन रखकर अपना वर्ष दो वर्षतक खर्च चला सकती थी परन्तु एक तो इस काममें पतिकी बदनामी दूसरे उनकी आज्ञा विना यह काम करना उचित नहीं और तीसरे यदि वह इस तरह मकान छोड दे तो उसे सिर मारनेको जगह चाहिये । बस इस विचारसे सुखदेवी उसीमें पडी रही। मकान न छोडनेमें उसे एक और भी विचार था । वह इन सब बातोंसे प्रबल था।वह यही था कि सुखदेवी जानती थी कि मै जबतक इस मकानमें पडी हूँ कभी २ स्वामीके दर्शन होजातेहै । यदि मै इसे छोडकर किसी चारटका महीनाके झोंपडेमें जा पडूगी तो भूलकर भी पति कभी मेरी ओर फटकेंगे तक नहीं ।

इतना दु ख होनेपर भी—दुःखके बडे २ पहाडोंका बोझा अपने फूलसे कलेजेपर झेलने परभी सुखदेवी अपनेको दुखिया नहीं कहती थी।यदि कोई उसे दुखिया कहदेता तो उससे लडने लगती थी क्योंकि उसे निश्चय था कि दुखिया वही स्त्री कहलाती है जिसका पति इस संसारमें न रहाहो जब कभी उसके मनमें दु खके विचार उठते वह भगवानपर भरोसा करके संतोष करती । वह अपने मनसे कहती'—

" भगवान् मेरा अहिवात अमर रक्खे मुझे इसीमें सब सुख है । ईश्वरने मुझे विद्वान, बुद्धिमान्,रूपवान्, बलवान् पति दियाहै फिर मै दुखिया क्यों बनूं ? हे भगवान्!उनका कभी मत नहातेभी बाल बांका करियो ।जब मुझपर रामजी दया करेगा तब वह मेरी अवश्यही खबर लेंगे।वह समझदार है किसी

दिन अवश्य सम्हलैगे। हे दीनदयालु! हेदयासागर! अब मेरी भी खबर ल मुझपर नही इस विचारे बालकपर दयाकर।"

इतना कष्ट उठाने परभी सुखदेवीको अपने लिये विशेष दुःख न था क्योंकि उसे भगवान्का पूरा भरोसा था परतु वह अपने नन्हेका दुःख देखकर अवश्य दुःखित होती थी। इस दु'खसे कभी २ उसके मुखसे निकल जाता था कि:-

" मेरा तो क्या मैं तो सहनेहीके लिये पैदा हुई हू परतु मेरा नन्हा-मेरा फूलसा नन्हा-पिता होते हुए भी पिताके दर्शन नही करने पाता। यदि कहीं परदेश गये होते तो मैं दिन गिन २ कर सतोष करती परन्तु हाय! शहरमें रहने परभी इस फूलसे बालकके कोमल गालोका चुवन कर सुखी होने नही आते। यह विचारा खाने पहनने मे भी तरसता है। एक धन-वान्के दौहित्र और एक विद्वान् धनीका लडका होकर भी इसे यह दु'ख? हाय! कहीं ऐसा न हो कि उनकी ऐसी बेपर्वाहीसे मेरा नन्हा अपढ रह जाय। "

जिस समम सुखदेवी इस तरहके विचारमें पडकर रोती, रोरोकर आंसू बहाती उसका नन्हासा लडका कभी घुटनोंके बल चलता, कभी खडा होता और कभी गिरता पडता उसके पास आकर उसके आचल पकड लेता उसकी आखें पोंछता और दो चार तोतली बातोंसे उसे हँसा देता था। लडकेके ऐसे चरित्र देखकर सुखदेवी अपने सारे दु'ख भूल जाती, उसे गोदीमें उठाकर खूब प्यार करती और उसके कपडोंकी धूल झाडनेमें तीनलोकके सुखको न्योछावर करडालती थी। ज्यों २ लडका बडा होने लगा त्योंहीत्यों सुखदेवीकी आशामे उसके सुखके स्वप्न बढने लगे और इस तरह उसे इस अथाह दु'खसागरमेंसे बचनेके लिये नन्हा कमलासहाय नावका काम करने लगा।

प्रकरण ६.

नई जोडीका आनंद।

इतना पढनेपर पाठक यह कहेंगे कि इस पोथीका लेखक वनमाली बाबूसे कुछ शत्रुता रखताहै तवही तो उसने उनकी नई प्यारीके संजोगमें उन्हे परिणाममें जो कष्ट हुआ वह दिखला दिया और उनके सुखका नामतक न लिया। नहीं भाई, मेरी उनसे रचक शत्रुता नहींहै। मैं सुख देवीकी सहायता कर उन्हें ठीक राहपर लाना चाहता हूं। इसपर वह यदि मुझसे रुठ जाँय तो उनकी इच्छा परंतु मैं उनका सच्चा शुभचिंतक हूं। इसीलिये उनके सुखका दिग्दर्शनकर उनकी अधिक फजीहती नहीं करना चाहता हूं परंतु जब पाठकोंका आग्रह है तव मुझे कहनाही पडेगा।

वनमालीबाबू पराई प्यारीको अपनी प्राणप्यारी बनाकर सुखसे रहते है। उन्होंने जब उसके लिये अपनी अर्धांगिनीको छोड दिया है तब वह उनके लिये हॉटेलकी नौकरी छोडदे अपने पतिको छोड दे और इस तरह मिसेज वनमाली होकर रहे तो आश्चर्यही क्याहै ? अब वही उनके मनकी, उनके घरकी, उनके शरीरकी मालकिनहै और वनमाली बाबू उसके बिनामोलके चेरे। वनमाली बाबूजो अपनी नौकरीसे पातेहैं उसे उसीको आना पाई समेत सभला देते हैं। उनके पास जो कुछहै उसपर अब उसीका अधिकार है। वनमालीबाबू जो कुछ पैसा रुपया, कपडा लत्ता, किताब सामान अपने घरमें—नहीं ? सुखदेवीके घरमें था उसे उसकी आज्ञासे उठा लायेहै। अब उन्हें महीने दोमहीनेमें भी सुखदेवीकी सूरत देखकर दुःख उठानेके लिये घरजानेका कष्ट नहीं भोगना पडताहै। अब उनके नये घरमें खाना बनानेके लिये बावर्ची नौकर है। काम काजके लिये बहुत नौकरहै और - बाबूसाहब इस तरह पूरे ठाटसे रहतेहैं। आप अपनी नई प्यारीके साथ मेजपर छूरी कांटेसे खानाखातेहैं बढियासे बढिया विलायती शराब पीते हैं और जो कुछ करते है उसमें अपनी जातिसे, अपने समाजसे अपने कुलसे बिलकुल

नही डरते। जबतक आपका इस नई युवतीसे साथ न हुआ वनमाली बाबूको इन बातोंसे कुछ कुछ सकोचभी होता था परतु इसने अब बाबूसाहबको बिलकुल निडर करके उनसे धन्यवाद लिया। अब आप सर्वतत्र स्वतत्र है। अब आपको किसीकी निन्दाकी कुछ पर्वाह नही है और यदि कोई आपसे इस बातके लिये कुछ कहता सुनताभी है तो आप बेधडक कहदिया करते हैं कि:-

"ऐसे वाहियात वहमोंने, लोगोंके पैरमें बेडियाँ डालकरही तो मुल्कका सत्यानाश करडाला। हम आजाद होकर औरोंको इसवास्ते तरगीब देते हैं कि जिससे पढेलिखे लोगोंको तरक्कीका मौका मिले।"

कोई २ उनके स्वतत्र मित्र उन्हें यहभी याद दिलाते है कि-"आप इसके साथ मौजतो मारते हैं परतु इसका आदमी जब विलायतसे लौटैगा तब आपपर नालिश करके आपके छक्के छुडा देगा। उससमय आपको लेनेके देने पडजायँगे।" तब आप उनसे कहा करते है कि:-
"नही जी,वह छक्के छुडानेवाला कौन? उस मूजीको हमारी प्यारी पहलेही छोडचुकी है और हमने इसके साथ मदरास जाकर निकाहभी करली है।"

अब बाबूसाहबको अपनी प्यारीके साथ रहनेमें, उसके हाथमें हाथ डालकर बागकी सैर करनेमें, उसे अपनी बाई बगलमें बिठलाकर गाडीकी सवारी करनेमें बिलकुल सकोच नही होता है और सच पूछो तो उमरभरमें बाबूजीने अपना सच्चा सुख अबही समझा है। इसकी सगतिसे बाबूसाहबके फेशनमें, उनकी चालढालमें, उनकी बोलचालमें जो कुछ कसर थी निकल गईहै। अब आपका अधिक समय अगरेजी बोलनेमें जाताहै। अब आपको गँवार हिन्दुस्थानी बोलनेसे छुट्टी मिलीहै और जबकभी आपको लाचारीसे नौकर चाकरोंके साथ, आफिसके चपरासियोंके साथ देशभाषा बोलना पडताहै तब आप वैसीही हिन्दी बोलते हैं जैसी डालका टूटा हालका आया हुआ यूरोपियन बोले। अब आपको अपना देशीनाम बतलानेंमंभी सकोच होताहै। आपने अपना नाम वनमालीके बदले "फोरेस्टगार्डनर" रक्खाहै

और वडे प्रयत्न, वडे परिश्रमके वाद आपने अपना नाम सरकारी दफ्तर मेंभी वदल्वा पायाहै ।

इतना होनेपर अवश्यही यह नई जोडी सुखसे रहने लगीथी, परन्तु इसके मनका खटका अभीतक नहीं मिटा था । एक ओर जब नये साहबको मेमसाहबके पुराने पतिकी ओरसे खटका था तब दूसरी ओर मेमसाहब सुखदेवीकी ओरसे दिनरात चौकन्नी रहा करती थी । कई दिनोंतक दोनों हीके मनमें दोनों वातें चक्कर लगाती रहीं । न साहबने मेमसे कहा और न मेमने साहबसे । दोनोंही एक दूसरेसे कहनेमें हिचकतेथे क्योंकि दोनोंको भय था कि हमारा दूसरेपर अविश्वास प्रकट न हो । बहुत सोचते २ एकदिन दोनोंके विचार मनसे बाहर निकल भागे । साहबने मेमसे कहा और बहुत हिचकते २ कहा.–

"प्यारी, मै वैसे टो बहुत मजेमें रहटा हू । मुझे अबही जिंडगीका मजा आटाहै मगर बडाभारी खटका टुम्हारे खाविंडका है। कहीं ऐसा न हो कि वह विलायटसे लौटनेपर हमपर नालिश करडे । अगर ऐसा हुआ टो बडा गजब होगा।"

"नहीं! नहीं! ऐसा कभी होनेका नहीं। जब हम उसको टलाक डे चुकेहैं टब उसका क्या मुँहहै जो हमपर नालिश टोके । अब हमारा आपके साठ निकाह होचुका अब कुछ डर नहीं मगर हां, डर टुम्हारी औरटका है वह अगर नालिश करडे टो आप ढरे जाय और मुझेभी मुशकिल पडे।"

"नहीं । नहीं । प्यारी उसका डर हरगिज न करो । वह गवार हिंडस्टानी औरट है वह क्या जाने इन बाटोंको? अव्वल तो कोई सडियोंटक पर्डेकी बेडीमें कैड रहकर डेसी औरटें आजाडीको जानटीही नहीं और अगर किसीको पछांही हवा लगभी गई हो टो सुखडेवी उन औरटोंमेंसे नहीं है । वह ऐसी जंगलीहै कि खाविंडके पीछे मरनेको टैयार है ।'

"है ! ऐसाहै !! टो क्या वह कभी हमपर नालिश न करेगी ? अगर मुझे आपके पास डेखले टो क्या मुझसे नाराज न होगी ?"

"हा ! हा !! ऐसाहै ? वह मरटे मरजायगी लेकिन कभी मेरे खिलाफ एकवाट नहीं कहेगी । मैं उसे चाहे जिटना टकलीफ दूं मगर जवानसे कभी उफतक न निकालेगी । वह पिंजरेकी चिडियाहै । चिडिया शायड आजाडीका मजा न भूली हो मगर वह कभी सपनेमेंभी इन वातोंका खयाल नहीं करटी ।"

"भला जव वह ऐसीहै टव आपने उसे क्यों छोडा ?'

"मैंने उसे इसी वास्टे छोड रक्खाहै कि वह टुम्हारी टरह मेरे साठ ऐश करना नही जानटी और न चाहटी है ।"

"अगर ऐसाही है टो इस बँगलेका भाडा लगाना फिजूल है । अपने मकानपर रहकर आराम करना चाहिये ।"

" और वह ? वह कहा जायगी ? क्या उसे मकानसे निकाल दें ?"

" नहीं २ । हमारा यह मटलव नहीं । उसकी हालटपर मुझे रहम आटा है । मैं चाहटीहू कि उससे प्यार करू । वह जव ऐसीहै टव उसे पास रखनेमें शायड हमारे आराममें कुछ हरज न होगा । वहभी मकानमें एकटर्फ पडी रहैगी ।"

"खैर टुम्हारी मर्जी । मुझे टुम्हारे हुकममें कुछ उज्र नही ।"

इस तरहकी वात चीतके वाद फिर कुछ दिनतक सुखदेवीकी सुधि न लीगई । दोनोंजने उसी मजेसे, उसी आनदसे रहे जिसका वर्णन इस प्रकरणमें होचुका है । उनके आनदकी एक वात लिखनी शेप रहगई है । वह यही कि मि गार्डनरको नई दुलहिनसे चाहे वडे २ सवालोंके हल करनेमें चाहे रूखे विज्ञानकी जटिल वातोंकी खोजमें और विशेष प्रकारकी सहायता न मिलती हो क्योंकि वह पढी लिखी होनेपरभी इतनी नही पढीहै परतु इतनी सहायता अवश्य मिलती है कि साहव जिन वातोंका मसव्विदा अँगरेजीमें लिखते है उनकी वह नकल करदेती हैं, वह वडी २ किताबोंके पन्ने उलट पुलटकर उनके लिये प्रमाण ढूंढ देतीहै और उसके अक्षरतो ऐसे अच्छेहैं कि जिन्हें देख २ कर साहव वहादुर दाँतोंमें अगुली देतेहै, उनपर लट्टू होगयेहैं और वार २ उनकी प्रशसा करते हैं ।

प्रकरण ७

असीम सहनशीलता।

मिस्टर गार्डनर मेमसाहब और अपने बावर्ची, खानसामा तथा बेहरा समेत अब अपनेही मकानमे रहने लगेहै। उन्होंने भाडेके घरमें रहना छोड दियाहै। जहां पहले देवपूजा होतीथी वहां अब व्हिस्की, ब्रांडी, पोर्टवाइन और शेम्पियन रक्खा जाताहै जहां पहले रसोई बनती थी वहां अब बावर्ची खानाहै और जो कमरा किसी दिन सुखदेवीके साथ सुखभोगनेके लिये सजाया गयाथा वह अब मेमसाहबके साथ आनद लूटनेमें काम आताहै।सुख देवी अपनी आँखोंसे—हृदयकी आँखोंसे अपने जीवनसर्वस्वपतिको परयापति बनकर मेम साहबके साथ भोग विलास करते देखती है, हँसते बोलते देखती है। खाते पीते देखती है और एकही पलगपर देखती है,परतु मजाल क्या जो इस घोर वेदनाके समय इस असह्य दुःखके समय उसके मुंहसे भूलकर भी कभी "आह" निकल जाय। इतना अपमान, इतना कष्ट सहना तो क्या वरन् यदि सुखदेवीकी जगह और कोई स्त्री होती और तो क्या साहबकी प्यारी मेमसाहब भी होतीं, और इसका सौवा हिस्साभी देखलती, पतिको पराई स्त्रीसे हँसते बोलते भी देखलेती तो उस राडकी चुटिया पकडकर झाडू मारकर घरसे निकाल देती, पतिको सैंकडों गालियां सुनाती और इनमेंसे यदि कुछ भी न होसकता तो जहर खाकर मर रहती। परन्तु सुख-देवीने आज पत्थरका कलेजा करलिया है। वह सबकुछ अत्याचार सहती है और इसपर भी दुःखित होनेके बदले प्रसन्न होती है। वह अपने मनमें बार २ कहती है कि:—

"यदि सुखदेवीके नसीबमें सुख बदाही नहीं है तो खैर परन्तु यहां रहनेमें पतिके दर्शन तो होते हैं। मुझ अभागिनीके लिये इतनाही बहुत है।"

साहबबहादुर सुखदेवीकी इस चाल पर हँसते हैं मेमसाहब आश्चर्य करती है और कभी २ मेमसाहबके दयाकरके साहबको समझानेसे वह उससे

दो चार मिनटके लिये खडे २ बातभी करलेते हैं । करते अवश्यहैं परतु उन्हें इतनीसी देरमें भी घृणा होती है, मेमसाहवसे डर लगता है और वह समझ लेतेहे कि कही प्राणप्यारी इस गँवारसे वात करनेमे मुझे अधिक देरी लगाते देखकर रूठ न जाय । कही ऐसा न हो कि मैं इसकी मोम जैसी नम्रताकी ठडी आगसे पिघल जाऊ। यदि ऐसा हुवा तो मेमसाहब तुरन्त मुझे छोड बैठेगी ।जब दो वार वार साहव वहादुर मेमसाहबके अनुरोधसे सुखदेवीसे वात चीत क चुके तब उन्होंने एकदिन अपनी प्राणप्यारीसे स्पष्ट कह दिया किः—

" प्यारी, मुझसे वार २ इसके वास्टे न कहो। मुझ इसके लिये मट डवाओ। इसके जगलीपनपर मुझे नफरट आटी है। टाज्जुव है कि टुम जपनी सौटसे वाट करनेकी मुझे सलाह डेटी हो।"

"प्यारे बेशक यह नफरट करनेके लायक है । मगर जबटक यह मेरे आराममें खलल नहीं डालटी है टबटक मुझे इसपर रहम आटा है । ऐसी गँवारसे वाटचीट करनेमें मैं अपना कुछ नुकसान नही समझटी वलिक एक फायदा हे कि यह इटनी सी वाटमें खुश रहकर कभी मेरे खिलाफ न होगी ।"

" बेशक यह ठीक है मगर "

"अच्छा अब अपनी अगर मगरको रहने डो अन अगरेजीम वाट करो नहीं टो यह समझकर शायड इस वाटसे मेरी भलाईका वडला बुराईमें डे"-इसबार दोनोंकी क्या बातें हुई सो सुखदेवी न समझसकी परतु इतनेसे उसने निश्चय करलिया किः—

" जबतक मैं इनके सुखमें विघ्न न डालूगी तबतक ये मुझे न सतावेंगे । मुझे घरसे न निकालेंगे ।बस अच्छा हुआ मुझे इससे वढकर और क्या चाहिये ? मैं इनके सुखमें विघ्न डालकर करही क्या सकतीहू ? और जब पतिको उसके साथ रहनेंमे सुख है तब मैं उनकी इच्छाके विरुद्ध काम करके पाप क्यों बटोरू ? "

प्रकरण ७

असीम सहनशीलता।

मिस्टर गार्डनर मेमसाहब और अपने बावर्ची, खानसामा तथा बेहरा समेत अब अपनेही मकानमें रहने लगेहैं। उन्होंने भाडेके घरमें रहना छोड दियाहै। जहा पहले देवपूजा होतीथी वहां अब व्हिस्की, ब्रांडी, पोर्टवाइन और शेम्पियन रक्खा जाताहै जहां पहले रसोई बनती थी वहा अब बावर्ची खानहै और जो कमरा किसी दिन सुखदेवीके साथ सुखभोगनेके लिये सजाया गयाथा वह अब मेमसाहबके साथ आनद लूटनेमें काम आताहै।सुख देवी अपनी आँखासे—हृदयकी आँखासे अपने जीवनसर्वस्वपतिको परायापति बनकर मेम साहबके साथ भोग विलास करते देखती है, हँसते बोलते देखती है। खाते पीते देखती है और एकही पलगपर देखती है,परतु मजाल क्या जो इस घोर वेदनाके समय इस असह्य दु'खके समय उसके मुँहसे भूलकर भी कभी " आह " निकल जाय। इतना अपमान, इतना कष्ट सहना तो क्या वरन् यदि सुखदेवीकी जगह और कोई स्त्री होती और तो क्या साहबकी प्यारी मेमसाहब भी होती, और इसका सौवा हिस्साभी देखलेती, पतिको पराई स्त्रीसे हँसते बोलते भी देखलेती तो उस राडकी चुटिया पकडकर झाडू मारकर घरसे निकाल देती, पतिको सैकडो गालिया सुनाती और इनमसे यदि कुछ भी न होसकता तो जहर खाकर मर रहती। परन्तु सुख-देवीने आज पत्थरका कलेजा करलिया है। वह सबकुछ अत्याचार सहती है और इसपर भी दुःखित होनेके बदले प्रसन्न होती है। वह अपन मनमें बार २ कहती है कि:—

" यदि सुखदेवीके नसीबमें सुख बदाही नहीं है तो खैर परन्तु यहा रहनेमें पतिके दर्शन तो होते हैं। मुझ अभागिनीके लिये इतनाही बहुत है। "

साहबबहादुर सुखदेवीकी इस चालपर हँसते हैं मेमसाहब आश्चर्य करती हैं और कभी २ मेमसाहबके दयाकरके साहबको समझानेसे वह उससे

दो चार मिनटके लिये खडे २ बातभी करलेते हैं । करते अवश्यहैं परतु उन्हें उतनीसी देरमे भी घृणा होती है, मेमसाहबसे डर लगता है और वह समझ लेतेहैं कि कही प्राणप्यारी इस गॅवारसे बात करनेमे मुझे अधिक देरी लगाते देखकर रूठ न जाय । कही ऐसा न हो कि मैं इसकी मोम जैसी नम्रताकी ठडी आगसे पिघल जाऊ। यदि ऐसा हुवा तो मेमसाहब तुरन्त मुझे छोड बैठेगी।जब दो चार बार साहब बहादुर मेमसाहबके अनुरोधसे सुखदेवीसे बात चीत कर चुके तब उन्होंने एकदिन अपनी प्राणप्यारीसे स्पष्ट कह दिया कि:—

"प्यारी, मुझसे बार २ इसके वास्टे न कहो। मुझ इसके लिये मट डवाओ। इसके जगलीपनपर मुझे नफरट आटी है। टाज्जुब है कि टुम अपनी सौटसे बाट करनेकी मुझे सलाह डेटी हो।"

"प्यारे बेशक यह नफरट करनेके लायक है। मगर जबटक यह मेरे आराममे खलल नही डालटी है टबटक मुझे इसपर रहम आटा है । ऐसी गॅवारसे बाटचीट करनेमे मैं अपना कुछ नुकसान नही समझटी बल्कि एक फायदा है कि यह इटनी सी बाटमें खुश रहकर कभी मेरे खिलाफ न होगी।"

"बेशक यह ठीक है मगर"

"अच्छा अब अपनी अगर मगरको रहने डो अब अगरेजीमें बाट करो नहीं टो यह समझकर शायड इस बाटसे मेरी भलाईका बडला बुराईमें डे"-इसबार दोनोंकी क्या बातें हुई सो सुखदेवी न समझसकी परतु इतनेसे उसने निश्चय करलिया कि:—

"जबतक मैं इनके सुखम विघ्न न डालूगी तबतक ये मुझे न सतावगे। मुझे घरसे न निकालेंगे। बस अच्छा हुआ मुझे इससे बढकर और क्या चाहिये ? मैं इनके सुखमें विघ्न डालकर करही क्या सकतीहू ? और जब पतिको उसके साथ रहनेमें सुख है तब म उनकी इच्छाके विरुद्ध काम करके पाप क्यों बटोरू ?"

अवश्यही सुखदेवीने जैसा निश्चय किया था जन्मभर वैसाही वर्ताव किया। परतु जब उसके माता पिताको इस वातकी खबर हुई तब उन्हें वडा क्रोध आया। सुनकर वे अब क्रोध सँभाल न सके। सुखदेवीकी माताने लडकीके स्वभावकी निन्दा करके पतिको वहुतेरा समझाया, वहुतेरा रोका परतु उन्होंने उसकी एकभी वात न सुनी। वह– "अभी उस राड और रडुएका शिर फोडे डालताहू। वे मेरी ऐसी लडकीकी छातीपर उडद दलनेवाले कौन ?"–इस तरह कहतेहुए लकडी लेकर वहासे चले। सुखदेवीकी माने उनके पैर पकडकर रोका परतु वह न रुके। पैरके झटकेसे उसके हाथ छडाकर वहांसे चलदिये। चलतीवार सुखदेवीकी माको दो चार रुखी सूखी सुनाई और इसतरह जिस समय साहव मेमसाहवके पास वैठकर शराव पीनेके लिये प्यालेवाजी कर रहेथे, पीते २ हँस रहेथे, उसके गलेमें हाथ डालकर उससे शरावकी मनुहार कररहेथे उससमय पहुँचे। साहवके नौकर चाकर काम काजसे वाहर गयेथे, सुखदेवी एकान्तमें वैठकर भजन कररहीथी, और उस समय इसतरह मैदान सूना था। यदि वह साहवके पास जानेसे पहले सुखदेवीके पास जाते तो अवश्यही वह उन्हें समझा वुझाकर लौटा देती परतु वह अव अच्छीतरह जान गये कि जो कुछ अत्याचार–अन्याय होताहै वह केवल उसकी सिधाईसे, उसकी मूर्खतासे इसलिये उसके पास न गये।

वहा जाकर दोनोंकी गलवाही देखतेही सुखदेवीके पिता क्रोधसे आग होगये। क्रोधके मारे उनका कलेजा धडकने लगा, रोम खडे होआये और आखें लाल होगई। उन्होंने सोटा उठाये गर्जकर कहाः–

"क्योंरे चांडाल, इस राडका गुलाम बनकर मेरी फूलसी वेटीको सतातादै ? आज देखलूगा कि यह रांड अव इस घरमें कैसे रहतीहै ? क्या यह घर तेरे वापका है ? जिसमें भगवान्के मदिरको तैने कलवारकी दूकान वना दियाहै। ले अव सँभल ! मैं अभी तुम दोनोंका शिर फोडे डालताहू।"

ससुरकी इस बातसे साहबकोभी क्रोध आया। उन्होंने आखें निकाल कर हाथमें रूल उठाये हुए कहा और डपटकर कहाः-

"टू हमारी बिला इजाजट घरमें घुस आनेवाला कौन ? निकलजा यहांसे अभी, नहीं टो मैं अभी पुलिसको बुलवाकर तुझे गिरफ्टार करवाटा हू।"

"हां! तू मुझे पकडवायगा! तू! तेरा मुँह मुझे पकडवानेका ? मेरेही टुकडोंसे पलकर-- मेरेही धनसे अगरेजी पढकर आज मुझे पकडवाने चलाहै।अच्छा मैं जेलमें जाऊंगा परतु तुम राड रडुवोंका शिर फोडकर"

जिस समय इन दोनोंकी इस तरह सुर्खासुर्खी, गाली गलोच होरही थी सुखदेवी अलग खडीहुई दूरसे सुन २ कर पितापर क्रोध कररही थी परतु जब उसके पिताने इतना कहकर साहबपर लाटी मारी वह झट-पट आकर बीचमें खडी होगई। पिताकी लाठी पतिपर पडनेके बदले सुखदेवीके शिरपर पडी। उसकी खोपडी फट गई और तुरतही वह मूर्च्छित होकर धरतीपर गिरगई। यह काम इतना जल्दी हुआ कि मेम साहब किवाडोंकी ओटसे देखकर भौंचकसी रहगई। जिस समय सुखदेवीके पिताने साहबको मारनेके लिये लाठी उठाई वह डरके मारे भागकर पहलेही एक कोठरीमें जा छिपीथी। इसतरह एक ओरसे बनमालीबाबूकी गँवारी सुखदेवीने अपने अत्याचारी पतिके प्राणोंकी रक्षा करनेके लिये अपना शिर फुडवाडाला तब दूसरी ओर उनकी प्राणोंसेभी प्यारी मेमसाहब लाठी चमकतेही अपने प्यारेके प्राण जोखिममें डालकर अपने प्राण बचानेके लिये जा छिपी। इतना होनेपरभी यदि साहब सुखदेवीको सच्ची सुखदेवी न समझ सकें तो उसके भाग्यका दोषहै परतु पाठक अवश्य समझ सकेंगे कि उसमें कहांतक गहरा पानीहै।

साहब बहादुर सुखदेवीको सताकर उसके पिताके चोर बन चुकेथे। इसलिये उनमें तो क्रोध होही कहांसे परतु लडकीका शिर फूटकर उसे मूर्च्छा आजानेसे लाला कालीचरण सकपका गये। उनका क्रोध कपूरकी तरह उडगया और सच पूछो तो उन्हें लेनेके देने पडगये। जिस सुख-

देवीको सुखी करनेके लिये उन्होने इतना अन्याय किया था जिसके लिये उनका पितृस्नेह उबल उठाथा उसीने पतिकी रक्षाके लिये पिताके हाथसे अपना शिर फुडवा डाला । धन्य सुखदेवी ! लाला कालीचरणने कपडा भिगोकर लडकीके शिरपर पट्टी बांधी, पानी छिडककर उसे सचेत किया और डाक्टर बुलाकर उसका इलाज कराया । वनमाली बाबू पत्थरकी मूर्तिकी तरह खडे २ देखते रहे। ससुर कालीचरणके कोपसे डरकर न तो उनसे सुखदेवीपर दया करते बना और न वह कुछभी बोल सके । साहब बहादुरकी प्यारी मेम, जबतक लाला कालीचरण वहां रहे डरके मारे अपनी कोटरीके बाहर न निकली । सुखदेवीको जब चेत हुआ तब लाला कालीचरणने उसे अपने घर लेचलनेके लिये बहुत समझाया परतु वह किसी तरह राजी न हुई । लालाजी अपनी लडकीपर बहुत कुछ चिढे, उन्होंने दशपांच गालियाभी सुनाई परतु उसने कहदिया और स्पष्ट कहदिया किः-

"चाहे यहां रहनेमें मेरे प्राणही क्यो न जाते रहैं परतु मुझे ये चरण छोडकर जाना अभीष्ट नहीं है । इन चरणोकी शरणमें मरजानेसेही मेरा कल्याण है ।"

इस प्रकारका रूखा उत्तर पाकर सुखदेवीकी उत्कृष्ट पतिभक्तिकी प्रशंसा करते, उसके भाग्यको कोसते, दामादको गालिया देते उदास होकर जब लालाजी चलेगये तब मेमसाहबने अपनी कोठरीसे बाहर अपना कदम बढाया । उसने साहबके सामने लाल पीली होकर कहा और डपटकर कहाः-

"स्योजी ! टुमने आजटो मुझे मरवाडिया ठा ना मरनेमें कसरही क्याठी ? अगर मेरे शिरपर उस जगलीकी लाठी लगजाटी टो में अभी मरजाटी । "

"हैं ! हैं ! !प्यारी, टुम मरनेका नाम क्यों लेटी हो ? सुनकर मेरा जी टहलटा है ! अगर वह मूजी टुमपर लाठी उठाटा टो में उसको जानसे मारडालटा । "

"बस २ बाटे न बनाओ । अगर सुखदेवी बीचमें न आटी टो टुमही आज मारे जाटे ।"

"हा ! हुआटो ऐसाही ! खैर अब जानेडो इन बाटोंको । मुझे याड कर के गुस्सा आता है ।"

अच्छा रहनेडो टुम्हारे गुस्सेको । मै अब इस मौटके घरमें न रहूगी मुझे टुम जैसे जगली हिंडुस्टानीके यहा रहना मजूर नही। जैसे टुमने (सुख देवीकी ओर सकेत करके) इसपर जुलम किया है वैसेही मुझपरभी किसी डिन करोगे। रहने डो टुम्हारा साठ । लाओ मेरे इकरारके दशहजार रुपये । बस मैं चली जाऊगी । "

"नही प्यारी, गुस्सा मट करो। मे हाथ जोडटाहू गुस्सा मटकरो । मैंने टुम्हारा कुछ नही बिगाडाहै । इसका चाहे जो हो मगर मैं टुमको नाराज नहीं करना चाहटा टुम अगर रूठ जाओगी डो मेरा कही ठिकाना न लगैगा हाय, टुम न रहोगी टो मैं प्यारी किससे कहूगा ।"

नहीं २! अब मैं नही रहनेकी । अब मैं रहकर अपनी जिंदगी बरबाद न करूगी । लाओ मेरे दस हजार ।"

"प्यारी, मुआफ करो । प्यारी इस गरीबपर गुस्सा न करो । दस हजार रुपये क्या मेरे शिरपर अभी दस हजार बालभी नही हैं । और जो कुछ टुम कहो मैं करनेको टैयार हू ।"

"अच्छा टैयार हो टो उस नालायकपर नालिश करके उसे सजा डिलवाओ । मुझे उसीका डर है वह कही आकर मुझे मार न डालै ।"

"प्यारी, उसपर नालिश करनेमें मेरी सब कलई खुल जायगी ऐसी जिड न करो । वह अब यहा नहीं आवैगा । वह अब अपना काला मुँह करके गया ।"

"अच्छा टो इसी राडको टलाक डेडो । और चलकर अलग बगलेमें रहो । प्यारी, इसे टलाक डूगा टो बडा गजब होगा । टब वह मूर्जा गस्से होकर न मालूम क्या करबैठे और टलाककी बाट छेडनेमें अडा-

ल्ट मुझेही सजा डेगी, क्यो कि कायडेसे इस का कुछ कुसूरभी तो नही है।"

"नहींतो मैं जातीहू।"

इतना कहकर मेम साहव चल दी। वह अब हजार समझानेपर, हजार खुशामद करनेपर, उसके पैर पकडकर रोकनेपरभी न रुकी। साहवके दोनों हाथोंको अपनी टागोंसे झटकाकर चलदी और चलते २ यह कहती गई कि:-

"टुम अगर सीढे सीढे रुपये न डोगे तो मैं नालिश करके लेलूगी।"

सुनकर वाबूजी सुन्न होगये। उनसे कुछभी करते घरते न वना। वह हाथ मलते पछताते और हायहाय करते रहगये।

प्रकरण ८

जेलमें वाबू।

मेमसाहब साहवको छोडकर चलीजानेहीमें सतुष्ट न हुई। उन्होंने जो कुछ कहा था वही किया। उन्होंने साहवपर नालिश की। नालिशमें लिखागया कि साहवने मुझे धोखादेकर मुझसे शादी करली। उन्होंने मुझसे इस वातको छिपाया कि उनकी पहली शादीकी औरत मौजूद है। उन्होंने मुझे पिटवाया और कइ तरहकी तकलीफ दीं इसवास्ते मैं अब इनके पास नहीं रहना चाहती।मेरी इनसे तलाक होजाय और ठहरावका दशहजार रुपया मुझे मिले।अदालतने इसपर मेमसाहवके इजहार लिये,उनके गवाहोंके इजहार लिये मि०रेस्ट गार्डनरके इजहार लिये,लाला कालीचरणके इजहार लिये,वनमालीवावूके गवाहोंके इजहार लिये,उनक नौकरोंके इजहार लिये और सुखदेवीके इजहार लिये। वनमालीवावू उपनाम फोरेस्टगार्डनरके खान सामा चपरासी और वावर्ची वेहरा मेमसाहवके ललचानेसे साहवके विरुद्ध गवाही दे आये। वावूसाहवके पुराने नौकरोंकी गवाहीसे अदालतको निश्चय होगया कि पहले विवाहकी स्त्री सुखदेवीका जीवित होना मेमसाहव पहलेसे जानती थी। साहवके नये नौकरोंकी गवाहीसे अदालतने जान

लिया कि मेमसाहव पीटी नहीं किन्तु वनमालीवावूको मारनेमें लाला कालीचरणके लट्ठसे सुखदेवीकी खोपडी फूट गई थी। किन्तु मेमसाहवपर साहव बहादुरके अत्याचारोंकी जो वातें उन्होंने वतलाई थी उनका खडन किसीतरह जव न होसका तव सुखदेवी अपनी गवाही देनेको तैयार हुई। गत प्रकरणमें जो वातें लिखीगई हैं वे सवकी सव सुखदेवीने यथातथ्य कह सुनाई। अपने इजहारोंमें वह केवल पतिके अपने ऊपर अत्याचारोंकी वात छिपा गई और उसने पिताकोभी निर्दोष वतलाया। उसने कह दिया कि-" हमारे किसी शत्रुने इनको समझा दिया कि-पति मुझपर अत्याचार करतेहैं और इसीलिये इन्होंने क्रोधमें आकर मारा।" इतना होनेपरभी अदालतने वनमाली वावूपर दिगरी दी। उसने लिखा कि:-

"चाहे वावूका मेमसाहवको तकलीफ देना सावित नहो, मगर जव ये दोनो एक दूसरेके पास रहना नहीं चाहते और मेमसाहवको वावूकी तर्फस जुल्म होनेका जव खौफ है तव ठहरावके दशहजार रुपयोंकी वावूपर डिगरी कीजाती है। अगर वावू रुपया न अदा करसकै तो उन्हें कायदेके मुताविक दीवानी जेल हो।"

मि फोरेस्टगार्डनर-उपनाम वनमालीवावू अव विलकुल दरिद्री होचुके थे उनके पास अव खानेकाभी ठिकाना नहीं था। इसलिये मेमसाहवने खुराकका खर्चा जमा कराके वावूसाहवको कैद कराया। वह रोते झींकते जेलमें गये-सुखदेवी रोती चिल्लाती अपने पिताके साथ गई। और मेम साहव राजी होती हुई अपने वगलेपर चली गई। सुखदेवी गई अवश्य परतु उसका जी पतिके साथ था। उसका शरीरपिंजर चाहे घरही क्यों न गया परतु वह पतिको जेलमे ठुसवाकर कैसे रह सकती थी? इतने दिनतक उसने पिताकी सहायता नहीं लीथी जव २ वह सहायता देनेको तैयार हुये तव २ ही उसने नाही करदी थी परतु अव उनसे सहायता लिये विना कुछ चारा न था। उससमय पितासे सहायता लेनेमें उसे पतिकी वदनामीका डर था परतु इसवार पतिको छुडानेके

लिये वह सब कुछ करनेको तैयार थी । उसने पिताकेपास जाकर कहा, माताके सामने खूब गिडगिडाकर कहाः—

" म हाथ जोडती हू, तुम्हारे पैरों पडती हूं । उन्हे छुडाओ । मुझे बाजारमें खडीकरके चाहे भगीके यहां वेचदो परतु उन्हें छडाओ । मुझे हरकिसीकी नीच सेवाकरना स्वीकार है परतु उनके कैद रहनेसे मैं मर जाऊगी । म अवतक जीती होनेपरभी मरी हुईहू परतु यदि वह न छूटे ग तो मैं सचमुच मरजाऊगी । "

"वेटी उसने, तुझे जैसी गायको सताया है । उसे थोडेदिन कैद भोग लेने दे तवही वह सीधा होगा । वह वडा लुच्चा है । उसे अवश्य सजा मिलना चाहिये ।"

"हा ! हां !! वह इसी योग्य है । उसने मेरी इकलौती वेटीको सताया है मेंने इसके लिये पीर सहीहै। मैं जानती हू कि इसे पालनेमें मुझे कितना दुःख हुआहै । देखो तो सुखदेवीके दादाजी, इस विचारीका दुःखही दुखसे वदन आधा रहगया ।"

"नहीं २ ! ऐसा न कहो । जो कुछ मेरे भाग्यमें बदा था सो भोगना पडा । उनका कुछ दोप नही । दोप मेराही है । मैं उनकी इच्छासे न चली। मैंने लाजसे कभी तुम दोनोके सामने उनकी वाततक नही कही थी परतु मेरी सारी लज्जा, मेरा शरीर, मरे प्राण उनके पीछे हैं । जब वे मेरे जीते दुःख पावें तब मेरा मरजानाही अच्छाहै । यातो उन्हें छुडाओ नहीं तो कल्ह मुझे मरीही समझना । "

"अच्छा उन्हे छूडावेंगे परतु उनसे पहले यह इकरार करा लेंगे कि, अब वह तेरे पास रहेंगे और तुझे किसीतरहका कष्ट न देंगे तब छुडावेंगे । "

नहीं २ ! इकरार विकरारका कभी नाम मत लो । इकरारमें बाँधकर उन्हे मोल लेना मुझ मजूर नही । यदि तुम नही छुडाओगे तो मैं बाजार में खडी होकर विकजाऊगी । मुझे खरीदनेवाला चाहे भंगी हो या चमार हो, जो मेरे धर्मकी रक्षा करनेका वचन देगा उसका पाखानातक

उठाऊगी परतु उन्हे छुडाऊगी। तुम्हें मुझपर प्यार हो–सच्चा प्यार हो तो उन्हें किसीतरह छुडाओ। पिताजी, उसदिन मेरी सहायताके लिये उनका शिर फोडनेको तैयार हुएथे और आज मुझे उनके छुडानेके लिये मुट्टीभर भीख नही देते।"

"बेटी उदास मत हो। हम उन्हें छुडावेंगे। हमें तेरे सुखसे बढकर इस दुनियामें सुखही क्या है? हम केवल इतनाही चाहते थे कि उनसेकुछ इकरार करवा लें?"

"नही २ इकरार विकरार कुछ नही।"

इतना कहते २ सुखदेवी मूर्छित होगई लाला कालीचरण और माता जयदेवीने उसकी आँखोंपर पानी छिडककर उसे सचेत किया। जब वह होशमें आई तब दोनोंने यह कहकर दिलासा दिया कि.– "तू घबडावे मत हम उसे आजकलमें ही छुडा देते हैं। तेरे सुखके लिये हमारा सर्वस्व तैयार है। दशहजार रुपल्लीकी कौन बडी बात है?" जिस समय सुखदेवीकी मातापितासे इस तरहकी बाते हुई उसकी आखोंमेंसे आसुओकी धारा बह रहीथी, रोते २ उसे हिचकिया आ रहीथी, उसे देखकर उसका लडका रोता था और इन दोनोंके दुःखसे उसके माता पिता रोते थे। सुखदेवीने रोतेरोते यही कहा कि.–बस कल्ह नहीं आजही आजके सूर्यमे"–

"अच्छा बेटी आज्ञा" कहकर लाला कालीचरण उठे। उन्होंने रुपयेके नोट अपनी जेबमें डालकर अदालतमें जा हाजिरी दी। लिखवाकर अर्जी पेशकी और साथ ही रुपया दाखिलकरके अपने दामादको छुडानेका परवाना लिया। वह इस तरहकी आज्ञा लेकर सीधे जेलमें गये उन्होंने जेलरको परवाना देकर अपने दामादको छुडाया।जब जेलमें ससुर दामादकी चार नजरें हुई तब बाबूसाहब शर्मागये। लज्जाके मारे उन्होंने आखे नीची करली और उनकी आखोंमेंसे मोतीकी समान बडे २ आंसू गिरने लगे। उन्होने अपने ससुरको हाथ जोडकर धन्यवाद देतेहुए कहा और आज अपनी वही पुरानी हिन्दी गन्दीमें कहाः–

लिये वह सब कुछ करनेको तैयार थी । उसने पिताकेपास जाकर कहा, माताके सामने खूब गिडगिडाकर कहा.—

" म हाथ जोडती हू, तुम्हारे पैरों पडती हूं । उन्हें छुडाओ । मुझे बाजारमें खडीकरके चाहे भगीके यहां वेचदो परतु उन्हें छुडाओ । मुझे हरकिसीकी नीच सेवाकरना स्वीकार है परतु उनके कैद रहनेसे मैं मर जाऊगी । म अवतक जीती होनेपरभी मरी हुईहू परतु यदि वह न छूटे ग तो मैं सचमुच मरजाऊगी । "

"बेटी उसने, तुझे जैसी गायको सताया है । उसे थोडेदिन कैदभोग लेने दे तवही वह सीधा होगा । वह वडा लुच्चा है । उसे अवश्य सजा मिलना चाहिये ।"

"हा ! हा !! वह इसी योग्य है । उसने मेरी इकलौती बेटीको सताया है मैंने इसके लिये पीर सहीहै। मैं जानती हू कि इसे पालनेमें मुझे कितना दुःख हुआहे । देखो तो सुखदेवीके दादाजी, इस विचारीका दुःखही दुसरो वदन आधा रहगया ।"

"नहीं २ ! ऐसा न कहो । जो कुछ मेरे भाग्यमें बदा था सो भोगना पडा । उनका कुछ दोप नही । दोप मेराही है । मैं उनकी इच्छासे न चली। मैंने लाजसे कभी तुम दोनोंके सामने उनकी वाततक नहीं कही थी परतु मेरी सारी लज्जा, मेरा शरीर, मेरे प्राण उनके पीछे हैं । जब वे मेरे जीते दुःख पावें तब मेरा मरजानाही अच्छाहै । यातो उन्हें छुडाओ नहीं तो कल्ह मुझे मरीही समझना । "

"अच्छा उन्हें छुडावेंगे परतु उनसे पहले यह इकरार करा लेंगे कि, अब वह तेरे पास रहेंगे और तुझे किसीतरहका कष्ट न देंगे तब छुडावेंगे । "

नही २ ! इकरार विकरारका कभी नाम मत लो । इकरारमें बाँधकर उन्हे मोल लेना मुझ मजूर नही । यदि तुम नहीं छुडाओगे तो मैं बाजारमे खडी होकर विकजाऊगी । मुझे खरीदनेवाला चाहे भंगी हो या चमार हो, जो मेरे धर्मकी रक्षा करनेका वचन देगा उसका पाखानातक

उठाऊगी परतु उन्हे छुडाऊगी । तुम्हें मुझपर प्यार हो-सच्चा प्यार हो तो उन्हें किसीतरह छुडाओ। पिताजी, उसदिन मेरी सहायताके लिये उनका शिर फोडनेको तैयार हुएथे और आज मुझे उनके छुडानेके लिये मुट्ठीभर भीख नही देते । "

" वेटी उदास मत हो । हम उन्हें छुडावेंगे । हमें तेरे सुखसे बढकर इस दुनियामें सुखही क्या है ? हम केवल इतनाही चाहते थे कि उनसेकुछ इकरार करवा लें ?"

" नही २ इकरार विकरार कुछ नहीं ।"

इतना कहते २ सुखदेवी मूर्छित होगई लाला कालीचरण और माता जयदेवीने उसकी आँखोंपर पानी छिडककर उसे सचेत किया । जव वह होशमें आई तव दोनोंने यह कहकर दिलासा दिया कि:- " तू घबडावे मत हम उसे आजकलमें ही छुडा देते हैं । तेरे सुखके लिये हमारा सर्वस्व तैयार है। दशहजार रुपल्लीकी कौन वडी वात है ?" जिस समय सुख-देवीकी मातापितासे इस तरहकी वाते हुई उसकी आखोंमेंसे आसुओंकी धारा वह रहीथी, रोते २ उसे हिचकिया आ रहीथी, उसे देखकर उसका लडका रोता था और इन दोनोंके दुःखसे उसके माता पिता रोते थे। सुखदेवीने रोतेरोते यही कहा कि.-वस कल्ह नही आजही आजके सूर्यमे"-

" अच्छा वेटी आज्ञा " कहकर लाला कालीचरण उठे । उन्होंने रुपयेके नोट अपनी जेवमें डालकर अदालतमें जा हाजिरी दी । लिखकर अर्जी पेशकी और साथ ही रुपया दाखिलकरके अपने दामादको छुडानेका परवाना लिया । वह इस तरहकी आज्ञा लेकर सीधे जेलमें गये उन्होंने जेलरको परवाना देकर अपने दामादको छुडाया।जव जेलमे ससुर दामादकी चार नजरें हुई तव वावूसाहव शर्मागये । लज्जाके मारे उन्होंने आंखे नीची करली और उनकी आखोंमेंसे मोतीकी समान वडे २ आंसू गिरने लगे । उन्होंने अपने ससुरको हाथ जोडकर धन्यवाद देतेहुए कहा और आज अपनी वही पुरानी हिन्दी गन्दीमें कहा-

"पिताजी, आप मेरे धर्मकेपिताहैं मै वडा दुष्टहू मैं उस दिन आपको गालियां देनेलगाथा । मैंने उस विचारीको वहुत सतायाहै । मै आपके सामने लज्जित होताहू । मैंने जो कुछ किया था उसका फल पालिया । यह चाहे दीवानी जेलही है परन्तु इन चार घटोंमें मुझे मालूम होगया कि किसी अनाथको सतानेमे कितना कष्ट होताहै । मेरा अपराध क्षमा करो । मैं आपका नालायक दामाद हू । "

लाला कालीचरणजीको इन वातोसे दामादपर वडी दया आई । उन्होंने वावूजीको छातीसे लगा लिया । दोनों मिलकर खूव रोये और लालाजीने रोते २ ही वावूजीसे कहा:-

"जो कुछ होना था सो होगया । समयपर ऐसाही हो पडताहै । कुछ चिन्ता नही । अव भी सँभलकर रहोगे तो कुछ बिगडा नहीहै । "

इतना कहकर लाला कालीचरण वनमालीवावूको छुडा लेगये । तवसे मेमका वनमालीवावूके चरित्रसे कुछ सवध न रहा ।

प्रकरण ९

सुखका आरंभ ।

जिस समय वनमालीवावू जेलसे निकले उनकी इच्छा घरजानेकी नही थी, क्योंकि वह अपने मनमें कहतेथे कि-अव कौनसा मुख लेकर घरजाऊ । परतु लाला कालीचरण उनके मनका भाव चेहरेपर देखकर उन्हें कुछ श्रद्धा और कुछ जोरावरीसे घर लेगये । उन्हें सुखदेवीको सौंप कर अपने घरगये और इसतरह जव दोनों अकेलेमें मिले तव उसने वडेही सत्कारके साथ इनका स्वागत किया । उसने खडे होकर इन्हें ताजीम दी, उसने इनके चरण धोकर चरणामृत लिया और तव वडीही नम्रताके साथ इनसे कहा.-

"प्राणनाथ, आज मेरा जीवन सफल हुआ है । आज आपके दर्शन पाकर में धन्य हुईहू । योतो मेमसाहवकी कृपासे मुझे कई महीनेसे आपके

नित्यही दर्शन होतेथे परतु आजकी वात कुछ औरही है । आज आपमें कुछ औरही पातीहू।"

"हा प्यारी, वेशक आज मै विलकुल वदल गयाहू। अव मैं मि.फोरेस्ट गार्डनर नही हू।अव मैंने सव अँगरेजी ढगोंको छोडा । अव मैं निरा हिन्दुस्थानी होकर रहूंगा। इतना कष्ट उठानेपर मुझे निश्चय हुआ, अव मुझ परीक्षासे निश्चय होगया कि देशीरमणिया चाहें पढी लिखी अधिक न हों परतु वे गृहस्थीके सव कामोंमें मेमोंसे अच्छी होती हैं। तैंने उसदिन जो वात कही थी उसे विवादकर सिद्ध कर दिया कि तू स्त्रियोंकी रानी है। मेरे मनमें परदेशीपनका जो भूत घुसगयाथा वह निकल गया। अवतक तुझमे जो दोष दिखाई देते थे वेही आज विचार करनेसे गुण दीख पडते हैं। अव तू मेरी प्यारी प्राणप्यारी-प्राणोंसेभी अधिक प्यारी लगने लगी। प्यारी, मैंने तुझ जैसी गरीव गौको वहुत सतायाहै। मैं तेरे आगे इसीलिये लज्जित होताहू।"

"हे प्यारे, मेरे सामने शर्मानेकी कौनसी वात है ? मैं तो आपकी दासीहू, आपके जूतेकी चाकर हू। मेरे सामने न शर्माइये। मैंने कियाही क्याहै जो आप इतने लज्जित होतेहैं।"

"तैंने वहुत कियाहै। तैंने इतना कियाहै जितना आदमी तो क्या देवताभी नही करसकते। तू धन्यहै। तेरी जैसी स्त्रियां इस ससारमें इनीगिनी होंगी। तू धन्यहै।"

इस वातके सुनतेही सुखदेवीने अपना शिर नीचाकर लिया। पतिके मुखसे अपनी प्रशसा सुनकर वह शर्मा गई। दोनोंकी आखोंमेसे इससमय प्रेमके आंसू वहने लगे। जिस समय इसतरह ये दोनों रोरहे थे इनका लडका वाहरसे खेलता हुआ आया। उसका शरीर धूलमें सनाहुआ था. उसके कपडे फटकर चिन्दिया होरहे थे और वह सूरतसे होनहार मालूम होनेपरभी इससमय एक भिखारीसा दिखलाई देता था। इन दोनोंको रोते देखकर उसने अपनी मीठी वोलीसे कहाः—

" मा, मेम माई चली गई। अवतो बापूजी मेरे पास रहेंगे? मैं बापूजीको अब न जाने दूगा। बापूजी अब यहासे मत जाओ।"

" नहीं बेटा, अब म न जाऊग।।"

इतना कहकर वनमालीबाबूने लडकेको गोदीमें बिठला लिया। लडका दोनों हाथोंसे उनकी गाढी बाथ भीडकर—" अब मैं न जाने दूगा! अब मैं अपने बापूजीको न जाने दूगा! न जाने दूगा। ऊ, न जाने दूगा—" कहकर रोने लगा। बापूजीने इसे कलेजेसे लगाकर उसका सतोष किया, अपना जी ठढा किया और तबसे यह दम्पती अपने नन्हेसमेत सुखसे रहे।

सुखसे अवश्य रहे परतु वनमालीबाबू मनहीमन " नोन दाल लकडी " की चितासे कुढते थे। वह मनमें इस बातको सोचकर बडा आश्चर्य करते थे कि दो मास होजानेपरभी सुखदेवी मुझसे खर्चेका तकाजा क्यों नहीं करतीहै। कैद होजानेसे उनकी नौकरी छूट गई थी। इस बदनामीसे उन्हें अब नौकरी मिलनाभी कठिन था। व्यापार करनेका उनमें शऊर नहीं था और न इसकामके लिये उनके पास जहर खानेका एक पैसा था। ऐसी दशामें वह बडे असमजसमें थे कि क्या उद्योग करना चाहिये। उनके विचारमें कोई काम ही नही आता था और न यह बात सुखदेवीके सामने छेडनेका उन्हे साहस होता था। उन्होंने अवश्यही नहीं कहा परतु सुखदेवीको उनके चेहरेसे मालूम होगया कि स्वामी कुछ चिन्तामें हैं। पतिकी चिन्ता उस जैसी स्त्रीके हृदयमें काटेकी तरह चुभती थी। उसने एकदिन समय पाकर कहा'—

"स्वामी मैं देखतीहू कि अभी आपके मनकी चिन्ता नही मिटी है! इस दासीसेभी तो कहिये आपको किस बातकी चिन्ताहै? यदि मै कुछ काममें आसकू तो मेरा सौभाग्य है।"

"नही प्यारी, मुझे कुछ चिन्ता नही है। अब चिन्ता काहेकी?"

"छिपाइये मत! नाथ, छिपाइये मत आपको चिन्ता अवश्यहै। मैं ऐसी भोली नहीं जो सहसा इस बातको मान लू। आपको अवश्य चिन्ता है। कृपाकर मुझसे कहिये और कहकर अपना कलेजा हलका कीजिये।"

ओर तो किसी वातकी चिन्ता अब न रही। जब तुझ जैसी स्त्री मिली हे तब चिन्ता क्याहै? हा एक वातका विचार अवश्य है परतु देखा जायगा।"

'नही, देखा नहीं जायगा (पतिका हाथ पकडकर उसकी ओर मुस कुराती हुई) आपको अभी कहना पडेगा। श्रीमती सुखदेवी महारानीकी आज्ञाहै। अभी कहना पडेगा। अब मैंने (कुछ हँसकर आँखोंसे इशारा कर ती हुई) आपको गिरफ्तार कियाहै। अभी कहना पडगा।"

"हा प्यारी, अवश्यही अब मै सचमुच तेरे प्रेमपाशमें बँधगया। अब मुझे तेरी आज्ञा माननीही पडेगी। अच्छा अभी क्या उतावलहै फिर कहेंगे।"

"नही २ कहदो जी! फिरके फेरमें न डालो। अभी कहदो।"

"अच्छा सुन।मुझे चिन्ता केवल इसी वातकीहै कि रोजगार नहीहै?खाली वैठे घरका खर्च किसतरह चलैगा? घरकी सारी पूँजी उस राडके पीछे वीत गई, उसीकी वदौलत नौकरी गई मेरी मूर्खतासे दाने २ को मुँहताज हुए। अब नौकरी मिलना कठिनहै और घरमें भूजी भागभी नहींहै।"

"ओहो! हो! हो!! वस इसी वातकी आपको चिन्ताहै। इसीके भरोसे इतने पढे लिखे हो (कुछ दिल्लगी करती हुई) यदि नौकरी नहीं मिलती तो क्या उसीके पीछे अपनी जिन्दगी वेच डालीहै। अच्छा हुआ गुलामीसे छुटकारा हुआ कुछ धन्दा कीजिये (प्यारसे आँखे मटकाते हुए) नाथ कुछ धन्दा कीजिये।"

"प्रथम तो जन्मसे कोई धन्दा नही किया इसलिये करनेका साहस नहीं होता और जो करें भी तो रुपया चाहिये।"

"वस रुपयोंकी कमीहै? जहां आपहैं वहा रुपयोंकी क्या कमीहै? रुपया जो आप जैसे विद्वानके पैरोंमें हैं।"

नहीं २! दिल्लगी मतकर। वता रुपया कहांसे आवेगा? क्या अपने वापसे मागेगी।"

" नहीं ! कदापि नहीं ! जब मैंने उस कष्टके समय ही उनसे रुपया न लिया तब अब आपको पाकर अब रुपयोंको क्या कमीहै ? एक वारही उनका अहसान इतना भारी हुआ है कि भगवान् उसे उऋण करे । "

"तेरा भगवान उऋण करेगा वा तू करेगी सो मैं कुछ नहीं जानता। इस वातको छेडकर मुझे दुःखित न कर अभी धन्देके लिये मार्ग बतला ।"

" हैं ! मेरा भगवान ? और आपका नहीं ? अच्छा अभी इस वातका निपटारा बाकीहै ? खैर देखा जायगा । धन्देका उपाय मैं जानतीहू । मैं वतलाऊगी । भगवान्की चेरी मैं वतलाऊगी और आप विना भगवानके गुरुको वतलाऊगी । "

" अच्छा तो वतला। अब व्यर्थ उलझाहटमें डालकर उत्कंठा क्यों बढातीहै ? "

"अरे ! वडी उत्कण्ठा बढगई । और अभी आपको आवश्यकताही क्याहै ?

अभी तो आपको खाली वैठे जुम्माजुम्मा आठ दिन हुए हैं। बस इतने ही दिनोंमें उकता उठे । अभी तो मेरे पासही चार महीनेका खर्च है अभीसे आप घबडाते क्यों हैं ? "

" तेरे पास इतना कहांसे आया ! मुझे बडा आश्चर्य होता है । मैंने कई वर्षोंसे तुझे एकपाई नही दी, तैंने मेरा पैसा खर्च नहीं किया, अपने वापसे तैंने एक कौडी नही ली । फिर तेरे पास कहासे आया ! "

" मैं ! मैं !! मै (हँसकर कुछ रिस दिखलाती हुई) चोरी करके लाई हू । मैंने डाका डालाहै और एक तीसरी वात मैं न कहूगी । वस और पूछो । "

" (हँसीसे गालपर हलकीसी चुटकी लेकर) हैं ! ऐसी दिल्लगी ! (दोनो हाथोंको एक हाथसे पकडकर मसकते हुए) क्यों न कहेगी ।

"अच्छा २ ! कहती हू । पहुँचा न मसको । दर्द होताहै । अजी दर्द होता है छोडो । कहतीतो हू । क्यों मसकें डालते हो । सुनो । मजदूरी करके, सीने पिरानेसे ।

"ठीक परतु तो कह ! उपाय क्या " अच्छा तो कह । देरी न कर ।"

"सुनिये प्राणनाथ, सुनिये । दासी प्रार्थना करतीहै । सुनिये । आपके पिताजीने शरीरछोडते समय आपसे क्या कहाथा ? कुछ याद है ? ।"

"हा अब याद आगया । अच्छा हुआ इतनेदिन याद न आया । नही तो वहभी उडजाता ।"

"इतना कहकर सुखदेवीने घरमेसे ढूँढकर एक कुदाली निकाली । वनमालीबाबूने उससे खोदकर भीतरके कोठेकी एक ताकके भीतर एक छिपे हुए ताकमेंसे रुपये निकाले, निकालकर एक दो तीन चार गिने । गिननेसे मालूम हुआ कि उनकी सख्या एक हजार दोसौ तीस रुपया थी । रुपये निकलेपर धन्देके विषयमें विचार हुआ । बाबूसाहब नौकरीके सिवाय और कामोंमे जानकार नहीथे इसलिये धन्दा करनेमें हिचकते थे, घबडाते थे और आनाकानी करते थे । उनके नपुसक मनमें मर्दुमी लानेके लिये सुखदेवीने कईएक उदाहरण दिये । हिन्दी समाचार पत्रोंमें फ्लाईशटलकी चर्चा यादकर उन्हें उसकी याद दिलाई इस कामसे बाबू मातामसादको लाभ हुआहै, मुन्शी कामताप्रसाद इस रोजगारसे मालामाल होगये और बाबू शिवप्रसादकोभी अच्छी आशाहे ।" इस तरहकी बातें सुनाकर उनको इस कामपर राजी किया ।

वनमाली बाबूने अपने मित्रोंसे सलाहकर कलकत्तेसे बहुतसी लिखापढी करनेके बाद अच्छे अच्छे फ्लाईशटल मँगवाये । अपने यहाके आठ जुलाहोको सिखलाकर काम खोला और इस तरह उन्हे इस कामसे अच्छी

ही हृदयमें कुतर्कने फिर अपना अड्डा जमाया और इतना होतेही अपनेही मनसे स्पष्ट कहदिया कि:-

"बस, होगया । बस आज निश्चय होगया कि परमेश्वर नहींहै । कलही लौटकर बाबा रामनन्दजीसे कहदूगा कि परमेश्वरके माननेवाले झूठेहै ।" बाबूजीके मुखसे जिससमय ये वाक्य निकले-"अररर" करके आप एक गढेमें जागिरे । अब मार्ग सीधा आगया था । वहा कुछ ऐसी झाडियाभी नहींथी और बादलोंके बीचमें उससमय कुछ चादनीभी निकल आई थी । ऐसी दशामें बाबूजी अकस्मात क्यो गिरे ? गिरते ही उनके मुखसे पाचही सेकडके बाद अनायास क्यो निकल गया कि "हेभगवान् बचाओ"-यह घटना इतनी जल्दी होगई कि वनमालीबाबू कुछ समझने न पाये परतु इसतरह एकाएक गिरजानेका उनपर बडाभारी असर हुआ उन्होंने समझ लिया कि चौडे रस्तेमें, चादनी होतेहुए, पहलसे गढा न दीखकर मै इसीलिये गिरा कि मेरे मुखसे-"परमेश्वर नहीं है" निकला था और उसी परमेश्वरने अनायास मेरे मुखसे पाचही सेकंडके बाद निकलवा लिया कि "हे भगवान् बचाओ-" बस परमेश्वर अवश्यहै ।

उन्होंने फिर अपने मनमें कहा:-

"वास्तवमें मै बडा पापीहू । मैंने अबतक अपनी मूर्खतासे भगवानको न मानकर-बडा अनर्थ किया । मुझ अभागेके, मुझदुष्टके हृदयमें ऐसे उत्तम विचार केवल प्यारीके पुण्यसेंही उत्पन्न हुएहै । उसीके पुण्यने आज मेरे प्राणोकी रक्षा की । नहीं तो आज मरनेमें कसरही क्या थी ? ऊपरसे ठोकर लगकर शिरके बल गिरा था । नीचे बडीभारी चटान थी । परतु धन्य परमेश्वर ! तेरा लाखबार धन्यवाद है । मुझे कैसा बचा लिया ! बाल २ बचा लिया । ओहो ! इस तरह बचा लिया मानो नीचेसे मुझे झेललिया हो । ऐ झेलनेवाले ! हे जगदाधार ! मुझे दर्शनदे । मै बडा पापी हू ।"

जब वनमालीबाबूके हृदयमें ऐसे विचार उत्पन्न हुए, उनके दिलकी धडकन कम हुई। अब उन्होंने निकलनेका प्रयत्न किया। इस गढेमें गिरनेपर जब आप अज्ञानके गढेमेंसे निकल चुकेथे तब इससे निकलना कौन बडी बात थी। कुछ बादल और कुछ चांदनीकी लडाईमें उन्होंने उस गढेमें चारों ओर चक्कर लगाकर रास्ता निकाला। उसीपर चढकर वह बाहर आये और ऊपर आकर ज्योंही उन्होंने गढेकी ओर मुँह फेरकर देखा उसमें सैकडों साप फुफकारते हुए दिखाई दिये। देख तेही बाबूजीके होश उडगये। उन्होंने फिर कहा.–

"ओहो! भगवान्‌ने मुझे इनसे बचालिया। ये तो सैकडों हैं। मुझे एकभी काटखाता तो कहा मैं और कहां प्यारी? मैं यहीं तडपतडपकर मर रहता। खैर आज प्यारीका पुण्य सहायक हुआ।"

बस इसतरह मनमें विचार करते, कभी सुखदेवीके पुण्यको सराहते, कभी परमेश्वरको धन्यवाद देते बाबूसाहब घर पहुँचे। वहा जाकर उन्होंने अथसे लेकर इतितक आजकी घटना सुखदेवीको सुनाई। वह सुनतेही हर्षके मारे गद्गद होगई। उसने आजसे अपनेको पूरा सुखी समझा। बाबूजीकाभी सुखदेवीपर आजसे दिनदूना रातचौगुना प्रेम बढा। दूसरे दिन उन्होंने सुखदेवीके साथ जाकर वह गढा देखना चाहा जिसकी बदौल्त बाबूजीकी बुद्धि ठिकाने आईथी। दोनो वहां गये। इन्होंने उस जगल्में कोई सौवार चक्कर लगाकर देखा–खूब बारीकीसे देखा परतु न तो वहा कोई गढाही ऐसा था और न कहीं साँपोंका नाम था। यदि दिनमें इनको वह गढा दिखलाई देजाता तो कदाचित् इनके पूर्वपरिचित कुतर्क फिर इनपर हमला करके इनके मनको ईश्वरकी ओरसे पकडकर सयोगकी ओर "इत्तिफाक" की ओर घसीट लेजाते परतु वहा गढाथाही कहा? यह एक दैवीघटना थी। इसने बाबूजीके मनमें भक्तिकी पक्की नीव लगाही। वहासे चल्कर दम्पती बाबा रामानदजीसे मिले। उनसे कल्की आजकी सब बातें कहीं और अबतक जो२ प्रमाण, जो २ युक्तिया ईश्वरके माननेमें उन्हें पोच दिखाई देती थी वेही महात्माके मुखसे सुन-

ही हृदयमें कुतर्कने फिर अपना अड्डा जमाया और इतना होतेही उन्होंने अपनेही मनसे स्पष्ट कहदिया कि:—

"वस, होगया । वस आज निश्चय होगया कि परमेश्वर नहींहै । मैं कलही लौटकर वावा रामनन्दजीसे कहदूगा कि परमेश्वरके माननेवाले झूठेंहै । ' वावूजीके मुखसे जिससमय ये वाक्य निकल—"अररर" करते आप एक गढेमें जागिरे । अव मार्ग सीधा आगया था । वहां कुछ ऐसी झाडियाभी नहींथी और वादलोंके वीचमें उससमय कुछ चादनीभी निकल आई थी । ऐसी दशामें वावूजी अकस्मात क्यों गिरे ? गिरते ही उनके मुखसे पाचही सेकडके वाद अनायास क्यो निकल गया कि "हेभगवान् वचाओ"—यह घटना इतनी जल्दी होगई कि वनमालीवावू कुछ समझने न पाये परतु इसतरह एकाएक गिरजानेका उनपर वडाभारी असर हुआ उन्होंने समझ लिया कि चौडे रस्तेमें, चादनी होतेहुए, पहलेसे गढा न दीखकर मैं इसीलिये गिरा कि मेरे मुखसे-"परमेश्वर नहीं है" निकला था और उसी परमेश्वरने अनायास मेरे मुखसे पाचही सेकडके वाद निकलवा लिया कि "हे भगवान् वचाओ-" वस परमेश्वर अवश्यहै ।

उन्होंने फिर अपने मनमें कहा:—

"वास्तवमें मै वडा पापीहू । मैंने अवतक अपनी मूर्खतासे भगवानको न मानकर वडा अनर्थ किया । मुझ अभागेके, मुझदुष्टके हृदयमें ऐसे उत्तम विचार केवल प्यारीके पुण्यसेही उत्पन्न हुएहैं । उसीके पुण्यने आज मेरे प्राणोंकी रक्षा की । नहीं तो आज मरनेमें कसरही क्या थी ? ऊपरसे ठोकर लगकर शिरके वल गिरा था । नीचे वडीभारी चट्टान थी । परतु धन्य परमेश्वर ! तेरा लाखवार धन्यवाद है । मुझे कैसा वचा लिया । वाल २ वचा लिया । ओहो ! इस-तरह वचा लिया मानो नीचेसे मुझे झेललिया हो । ऐ झेलनेवाले ! हे जगदाधार ! मुझे दर्शनदे । मै वडा पापी हूं ।"

जब वनमालीबाबूके हृदयमें ऐसे विचार उत्पन्न हुए, उनके दिलकी धडकन कम हुई । अब उन्होंने निकलनेका प्रयत्न किया । इस गढेमें गिरनेपर जब आप अज्ञानके गढेमेंसे निकल चुकेये तब इससे निकलना कौन बडी बात थी । कुछ बादल और कुछ चांदनीकी लडाईमें उन्होंने उस गढेमें चारों ओर चक्कर लगाकर रास्ता निकाला । उसीपर चढकर वह बाहर आये और ऊपर आकर ज्योंही उन्होंने गढेकी ओर मुँह फेरकर देखा उसमें सैकडों साप फुफकारते हुए दिखाई दिये । देख तेही बाबूजीके होश उडगये । उन्होंने फिर कहाः—

"ओहो ! भगवान्ने मुझे इनसे बचालिया । ये तो सैकडों हैं । मुझे एकभी काटखाता तो कहा मैं और कहां प्यारी ? मे यही तडपतडपकर मर रहता । खैर आज प्यारीका पुण्य सहायक हुआ ।"

बस इसतरह मनमें विचार करते, कभी सुखदेवीके पुण्यको सराहते, कभी परमेश्वरको धन्यवाद देते बाबूसाहब घर पहुँचे । वहा जाकर उन्होंने अथसे लेकर इतितक आजकी घटना सुखदेवीको सुनाई । वह सुनतेही हर्षके मारे गद्गद होगई । उसने आजसे अपनेको पूरा सुखी समझा । बाबूजीकाभी सुखदेवीपर आजसे दिनदूना रातचौगुना प्रेम बढा । दूसरे दिन उन्होंने सुखदेवीके साथ जाकर वह गढा देखना चाहा जिसकी बदौलत बाबूजीकी बुद्धि ठिकाने आईथी । दोनों वहां गये । इन्होंने उस जगलमें कोई सौवार चक्कर लगाकर देखा—खूब बारीकीसे देखा परतु न तो वहा कोई गढाही ऐसा था और न कहीं साँपोंका नाम था । यदि दिनमें इनको वह गढा दिखलाई देजाता तो कदाचित् इनके पूर्वपरिचित कुतर्क फिर इनपर हमला करके इनके मनको ईश्वरकी ओरसे पकडकर सयोगकी ओर "इत्तिफाक" की ओर घसीट लेजाते परतु वहा गढायाही कहा ? यह एक दैवीघटना थी । इसने बाबूजीके मनमें भक्तिकी पक्की नीव लगाही । वहांसे चलकर दम्पती बाबा रामानदजीसे मिले । उनसे कलकी आजकी सब बातें कही और अबतक जो२ प्रमाण, जो२ युक्तिया ईश्वरके माननेमें उन्हें पोच दिखाई देती थीं वेही महात्माके मुखसे

कर उनके हृदयपटलपर पत्थरकी लकीरकी तरह अंकित होगई। जो बातें अबतक पानीकी लकीरकी तरह कुतर्की लहरोंसे मिट जातीथीं २ अब पक्की होगई। इस तरह सुखदेवी अपने प्राणप्यारेको लेकर प्रसन्न होतीहुई घर लौटी। अब बार २ इसीकी चर्चाथी। सोते जागते, खाते पीते इसीका ध्यान था और जब देखो तबही इसका विचार था।

एकबार बाबूसाहबने अपनी प्यारीसे कहाः–

" प्यारी, तेरी– केवल तेरीही बदौलत मेरे मनसे अज्ञानका अँधेरा दूर होगया। तू धन्यहै। तैंने उसदिन मुझे भगवान्, मनवादेनेकी जो प्रतिज्ञायें की थीं वे सब पूरी होगई।"

" हैं! मेरी प्रतिज्ञा? मेरी कौनसी प्रतिज्ञा पूरी होगई!"

" तैंने उसदिन रातको, जब मैं अंगरेजी किताबोंसे नास्तिकता सिद्ध कररहा था प्रतिज्ञाकी थी। तू अपने विचारके तरंगोंमें बहुत डूबीहुई थी। कदाचित् तुझे कुछ खबर न हो परन्तु तैंने जो कुछ कहा था मैंने अक्षर २ सुन लिया।"

" सुन कैसे लिया? मैंने अपने मनमें कहा था।"

'प्यारी,तुझे खबर नहीं रही। तू मनमें विचार करती २ मुँहसे कहगई थी।"

" खैर मुँहसे निकलगया होगा परन्तु मेरी प्रतिज्ञा कैसे पूरी हुई? आपको उसगढेमें पडकर जिससमय परमेश्वरका बोध हुआ मैं तो वहां थीभी नहीं।"

" तू नथी तो न सही परंतु तेरेही पातिव्रतने तेरेही पुण्यने मुझे यह बात सुझाई। तूही इस काममें नहीं २ सब कामोंमें मेरी सहायक हुई।"

"प्राणनाथ, (नीचीगर्दन करके) मुझे कांटोंमें न घसीटो आपके मुखसे इतनी प्रशंसा सुनकर मैं बिगड जाऊंगी। अधिक प्रशंसा आदमीके लिये विषका प्यालाहै।"

" नहीं सच्ची प्रशंसा अमृतका प्यालाहै। मेरे अमृतके प्याले तुझे पीनेसे मैं कभी नहीं अघाता हूं।"

इसतरहकी दम्पतीमें कईवार वातचीत हुआ करती थी । सुखदेवीकी वातचीतसे, उसकी उत्कृष्ट पतिभक्तिसे वनमालीवाबू सुधरे और इतने सुधरे कि घोर नास्तिकसे वदलकर पक्के आस्तिक होगये । अव वाबूजीका चोला विलकुल वदल गया । अव उन्होंने पटलून फेंककर धोती पहनली और सारे विलायतीढग निकालकर सच्चे हिन्दू वनगये । उन्होंने अपने पापोंसे छुटकारा पानेके लिये कई वार पश्चात्ताप किया तीर्थोंमें जाकर प्रायश्चित्त किया और मद्यादि दोषोंको छोडकर सदाचारी सदाचारका उदाहरण वनगये ।

अव वनमालीवावू नित्य स्नान करके भजन करतेहैं पूजापाठ करते हैं मूर्तिपूजा करतेहैं, मातापिताका श्राद्ध करतेहैं, दानपुण्य करते हैं और आस्तिक हिन्दूको जो २ काम करने चाहिये उन सवको करतेहैं और वडी श्रद्धाके साथ करते ह उन्होंने अपनी वुद्धिसे सुखदेवीकी वुद्धिको अधिक मखर समझा उसीकी इच्छा अनुसार लडकेको पढाया ।

इतना होनेके वाद इनके चरित्रमें कोई विशेष घटना न हुई केवल इतना और लिखना आवश्यकहै कि सच्चारित्रसे आस्तिकतासे ईमानदारीसे रहकर काम करनेसे उन्हे व्यापारमें वहुत लाभ हुआ और वह खूवही सुखसे रहने लगे ।

दम्पती अव अत्यन्त सुखसे रहतेहैं परतु वनमालीवावू अवभी अपनी पुरानी वातको भूले नहींहैं । अवभी जव समय आताहै सुखदेवीसे कहतेहैं:-

"प्यारी महात्मा तुलसीदासजीकी" शठसुधरहि सतसगति पाये-यह चौपाई सत्यहै । मैं तेरी सगतिसे सुधरा । मैं तेरेही प्रतापसे ककरका हीरा होगया । "

यह वात वावूसाहव घमडसे नहीं कहतेहैं । उन्हें सुधरजानेका घमड नहींहै क्योंकि उन्हें निश्चयहै कि घमड करनेवालाही गिरता है परतु सर्व धारणमें उनकी जैसी चर्चाहै उसेही वनमालीवावू अपनी प्यारीको

करतेहै सुखदेवी सुनकर आखें नीची करलेती है और जब पति उससे मिलाकर कलेजा ठंढा करनेके लिये उसकी ठोढी पकडकर उसका उठातेहैं तबही प्रेमसे दो चार आंसू डाल देतीहै । हर्षसे गद्गद और अपने जीवनको सफल समझकर परमेश्वरको दम्पती लाख देतीहै ।–इति ॥

समाप्त ।

राजपूतानेका भूगोल.

पहिला भाग

जिसको

हिन्दी पाठशालाओं के लिये

श्रीयुत ई एफ हैरिस साहब बहादुर बी ए स्थानापन्न प्रिन्सिपल् गवर्नमेंट कालेज अजमेर व इन्स्पेक्टर शिक्षाविभाग अजमेरमेरवाडा की आज्ञा और अनुग्रहसे

पण्डित रामदीन

मास्टर वाल्टर स्कूल आबूने बनाया

GEOGRAPHY OF RAJPUTANA,

PART I

BY

Pandit RAMDIN, Teacher Walter School

MOUNT ABU

Written under the direction and patronage of F L HARRIS ESQUIRE, B A Offg Principal Government College Ajmer and Inspector of school, Ajmer-Merwara and *approved by him for use in Public Schools*

सन १९०६ ई

प्रथम बार २०००]   [मूल्य नक्शा सहित ₹)

इलाहाबाद—यूनियन प्रि ऽन ग वि मे छपा

राजपूताने का भूगोल.

पहिला भाग

जिसको

हिन्दी पाठशालाओं के लिये

श्रीयुत ई एफ हैरिस साहब बहादुर बी ए स्थानापन्न प्रिन्सिपल् गवर्नमेंट कालेज अजमेर व इन्स्पेक्टर शिक्षाविभाग अजमेरमेरवाड़ा की आज्ञा और अनुग्रहसे

पण्डित रामदीन

मास्टर वाल्टर स्कूल आबूने बनाया

GEOGRAPHY OF RAJPUTANA.

PART I

BY

Pandit RAMDIN, Teacher Walter School

MOUNT ABU

Written under the direction and patronage of F E HARRIS ESQUIRE, B A Offg Principal Government College Ajmer and Inspector of school, Ajmer-Merwara and *approved by him for use in Public Schools*

सन १९०६ ई

प्रथम बार २०००] [मूल्य नकशा सहित ≈)

अहमदाबाद—यूनियन प्रि प्रेस क लि में छपा

☞ यह पुस्तक उर्दू अङ्गरेजी में भी शीघ्र प्रकाशित होगी सो कोई साहब किसी भी भाषा में अनुवाद इत्यादि करने का श्रम न करें। नहीं तो लाभ की जगह हानि उठावेंगे।

भूमिका.

ब्रटिश साम्राज्य के और २ लाभो के अतिरिक्त भूगोल विद्या में भी हम लोगों की अच्छी जानकारी बढी है। यूनीवरसिटी के ग्रेजुएटों की तो बात ही और है किन्तु हमारे राजपूताने के साधारण पढे लिखे बालक तक जानते हैं कि पृथ्वी पर कहा क्या है। अभी यूरप, आफ्रिका और अमेरिका इसादि की पचासों बातें उनके मुँह सुनलो। परन्तु पश्चाताप का विषय है कि अपने देश की एक २ बात के लिये उन्हें दूसरों का मुँह ताकना पडता है। कारण यही बात कि आज तक राजपूताने का ऐसा उत्तम कोई भूगोल नथा। आज परमेश्वर की कृपा और श्रीमान् विज्ञातविज्ञ गुण ग्राहक ई एफ हैरिस साहब बहादुर प्रन्सिपल गवर्नमेंट कालेज अजमेर की आज्ञानुसार राजपूताने के भूगोल की यह प्रथम पुस्तक सर्व साधारण के सन्मुख प्रस्तुत की जाती है। इस पुस्तक में भूगोल सम्बन्धी बहुत सी बातों को आदि लेकर चीफ कमिश्नरी अजमेर मेरवाडा और राजपूताने का मिला हुआ वर्णन है। पृथक २ सब राज्यों का वर्णन इस पुस्तक के दूसरे भाग में होगा।

पाठकों को चाहिये कि इस पुस्तक की मुख्य २ बातें बालकों को कहानियों की भाँति याद करा दें अक्षर प्रत्यक्षर रटाने की आवश्यकता नहीं है

पाठक देखें गे कि यह पुस्तक बहुत सावधानी के साथ निकाली गई है, तथापि कम्पोज सम्बन्धी साधारण सी दो चार त्रुटियां फिर भी हैं। सो दूसरी बार छपने पर निकल जायगी॥

अर्बुदगिरि
मई सन १९०६ } रामदीन

सूचीपत्र.

राजपूतानेका भूगोल।

पहिला भाग.

१—पृथ्वी और उसकी परिभाषा.

राजपूतानेका भूगोल जाननेके पहिले, भूगोल सम्बन्धी मोटी २ बातें जान लेनेमें तुम्हारा विशेष हित है, इस लिये सब से प्रथम हम वही बात कहते हैं:—

पृथ्वीकी शकल गोल है, इसीसे "भूगोल" ऐसा कहनेमें आता है। परन्तु **भूगोल** शब्दका अर्थ पृथ्वीका वर्णन है, जिसमें सम्पूर्ण पृथ्वी या उसके किसी भागका ऊपरी हाल लिखा गया हो।

यह पृथ्वी जिस पर हम सब लोग रहते हैं नारंगीकी नाईं गोल मटोल है। तुम जानते हो हमने पृथ्वीको तुम्हारे खेलनेकी गेंदसी गोल न कहकर नारंगीकी भाँति गोल मटोल क्यों कही? यदि नहीं जानते तो अब याद रखना। हमारी पृथ्वीकी शकल नारंगीसे बहुत मिलती जुलती है। जैसे नारंगी अपने दोनों सिरों पर चपटी होती है, वैसेही हमारी पृथ्वीभी दोनों सिरों पर कुछ चपटीसी है याद रखना इन चपटे भागोंका नाम ध्रुव है। दूसरे जैसे नारंगीका छिलका ऊपरसे खरदरा होता है वैसेही हमारी पृथ्वी पर कहीं ऊंचेर पहाड़, टीबे और कहीं गहरेर समुद्र, नदी नाले आदि हैं।

पहाड जानते हो ? पहाड—पृथ्वीके उस ठोस और पथरीले भागको कहते हैं जो अपने चहुँओरकी भूमिसे बहुत ऊंचा हो और ऊंची भूमिको टीवा बोलते हैं।

समुद्र जलका वह वडा भाग है जो बहुत दूरलों पृथ्वीको घेरे हुए चला गया हो। और **नदी**—मीठे पानीकी उस वडी धारको कहते हैं जो पृथ्वी पर वहती हुई समुद्र या झीलको तरफ जाती है। भूमिकी सतहके नीचे छोटे २ स्थानों पर जो पानी जमा होता है उसे **झील** या **सर** कहते हैं।

हम जानते हैं अब तुम पृथ्वीके गोल होनेका प्रमाण मांगोगे। अच्छा, लो सुनो। यदि कोई मनुष्य पूर्वसे पश्चिम को विना दाहिने बाएँ मुडे सीधा अपने मुँहकी सीध में चला जावे तो कुछ दिनोंके पीछे वह अपने उसी पहिले स्थानपर आजायगा कि जहा से वह चलाथा।

ऊपरके वर्णनमें पूर्व और पश्चिम जोदो शब्द आये हैं उन्हें तुमने अपने गाव वालोंके मुँह कदाचित सुना हो, ये दो दिशाओं के नाम हैं।

पृथ्वी परके स्थानोंका ठीक२ पता बतलानेके लिये बुद्धिमानोंने उत्तर दक्षिण, पूर्व, पश्चिम इत्यादि कुछ सङ्केत ठहरा लिये हैं जिन्हें हम **दिशा** कहकर बोलते हैं।

दिशा दश हैं १ ऊपर २ नीचे ३ पूर्व ४ आग्निकोन ५ दक्षिण ६ नैऋत्यकोन ७ पश्चिम ८ वायव्यकोन ९ उत्तर और १० ईशानकोन। इन सब दिशाओंको अपने अध्यापकसे भली प्रकार समझ लेना, क्योंकि इस पुस्तक के पढनेमें तुम्हें बार २ उनसे काम पडेगा। अच्छा, मुख्य दिशा जाननेकी एक सरल रीति हमहीं तुम्हें बताये देते हैं.—

तुम सूरजको तो जानतेही हो ? जो एक चमकता-हुआ आगका गोलासा नित्य दिनमें देखते हो। यह सूरज हमारी पृथ्वी से नौ करोड दस लाख मील दूर है। यदि प्रातःकालके समय उगते हुए सूरजकी और मुंह करके खडे होगे तो इस दशामें तुम्हारा मुह पूर्व को, पीठ पश्चिमको दाहिना हाथ दक्षिणको और बाया हाथ उत्तरको होगा। नकशेमें उत्तर ऊपरको, दक्षिण नीचेको, पूर्व दाहिने हाथको और पश्चिम बाएँ हाथको होताहै।

नकशा सम्पूर्ण पृथ्वी या उसके किसी भागके चिनको कहते हैं। यह प्रायः कागजपर खिचा होता है। ऐसे नकशे हम जानते हैं कि तुम्हारी पाठशालामें दोचार लटकते होंगे।

तुम कहते होगेकि पृथ्वीकी बात कहते २ बीचमें दूसरी क्या बातें आ गई, परन्तु याद रखना यह बातें तुम्हारे बडे कामकी हैं और इसीसे हमने कही भी हैं। लो, अब पृथ्वी ही की बात फिर कहते है।

अब तुम जान गये होगे कि पृथ्वी गोल है। परन्तु उसकी गोलाई अर्थात् पृथ्वोके घेरेकी नाप बतानी और शेष है। वह भी सुनलो। पृथ्वीकी **परिधि** २५००० मील और व्यास ८००० मीलके लगभग है। **व्यास**—उस रेखाका नाम है जो गोलेके बीचो बीच उसके केन्द्र पर होकर परिधिके एक बिन्दुसे दूसरे बिंदु तक खींची जाती है।

पृथ्वी अपनी कीली पर २४ घंटेमें एक बार घूम आती है, और इसी कारण दिन रात होते हैं। यदि तुम एक डोरेमें गेंद बाध कर दीपकके सामने घुमाओ तो अंधेरा भाग उजेलेमें और उजेला भाग अँधेरेमें आता जाता देखोगे।

३६५ दिन और ६ घंटेमें पृथ्वी सूरजके चारों ओर घूम जाती है और वही एक वर्ष कहनेमें आता है। यहाँ पर कदाचित तुम्हें यह भ्रम हुआ हो कि देखनेमें तो पृथ्वी ठहरी और सूरज आदि तारे चलते दीखते हैं। परन्तु यह बात नहीं है। यथार्थमें पृथ्वीही अपनी कीलीपर पूर्वसे पश्चिमको घूमती है और इसी कारण सूर्य्य आदि तारे चलते दिखाई देते हैं। क्या तुम कभी रेलमें चढे हो? यदि चढे हो, तो तुमने वेगसे जाती हुई रेल गाडीमें बैठे आस पासकी भूमिके वृक्षादि अवश्य दौडते देखे होंगे। परन्तु सचमुचमें वे सब तो ठहरे हुए हैं और गाडी चलती हुई है। बस यही गति सूर्य्य आदि तारों और हमारी पृथ्वीकी है।

सम्पूर्ण पृथ्वीका क्षेत्रफल—२० करोड वर्गात्मक मीलके लगभग है, जिसका ५ करोड वर्गात्मक मील अर्थात् एक चौथाई हिस्सा ऊपर और तीन चौथाई अर्थात् १५ करोड वर्गात्मक मीलके लगभग भाग जलमें डूबा हुआ है।

उस जलको जिसमें यह कोसों धरती डूबी हुई है **महासागर** वा समुद्र और जो एक चौथाई भाग ऊपर है उसे **स्थल** वा सूखी धरती बोलते है, इस पर लगभग पौने दो अरब मनुष्य निवास करते हैं।

इसी स्थलके एक टुकडेमें हमारा राजपूताना प्रदेश भी है, तो अब हम जलकी और बात छोड कर आगे स्थलही की बात करेंगे।

एशिया, यूरप, अफ्रिका, अमेरिका, और आस्ट्रेलिया स्थलके पाच सबसे बडे भाग हैं, जो महाद्वीप कहलाते हैं।

महाद्वीप—पृथ्वीके उस बड़े भागको कहते हैं जिसमें बहुतसे देश हों । हमारा हिन्दुस्थान एशिया महाद्वीपका एक बड़ा देश है ॥

हिन्दुस्थान—बृटिश इंडिया, अन्य देशोंके राज्य, स्वतंत्र राज्य और रक्षित राज्य इन चार बड़े भागों में बाँटा जाता है ॥

पहिले भागमें वेदेश गिने जाते हैं जहाका शासन श्रीमान् वाइसराय-गवर्नर, लैफटेंट गवर्नर चीफ कमिश्नर इत्यादिके द्वारा करते हैं जैसे—बम्बई हाता, सूबा पंजाब, सूबा अजमेरादि । ऐसे प्रदेशोंका सम्पूर्ण क्षेत्रफल ११ लाख वर्गात्मक मीलके लगभग है ॥

पोर्तगाल और फ्रान्स वालोंका हिन्दुस्थानमें जो थोड़ासा प्रदेश है वह—अन्य देशीय राज्य कहलाता है । ऐसे प्रदेशोंका क्षेत्रफल १३ सौवर्गात्मक मीलके लगभग है ॥

स्वतंत्र राज्य—हिन्दुस्थानमें अब कोई नहीं है, नामके लिये नैपाल और भूटान स्वतंत्र देशोंमें गिने जाते हैं। इनका क्षेत्रफल अनुमान ८७ हजार वर्गात्मक मील है । परन्तु असलमें येभी बृटिश गवर्नमेंटके बताए पथपर चलते हैं और तिब्बत, चीनके साथ इनका राजकीय सम्बन्ध है ॥

रक्षित राज्योंसे प्रयोजन उन मित्र देशी राज्योंसे है जो सरकार अंगरेजकी रक्षामें अपने २ राज्योंका शासन आप करते हैं। जैसे काश्मीर बड़ोदा, हैदराबाद और राजपूतानेके राज्य इत्यादि। रक्षित राज्योंका क्षेत्रफल ७ लाख वर्गात्मक मीलके लगभग और मनुष्य गणना सवा छः करोड़से कुछहीकम है ॥

हमारे राजपूतानेका सम्बन्धभी ऐसे ही राज्योंसे है। परन्तु उसका वर्णन करनेके पहिले सूबा अजमेरका पूरा वर्णन करदेना आवश्यक है॥

अब तुम कहोगेकि अजमेर भीतो राजपूतानेमें है उसका राजपूतानेसे पृथक वर्णन क्यों ? अच्छा लो सुनो। यद्यपि अजमेर राजपूताने काही एक अङ्ग है, परन्तु उसका राजकीय सम्बन्ध बृटिश इंडियाके साथ होनेसे अजमेरको राजपूतानेसे अलग रखकर बृटिश इंडियांका एक छोटा सूबा मानते हैं॥

२ अजमेर

चीफ कमिश्नरी अजमेर–राजपूतानेके मध्यमें बृटिश इंडिया का एक छोटा सूबा है, जिसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल २७११ वर्गात्मक मील और मनुष्य गणना ५ लाखसे कुछही कम है। पहिले यह सूबा सेंधियाके अधिकारमें था। सूबेदार बापू रावलसे सन १८१८ ई में एक सधि पत्रद्वारा सरकार अगरेजको मिला है और अब बृटिश इंडियाका एक छोटा सूबा है॥

इस सूबेके उत्तरमें किशनगढ और मारवाडका राज्य पूर्वमें जयपुर और किशनगढका राज्य पश्चिममें मारवाड और दक्षिणमें मेवाड है॥

पहिले यह देश सयुक्त देश आगरा व अवधकी लोकल वर्नमैंटके सयुक्त था। परन्तु अब यहाकी चीफ कमिश्नरी नियत होकर उसका सम्बन्ध सीधा श्रीमान् गवर्नर जनरल वाइसराय हिन्द और उनको कौन्सिलसे हो गया है। यहाके चीफ कमिश्नर राजपूतानेके एजेंट गवर्नर जनरल हैं और वह आबू पहाडपर रहते हैं॥

नदी झील और पहाड़—बनास, खारी, डाई, सरस्वती और सागरमतीके सिवाय बडी नदी इस सूबेमें कोई नहीं। पुष्कर, आनासागर और फाईसागर बडी झीलें हैं। पहाड इस

सूबेमें बहुत हैं ठौर२ अरवली पहाडकी श्रेणियाँ फैली हुई हैं। इनमेंसे यहापर तारागढका पहाड मदार पहाड और नाग पहाड मुख्य हैं॥

खाने—इमारती पत्थरके सिवाय इस सूबेमें सीसा, तावा, तामडा और अभ्रककी खानें है परन्तु खोदीकम जाती हैं।

रेलवे—इस सूबेमें राजपूताना स्टेट रेलवे और राजपूताना मालवा रेलवेकी अनुमान ११० मील लम्बी लाइन है। पहिली लाइनपर सेंदडा, ब्यावर, खरवा, मागलियावास, सराधना, अजमेर, लाडपुरा आखरी और तिलोनियाँ और दूसरीपर अजमेर, नसीरावाद, वादनवाडा, सींगावल और वरल आदि स्टेशन है। इनके सिवाय अजमेरसे मेडतातक एक लाइन और वन रही है॥

पैदावार—इस प्रान्तका मुख्य अनाज जौ है। परन्तु गेहूँ चना, वाजरा मक्का, मूग मोंठ, तिल इत्यादिभी वहुत उत्पन्न होते हैं। रवीकी फसल कुओं, वर्षा और तालावोंपर ही होती है। यदि किसी साल मेंह कम हुआ तो कुओंमेंभी पानी सूख जाता है तव सिचाई कैसी? कहीं२ पीनेका पानी भी बडी कठिनतासे हाथ आता है॥

इस चीफ कमिश्नरीकी वार्षिक आय लगभग ४ लाख रुपयेके है। इतनी कम आय होनेके दो कारण हैं। प्रथम तो यहाकी भूमि प्राय पहाडी है, दूसरे तीन चौथाई सूबेके मालिक, इस्तमुरारदार, भूमिये और जागीरदार हैं। इस्तमुरारदार यहांके वहुत प्रतिष्ठित हैं उनके प्रसिद्ध और बडे ठिकाने भिणाय, मसूदा, सावर, पीसांगन जुनिया, देवलिया, खरवा,

चांदनवाडा, महरू, पारा, बघेरा, बागसूरी, गोविन्दगढ, टाटोंती और वडली आदि हैं। इनमेंसे कितनेक अपनी मजापर आनरेरी मजिस्ट्रेटका अधिकार रखते हैं॥

चीफ कमिश्नरी अजमेरमें—अजमेर और मेरवाडा दो जिले हैं, जिनका सब प्रवन्ध अजमेर, मेरवाडेके चीफ कमिश्नरकी सम्हालम एक कमिश्नर और दो असिस्टेंट कमिश्नर करते हैं। जिला जानतेहो ? **ज़िला** सूबा वा देशके उस विभागका नामहै, जिसमें एक कलेक्टर या असिस्टेंट कमिश्नरके आधीन कई एक तहसील हों। **तहसील** जिलेके उस विभागको कहते हैं जिसमें एक तहसीलदार वा डिप्टी कलेक्टरके आधीन कई एक गाव हों **गाव**-मकानोंके समूहको कहते हैं। यदि गाव वडा हो और व्यापार वहुत होता हो तो वही शहर और कसवा कहनेमें आता है॥

३—ज़िला अजमेर,

सीमा—जिला अजमेरके उत्तरमें किशनगढका राज्य पूर्वमें ढूंढार, दक्षिणमें मेवाड और पश्चिममें मारवाड और जिला मेरवाडा है॥

विस्तार—इस जिलेका सम्पूर्ण क्षेत्रफल २०७० वर्गात्मक मील और मनुष्य गणना इसकी पौनेचार लाखके लगभग है। सब गाव और कस्बे मिलाकर ४२८ हैं जो निम्न लिखित ११ परगनोंमें विभक्त हैं॥

१ अजमेर २ पुष्कर ३ पीसागन ४ राजगढ ५ खरवा ६ मसूदा ७ रामसर ८ भिणाय ९ सावर १० केकडी और ११ वघरा।

१ परगना अजमेरम—अजमेर, हरमाडा, ढाणी, लाडपुरा मुख्य गाव हैं॥

अजमेर—आगरेसे २४० मील पश्चिममें तारागढ़ पहाडकी जडमें पक्के परकोटेसे घिरा हुआ एक बहुत बडा और प्राचीन नगर है। इसमें लगभग ७५ हज़ार आदमियोंकी बस्ती है। कहते हैं कि इस नगरको महाराज अजयपालने विक्रमी सम्वत २०० के आसपास बसाकर तारागढ़ किलेकी नींवदीथी और इसी कारण इस स्थानका नाम "अजय मेरु" पडा जो बिगड कर अजमेर बोलनेमें आता है। यह नगर राजपूतानेका केन्द्रस्थल होनेके अतिरिक्त राजपूताना मालवा रेलवेका एक बहुत बडा स्टेशन है, जहापर रेलवे सम्बन्धी चीजोंके बनाने ढालनेका एक बहुत बडा कारखाना है। इस नगरमें सुप्रसिद्ध गवर्नमेंट कालेज तथा दूसरे कई एक हाईस्कूल होनेसे अंगरेजी विद्याकी अच्छी उन्नति है राजा, महाराजा, नवाब, और जागीरदार सरदारोंके कुमारोंकी शिक्षाके लिए यहां पर सुप्रसिद्ध मेओ कालेज है। देखने योग्य स्थानों में ख्वाजे साहब मुईनुद्दीन चिश्तीकी दरगाह, इन्दरकोट, मेओकालेज, तारागढ़, दौलतबाग, मेगजीन, और मूलचन्द सोनी का जैन मन्दिर मुख्य हैं। ख्वाजे साहबकी दरगाहके नाम लाख पौन लाखकी आयके १८ के लगभग गांव हैं और यहा रजबकी पहिली तारीखमे सातवीं तारीख तक उरसोंका बहुत बडा मेला भरता है। इन्दरकोटमें—बहुतसे जैन मन्दिरोंके खंडर हैं। इन्ही मन्दिरोंको तोडकर एक मसजिद बनाई गई है जोढाई दिनके झोंपडेके नामसे प्रसिद्ध हैं। मेओ कालेजमें सुन्दर२ कोठियोंके सिवाय लार्ड मेओकी एक प्रतिमाभी है। तारागढ़—लगभग आठसौ फीट ऊची पहाडीपर एक प्राचीन किला है। यहापर मीरा साहब आदिकी कई कबरें है और रजबके महिनेमें यहाँपरभी मेला भरता है। दौलतबागमें—शाहजहां बाद-

शाहरी बनाई हुई इमारतोंके अतिरिक्त जनाव बडे साहबके रहनेकी उत्तम कोठी है और सुनो, अजमेरमें आर्यसमाजके जन्म दाता स्वामी दयानन्द सरस्वतीकाभी समाधिस्थान है और उनके नामसे एक हाई स्कूल और एक अनाथालयभी यहांपर है ॥

२ **परगना पुष्कर** में—पुष्कर और कडेल मुख्य गाव है । **पुष्कर**,—अजमेरसे ६ मील पश्चिमोत्तर हिन्दुओंका एक पवित्र तीर्थ है । और इसी तीर्थके नामसे कस्बेका नामभी पुष्कर प्रसिद्ध है पुष्करतालावके किनारे बहुतसे घाट और मन्दिर हैं जिनमें राजघाट, कोटेश्वरघाट, शिवघाट, ब्रह्माजीका मन्दिर, रंगजीकामन्दिर और वराहजीका मन्दिर विशेष दृष्टव्य हैं। कार्तिक सुदि पूर्णमासीके स्नानका पन्द्रह दिनतक एक बहुत बडा मेला होता है जिसमें घोडे, ऊट, बैल आदि बहुत आते हैं । कडेलके पास बूढा पुष्कर सुदावायकाकुंड और बैजनाथका मन्दिर है । सुदावाय कुंडपर पिंड दान करनेका गयाके समान महात्म्य कहा है ॥

३ **परगना पीसांगन** में—पीसागन और गोविन्दगढ प्रसिद्धगाव हैं । **पीसागन** में राठौर राजा रहता है और खाकीजीका स्थान है । गोविन्दगढ में कांसेपीतलके वर्तन सुन्दर बनते हैं ॥

४ **परगना राजगढ़** में—नसीरावाद राजगढ और भांवता मुख्य हैं । वाइसहजार मनुष्योंका एक यहा ... .९७ अक्टर लोनी साहबने जिनको दे... नामपर

आबादकियाथा जो वर्त्तमानमें कालीगोरी फौजकी प्रसिद्ध छावनी है। **राजगढ़**-पहिले गोड राजाओंका बडा राजस्थानथा। यहा पहाडीके ऊपर एक पुराना किला है। **स्रावते** में अजयपालजीका स्थान है और यहांके खरबूजे अच्छे होते हैं॥

५ खरवा—जिला अजमेरमें एक प्रसिद्ध ठिकाना है, जहापर वर्त्तमान रावसाहबके उद्योगसे अभी हालके समयमें तामडे और अभ्रककी खान निकली है। खरवा लीडी और अमरगढ मुख्य गाव हैं॥

६ मसूदा--जिला अजमेरके इस्तमुरारदारों में सबसे बडा ठिकाना है॥ मुख्यगाँव मसूदा, जालिया, रामगढ, किराव और बरल इत्यादि हैं॥

७ परगना रामसर में—श्रीनगर, बीर और रामसर मुख्य गांव है। **श्रीनगर**-पक्केपर कोटके भीतर बसता है॥ यहापर चार भुजाजीका मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है और एक पहाडीके ऊपर जीर्ण किला है। **रामसर** में एक बडा तालाब है और यहाकी मेथी उत्तम होती हैं। **बीर** में सरावगियोंका मन्दिर तथा बडा तालाब है॥

८ परगना भिणाय में -भिणाय, बादनवाडा, देवलिया और ठाठोती मुख्यगांव हैं। **भिणाय**-मान मर्यादामें अजमेरके इस्तमुरारदारों में सबसे बडा टिकाना है। बस्तीके चहुपास पक्का कोट तथा एक पहाडीपर पुराने समयका किला है। **देवलिया** में रामद्वारा और एक बहुत सुन्दर कुंड है॥

९ परगना सावर में-सावर और देवली मुख्यगांव हैं।

मेरवाड़े के शेष परगनोंमें स्कूल, डाकघर, इत्यादि अतिरिक्त कोई विशेष बात नहीं है। इसलिये सूबे अजमेरका वर्णनयही पूराकर अब हम राजपूतानेमें चलेंगे॥

राजपूताना (एजेन्सी)

६ परिचय

भारतवर्ष की पश्चिमी सीमापर सिन्धसे लगता हुआ राजपूताना एक बडा प्रदेश है। राजपूतोंकी सवा छः लाखके लगभग वस्ती और छोटे मोटे अनेक राज्य होनेके कारण राजपूताना वा राजस्थान के नामसे पुकारा जाता है। इसमें बीसक लगभग बड़े और प्रतिष्ठित राज्य हैं। जिनका सैकड़ों वर्षका इतिहास मालूम हो सकता है और कई एक राज्य तो मुसलमानी बादशाहत सेभी पहिलेके हैं। और भारतवर्ष पर चढ़ाई करने वालोंका सदैव बड़ी वीरताके साथ सामना करते आये है, तथा मुगल साम्राज्यमें अपनी वीरता और उत्तम सेवाके पलटे बड़ेर कुरब और मन्सब पा सर्वोपरि रहे है। मुगलाईके अन्तिमदिनोंमें आपसकी फूटसे इस प्रान्तमें मरहट्टोंने अपने पैर फैलाये, और अजमेरको अपना प्रधान अड्डा बनाकर जैसी इनकी चालथी राजपूतानेको खूब लूटा। यदि आज परम प्रतापशाली बृटिश गवर्नमेंटके आधिपत्यमें न आजाता तोकभीका तीनतेरह हो गया होता। यद्यपि मरहट्टोंकी दूसरी लड़ाईके [illegible] १८१९ में सरकार अङ्गरेजने राजपूतानेके राज्योंसे [illegible] कर उन्हें अपनी रक्षामें ले[illegible], परन्तु [illegible] साहबने वह सब सन्धि[illegible] और [illegible]

लडाईके पीछे सम्वत् १८७३ और १८७४ में मारकीस आफ हेस्टिङ्गज और सरचार्लस मिटकाफ साहबने राजस्थानके सब राज्योंके साथ जो सन्धिपत्र किया वह ठीक समझा गया और वर्त्तावमें आया ॥

७ सरकार अंङ्गरेजका सम्बन्ध

राजपूताने के प्रत्येक राज्यके साथ सरकार अङ्गरेजका मित्रताका सम्बन्ध है और सब रईस उसका बडप्पन रखकर अपने२ राज्योंका प्रवन्ध आप करते है। फौज रखते है और दीवानी फौजदारीके अधिकारतो उनके बडे२ खिराज गुजार और पटाइतों तकको प्राप्त हैं। पास की रियासतों, सूबों और गवर्नमेंटके साथ हर प्रकारकी लिखा पढी और समयोचित सम्मति देनेको प्रत्येक रियासत या उसके पासकी बडी रियासतमें एक अङ्गरेज अफसर रहता है जिसे रजीडेंट वा पोलीटिकल एजेंट कहते है जिसको अपनी बोलचालमें गवर्नमेंटका मुखतार और राजप्रतिनिधि कह सकते हैं. ये सब पोलिटिकल आफीसर श्रीमान् एजेंट गवर्नर जनरलकी निगरानीमें काम करते है। कुछ रईसोंको बडे२ मामिलों और फांसी इत्यादिके अभियोगोंमें बतौर खानगी उक्त पोलीटिकल आफीसरोंकी सम्मति लेनी होती है, परन्तु ऐसा कोई पक्का नियम नहीं है, राज्य सदा सर्वदा उसी वशमें रहनेके अभिप्रायसे सब रईसोंको गोदलेनेकी सनद*

---

* सनदका आशय इस प्रकार है —

जनाब फैज आब मलिका मुअज्जमा फरमारवाय इङ्गलिस्तान व हिन्दोस्तानका यह अभिप्राय है कि हिन्दोस्तानके रऊसाय व अमरायकी सरकारें जो अपने मुमालिककी हुकूमत करते है बराय दवाम मुस्तकिल की

प्राप्त है जो लार्डकेनिङ्गने सम्वत १९१४ के सिपाही विद्रोहके बाद समस्त रक्षित राज्योंको दीथी ॥

८ सीमा—विस्तार और मनुष्यगणना।

सीमा—राजपूतानेके उत्तरमें लेफटिनेंट गवर्नरी पञ्जाब, पूर्वमें युक्तप्रदेश और मालवेके रक्षित राज्य, दक्षिणमें प्रेसिडेन्सी बम्बई और रेवाँकाँटे, माहीकाँटे आदिके रक्षित राज्य, और पश्चिममें इलाका सिन्ध है ॥

विस्तार—लम्बाई वदसेवद जैसलमेरकी पश्चिमी सीमासे धौलपुरकी पूर्वी सरहदतक अनुमान ५२० मील और चौड़ाई बीकानेरके उत्तरी सिरेसे बांसवाडेकी दक्षिणी सीमातक ४९० मीलके लगभग है। सम्पूर्ण क्षेत्रफल १२८९२० वर्गात्मक मील है, जिसमें एक करोडसे कुछही कम मनुष्य निवास करते हैं ॥

मनुष्यगणना—सन् १९०१ इस्वीकी मनुष्यगणनानुसार राजपूतानेमें ९८४१७६५ मनुष्योंकी बस्ती है। जिनमें

और आप और उनके खान्दानकी मसनद नशीनी व अअजाज (प्रतिष्ठा) व मरातिब व दस्तूर जारी रहें, मुतामील इस मन्शाके मैं आपका इतमीनान करता हूँ कि बहालतन होने औलाद सुल्बी (औरस) के आप या आपकी रियासतका कोई आगे रईस धर्मशास्त्र और अपने खान्दानके रिवाजके बमूजिब किसीको मसनद नशीनीके वास्ते मतनी (गोद) करेंगे तो सरकार उसको मंजूर व कबूल करेगी और आप इतमीनान रक्खें कि जबतक आपका खान्दान सल्तनतका खैरख्वाह और शराइत अहदनामाजातके जिनमें उस खान्दानके फराइज बजानिब सरकार अङ्गरेजी दर्ज हैं साबित कदम व बरकरार रहेगा सरकारकी इस अहदमें कोई अमर (काम) खलल अन्दाज न होगा, फक्त —

दस्तखत लार्ड केनिङ्ग साहब वाइसराय व गवर्नर जनरल हिन्दुस्तान

८१९४८८२ हिन्दू, ९३७४६५ मुसलमान, ३६०१४० भूतपूजक ३४३२६२ जैन, २८४१ ईसाई, २०५५ सिक्ख, ६५२ आर्य्य. ३३९ पारसी १२४ ब्रह्मसमाजी और ५ अन्य धर्मावलम्बी हैं ॥

९—पहाड़

राजपूतानेमें मुख्य पहाड अर्वली है जो इस प्रान्तको करीबर दो बराबर हिस्सोंमे बांटता हुआ पालनपुर के उत्तर सिरोहीकी सरहद्दसे लगाकर ईशान कोनको कुछ टूटता छूटता दिल्लीतक चला गया है. और इसीकी श्रेणिया राजपूतानेमें सर्वत्र फैली हुई हैं। यह श्रेणिया अजमेरमें तारागढ, मदार, नाग पहाड, मारवाड़में आडोवलो, सूदा,, बगाइचा, धूमडा, बहल, सिरोहीमें आबू, जाहर, माल, उदैपुरमें कुम्हलगढ, गोगूदा, जरगा, बासबाडेमें मदारिया, जगमेर, कोटेमें मकुन्दरा, किशनगढमें बिराई, मोढा, जयपुरमें नाहरगढ, बैराठ, सिंघाना, जीलोपाटन अलवरमें राजगढ, ईंदो, और भरतपुरमें डाग, काला पहाड और सिद्धगिरिके नामसे विख्यात हैं। राजपूतानेमें ऐसी कोई रियासत नही जिसमे पहाड नहों, परन्तु बीकानेर, और जैसलमेरमें पहाड नाम मात्रके हैं ॥

१०—नदिया

चम्बल, लूनी, पूर्वीबनास, बानगङ्गा (उटङ्गन) पश्चिमी बनास, माही, कालीसिन्ध, और पारवती इस प्रान्त की मुख्य नदिया हैं ॥

चम्बल—राजपूताने में सदा सर्वदा बहने वाली यह एक ही नदी है, जो धारानगरी के समीप विन्ध्याचल पहाड़से

निकलकर मालवेकी भूमिको सींचती हुई पहिले पहिले परगना भैंसरोडगढ मेवाड में प्रवेश करती है, फिर कोटा, जैपुर, करोली और धौलपुरकी भूमिको सेराव करती और कालीसिन्ध, पारवती पूर्वीवनास इत्यादि नदियों को लेकर इलाका ग्वालियरमें जा निकली है, और अनुमान पौनेडेढ़सो मील बहनेके उपरान्त जिला इटावा परगना औरैयामें कचहरी घाटके पास जमुनासे जा मिलती है। इसके किनारेपर बसे हुए शहरों और कस्बोंमें भैंसरोडगढ, कोटा, इन्दरगढ, उतगिरि, मण्डराइल, जीरोता. और धौलपुर, मुख्य हैं ॥

लूनी—अजमेरके नाग पहाडसे निकलकर विशेषकर जोधपुरकी भूमिको सेराव करती है, और बाडी, सूकडी आदि नदियोंको साथ लेकर अनुमान २५० मील बहनेके उपरान्त कच्छके रनमें जा गिरती है। इसके किनारेके गावों और कस्बोंमें पीसांगन, राजपुरा, सामोदरा. बालोतरा, नगर. और गुडा मुख्य हैं ॥

पूर्वीवनास—नाथद्वारेके पास मेवाड़के पहाडोंसे निकलती है और उदयपुर, अजमेरके परगना सावर, जेपुर, टोंक, और करोलीकी थोडीसी सीमापर बहती हुई, खारी, मोरेल आदि नदियोंको साथ लेकर अनुमान तीनसौ मील बहनेके उपरान्त राज जयपुर निजामत माधोपुरमें मींगोरके पास चम्बलसे जा मिली है, इसके किनारे नाथद्वारा, काकरोली, हमीरगढ राजमहल भगवन्तगढ मुख्य शहर और गाव हैं ॥

वानगङ्गा वा उटङ्गन—राज्य जयपुर अमरसरके पास मन्दकुण्डसे निकलकर जयपुर, भरतपुरकी भूमिको सींचती हुई

मील बहनेके उपरान्त आगरेके जिलेमें यमुनासे जा मिली है। किनारेके मुख्य गाव मनोहरपुर, दूदी, मानपुर और फरसू आदि हैं।

पश्चिमी बनास—उदयपुरके पहाड़ोंसे निकलती है, फिर उदयपुर और सिरोहीकी भूमिको सेराब करती हुई गुजरात प्रान्तमें जा निकलती है और कच्छकी खाड़ीमें गिरी है। इसके किनारेपर खराडी अच्छा गाव है॥

माही—विन्ध्याचल पहाड़में अमझरासे निकलकर पहिले मालवेमें बही है, फिर बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ और डूंगरपूरकी सरहद्दपर बहती हुई रेवाकांठेमें जा निकली है, और अनुमान पोनेचारसौ मील बहनेके उपरान्त खम्भातकी खाड़ीमें जा गिरी है। किनारेपर सरोदिया, गलियाकोट और भूकर इस प्रान्तके मुख्य गाव हैं॥

कालो सिन्ध—विंध्याचल पहाड़से निकलकर मालवेकी भूमिको सेराब करती हुई राजपूतानेमें प्रवेश करती है और कोटा राज्यमें अनुमान एकसौ मील बहनके उपरान्त फूलबाड़के पास चम्बलसे जा मिली है। किनारेपर इस प्रान्तके पचानी, पाटन, सागोद और पलायता इत्यादि मुख्य गांव हैं॥

पार्व्वती—यह नदीभी विंध्याचल पहाड़से निकलकर पहिले मालवेकी भूमिको सेराब करती है, फिर टोंक और कोटेकी भूमिको सींचती इस प्रान्तमें सवासौ मील बहनेके उपरान्त इन्दरगढ़के पास चम्बलसे जा मिली है। किनारेपर छपड़ा, किशनगञ्ज पीपलदा, गिरधरपुर मुख्य गांव हैं॥

इनके अतिरिक्त, सरस्वती, साबरमती, पिराया,

मोरेल, रूपारेल, साहवी इत्यादि औरभी छोटी २ नदियां हैं जिनके नाम समय२ पर इस किताबमें तुम पढोगे ॥

११–झीलें.

साभर इत्यादि कुछ नमकीन झीलोंके अतिरिक्त इस प्रान्तमें बनाई हुई झीलें बहुत हैं, उनमें मेवाडकी ढेबर झील जिसे "जयसमद" भी कहते हैं इतनी बडी है कि पृथ्वी पर औरकहीं वैसी बनाई हुई झील नहीं सुनी जाती। और दूसरे राज्योंमेंभी बडी२ झीलें हैं, उनमें मुख्य झील यह हैं। जयसमद, राजसमद उदयपुरमें, साभर जयपुर–जोधपुरकी सीमापर, काइलाना और डीडवाणा सर जोधपुरमें, पचेवर टोरड़ी, रामगढ और आकेडेकी झीलें जयपुरमें, मोतीझील और अटलबन्ध भरतपुरमें, छापर बीकानेरमें, कानोड, खाबा और मुहार जैसलमेरमें और गूदोलाव किशनगढमें, पुष्कर, आनासागर और फाईसागर अजमेरमें ॥

१२–खानें

खानें इस प्रान्तमें बहुत हैं, बीकानेरमे पत्थरका कोयला और मुलतानी मिट्टी निकलती है, जोधपुरमें–मकराने भाटे (सगमरमर) की प्रसिद्ध खान है, जैसलमेरमें पीले आदि रङ्गोंका मकराने जैसा चिकना पत्थर निकलता है, किशनगढ, राजमहल इत्यादिमें तामडा पाया जाता है, डूगरपुरमें सङ्गमूसा (काले पत्थर) की प्रसिद्ध खान है, खेतडी और शेखावाटीके कई स्थानोंमें नीलाथोथा और फिटकरी बहुतायतसे मिलती है अजमेरमें सीसेकी खान है और भरतपुर, करोली, अलवर, जोधपुर, जयपुर, किशनगढ आदिमें सुर्ख, सफेद, और काले रङ्गका

इमारती पत्थर बहुत खुदता है, तथा लोहा, तांबा-जस्ता और अभ्रक इत्यादिकी खाने भी है।

१३--भूमि

राजपूताना एक पहाडी और मरुस्थल देश है, तथापि पूर्वी राजपूताने और अग्निकोनकी भूमि प्रायः अच्छी और उपजाऊ है, जिसमें सब प्रकारके अनाजको आदि लेकर, रुई, अफीम इत्यादि सभी जिन्स उत्पन्न होती है, परन्तु पश्चिमी और पश्चिमोत्तर भाग एकदम उजाड और रेतीला है, जिसमें सर्वत्र बालू रेतके बडे २ टीबे है, कोसों तक गाव, ढानी, जलाशय-आदिका नाम नहीं। जो वर्षा हो गई तो मालमें मोठ, बाजरा इत्यादिकी केवल एक शाख यहापर हो जाती है म य राजपूताना प्रायः पहाडी देश है और वहा दोनोंही शाखें हो जाती हैं॥

१४--जल वायु

जल वायु यहा का प्राय गर्म एव नीरोग है, परन्तु पूर्वी राजपूताने और अग्निकोनका जल वायु ज्वर, और हैजा जनक है, मेवाड और उसके आसपास नहरू का रोग बहुत होता है। पश्चिमी और पश्चिमोत्तर भागका जल कहीं२ खारा और बिराइजना (विषैला) वा बिराया है और वायु वहाकी प्राय गर्म और गर्द गुबार युक्त रहती है। वृष्टिका परिमाण औसत हिसाब सालमें पचीस इञ्च के लगभग है। परन्तु पश्चिमी राजपूतानेमें बहुत थोडी वृष्टि होती है, जैसलमेर में वृष्टि की औसत कभी सालमें सात आठ इञ्च से अधिक नहीं होती और मालवा प्रान्त से लगते राज्यों में चालीस से पचास इञ्च तक साल में वृष्टि होती है, और आबू पहाड पर जो समुद्र की सतहसे

लगभग पाच हजार फीट ऊचा है साल में साठ से अस्सी इञ्च तक वर्षात होती है। जल वायु ठंडा होनेसे यह स्थान वर्त्तमान में राजपूताने के एजेंट गवर्नर-जनरल के रहने की जगह है। गर्मियों में राजस्थान आदि के अनेक राजा महाराजा और अङ्गरेज लोग भी आबू पर बहुत आते हैं॥

१५-रेलवे, सड़क

सबसे लम्बी रेलकी सडक इस प्रान्त में राजपूताना स्टेट रेलवे है जो दिल्ली से बम्बई तक जारी है। यह रेल, स्टेशन अजरोका इलाका अलवर के चन्द मील उत्तर राजपूताना प्रान्त में प्रवेश करती है, और अलवर, बादीकुई, जयपुर, फुलेरा, किशनगढ, अजमेर, ब्यावर, खारची होती हुई ३ए० मीलके लगभग कान्टी अन्तरगत आबू रोड (खराडी) स्टेशन के उस पार तक चली गई है॥

बादीकुई आगरा ब्राञ्च—यह लाइन, बादीकुई से भरतपुर, अछनेरे होती हुई आगरे तक जारी है, और इसी रेल्वे की अछनेरे से एक शाख मथुरा होती हुई फर्रुखाबाद और कानपूर को जाती है॥

राजपूताना मालवा रेल्वे—यह लेन राजपूताना स्टेट रेलवे अजमेर से प्रारम्भ होकर नसीराबाद और चित्तोड़ होती हुई मालवे को गई है, और इसीकी एक शाख चित्तोड स्टेशन से उदयपुर को जाती है॥

बीकानेर, मेडता रोड और फुलेरा ब्राञ्च—सांभर, नावां, मेड़ता, रोड, नागोर बीकानेर, सूरतगढ होती हुई

भटिंडा तक जारी है। इस रेलवे का अन्त का भाग जो राज्य बीकानेरके अन्तरगत २४५ मील के लगभग है महाराज बीकानेर का है और उन्हीं का उक्त लाइन पर सब प्रबन्ध है। और इसी रेलवे की एक शाख मेड़ता रोड से मेड़ते होती हुई सीधी अजमेरको जावेगी ॥

मारवाड़ रेलवे—राजपूताना स्टेट रेलवे के खारची जंकशन से पाली, लूनी जंकशन, और जोधपुर होती हुई मेड़ता रोड़ पर फुलेरा ब्राञ्च में जा मिली है ॥

मारवाड़ सिन्ध रेलवे—लूनी जंकशनसे बालोतरे और बाड़मेर होती हुई सिन्ध को जाती है, और इसी रेलवे की एक दस मील लम्बी शाख बालोतरे से पचभद्रे को गई है, यह लाइन और उक्त मारवाड़ रेलवे दोनों राज्य जोधपुर की है।

इण्डियन मिडलण्ड रेलवे—इटारसी से आगरे तक जारी है, इस का कुछ भाग धौलपुर में आ जाने से यह लाइन भी राजपूताने में गिनी जाती है। इसी की एक शाख बीना जंकशन से इलाकाटोंक के परगना छबड़े में होती हुई कोटा अन्तरगत बारा तक गई है। अब हाड़ौती और शेखावाटी को भी शीघ्र रेल हो जावेगी ॥

फुलेरा-रिवाड़ी कार्ड लाइन—यह फुलेरे से चलकर, किशनगढ़ रेणवाल, श्रीमाधोपुर, नारनोल होती हुई रिवाड़ी जा मिली है ॥

१६—विशेष दृष्टव्यस्थान

राज्य सिरोही आबूमें देलवाड़े के जैन मन्दिर, भरतपुर में

डीग के भवन और कामवन के देव मन्दिर, जयपुर में जयपुर नगर और उसके समीप वर्तीस्थान, जोधपुर में फलोदी और राणपुर के जैन मन्दिर, मेडते की मसजिद, नागोर की दरगाह, और जोधपुर की उत्तमोत्तम इमारतें। उदयपुर के संगमरमर के महल्लात बनाई हुई झीलें, नाथद्वारा, काकरोली, इकलिङ्गजी और ऋषभदेवजी के मन्दिर, बीकानेर को जेल एव लालगढ, किशनगढ में राज के महल, मन्दिर और रुई और सूतके कारखाने जैसलमेरका गढ़ और जेन मन्दिर अजमेर में ख्वाजे साहबकी दरगाह, नसिया और ढाई दिनका झोंपडा और अलवर, कोटा, बूंदी, टोंक इत्यादिमें राजकीय स्थान॥

१७--बहुत प्रसिद्ध गढ़

चित्तौरगढ़, रणथम्भोर तारागढ, भटनेर, बियाना, आम्बेर गागरोन, गुगोर, जैसल्मेर, बीकमपुरें, और भरतपुर आदि मे प्रसिद्ध किले हैं॥

१८--कारीगरी.

जयपुर में--सङ्गमरमर की मूर्तिया लाखके चूडे और पीतलके वरतन आदि उत्तम बनते है। सागानेर की छींट प्रसिद्ध है। किशनगढ का चोल उत्तम होता है। जोधपुर और पाली में--हाथीदात के चूडे आदि सुन्दर बनते है, नागोर में--पीतल और लोहे का काम उत्तम होता है। मेडता--उनी और खस की चीजो के लिये विख्यात है। बीकानेर--लोई और मिश्री के लिये सर्वत्र प्रसिद्ध है। सिरोही की--तलवार, पेशकब्ज और बूंदी का कटार मशहूर है। मकराने में--सफेद जैसलमेर में--पीले और डूंगरपुरमें--श्याम चिकने पत्थर की मेज, कुर्सी, देवळी, खोलट